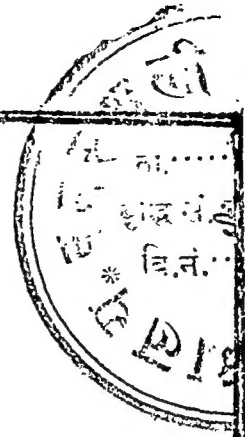


954.4284-926

MB8E (H)



वंशभास्करमें

की

बुधसिंहचरित्र

जाकों

श्रीमन्महाराजाधिराजमहारावराजासाहि

वन्शी१०८रामसिंहजखहादुरजी,सी,श्रीसुआई

सी,आईई

की

आज्ञाते

कविस्वर्यमङ्गायावारविलासिनी

एकविचण्डीदानात्मजमिश्रण

नेसुललित

कुन्हेमें

बनायो

सोभवश्रीमन्महाराजाधिराज

हिवन्शी१०८रघुवीररि

मूल्य १ नाणयन्त्रा

विलाजित्क०२३

~~954.42B4~~
~~M68X(H)~~

954.42B4
M68V-B(H)

Acc. 10956

॥ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥ गीर्वाणभाषा
 शालिनी ॥ वन्देथाहंसाञ्जलिः प्रीतिपू
 र्वचण्डीदानं स्वीयवसारमार्यम् ॥ हैता
 रायप्रस्फुरद्दोरदावंती ब्राह्मैतं पण्डिता ॥
 ब्रह्मनाथम् ॥ १ ॥ प्रायेमिश्रिता प्राहता
 भाषा ॥ दोहा ॥ जुगलवानमुनिहंदु ॥
 १७५२ मितलिनकमश्रब्दविवेक ॥ जरा
 भीरुतिथिपोसवदिबुद्धसिंहप्रभिरसे
 क ॥ २ ॥ षट्पदी ॥ तीरथसलिलसम
 स्तउचितनिजमस्तकसिंचियत्रौषध
 बिहितउपेतनिगममंत्रनपवित्रकिय
 हवनवस्तुहविरसनमध्यध्याज्यादिउक्त
 हुत ॥ हुवसुगानगायकनविविधबंदी
 नबिरुदरुत दियदानहिजनपूरमर्ममुख
 लखिसुरीतिसुरपतिलजिय बुद्धियबज

तथतिवाक्षकारवलनखंडखुलकबजि
 य ॥ ३ ॥ पञ्चदिका ॥ बुद्धसिंहभूपविय
 पंचव्याहसुतरवतरुसुताहुवलहियलाह
 ॥ उमोदकुमारिपहिलीवमाहिजयसिंहरा
 नतलुजाविवाहि ॥ ४ ॥ रानीद्वितीयजु
 ष्मरकुमारिनृपकूर्मविष्णुधीदासुधारि
 ॥ वैशम्पयतिष्णनुपमसिंहधीयफुल्लकुम
 रिचुंडाउतितृतीय ॥ ५ ॥ चंद्रकुमारिचो
 जीपुरमनायरद्वोरजगतनृपजासुभाय ॥
 आहाडीपंचमयुनगरीयअभिधागुमान
 दुमरीतदीय ॥ ६ ॥ जीवंसबहालापुर
 पधारिकमव्यूहअजबराउलकुमारि ॥
 सुतदेवसिंहधीकलदुनामलिमभावतसिं
 हजुलालताम ॥ ७ ॥ कमजोरेसुतयेक
 हातजेहूजीरानीजहरजात ॥ अरुपद्यसिं

हतीजोप्रमानिचुंडाउतिउरपहितोबरवा
 नि॥ ८ ॥ उम्मेदसिंहचोथोकुमारअरु
 दीपसिंहबुद्धोउदार॥ तिमदीपकुमारि
 दूजीकनीसुतियतीजीनेत्रितयीजनीसु
 ॥ ९ ॥ पुनिचंद्रसिंहपंचमजुसोहिअरु
 पंचमरानीजनितजोहि॥ कन्याबडीजुसु
 रजकुमारिचौथीरानीभवजोबिचारि॥ १०
 ॥ व्याहीजयसिंहहिंजनकबुद्धअपेअरु
 धीसहिंसविधिसुद्ध॥ दूजीकनीसुउम्मेद
 भ्रातमरुपतिविजयहिंदियमहमचात॥
 ११॥ बुधअनुजजोधकियचारिव्याहक
 न्यादुवविधिवसलहियलाह॥ जयसिंह
 रानकोअनुजभीमजोभूपवनहडाहंगसी
 म॥ १२॥ कन्यातदीयजालअकुमारिधव
 जोधसिंहबामांगधारि॥ अग्रजकेसंगहि

दुलहभ्यापपरन्योसुउदैपुरमहभ्यमाव॥
 ॥ १३ ॥ राजाजतिजमुनाकुमरिनामज
 सिंहसुतादूजीललाम॥ तीजीरानायतिमा
 दप्रतापकुडाकियभ्रमिजनकुमरिभ्याप
 चोयीचंद्राउतिरामदंगदमचंद्रकुमरिपर
 न्योभ्रमंग॥ इनमैपहिलीकैडकसुताहिउ
 येदकुमरिजगकहतजाहि॥ १५ ॥ यूहनि
 करनबिचवुहिराहवुधसिंहदयीजयसिंह
 गेह॥ चोयीतियकैदूजीसुतासुइहकरपकुम
 रिसुतसिसुहिभ्यासु॥ १६ ॥ इनचउनमहि
 तीजीनिवारिपतिसंगजरीपहुनिरिलना
 रि॥ भ्रनुजादुवदुवरिलभ्रनुजउक्तदुव
 जेचउवालाहिकालपुक्त॥ १७ ॥ दो० ॥ भ्र
 रुमाकुमरलकुमारिभ्ररुकल्यानादिकुमा
 रि॥ भ्रमरविजयतिसनृपभ्रनुजचवेसिसु

हिमृतच्यारि॥ १८॥ भावीसानुजभूपकी
 व्याहप्रजादिकवत्त॥ वर्त्तमानपदुरामवि
 धिअबजानहुअनुरत्त॥ १९॥ पद्धतिक॥
 इमलियउबुद्धपद्दामिषेकथपिराज्यअ
 गवसिद्धकमएक॥ सितरोमगुच्छहरि
 दुदिससीसकनकातपत्रभूषितमहीस॥
 २०॥ आवापतंत्रचिंतनउपेतसुभवलवि
 दग्धधीसरवसमेत॥ पदुसंधियानविग्रह
 बिलासदेधासनआश्रयगुनप्रकास॥
 २१॥ प्रभुमंत्रसक्तिउत्साहपूरसमचतुरूप
 यसामर्थ्यसूर॥ सविचारव्यसनसप्तकनि
 षेधिवानैतवानबिनलेतवेधि॥ २२॥ वि
 धिच्यारिहेतिकेविदविनोदचतुरंगचक्र
 साधनसमोद॥ जुतधर्मनीतिअनुरजमा
 यलोकानुरागनयरीतिलाय॥ २३॥ इत्या

दिराजयुवजोरजयिबुधसिंहवह्नियजघु
 न्नतिलन्नयि ॥ इवविदितकिनिदिस
 दिसनहाकन्नकिबकिन्नरातिरुकिबद्व
 वाक ॥ २४ ॥ इतिश्रीवंशभारकरमहान्न
 स्रहोदसिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
 रित्रेप्रथमो १ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ दो० ॥ उदयनैरजयसिंहनृपरानां
 र्यमवस ॥ तारवासतनुजाचतुरभईइदि
 रात्र्यस ॥ १ ॥ पञ्जदी ॥ इवमंजुसुतारा
 नानिकेतउमोदकुमारिसुभयुनउपेत ॥
 वयंरवपंचहायनविधानसौंदर्यरूपयुन
 गनसमान ॥ २ ॥ लरिविताहिभूषजयसिं
 हत्रापउद्वाहकरणचिंतामवाप ॥ लग्नि
 यवरविक्रवन्सबनिहारिविधिसहितक

नीव्याहनविचारि ॥ ३ ॥ द्विदूतदेस
 देसनपठायजंघालचतुरमतिचउउपाय
 ॥ मरुमालवडाहलशाल्वअंगटककेरल
 कुंतलमगधबंग ॥ ४ ॥ जालंधरतज्जिक
 कासमीरकस्मिटद्रविडमैथिलसुवीर ॥
 इत्यादिविसयउत्तमअपारतिनमोहिं
 नपठयेस्वचार ॥ ५ ॥ कहिहेरदुबरममब
 चप्रमानिजामातृवर्यपदयोग्यजानि ॥ भू
 पालतथाभूपतिकुमारइनसूरराजगुनजु
 तउदार ॥ ६ ॥ दसअब्दताववयरूपदे
 खिबरवरनखवरिअनहुबिसेखि ॥ अनि
 रुद्धपट्टबुंदियसुथानबुद्धहिंसुनिथतगुन
 रूपवान ॥ ७ ॥ तासैंद्रुपगुनअधिकभू
 पकोउहोयताहिहेरदुअनूष ॥ सुनिबानि
 चलियदिसदिसनदूतरखोजियअसेसदृप

कुलसपूत ॥ ८ ॥ कथितादिदेसलखि
 नूपकुमारबुंदीपुरीहुचरचयचचार ॥ लखि
 प्रकृतिसप्तपति सावधानबुधसिंहराज्यप
 तिर्वसमान ॥ ९ ॥ बुधधर्मनिपुनखुरली
 निनादहयहृत्थिचढनसहबहसमोद ॥ र
 नबीरदानउत्सावउदारलावण्यललितमा
 राचलार ॥ १० ॥ इमबुद्धसिंहलखिवितजि
 बैरसानंदगयैचरउदयनैर ॥ सबकहिउदं
 तप्रतिदेसदेसबुधसिंहकिन्तिपुनिकिय
 विसेस ॥ ११ ॥ कहिहमहुलखियजनप
 दश्चनेकबुंदीससपनअन्यन्नराक ॥ कुमरी
 बरत्वलायकसएवतत्रैवरचहुसंबंधदेव
 ॥ १२ ॥ बुंदीद्रकिन्तिसबसौविसेसइमस
 सुरवअवनसुनिसुनिनरेस ॥ संबंधचिंति
 तयहिबिचारआत्मीयपुरोहितकियतया

र॥ १३ ॥ संतोखरामनामासुविप्रतिहिं
 कहियतत्रगंतव्यविप्र॥ दियसगभर्मलां
 गलिमढायसामजचतुष्कहयसतसुभाय
 ॥ १४ ॥ बरविबिधबस्त्ररत्नसमाजभृगना
 मिचंद्रघुसुणादिसाज॥ इत्यादितिलक
 मंगलत्र्यसेसद्विजसंगदयेलखिकालदेस
 ॥ १५ ॥ श्रीकृष्णनामद्वकगणकराजसम
 धीतत्रिविधज्योतिषसमाज॥ दाधीचजन
 नभवजोद्विजेनदियसोहुपुरोहितसंगतेन
 ॥ १६ ॥ अरु कहियउभयतुमबुद्धिमानबुं
 दींद्रनिकटविचरहुप्रयान॥ मिलिभारव
 हुअप्राशिखअसदीयसविनयउदतपुनि
 फहिस्वकीय॥ १७ ॥ सबबखुसगजहय
 नहिसुबेरकरितिलकनिवेदहुनालिकेर
 चीकारकरहिंजोतिलकविप्रतोलखहु

लग्नतनैवक्षिप्र ॥ १८ ॥ जोलग्रप्रथमप्रा
 गामिहोह स्वीकारप्रवलिखिदेहुसोइ ॥
 यहसुनिद्विजबुंदियप्राजगामजाहिरकि
 यथाशिरवपदललाम ॥ १९ ॥ सुनिस
 चिवहिजागमसावधानसनमानियसाध
 नखानपान ॥ पुनितदतुयस्तकतिपयवि
 हायबुंदीद्विरचियसदबुद्धराय ॥ २० ॥
 संतोखरागलियबुल्लितामदाधीचबहुरि
 श्रीकृष्णनाम ॥ तिनपूछिअनामयदिय
 अरीसइन्हबुंदियदोऊविप्रईस ॥ २१ ॥
 लहिमिसलबैठिकहिसबनसारविधिमु
 नहुसभासगायनविचार ॥ चीतोखराजय
 सिंहानतिनगेहलेहतनयासुजान ॥ २२ ॥
 ॥ बुंदियनरेसकहंयहबिबाहिसंबंधरच
 नसीसोदचाहि ॥ तुरकानसिंधुविचजे

सरोजतिनगेहउचितसंबंधमोज ॥ २३ ॥
 मटसचिवसबनमुनियहसुमंतहियहुल
 सिकह्योउचितहिउदंत ॥ लवजननवहै
 उज्वललसातज्यौजननयहैचंडासिजा
 त ॥ २४ ॥ स्त्रीकारसबहिबुल्लियसुबानि
 मानसअपुल्लआल्हादमानि ॥ संतोखरा
 मइमलहिमुबेरकरितिलकनिवेदियना
 लिकेर ॥ २५ ॥ बरबरियबहुरिनिजअनु
 जजोधराणानुजकन्याकहिमुबोध ॥ दुव
 बंधुनकरिसंबंधएमदेरयोमुहूर्तसुभप्र
 थितप्रेम ॥ २६ ॥ संवतद्विपंचरुषिइंदु
 १७५२मानमेचकतपस्यनवमीविधान
 ॥ गणकनबिचारिसुभलग्नतत्थइकमा
 सअवधिअंतरसमत्थ ॥ २७ ॥ करिमी
 खतबहिद्विजवरसुजानकोटाप्रतिसत्वर

कियप्रयान ॥ चहुवानरामकोटाधिईसभु
 जमेदिवंदितनदियअसीस ॥ २८ ॥ अरु
 कहिल्लयुपुत्रीहेतरानतुभरोसुतमान्योसं
 प्रदान ॥ चहुवानरामयहसुनिसचाह ॥ उ
 पयमअपत्यकीनोउछाह ॥ २९ ॥ इमहुंदि
 यकोटावरिउमंगसंतोरवरामगयउदयदंग
 ॥ सबकहिउदंतसांगोयअंगउपयमबि
 धाननिजकृतअमंग ॥ ३० ॥ बुधसिंहबि
 वेत्ताअलिउदारबिक्रांतसुभगपहुसबप्र
 कार ॥ तिनसौरचिउपयमनीतिबोधदुव
 अनुजवरियपुनिभीमजोध ॥ ३१ ॥ अबर
 चहुव्याहविधिजोअजातअेहैत्रिरुख्य
 सुखसजिवरात ॥ उतहुवविवाहउपकर
 नएसहतसजिवरातपरिकरसप्रेम ॥ ३२ ॥
 इतिश्रीवंशभारकरेसहाचंपूसवरूपेदक्षिण

यनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेद्वितीयोमयू
 खः॥ २ ॥ ष. प. ॥ घमघमंकिघुग्घरनबा
 जिचल्लियमगजंपत। घमघमंकिनउबत्ति
 बजतत्तलादिनकंपत। तमतमंकि
 गजराजमुंडिसुरपथफटकारत॥ रूमरूम
 किभूरवननरोचिरबिरोचिबिगारत। बाने
 तविहितरपुरलीरमतकमतबीरविरुदज
 बलिय। बुधसिंहविदितबुंदियनृपतिसज्जि
 सानुजदुल्लहचलिय॥ १ ॥ दो. ॥ बुल्लिबि
 दितकबिबिबुधलियभूसुरचारनभट्ट॥ अयु
 नहुत्यागउमंगधरि। अनाहूतचलिथट्ट॥
 २ ॥ सेवकजातिसिरोहिया। भारव्योमहूअ
 ताप॥ उदयनैरममहेयनृप। लैनचलहु
 संगअप॥ ३ ॥ ष. प. ॥ कविप्रतापयह
 कबहुपत्तकुलभट्टउदैपुर। राजसिंहजंहरा

नहीरदासदुधीसरवधुर। इकरानीअभि
 सापपदकिपट्टपकुमारपर॥ तदनुमरायोता
 हिदुमतिवाहिकाइरानकर। तसअनुजकु
 मरसरदारतिममंतुबिनुहिलैबिषमख्यो।
 तिहिअथप्रतापजावनतजिरुपुरहिउदै
 पुरपरिहख्यो॥ ४ ॥ दो० ॥ जलहुउदैपुरको
 तजन। बंदीजिहिंपनबंधि॥ कखोसत्यम
 ममहुकुल। सत्यबचनयहसंधि॥ ५ ॥ वह
 कथचिंतिप्रतापतहैं। नचलनअरजउच्चा
 रि॥ नृपतिकह्योहमलैचलहि। आपुनदे
 सजवारि॥ ६ ॥ हहुपूर्वयहहुकमकरिलि
 यनिजसंगप्रताप॥ भरिसकटननिजदेसभा
 व। रिरीकरीदनआप॥ ७ ॥ षण्य० ॥ इमसस
 सकरिअथसुकविपंडितसनमानिय। अ
 णअरुहिपारीचहोदहाटकजुतदानिय।

बजिमृदंगदुंदुभियविजयमर्दलपणवान
 क॥ हेसाबुंहितहाकभहजिमतनितभया
 नक। रसरंगारागगायकरचतमनलबंदिमो
 गावलिय। बुधसिंहबिदितबुंदियनृपतिब
 रविनीतसंक्रमिबलिय॥ ८ ॥ कुट्टिकुट्टि
 हयखुरनगिरिपाखानगरदमिलि। बुद्धि
 बुद्धिचितिसंधिसिधिलभोगीससीसमिलि
 । तुट्टितुट्टितरुदुगमपृथुलपद्मतिहुवफर॥
 कुट्टिकुट्टिआघातपटहरवपूरिदिगंतर। बि
 ल्यरियकथानकदिसबिदिसबिदितबनहु
 वनरनरन। बुधसिंहजातबुंदियनृपतिउद
 यनैरउपयमकरन॥ ९ ॥ गजनफरकिबह
 रकथरकिआकासविराजत। सरकिघोनि
 बमथूनरकिभहवधनसाजत। वरकिह
 डुभूदारलरकिफनमालनागइन्॥ धरकि

धरकि निसदीह दरकि वृत्तिय आरातिन ।
 गढगढन संक अंतर उपजिकरत मंत्र सचि
 वनकतिक । हहुन हमे सकुलरीतिय हस
 मिति व्याह उच्छाह इक ॥ १० ॥ गरद अ
 क अच्युदिय सरद धन कुमुद नाथ जिम ।
 गगन तोम तोमर न प्रदर पुंर वन कलापतिम
 । भजत भजत वन जंतु कटक अंतर थकि बु
 द्त ॥ विदित बीर बानैत बिसिख बिकिरन
 वपु फुहृत । इभपि द्विअप्य बिरुदन सुनत भ
 नत दैनरंकन बिभय । संचरत सर निशा गुज
 ससुरवर दतन की वजले बरव ॥ ११ ॥ उलदि
 उलदि दल अोट पवन सज्जत प्रत्यागम । सु
 गम हरो लन सलिल दुगम चंदो लन कहम
 । आस पास इहिं चास चास मेवास प्रपत्ती ॥
 हेतुन हास हुलास बास सेतुन जस बची ।

गोकरागनमुमावत ॥ चंडातकचलचरनघे
 रधुम्भरधुम्मावत । श्रुतिजातितालबादनकु
 सलमोहतरसगीतनसुमति । अचरोहग्राम
 मध्यमउठतग्रामप्रथमअचरोहगति ॥ १७ ॥
 धुरिनेउरघंटिकनऊनकि सिंजितमहनाव
 त । विधिऊनतालबहायबहुरिप्रतिलोमव
 नावत । मिलिसंक्रममुच्छन्ननमोदनिकसं
 तनादमय ॥ कंदुकअहिगतिक्रमनचहत
 उतरतअलायचय । आनद्धतंत्रबादनउदि
 तमादनमुदितनरेसमन । बसिबासअथाय
 सायकबिरकमनिजनिवासगावननटन ॥
 १८ ॥ दो० ॥ कोटाकीहुबरातबनि । मि
 तिमगसंक्रमिसंग ॥ पहुंचेदुसहउदयपु
 र । महसहउदितउमंग ॥ १९ ॥ पद्धतिः
 ॥ अलिमोहरानसनसुकवआइविधिजुत

जामातालियबधाइ ॥ दलउतरिद्रंगद्विग
सरसमीप । दुतिबढिगअरतीकलसदीप
॥ २० ॥ पधराइसमयमहलनसप्रेम । तनि
सुचितउचितउपहारतेम ॥ बुधसिंहहिं व्या
हियरकिवरीति । बिंदाबयबाल्यमुपधि
तप्रीति ॥ २१ ॥ परिनायसोदरहुजोधनाम
पुनिभीमपितृव्यकरामजाम ॥ महुकम्बंस
भटबंधुवर्ग । परिनाइनामसालमकुसर्ग ॥
२२ ॥ इत्यादिरानबरवरिअनेक । अट्टरु
सतव्याहेलग्नएक ॥ बुंदीद्रसंगविधिउचि
तसाजिदुल्लहससोत्तरसतविराजि ॥ २३ ॥
दो ॥ छपनदेसनरेसकी । तनयाब्याहीरा
न ॥ प्रेमरीतिअंतरप्रिया । सोहीरहियमुजा
न ॥ २४ ॥ ताकेउरसुंदरसुता । कुवउम्मेद
कुमारि ॥ सोदुलहनिबामांगविधिबुद्धसिं

हश्चवधारि॥ २५॥ ष.प.॥ कुमरीजेमोकुम
 रनामउमोदसिंहजिहिं। प्रियरानियसुत
 जानिरानलगिराजदेनतिहिं। सत्रुसल्लनदि
 नियनामगंगागुलगाई॥ भावसिंहमगिनीसु
 पुषारानहिंपरिनाई। अमरेसकुमरताकेउदर
 प्रथमभयोकुलपहपति। तुरकानतेजसंगति
 प्रवलथरथरहिंदुनअनयरति॥ २६॥ लखि
 यहअमरकुमारराजलखुबंधवपावत। कु
 ष्णिअनयउष्णिअनयजलकउपरभुवजावत
 । हानिधरमहिंदूनलायथरथरइमलमै॥ अ
 णुकेसाम्पितअनयभिदुरगृहपक्षयभमै॥ अ
 मरेसउदितअहवरचनबलबिसेसधनबि
 लुकदिन। यहसोचिअयमातुलनिलयचुंदि
 यगाहतिहिंसंनरिवन॥ २७॥ यहमाऊअ
 धिराजदेतअनईनकपहन। तीनलकवत

बदम्पपायनिद्वहिमातुलसन । अरकुमारश्च
 मेरेसत्रायबेधमपुरत्रोसरि ॥ राउतअनुप
 मसिंहपगधपलतिरुधीसरवकरि । बस्वसी
 सच्यारिचामरविरचिसंगरउचितअनीक
 सजि । पुरउदयजायघेरियप्रबलबुद्धिहिनहे
 षानिनदबजि ॥ २८ ॥ सुसुनिरानजय
 सिंहपुत्रलघुसहितपलायो । किल्लाकुंभि
 लमेरुबसिरुवहकालबितायो । सुतहल्ला
 लखिसत्यमातगंगासकोपमन ॥ खेटक
 खग्गउचायत्रायगुड्डीगृहतोरन । पण्डिक
 हिअनुपमसिंहपहँतुमभटवरधारतधर
 म । समुगावहुकुलनयबिनयसनजोचौडा
 घरतुमजनम ॥ २९ ॥ यहसुनिअनुपमसिं
 हसुमिरिनिजपुबपितामह । प्रथममिल्यो
 चलबुद्धिअवसुबदल्योडरदुस्सह । साजि

अण्णनो सत्यसमुखप्रतिमद्वैधायो॥ चो
 सरचत्तरउ दयनैरलुह्नननहिंपायो। समुगा
 यकुमारअमरेसकहंतुल्यसुभटएकत्रजुरि
 । कुलधरमथेमिसुतजनककै सुनयसामहि
 न्नीबहुरि॥ ३०॥ दो०॥ रहैतरवतजयसिं
 हनूप। तोलोअमरहिअपि॥ राजसमुद्रत
 डागलट। राजनगरगहयपि॥ ३१॥ इस
 गंगापहिलेसमय। पुरायपतिब्रतपाय॥ मे
 दिसुअनुपमसिंहभट। लियखपुत्रसमुगाय
 ॥ ३२॥ गंगासमगंगाकही। सुधरमसलिय
 सुजान॥ भीखयसमकैसैंकहों। अनईअ
 पारअमान ॥ ३३॥ लहिप्रसंगकछ
 यैंहैंकहों। चोडाकीनयबल॥ जाहिसुमि
 रिअनुपमभयो। गंगाबचअनुरत्त॥ ३४॥
 ष० ष०॥ इहसमयचीतोरानल खपति

खेतलसुत । तरुनकुमरइकतासनामचौं
 डानयजयजुत । नृपरनमलरद्वोरगेहतन
 यामंडोवर ॥ चौंडासौं संबंधकरनश्यायेतस
 कगर । सुनिपत्ररानलखपतिकहियतरु
 ननकौं हेरतजगत । यहजनकबैनसुनिसु
 निकुमरकियमनतिहिं व्याहनबिरत ॥ ३५ ॥
 कहिचौंडाकरजोरिसुनहुमरुबरसुजाता ।
 व्याहपिताकोरचहुवहैकन्यामममाता । य
 हसुनिमरुबासीनकह्योलिखिंदेहुअप्य
 कर ॥ रद्वोरनकोभागिनेयचीतोरपटुपर । य
 हसुनतलिखितनिजहत्यकरिमरुबासिन
 सौंप्योकुमर । लखपतिदुरानहैमंदमतिव्या
 हिलइयवहबृद्धवर ॥ ३६ ॥ तुच्छदिननके
 अंतगरभरद्वोरिग्रहनकिय । समयअंतसुत
 जनमिनाममुक्कलविप्रनदिय । लखपति

अजतिन दिनन काल कंठीरवमास्यो ॥ चों
 डारसोंरद्वोरिरुद्विपीहरबलधास्यो । बुलवाय
 तातरनमल्लपुनिजोधभ्रातचीतोरगढाति
 नहत्थहारकुंचियअरपिकिलाकरियप्रपं
 चदह ॥ ३७ ॥ नारिबुद्धिरद्वोरिसुज्झिनहि
 परिगफलाफल । तबसुरवरनमलकहियत
 जैचोंडाजबयहथल । यहसुनिचोंडारान
 जुत्तिनिकरयोभीसमधुर ॥ मुलकछोरिमेवा
 रगयोमालवमंडूपुर । पारवनदावलग्योत
 बहिजोधारनमल्लमंत्रजपि । करिभागिनेय
 सुकलकदनधिरहिलैनचीतोरथपि ॥ ३८ ॥
 इकरानअनुचरियनेहमंड्योजोधासम ।
 इकदिनआसवपानजोधबुल्ल्योमतिविश्र
 म । सुकलकौंअबमारिदुगादलदेसकोस
 हपि ॥ इकआसकेअंतलेहिमजिनेंमनीस

रि॥ यह बत्त डारि दासिय दर्द मुक्कल की मा
 ता श्रवन। सुनि सोचित बहिर द्वोरि कौंचों
 डा आय उचित मन ॥ ३६ ॥ पत्र मंडिप्र
 च्चन दूत मंडुव पठवायो। सुनि चोंडा सजि
 सेन अद्दर जनी गढ आयो। करि हल्ला चहि
 कोट्यस्यो बीराधिबीर बल ॥ कुमार जोध
 भजिक डिगम। रिलि नो नृपर नमल। मुक्क
 लहिं पट्टगदिय अरपिर हित टस्थ जगज
 सलियउ। हिंदवान बत्तधारहु हृदय कर
 हुजे मचोंडा कियउ ॥ ४० ॥ दो० ॥ वहन चों
 डा करि चिंत मन अणुपम धरम बिचारि ॥ कि
 यो साम सुत जन कैं। निज पुर लूट निवा
 रि ॥ ४१ ॥ राजन अणय मन गानि कैं। राजदे
 न लगि जाहि। ता की बर सो दर खसा। बु
 द्धने सहिं व्याहि ॥ ४२ ॥ तीजीरानी की

सुता। भीमहिंदइय बिचारि ॥ भ्रातभीमकी
 नंदनी जोधसिंहअवधारि ॥ ४३ ॥ मुहुक
 महरसालामअरथ। सुभटसुतापरिनाथ ॥
 बहुरिसौरखडेरनदर्द। सबहिनमोदसुना
 य ॥ ४४ ॥ दुल्लहडेरनअयकिय। बिहि
 तनित्यसुबिहोय ॥ गोरनअसननिमंत्र
 कौं। रहेरानमगजोय ॥ ४५ ॥ रानकेफमं
 डतबहुत। आतआतअलसाय ॥ गोरन
 दिवसअतीतहै। समयनिसीथसुअय ॥
 ४६ ॥ अ. प. ॥ सुयहुरानजयसिंहमद्विमा
 दकसरागमन। भंगिअरकभुजैसुप्रमित
 दुवबीसपहीसन। प्रियरानियअणनिय
 भौनपगधारिनित्यभल ॥ असनअण
 अहरहिंफैरखटरितुहिअंबफल। इमम
 नमातुलानियअरकदसमीनिसससिके

उदय। चहुवानसिविरसीसोदचलिमानु
 हारिगोरनसमय॥ ४७ ॥ मिलिउपेतस
 नमानरावशनांअनंदरजि। चहिगयंदच
 हुवानस्वसुरमहलनप्रयानसजि। परिक
 रसहपरिपंतिअसनकिन्नोअधिराजन॥
 अतिसुखंदेरनआयसयनमंडियप्रमोद
 सन। जयसिंहरानतीजेदिवसजनकदोस
 मेटनजहर। परतापमहंदेरानप्रतिमुदित
 आयमंडियमहर॥ ४८ ॥ दो॥ अगैरा
 नाराजसौ। रुद्रोभहुप्रताप॥ अबजय
 सिंहप्रसन्नकिय। आयपटालयआप॥
 ४९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहान्वेषस्व
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
 रित्रे तृतीयो ३ मयूरवः॥ ५० ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

॥ प. प. ॥ दिनचउत्थदीवानबुल्लिरघुप ।
 तियपुरोहित । अरुचारनअनंदभट्टपर
 तापदुद्धवित । चारिलकवनिजचलनद
 म्भारवजूरसंगदिय ॥ हयबरइक हजारदो
 यदसमन्तेदंतिय । सिरुपावउच्चदादसस
 हंसकतिविधिपूरवनसंगकिय । मंगनन
 भागधनपतिमनहुँदैन त्यागइमहुकमदि
 य ॥ १ ॥ दिनपंचमदुसमृपनसजियचीतो
 रसमागम । पिकरव्यो दुगासुप्रथितसमरज
 हुँदुवअकबरसम । पुसिमदिनकरिगोहि
 फागकोतुककिल्हापर ॥ होरियउच्चवडा
 निबहुरिअयेयत्तनवर । अतित्यागउऊ
 लसुनिसुनिसुजस हरविरानजयसिंह
 जिय । विधिउचितपुज्जिबरवरनिहविर
 हिरससुंदियसिक्कसदिय ॥ २ ॥ चलिब

रातप्रतिपंथभीमकरजोरिभ्रातधुर। कोटा
 प्रतिकियसिकवअण्यअण्यउबुंदीपुर। दि
 यमिलानसबसेनजैतसागरतडागतद॥
 दइवजोगनिरसमयअणिलगियाडेरन
 पट। सरसेतुमध्यगृहपिहितइकभजिरुत
 त्यबरबरनिरहि। हुवचारहसमडेरनसहि
 तमनुजतुरंगहुकहुकदहि॥ ३ ॥ इहिंदा
 रुनउतयातदानसतदोयसविधिय। सु
 इसमयनिजनगरद्वारउत्तरप्रबेसकिय।
 पुरजनमंगलपुत्रबिबिधउच्छाहबधारे॥
 हट्टाचत्वरचोकसउधप्राकारसिंगारे। दिधि
 निगमसाधिबरबरनियमनीराजितगृहग
 मनकिय। कहुदिननअंतजवनेसकेचर
 नअण्यफरमानदिय॥ ४ ॥ दिहिय
 तिअवरंगतपतइकअतीनदिस। दकि

नदह्वनकाजचडिगअतिबलअतीवरि
 सा। पहिलेरेवापारनामनिजनगरबसायो
 बहुलवरसरहितत्यकबुकअरिअमलउ
 थायो॥ हाजरिसमस्तहिंदुवतुरकजीनअ
 वरदिसमुकल्यो। तुरकानतहरजालमज
 हरलोपिलहरकाहुनऊल्यो॥ ५॥ दो०॥
 कावलसखाकालबसि। सुनिअनिरुद्धज
 हर॥ अवरसेवनअंतरसमुक्तिबुल्लियबुद्ध
 हजर॥ ६॥ अहदीतवअवरंगकेअतिज
 वहुंदियआय॥ सिरधरिसाहनबंदगीचल
 हुकहोहितआय॥ ७॥ जायसमुखफर
 मानकेकरिसलामलियोलि॥ उफज्योच
 लनप्रपंचअब। देनहुकमकोपेलि॥ ८॥
 सुनिकरगारपरिकरसबहि। मिलिइकत
 कियमंत॥ स्वामिबालसेवाकठिन। अलो

चहुमतिअंत॥ ६ ॥ इहिअंतरअवरंग
सुत। जेरोअलमसाह॥ बंदीगृहतैकहि
चल्यो। चित्तिआगराचाह॥ १० ॥ फद्धति
का॥ हुवपुत्रपंचअवरंगधाम। सुलतानमु
हुम्मदप्रथमजाम॥ सुतदूजोअलमसाह
एह। सुततीजोआजमपितुसनेह॥ ११ ॥
सुतचोथोअकबरनामधार। हुवकामबरब
सपंचमकुमार॥ जेरेसुतद्वैमनकरिउदास।
बंदीगृहदारेबिसमबास॥ १२ ॥ सुलतान
मुहुम्मदमरियतत्य। अलमबच्योसुआ
युहिसमत्य॥ याकेहुपुत्रहुवप्रथमचारि।
आयेबयजुबनकेदडारि॥ १३ ॥ केदहि
मैयायेपलितकेस। अपमानितदीनहुसो
बिसेस॥ बरसावधिपावैदगलइक्क। परि
हुसहदहैजकारुलिक्क॥ १४ ॥ नहिबप

६

नन्हाननहिअसनदृष्ट। जृकानजनितस
 हियतअरिष्ट॥ इकसमयदुक्खअरजीक
 राय। जोमहरनयोमिलिदगलजाय॥ १५॥
 अवरंगहुकमपठयोअनेह। उलटाकरिथा
 रहुदगलएह॥ इकसमयमित्योसरदावि
 सारि। तिहिंछेदनहुरिकाहितउचारि॥
 १६॥ पुनिकहियसाहभरिकोपभार। सि
 रसैदौ फोरहु नहि हथ्यार॥ इमकुपितसा
 हसुतसीसअहि। इकसमयसभासोंकहि
 यचाहि॥ १७॥ जोमिलहिं हमारेहुकम
 अज। तोपावहिअजमसाहराज॥ जो
 मिलहिंरुदाकेहुकमपाय। लहिहैंतोअ
 लामसाहअय॥ १८॥ सुनतहिइमअ
 जासकहियएहु। वंदीगृहबासीमोहिदेहु
 ॥ यहसुनतसाहहियबढिबिरवाद। कोषारु

नञ्चाजमप्रतिजगाद॥ १६ ॥ सुतज्येषु
ममायसधरतसीस। वहकैदीअरुतुमतरव
तईस॥ यहकहिबुलायआलमउदास। नि
कस्योतजिकारागहनिवास॥ २० ॥ करिणु
सलबपनमंजुलकराय। अतिदिव्यवसन
धरि आमआय॥ लखिसाहचिप्रहि
यसौलपेटि। बुजदुवगहिलीनोभुजनभेटि
॥ २१ ॥ चिरकालकंठगदगदबढात। दुव
घाहुवअशुनअधिकपात॥ तहंदियउरी
फिअवरंगसाह। अकबरपुरसूबाजुतउच्चा
ह॥ २२ ॥ बारहहजारमनसुबलिखाय।
दियसीखआगराहितबढाय॥ लहिसीख
चलनमनकरिविचार। झुतचदिगसाहआ
लमकुमार॥ २३ ॥ रेवाउलंधिअतिदल
अमान। पुरआयअवंतीदियमिलान ॥

अय्यो अय्यंति सुवापधारि । कलु कामपीर
 अय्यंति उच्चारि ॥ २४ ॥ दुलं कैदजोगवहर
 हियसेस । अय्य करिय अय्य पूरन सुदेस ॥ रंवेरा
 तलं दिवसु विविधनाम । कमिमगग अय्य
 रापुरजगाम ॥ २५ ॥ नृप विष्णु सिंह अय्य
 रनाथ । निज बंस सुभद हरि सिंह साथ ॥ अ
 वरं लहु कमजो लहि जहर । दुव अय्य साह
 अलमहजूर ॥ २६ ॥ दो ॥ अय्यो इक अ
 वरं को । सीम समीप बिचारि ॥ विष्णु सिंह
 नृप सौं लहु कम । दुव भारन जटवारि ॥ २७ ॥
 विष्णु सिंह नृप सुभद निज । लिय हरि सिंह
 तुलाय ॥ किय उबिहा जटवारि पर । संगरसे
 नसेन पयाय ॥ २८ ॥ प. प. ॥ हरिय सिंह क
 ह्वाह जाय जटवारि बिटिलिय । बहुजहु
 न सिर कहिरव नितर वहुन प्रविष्ट किय ।

वहलंबापुरनाथवंसरंगारसंगसजि॥से
 वनअलमसाहआयकूरमनरेसरजि।दे
 दलमिलानजमुनापुलिनसंचरिआसस
 लामकरि।हरिसिंहसहितठडूमिसलरचि
 अंजलिआदाबधरि॥ २६ ॥ दो० ॥ हरिसिं
 हहिंअलमदये।रीमिखिलतहयराय॥
 कूरमपतिकेकथनकरि।जहकदनहित
 लाय॥ २७ ॥ इमअलमकाढकेदसन।
 अकबरपुरद्रुतआय॥ कूरमनिजताबीन
 करि।वासरकबुकबिहाय॥ २८ ॥ यहउ
 दंतभटसचिवसुनि।नृपहिंअलयबयजा
 नि॥अरुदकिवनअवरंगको।सेवनदूरप्र
 मानि॥ २९ ॥ अलमप्रतिपुरआगरा।पठ
 ईअरजलिराय॥लेहुहमहिंकहिसाह
 सों।निजसेवनमनलाय॥ ३० ॥ इतिश्री

शैशवालस्ये महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायनेन व
राशौ बुधसिंहचरित्रे चतुर्थे मयूरः ॥ ४ ॥

उक्तं ब्रह्म ॥ यद्वा हे बिनती सुनिश्चालमत्तत्ता
येता प्रतिदैश्चरजीलिखितं ॥ इहानृप
हरमज्योमतभाव ॥ रहैममसंगहिबुंदियरा

व ॥ ५ ॥ यद्वा हे सुनिसाहयगयनिदेस

मसंगहिबुद्धनरेस ॥ दयोतबश्चालमपत्त
यथाय ॥ स्वसंगबलापतिबुद्धबुलाय ॥ ६ ॥

भयोदलबन्धिसमस्तनमोद ॥ बन्धोलखि
लग्नप्रयानविनोद ॥ दयेबहुदानवि

रीति ॥ प्रवासिनहेयतजेनयनीति ॥ ७ ॥

मनीकुलदेवियपूजनमोद ॥ नयेहरियाय
नलेचरनोद ॥ कियेसविधानप्रवासिकुल

र्म ॥ लखेसुभसाकुनलग्नसधर्म ॥ ८ ॥ किले

मतसंनिनश्चायसश्चपि ॥ इहांगृहराजनि

बाहनथपि ॥ दयेतिन्हग्रामपटागजबा
 जि।दयोभुजभारविचारविराजि ॥ ९ ॥
 सजीतबबुद्धबलापतिसेन।दिपैँमहत्तारक
 अण्णहिजेन ॥ रहेनिजअललयसोदरजोध
 ।चल्योदलहीतप्रभंजनरोध ॥ १० ॥ खु
 लेउडिकुंभिनकंधनिसान।तिरोहितद्वैर
 विरेणुबितान ॥ हरोलनहाकनकीबनबो
 ह।बडेगजअँचतलंगरलोह ॥ ११ ॥ रहीरु
 किपीतपताकनपंति।मरातबमाहियभा
 सिगभंति ॥ अकबरपुत्रदयोल्हिकाज।
 बज्योवहराजतदुंदुभिराज ॥ १२ ॥ मलंग
 तफांदतुरंगनजूह।चलेउडिनोबतिनाददु
 रुह ॥ चल्योदरकूँचनयैँचहुवान।दयेम
 थुरापुरजायमिलान ॥ १३ ॥ दर्इसत्तइक
 सअष्टकगाय।समानहिहाटकहूनमिलाय

॥ विधीरितयों बहुधा करि दत्त । अकबर प
 तन अयाय प्रपत्त ॥ १४ ॥ मिले क्रम अलम
 साह हज्जर । कियो सनमान कद्यो हित पूर ॥
 हन्यो हम कृपा अवतियजेन । रह्यो तुम रोह
 यमै हकलेन ॥ १५ ॥ कौं पलटा हम हूत सम
 त । लहो हम कूं मजिरि दिन ब्रात ॥ करी सुनि
 यों अरजी नरनाह । मली करि है सब ज्यान पना
 ह ॥ १६ ॥ परसरभीति उमै सनमान । रहे हम
 कूरम अच हुवान ॥ उहाँ दिन बित्तत के अव
 रंग । सुनी सुत अलम किन्ति अभंग ॥ १७ ॥
 इते बिच सौर सुन्यो सुलतान । बढे सिखलु
 पत साहन अ्यान ॥ तबै सुत अलम कौं जव
 नैस । दई सुलतान संहारि सुपेस ॥ १८ ॥
 यहे सुनि अयाय स अलम साह । सजे दलहिं
 दुव मिच्छ सिपाह ॥ भयो विधि सौं चतुरंग

प्रयान । गये दरकुंचधरामुलतान ॥ १९ ॥
 कुविग्रहमेतिरचो नयराज । भजे सिखति
 तिरिज्योँडरबाज ॥ दफै करि देस प्रजादुरव
 दंद । रहै इय आलमतत्थ अपनंद ॥ २० ॥ र
 चैँदुवभूपनसौँ अति प्रीति । सबै दलकौँ सुरव
 आदरनीति ॥ करै दिनइ कनदी जलकेलि ।
 चले चढि नाव प्रवाहनपेलि ॥ २१ ॥ रज्जु
 वभूपतिसेवनलार । सजैँ जलकुफुट बेधिसि
 कार ॥ कही तँहँ करमसौँ सुतसाह । करो हम
 सौँ दुहितानिज ब्याह ॥ २२ ॥ कही तब कू
 रमयोँ कर जोरि । बँनैँ दुहिता जब होय बहोरि
 ॥ सुताइ कहि सुतो करि नेम । दई बुधसिं
 हहिँ पुबक प्रेम ॥ २३ ॥ कही बुधसिंहहिँ
 आलमतत्त । करी तुमसौँ इन ब्याहन बत्त ॥
 कही तब बुँदिय राव सहास । कही इन जोरु

भईकथतास ॥ २४ ॥ यहैसुनिजंपिगऱ्या
 लमसाह । तलोहमहीकरिहैं तवव्याह ॥ क
 रोसुनियो बुधसिंहसलाम । कह्यो निजब्या
 अरहै सिरकाम ॥ २५ ॥ यहैसकचोवनस
 चह १७५४ साल । नईकथव्याहवनीबसिका
 ल ॥ भईनयदादसहायनबुद्ध । सजैरुरली
 नयसायनसुद्ध ॥ २६ ॥ दयो लखिबुद्धहिं
 बीरसिमाह । परगानदोंकसुअलमसाह ॥
 कहीतवयो करिबुद्धसलाम । लह्यो पुरदोंक
 बढ्यो समनाम ॥ २७ ॥ परंतुकह्यो हमरो
 हकसेस । तलो करिये पुरपहनिषेस ॥ गईय
 हपहनिपूरबकाल । बढ्यो जबजहन बैरक
 राल ॥ २८ ॥ सुनीअवरंगदुरखूनपुकार । कि
 योसुतअजमको सुलतार ॥ दयेसंगहुंदिय
 तैअनिरुद्ध । बढ्यो समयोधुनगौरिप्रबुद्ध ॥

२६ ॥ रहेतिहिं कारनदेदिनगेह । नकाबलये
 पहुंचेतियनेह ॥ भईतुरसीइहिंकारनआय ।
 समासरबेदहसत्रह १७४५ पाय ॥ ३० ॥ ल
 इतबपहनिसाहउतारि । दईनृपरायहिं काम
 बिचारि ॥ छुटीतबकीअबसेवनपाय । दई
 इनआयसलाहमंगाय ॥ ३१ ॥ जम्योनिजदों
 कपरगनराज । बच्योमहंदीपुरइकअकाज
 ॥ लरेमहंदीपुरकेकछवाह । तजीसुरतानधि
 नातिनराह ॥ ३२ ॥ भईमहंदीपुरतोपनभा
 र । लयेसबजीति कियोगद्वार ॥ रज्जुइपदों
 कजिलाकरषाय । रहैमुलतानसुबुंदियरा
 य ॥ ३३ ॥ दो० ॥ दुदभूपनकोबरसइकाग
 योरहतमुलतान ॥ सेवतआलमसाहकों ।
 इमकूरमचहुवान ॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभा
 स्करेमहान्यपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौ

बुधसिंहचरित्रे पंचमो ५ मयूरवः ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दो० ॥ इकनबाब अमीरखाँ । अगै कहि
 अवरंग ॥ अयोदै भुजभारनिज । सूबाकाब
 लसंग ॥ १ ॥ तोटकसू ॥ इतनै वहरवान अ
 मीरमखो । अवरंग यहै सुनिसोक पखो ॥ क
 हिसाह अमीरखो जितनै हम भोगलहे अब
 दुकरवयनै ॥ २०२ ॥ लहिकाबलसाह यहै स
 मयो । उतदिल्लिय राजसुद बिलयो ॥ तबसा
 हहियेत सधान बसी । धरकाबल आलमको
 बखसी ॥ ३ ॥ इनहु मुलतान जमाय जिला
 । लिय काबल कासकमान चिला ॥ रूतुसार
 दवारदन छमये । सरिता समि पद्धति पंकग
 ये ॥ ४ ॥ सरवानतुरंगम १७५५ इक समा
 । सुतसाह चढयो इसकास अमा ॥ अति आ

रवभेरिनकेगरजें । पविपातकिपबयदैदरजें
 ॥ ५ ॥ खुलिदण्डपताकनपंतिलसी । रसना
 जनुकालियकीनिकसी ॥ बढिकोसनफोज
 हरोलचली । बहुजंगउछाहसिपाहबली ॥
 ६ ॥ बहुबानरुक्रमसंगचलें । बरबीरपठा
 नगुमानकलें ॥ मनमेंबलमोदरजरुनमें । उ
 रगतसदागतिसेलनमें ॥ ७ ॥ धनुपहिस
 खेदकरवगकलें । बपुहानहियेतनमानब
 सैं ॥ इमहिंदुवमिच्छचलेनकौं । छविनिंदत
 भहवकेधनकौं ॥ ८ ॥ सननंकियप्रोधनव
 तबहैं । हननंकियहींसदिगीसदहैं ॥ रननं
 कियकोचकरीकरकैं । फननंकियनागफटा
 लरकैं ॥ ९ ॥ गननंकियगोनधराधमकैं
 छननंकियनेउरहैछमकैं ॥ रुननंकियप
 कवरभारभिरैं । रवननंकियनालनश्मि

रिखै ॥ १० ॥ ठननंकियकुंभिनघंटघसैं।
 भननंकियभेरियहरहसैं ॥ बजिअरबअर
 बकूहचली। बहुभांतिअनीकरमैंरबुरली ॥
 ॥ ११ ॥ भटकेकप्रिभागनदावअरै। कमने
 तबिहंगनबेधकरै ॥ ऊपटायतुरंगनबाहब
 रै ॥ अरिमगाउदगाकितेविरै ॥ १२ ॥ भट
 केकबंदूकनलच्छयलहै। बहुबारकटारगहा
 निबहै ॥ करटीननवीनधटाबहुधा। बरबी
 नअनीनअकासमुधा ॥ १३ ॥ खुरतालन
 रेहबितानजुर्यो। नदतालनपंकिलनीर
 युर्यो ॥ हुलसेइमकाबलकीधरै ॥ हलअ
 लमकेजयसंगरै ॥ १४ ॥ ष० पं० ॥ अटक
 सरितउल्लंघिकटकअलमबद्धिधायो। का
 बलपतिप्रतिपन्नप्रथमलिखवायपढायो।
 मरतहिरवाँनउमीरछिद्रतुमतकतनिहायो।

॥ दिल्लियथांनांखंडिअमलअपनउपचा
 खो। अबछोरिपहुमिअवरंगकीकरनजो
 रिलगाहुचरन। दिल्लीससेनजानहुहुसह
 इकइकलकवनलरन॥ १५॥ काबल
 पतिदलबंदि समयबलवानसोधिमति
 रहिअपुननिजगेहसेनयहयोआलमप्र
 ति। आयसेनअतिबेगभिरनतुरकनम
 नवडे॥ लटाबधअभिधानअद्रिभांटा
 रुकिठडे। इतउमंगिसाहआलमचमूसी
 मासंगरसज्जहुव। तिनदिननभालदिल्ली
 सवैबिधिमंड्योजयपत्तधुव॥ १६॥ इत
 तोपनचुरिपंतिइकतोपनउत्तरकैलें। इत
 परिमितआहारइकबकरउतचकैलें। इत
 लारवनबहुरंगउतसुअयुतहिइकरंगी॥
 इतबलबुद्धिअपारउतसुबधुजीरअभंगी।

दिक्षियसुहागइतभारपरिउतगरलगीग
 ज्ञनिय।दुवदलनजुद्धजालमजुरिगपरि
 गरीरपातकिपविय॥ १७ ॥ गिरिनचूरहय
 रवुरनमग्गउच्चटधरपद्धर।खुंदिकमठरबुष्प
 रियउरगफनमालथरत्थर।दिकपालनउर
 संककंकगिद्धन परबज्जैगहकिचिल्लगोमायु
 भारभीरुनगनभज्जै।दुवदलनबीरवत्थ
 नबिलगिमनहुमित्रचिरकालमिलि।वि
 धिच्यारिहेतिउडुतविसमधारनधारप्रहार
 मिलि॥ १८ ॥ बजिआयुधरनरीठफूटिह
 नपल्लुहुँ।कवचखंडअसिकरकितर।
 किअंत्रावलितुहुँ।सरनसोकसननंकिपर
 तजरिदंडपताकिन॥ सुकतबीरधनधायम
 नहुँपामरमदबाकिन।इमविरचिमुक्तआ
 युधकलहअवअमुक्तगहिदोरिहय।करि

हल्लदुदलगिरिसिरचढि। जुरिजुरिजंपत
जयतिजय॥ १६ ॥ दो० ॥ बुंदियपति।
अमैरपति। दड्डुहयअसवार॥ अलमग
जअरुहिरह्यो। उत्तरिअवरअपार॥ २० ॥
उतइतनैनहिं बढिसके। तउतनैनहिंक
म॥ इक्कपहरवहगिरिरह्यो। बाजीगरको
दम्म॥ २१ ॥ ष० प० ॥ तबदुवदिसतजिह
यनचढिगगिरिसिरवरमहाभट। कहिकरी
मरवतुरकहोतहरिहरहिंदुनरट। बुद्धनृपति
कोबंधुराजसिंहहकुलजायो॥ नामसुअनु
पमसिंहतबहिमधुसुवनचलायो। दसस
हंससेननिजसंगकरिनृपपिल्ल्यो गिरिबि
कटपर। मिलिबत्थलुत्थिकटिकटिपरतम
नहुबिबंधवबंधियर॥ २२ ॥ दो० ॥ बुं
दियदलअमैरदल। पबयचढिगगिरिसाय

॥ कलहभिरेमतकाबली। उततैवविश्रुति
 काय ॥ २३ ॥ षष्प० ॥ पहरइकदिनसेस
 बहुरिआलमदलपिह्यो। दुदिसबोहबकि
 लोहबीरबत्यनबलदिल्यो। उडतफुहिना
 गोदयंत्रजावकसमलोहित॥ धपिधावत
 विनुमत्यहोतअच्छरिगनमोहित। बाहु
 लसिररुक्कंकटकटकटतफरतमुंडभेजनभर
 कि। रिवलरिवलतभि तजुगिनिजदिय
 किलकिलातकालियकरकि ॥ २४ ॥ घ
 दियदोयदिनरहतजोरदिलियदलजि
 त्यो। कल्यो कटककाबलिय विसामप्रल
 यानलबित्यो। गोपीनाथवतंसपर्योअ
 नुषममधुनंदन॥ माधवहरगुम्मानदोयह
 हनिदुजन। इत्यादिबहुतआलमचमू
 पक्षयपरकटिकटिपरिय। करितत्यबहुरि

अण्णनअमलकाबलदलहनिविजयि
 य ॥ २५ ॥ इमअलमलहि विजयसीम
 काबलकरिपद्दर। विष्णु सिंहबुधसिंह
 सहितरहितहैं बहुबच्छर। सुनि सुतको
 जयसुजससाहअवरंगसुखकिन्नो ॥ ना
 मबहादुरसाहरीमिअलमकहैं दिन्नो।
 इमजीतिबहादुरसाहवहरमिकाबल
 सवारह्यो। चदवानबहुरिक्करमइनहुप्रेम
 परसपरनिबह्यो ॥ २६ ॥ खट्खटपंचहय
 इक १७ ५६ सालआगमसक विक्रम। सु
 किजुबनकबुललकबुधभूपतिवयउत्तम
 बुंदियतैं बुलवायअण्णअंतहपुरलिन्ना
 ॥ साहबहादुरसंगजंगजित्तनजसकिन्नो
 मुलतानसतासगपनमयोतबतैं नृपण
 मेरपति। बुधसिंहहितुमंडतविनयगिन

तरिद्धजामातगति ॥ २७ ॥ दो० ॥ रवर
 वकबंधसुताहुयह । व्याहोपूरवकाल ॥
 संततित्रिक किंभयो । तुंढाहरधरपाल
 ॥ २८ ॥ पुष्यप्रसवपुत्रियप्रकटि । नामसु
 अमरकमारि ॥ जयसिंहसुदूजेप्रसवती
 जेविजयविचारि ॥ २९ ॥ कन्याअरुपह
 प्रकुमर । अंतरहायन नि ॥ नृपआयसदो
 ऊरहत । पुरआमैरप्रवीन ॥ ३० ॥ विजय
 सिंहलघुपुत्रअरु । कबुपातुरिगनसंग ॥
 इमकाबलआमैरपति । रहतबुद्धरसरंग ॥
 ३१ ॥ इतिश्रीवंशाभास्करेमहाचंपूस्वरूपे
 दक्षिणायनेनवभराशौ बुधसिंहचरित्रेष
 षोमयूरवः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
 ष०प० ॥ प्रीतिस्वसुरजामातसाल मिप

मंडतअति। गृहविधिदुवअवनीसजात
 आवतदेरनअति। कूरमपतिकेसंगपानआ
 सवनृपलण्णो॥ नञ्चनबादनगानमानता
 नमनपण्णो। जिनदिननपातसाहनस
 भाजातनसायुधइकजन। लेजातसबहि
 केवलफलकबिबुबुंदियहिंदुवजवन॥ १
 ॥ अगौअकबरबेररावसुरजनयहरकबी
 कसिकटारइहिंहेतुरहेबुधसिंहसमकबी।
 बसुसायकहयइंदु १७५८ जेठश्रीखमरनर
 तो॥ साहबहादुरधामआमअवसरनृपप
 तो। जवनिकाद्वारलंछेजुगलतीजेद्वारस
 मीपभुव। पहुँचतनरेसबुधसिं प्रतिजवन
 इकमहमेरहुव॥ २ ॥ वहेजवनअर्थाः। इय
 साहआलमकोकिंकर। सहसाभिरनप्रसं
 गवक्योअप्रियकुवादपर। रनिकुबैनसंभ

रियकुणिमारीयकलारिय॥ कालखंजहि
यचकिवअथपपहुंरीअनियारिय। रीठ
कबिदारिनिकसीचुवतमनहुंविज्जुमानि
कबमत। कैलियसहीयपरकीयकोवाता
यनकरजावरत॥ ३ ॥ पटवेएकप्राका
रअथुतहत्थनचतुरायत। सातफेरसंभु
दितसिन्नतोरनवनिचायत। छतबिछाति
कुंकुमियनीरजलजंजननचै॥ उड्डिउसीर
अमोदरागगायकबहुरजै। मोहतगुला
बमल्लियमहकिइंद्रविभवसोहतअजव।
दिह्मीससुवनजहंथितमुदिततहंनृपय
हडारियराजव॥ ४ ॥ जहंजमीनजीज
ननसेनसंकुलिनहिंसुज्जत। तीनसहंस
लुक्खारपरिधिचोकिथबाहिबुज्जत। सहं
सतोपसावातजालचहुंदिसजंजीरित॥

मंडनकेतुपेटपौनःकंदतपथपीरित। अस
 वारअहो निसपंचसतप्रतितोरनजामिकर
 हिग। बुंदियनरेसबुधसिंहकीतंहं प्रकुपि
 पहिसबहिग ॥ ५ ॥ चूकचूकचूहं कोद
 कूककडूतकटारपरि। बहतभीरुचलदिच
 लगिरततुरकानगरबगरि। मारिजवनदुम
 रावचुवतपहिसधकिठडो ॥ साहबहादुर
 संकगंजिचाहतरनगडो। सुतसाहहिंतुभा
 रीसबनअनिअरजउपरअरज। कुणप
 हिसदोसअलमकह्योगुनहअपिहेरिय
 गरज ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कहिअलमसाग
 सहन्यो। नहिबुंदियपतिदोस ॥ रत्नक
 इलाहीकुबचसुनि। कोनहिरंगतरोस ॥
 ७ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ इन्द्रकजा ॥ अथौर
 जिरेवमप्रविचार्यकृत्यमुन्दीन्द्रमाहय

समक्षमाशु ॥ अश्वारथनीचाऽनुजनिं द्वि
गीषुर्हिस्त्रीभरमूपभुजे बबन्ध ॥ ८ ॥ शा
लिनी ॥ भोजान्धारं रत्नसेवान्तथैवन्दिल्ली
शत्रं शत्रुशल्यञ्चभावम् ॥ कृष्णञ्चदाऽव
न्तिकाभ्रासमृत्सुंस्मृत्योरङ्गिः शुद्धभावन्द
धार ॥ ९ ॥ आ० मि० ॥ दो० ॥ यहउदंत
दिसदिसउडिग । जसबुंदियपतिजगि ॥
इसकाबलसूलाश्रवनि । लगनस्वामिमह
लगि ॥ १० ॥ कूरमपतिकीलधुकुमर ।
विजयसिंहरुचिरंग ॥ जावतअवसरआ
मके । स्वजनकजाभियसंग ॥ ११ ॥ बाल
बेसकोतुकबिरचि । लगिछोनियकछुला
ह ॥ पृथकपायहिंदोनपुर । सेवतआलम
साह ॥ १२ ॥ कूरमपतितत्यहिमरिय ।
लधुसुतरहियसमीप ॥ पहलहियजयसिं

हनृपपुरप्रामैरप्रदीप ॥ १३ ॥ हरिगीत
 म् ॥ लहिपहनृपजयसिंहयो बयप्रब्दहा
 दशमैतहो । भदमंत्रिबर्गबुलायकै कहिको
 नमंत्रप्रवैयहो ॥ करिकै समस्तनमंत्रभा
 रियकालदेसप्रमानिये । अवरंगसाहस
 मीपसेवनमै सबै सुखजानिये ॥ १४ ॥ यह
 प्यिकै जयसिंहलै दलदेसदक्खिनको ग
 यो । दरगाहसाहसलामकै मिलथानप्रण
 नपैग्यो ॥ बुलवायसाहसमीपप्रोदुबह
 त्यअंजलिसंग्रह्यो । करिहै कहाअबजेरतू
 इमब्याजको पितद्वै कह्यो ॥ १५ ॥ जयसिं
 हयहसुनि उच्चर्यो ममभागअजउदोतुहै
 करइकथं भतसाहजोनरसर्वउपरहोतुहै
 ॥ अवरंगयहसुनि मोदमनिरुखोरिआय
 सप्रणयो । नृपमानके कुलमानसो जयसिं

भूपतिहृभयो ॥ १६ ॥ बयबालअरुबच
 द्दत्तो नृपमानसो हुसिवाय है । यहसिवा
 ईजयसिंहनृपअबनामएहकहाय है ॥
 यह बन्तअंकरुवानसतरुइकसंवत
 १७५६ मैमईपहुमीसइकहिंरत्तअवक
 छुहोतजातनईनई ॥ १७ ॥ दो० ॥ हिंदु
 नकीपहुमीप्रिया । भोगीतुरकनअथाय । ज
 हांगीरजारहिंमरत । रतिरसअवनअथाय
 ॥ १८ ॥ कछुअवरंगदुतरुनपन । भोगीस
 कतिनिहारि ॥ अबयहजरजईफभो ।
 नित्यनईयहनारि ॥ १९ ॥ ष० प० ॥ सर
 ससिहयइक १७१५ सालभातदाराहनि
 जिहो । जित्तिधोलपुरसमरतरबतअवरं
 गबइहो । बसुरुबेदमितबरसपातसाहीनि
 रबाही । गुनखटहयससि १७ ६३ सालअ

यप्रबसमयइलाही। इकदिनबुलायसुत
 आजमहिंकरिरहस्यप्रवरंगकहि। जंपतनि
 माजममसिरप्रलगकरहुपुत्रतरवारिगहि
 ॥ २० ॥ दो० ॥ भुगिजराबयसाहप्रबाल
 योमृत्युनिजजोय॥ जान्योदिलरबमैरहैजो
 निमाजबधहोय॥ २१ ॥ म० प० ॥ सुनिआ
 जमयहसकुचिबत्तमनसोधिविचारिय।
 इहिउद्यमसंधानहोतसंदेहजियनहिय।
 कहतसाहकबुप्रैकरतकबु॥ दु० ॥ सय
 ॥ यहदृढकरिउच्चरियहोयमोसौनयहैनय।
 जोचहतप्रपममसुरवजनकृतोयहहुकम
 प्रलीककरि। दिल्लियसमेतप्रकबनगर
 सूबाप्रपहुमहरधरि॥ २२ ॥ दो० ॥ सुन
 साहप्रवरंगइम। प्रियसुतआजमहैन॥
 प्रकवरपुरदिल्लियप्रपि। सूबासुनप्रजसे

न॥ २३ ॥ ष० प० ॥ कियञ्चाजमयहमंत्रसा
 हपरिहैअबजीमन। मैदिलियपुरजायबे
 दिगदियप्रपंचपन। साहबहादुरसुतअजी
 मसंजुलहनि संगर ॥ कामवरनसपुनिअनु
 जमारिदुकछनतपौंधर। यहसौचिसीरबदि
 स्त्रियलई। अजमउचितअनीकसजि। च
 दिचलियचाहिगदियगरज। तबअवरंगा
 बादतजि ॥ २४ ॥ साहबहादुरसुतअजी
 मअभिधाननेकनर। पूरवपुरपदनांसुरहत
 अवरंगहुकमवर। कछुककाजतिनदिनन
 सहबुल्लोअजीमवह ॥ वंचिपितामहपत्र
 चल्थोदकिवनदरकुंरह। रवटमिजलरकिव
 अलकरनगरमैनपुरीसुअजीमरहि। उतम
 मयपायअजमचल्थोदिस्त्रियप्रायससा
 हलहि ॥ २५ ॥ प्रथमसाहकैपुनमयोसुर

तानमुहुम्मद । काराग्रहसंकटियमस्योदुरव
 पायमितंबद । दूजोअलममाहसोहुकारा
 एहडास्यो ॥ जबअजमजच्चोसुतवहिहुत
 साहनिकार्यो ॥ अजमयहेसुतीजोतनयता
 हिसाहहितकरिचहैं । सुतकामवरवसदा
 योसुपैसाहहुकमअतिनिबहैं ॥ २६ ॥ तुर
 कनकैंनहिंवरनअवधिचंडालइकलव । का
 मवरवसयहकुमरभयोगशिकापिचंडभव ।
 याहिसाहकरिरीरुधरादकिवनसबाधुर ॥
 भागनगरअप्योरुबहुरिदिनोबीजापुर । पंच
 मोंपुत्रअकवरप्रकटिअतिजुबनउद्धतव
 ह्यो । परघरनतकिमंडतअनयकुपिसाहव
 ध्यहिकह्यो ॥ २७ ॥ दो० ॥ अकवरमारकुज
 नकमुनि । भजिमारगधरअप्य ॥ रद्धोरिनहकि
 रक्खयउ । पुनिभयगयउपलाय ॥ २८ ॥ ॥

इति श्रीवंशाभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणा
यले नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे सममो ७ म
यूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
गी० भा० ॥ अतुष्टुलुगमविपुला ॥ सिंहाव
लोकिनीयाथा । प्रवर्धेषु प्रवर्धते ॥ योज
नीयोऽन्वयो वाक्य महावाक्यावसानयोः
॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अथ तथा कथ
यामि न कोप्यऽभूज्जगतिशाहनिदेशपरा
यूरवः ॥ स्वशरणं सचिचार्ययथामनागक
वरोगतवानपि धन्वनि ॥ २ ॥ प्रा० मि० ॥
फहलिका ॥ अथै० नरेसजसवंतनाम । उज्जै
नर्जगतजिभजिगधाम ॥ हवजनकरुहि
अवरंगसाह । तबजाययंदमंग्योगुनाह ॥
३ ॥ खजुवापुरसंगरसाहकीन । रुजाभ

जायनिजभ्रातदीन ॥ तत्पुत्रकबंधतजिस्वामि
 प्रीति। अवरंगहसमलुहियप्रनीति ॥ ४ ॥ ध
 नकोसजयाननलूटगानि। मरुधरमजिअ
 यउत्रासमानि ॥ तबसाहमरुस्थललियउ
 तारि। जसवंतनिमज्जिगविपतिवारि ॥ ५ ॥
 बहुअब्दमरुस्थलबिनुबिहाय। पुनिदुखि
 तअप्रायलगिसाहपाय ॥ सकुदुंबरचियदि
 स्त्रीनिवास। बहुकालखंचिसेवाबिसास ॥
 ६ ॥ दैसाहबहुरिधरधन्वराज। काबलधर
 पठयोत्रानकाज ॥ नहिसोहसर्धासुवासम्हा
 रिबहुकालरह्योउद्यमबिसारि ॥ ७ ॥ दिस
 बिदिसपरनदबीजमीन। सुनिअलसकोप
 पुनिमाहकीन ॥ रनवासहुतोदिल्लीसुसाह।
 अटक्योजरिफोजनइहिं गुनाह ॥ ८ ॥ इक
 रानीधारतगमअप्रास। हुवअजितसिंहजनि

जठरजाम ॥ दलसाहहवेलीफिरिदुरंत। अं
 तहपुरघेर्योनदुरवअंत ॥ ९ ॥ रानिनपहं
 पठयोहुकमसाह। सुतजन्मसुन्योनृपकेउवा
 ह ॥ सोदेहुसोंपिजोमुलकचाह। लैहैं बिसा
 सिअबवाहिंसाह ॥ १० ॥ जसवंतजोधपुर
 जोग्यनाहि। सुतदेहुभयोजोअन्नअंहि। रन
 वाससबहि। सुनियहनिदेस। उमरावबुलाये
 निजअसेस ॥ ११ ॥ आहूतसबहिरद्वार
 आया। करिमंत्रतत्तरानिनकहाय ॥ पठ्येनृ
 पकाबलदैसधाम। सोंपेनसुधारतसाहका
 म ॥ १२ ॥ सुतजोभयोसुनहिगुप्तअत्थ। अ
 वताहिसहिमंगतसमत्थ ॥ भारवतइहिदेहो
 धन्वराज। अरुकोपलखतहरसतअकाज
 ॥ १३ ॥ नतयचितनाहितुरकनबिसास। छे
 लहोनलगेबहुआसपास ॥ अबकाहिकुम

रजिहिंतिहिं उपाय। कछुचुनि जिवाबहुध
 न्वजाय ॥ १४ ॥ प्रच्छन्नजन्योऽप्यप्यनप्यप
 त्य। तसमातकहदुभोयहअसत्य ॥ तहंभ
 हियभटगोइंददाम। कापालिकबनिलिय
 कुमरपास ॥ १५ ॥ भहियरघुनाथसुपतिल
 वेर। सजिदुर्गदासरद्वारफेर ॥ एवनिसनाय
 दुवभटअमान। कुमरहिंनिकासिगयइष्ट
 यान ॥ १६ ॥ कियजंगअवरसुभटनअवे
 ह। लरिहड्डागनीतजियदेह ॥ इमभावसिंह
 भगिनीसुभाय। निरबाहिपतिव्रतस्वर्गपा
 य ॥ १७ ॥ जसवंतकुमरकसिकंददेस। ल
 हिकालक देवेबदलिबेस ॥ लिनहुनसाह
 सौंधन्वजाय। इकविप्रगेहरकव्योद्विपाय ॥
 १८ ॥ मरुधररहोनरद्वोरराज। हिजगेहकु
 मरवसिदुखदराज ॥ दिल्लीसौसाहनहुकम

पायमरुधररत्नवासहुअवरअ्याय ॥ १९ ॥
 नहिमिलतमातसुतविपतिवास।तपउग्र
 सहलअवरंगवास ॥ इहिअंतरनृपजसवं
 तअंत।बसिकालभयोकाबलवसंत ॥ २०
 जसवंतसुवनतबहुबुलाय।इनकुपितजा
 नरकरोदुराय ॥ नृपअजितसिंहजसवंत
 जाय।अच्छरहेहुमविप्रधाम ॥ २१ ॥ ग
 जसिंहजननयेहंनारसहोत।भटदुर्गदासर
 कव्योउदोत ॥ नवयुनरुसप्तद्वक १७३६अ
 व्रमान।जरचंतभूपकियदेहदान ॥ २२ ॥
 तिनदिननयहेअकबरकुमार।मरुदेसगयो
 मयसाहमार ॥ रद्वोरनहिंनअरेसमत्य ॥
 अवरंगारबूनिरकरैवसुअत्य ॥ तबतिनहुद
 योअकबरनिकारि।ईरानगयोवहबल
 निचारि ॥ अकबरसुमर्योपुरइस्पहान।सु

रहैंप्रतिइक्कबतीसजवान। परैंलंगिगोल
 ककोसप्रमान॥ ललकृतआजमकेदल
 लार। हलीइमडाकिनिदोयहजार॥ २६
 चलीगजपंचसहस्रनपंति। भयंकरकञ्ज
 लपह्वयभंति॥ लंगैमगनिद्रिकरेएनलो
 भ। डंगैडंगडाकनछकृतद्योभ॥ २७ ॥
 मरोरतसारिखिनजुत्थपमन्त। परीणतव्या
 लरिसावनरन्त॥ बडेबपुभद्रमृगादिकबं
 स। सजेगुडसाजनअंतकअंस॥ २८ ॥
 बहैंफटकारतसुंदिनव्योम। प्रभापरिपद्म
 कजुबनजोम॥ अहारतइच्छितपैनअ
 घात। जनेजलपीवनकौंघटजात॥ २९ ॥
 उडैंजिमकंदुकअंदुकपाय॥ जरेबिपदी
 नखुलेसमजाय॥ घुमावतजेसिरवीतन
 घाव। पयप्रतिमंडलअंगदपाव॥ ३० ॥

कसेमरचतूलकलापककंध। बरत्तननइ
 हवहनबंध ॥ जरीकुथजेवरजोतिचमक
 । उयोअसिताचलपैमनुअक ॥ करैपथ
 पंकिलदानप्रवाह। लगेतनतोमरचुकात
 राह ॥ सिरीमनिहाटकमंडितसीस। मनो
 अहमंडलभर्मगिरीस ॥ ३२ ॥ करैनभचा
 रनचंचलचोट। उडैफटिफेटकपाटरुको
 द ॥ यदाधनमद्वकेअनुकार। हलेगिरिजं
 गमपंचहजार ॥ ३३ ॥ जुरेहयमंपतजाम
 ललकरव। तरारननिंदतमारुतलकरव ॥ ज
 रेवरजेवरपकरवजीन। तरेगतिनीरकिमं
 डतमीन ॥ ३४ ॥ धपैधरिधोरितआदिक
 धाव। परैछितिपातुरिकीगतिथाव ॥ प्रबज्ज
 लल। सननासनपौनबलानटकेजिमयुंफ
 लगीन ॥ ३५ ॥ बनावतनालनभुमिबि

भाग । मनोगतिमप्यनमप्यतमाग ॥ उडैंग
जगाहमलंगतअच्छ । प्ररोहिगजानिअ
पाकृतपच्छ ॥ ३६ ॥ चलैनिजछाँहजऊक
तचिन्न । यलैबरघुम्परमानसमित्त ॥ पटीप
रपूरलगावतलीह । मनोमतगोतमपाठक
जीह ॥ ३७ ॥ थरकृतघुम्मतनीरकिथा
ल । फलंगतचित्रकतैबढिफाल ॥ लसैंगल
यालनमालउदोत । सुचंदनचापकिपन्नग
पोत ॥ ३८ ॥ उँहुकिनइदुतंगनअंग ।
कमाननडारतकंठकुरंग । कँहँछिपिहत्थिन
मैधपिधाव । बनेँजनुबारिदबिजुसलाव
॥ बहँछितिछेकतबत्थनघल्लि । कसीसल
कंधरअँडउरुल्लि ॥ कुसानुगजेपदकँजित
जाय । रहँलखिलोभपतंगहुपाय ॥ ४० ॥
घमंकियपकरघुगघरनह । छमंकियनेउर

भेक किमह ॥ दिसा बिदिसा बढिहिं कृत
 हेस । सजैँ जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
 ॥ दुरैँ पलटैँ कुलटा जिमिदिदि । चलैँ चर
 ज्यौँ परिपन्निय पिदि ॥ खलीनन लेहनम
 अतुरत्त । सदा जय सूचक जे जव जत्त ॥
 ४२ ॥ बनैँ चकरी सकरी बिसिखान । महा
 गति द्रोपदि के पद मान ॥ बडे तरु सारखन
 छैक डिजात । बर छिन पै उडिलंघत बा
 त ॥ ४३ ॥ भिरैँ खुर भोगिय भूमट भेर ।
 फिरैँ राज फेदन तैँ चक फेर ॥ सजेइ म आ
 जम के दल संग । तरो मय जा मल लकर व
 तुरंग ॥ ४४ ॥ क्रमेल क जुबन बेग बिसेस
 । बनैँ जिन तैँ घर देस बिदेस ॥ बजावत ग
 लन हल्ल बितंड । चलैँ धरि पबय पिदि प्र
 चंड ॥ ४५ ॥ भरेस लजे दल डेर नभार । ह

लेजुरिद्युमतसद्विहजार ॥ सजेबरवेसरबी ।
 ससहस्र । तथासकटावलितीससहस्र ॥ ४६ ॥
 जनाँननकेजनवाहनजुन । सजे ।
 सिविकारथइकप्रयुत ॥ चलीभुवडोरि
 नमप्यतफोज । उदैहुवआयप्रवीरनओ
 ज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेतिसमान
 । दिसाबिदिसाफहयनिसान ॥ सहस्र
 कपंचनकीबजलेब । चलीपृतनारचिजे
 वरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगन
 गैनाचडभुवपकरलकरलेन ॥ बिभा
 गनबंदतसत्रुनवंस । उमीरनबीरनके
 वतंस ॥ ४९ ॥ हरोलनचंडनकीबनहा
 क । करैमंगलुहनबाजिकजाक ॥ चलेइम
 दिस्त्रियपैरचिदाव । उमंगतआजमओ
 उमराव ॥ ५० ॥ दो ॥ इतआजमइस

सजिकटक । प्रभुबनि किन्नप्रयान ॥ उत्त
 आलमसुनि उज्जल्यो । सावनमुदिरसमा
 न ॥ ५१ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचं
 स्मृत्ये दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहच
 रित्रे नवमो ६ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 ७०५ ॥ आलमसाहवकीलहुते अवरंग
 निकटजिन । समयसाहअनसानपत्रलि
 रिछत्तप्रपंचिन । जलुगुटिकाबिचरकिव
 दूतकरिबेसदिगंबर ॥ काबलधरमुकलि
 यअनिअटकियरेवापर । उनमत्तहोयस
 रिताउतरिगतिसबेगकाबलगयो ॥ निद्रि
 तजगायअद्वियरजनिआलमप्रतिदल
 अणयो ॥ १ ॥ सुलोदैकगारहिंछत्रभगा
 तधुवभगी । अबनिवारिनिंदरियपिक्किव

पबयदवलगी। घरफुहाजरिफुहिफुहिहिं
 दुवमिलिआवत॥ आजमअनयसिचान
 परतदिल्लियपारावत। बंधहुप्रपंचमंडहुवि
 हितयहनबेरफिरिआयहै। बिनुजतनगये
 लवलवबहुरिदूजेकलपदिरवायहै॥ २ ॥
 निशशाणी॥ अद्दीकेधरियारपैचरफनलगा
 या। धूजिथरत्थरनाजरहैअनगोधचलाया॥
 साहबहादुरसैनसैनबरजोरजगाया। जिनकं
 धैसुखनिंदतेपरलोकपलाया॥ ३ ॥ जि
 नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अबर
 दूँहीअपपनानहिछत्रपराया॥ यैसुनिबे
 गमअपपनीकरअँचिउठाया। जाकैकंतक
 हावतेवहबासरआया॥ ४ ॥ लायसि
 लगीभकरोंतुमनिंदलुभाया। यैसुनि
 आलमजगिकैअवरोधउठाया। कुमारबै

चिप्रपंचकै बुधसिंह बुलाया । नैनमिलाया
 नेहसै सुजभार मिलाया ॥ ५ ॥ बंससता
 के बीर लूक हियों बिरुदाया । हिंदू भूपहराम
 के सब फोरि मिलाया ॥ दिल्ली के कुचकुंभपै
 कर आजम लाया । जो रजनानेजार कानहि
 जाल पचाया ॥ ६ ॥ अब तेरे सुजदंड पैर
 सबीर बढाया । बाजी मै और नर ह्यापण प्रा
 ण लगाया ॥ हारै सुगान हूर है जितै जसमा
 या । यों सुनिरा बड छाहै कै कर मुच्छ मिलाया ॥
 ७ ॥ मुद्रि सहरी संभरी रस सत्त उडाया ।
 थारि बीर उ हका हूँ चक दया ॥ ज्यों कंद
 लकन उज्ज के भट संजस जाया । कै गेरी सु
 रतान पै सजिक न्हध काया ॥ ८ ॥ ज्यों स
 थारु रजंग पै सत सत्त सुहाया । कै द्रोणाच
 ल लैन कौं कपिराज कसाया ॥ पीवन पारा

रहै प्रतिशुक्ल बतीस जवान । परै लंगिगोल
 क कोस यमान ॥ ललकत आजम केदल
 लार । हली डूमडा फिनि दोय हजार ॥ २६
 चली गज पंच सहस्र न पंति । भयंकर कछु
 लपट्य नंति ॥ लोमंग निद्रि करे एन लो
 भ । दुर्गै डग डाकन ब्रह्मत बोध ॥ २७ ॥
 मरो रत साखिन जुत्य पमत्त । परीणत व्या
 लरि सावन रत्त ॥ बडे बपु भद्र मृगादि कबं
 स । सजे गुड साजन अंत कथं स ॥ २८ ॥
 बहै फटकारत सुं डिन व्योम । प्रभापरि पश्य
 क जुबन जोम ॥ अहारत इच्छित पै न अ
 घात । जने जल पीवन कौं घट जात ॥ २९ ॥
 उडै जिम कंदुक अंडुक पाय ॥ जरे त्रिपदी
 नखुले सम जाय ॥ धुमावत जे सिर वीत न
 घाव । पथ प्रति मंडत अंग दपाव ॥ ३० ॥

कसेमखतूलकलापककंध। वरत्तननड
हवहनबंध ॥ जरीकुथजेवरजोतिचमक
। उयोअसिताचलपैमनुअक ॥ करैपथ
पंकिलदानप्रवाह। लगेतनतोमरचुकत
राह ॥ सिरीमनिहाटकमंडितसीस। मनो
अहमंडलभर्मगिरीस ॥ ३२ ॥ करैनभवा
रनचंचलचोट। उडैफटिफेटकपाटरुको
त ॥ घटाघनमहवकेअनुकार। हलेगिरिजं
गमपंचहजार ॥ ३३ ॥ जुरेहयमपतजाम
ललकरव। तरारननिंदतमारुततकरव ॥ ज
रेवरजेवरपकरवरजीन। तरोगतिनीरकिमं
इतमीन ॥ ३४ ॥ धरैधरिधोरितआदिक
धाव। परैछितिपातुरिकीगतिपाव ॥ प्रवज्ज
तलासननासनपौनबटानटकेजिमगुंफ
लगेन ॥ ३५ ॥ बनावतनालनभुमिबि

भाग । मनोगति मप्यनमप्यतमाग ॥ उदैग
जगाह मलंगत अच्य । प्ररोहिग जानि अ
पाकृत पच्य ॥ ३६ ॥ चलै निज चोह जमक
तचित्त । धलै बर घुमर मान समित्त ॥ पटीप
र पूर लगावत लीह । मनो मत गोत मपाठ क
जीह ॥ ३७ ॥ थरकत घुमर नीर किशा
ल । फलंगत चित्त कतै बढि फाल ॥ लसै गल
यालन माल उदोत । सुचंदन चाप कि पन्नग
पोत ॥ ३८ ॥ उदै मुकिन इदुतंगन अंग ।
कमान न डारत कंठ कुरंग । कहै छिपि हत्थिन
मै धपि धाव । बने जनु बारिद बिजु सलाव ॥
॥ बहै छिति छेकत बत्थन धलि । कसी सत
कंधर अँड उरुलि ॥ कुसानु गजे पट कै जित
जाय । रहै लखिलो भपतंग दुषाय ॥ ४० ॥
घमं किय पकर घुमर नह । घमं किय ने उर

भेक किमह ॥ दिसा बिदिसा बढिहिं कृत
 हेस । सजै जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
 ॥ दुरै पल दे कुलटा जिमि दिदि । चलै चर
 ज्यै परिपन्निय पिदि ॥ खलीन न लेह न मै
 अनुरत्त । सदा जय सूचक जे जव जल ॥
 ४२ ॥ बनै चकरी सकरी बिसिखान । महा
 गति द्रोपदि के पदमान ॥ बडे तरु साखन
 छै कहि जात । बर छिन पै उडिलं घत बा
 त ॥ ४३ ॥ भिरै रुर भोगिय भूमट भेर ।
 फिरै राज फेदन लै चक फेर ॥ सजे इम आ
 जम के हल संग । तरो मय जामल लफव
 तुरंग ॥ ४४ ॥ क्रमेल क जुबन बेग बिसेस
 । बनै जिन लै घर देस बिदेस ॥ बजा बल ग
 हन हल विताड । चलै धरि पबय पिदि प्र
 चंड ॥ ४५ ॥ भरे सल जे हल डेर न भार । ह

लेजुरिघुम्मतसद्विहजार ॥ सजेबरवेसरबी ।
 ससहस्र । तथासकटावलितिससहस्र ॥ ४६ ॥
 जनाँननकेजनवाहनजुत्त । सजे
 सिविकारथइकअप्रयुत्त ॥ चलीभुवडोरि
 नमप्यतफोज । उदेहुवप्रायप्रवीरनअ
 ज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेतिसमान
 । दिसाबिदिसाफहरायनिसान ॥ सहस्र
 कपंचनकीबजलेब । चलीपृतनारचिजे
 वरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगन
 गैनाछईभुवपकरलकरलेन ॥ बिभा
 गनबंदतसत्रुनबंस । उमीरनबीरनके
 वतंस ॥ ४९ ॥ हरोलनचंडनकीबनहा
 क । करैमंगलुहनबाजिकजाक ॥ चलेइम
 दिस्त्रियपैरचिदाव । उमंगलअजमअ
 उमराव ॥ ५० ॥ दो ॥ दनअजमइ

शु. बंभा-बुन्ध-आलमपासअवरंगकेमरिबेकीखबरपहुंचबो ७८ मयखः १०

सजिकटक । प्रभुबनि किन्नप्रयान ॥ उत
आलमसुनिउज्जल्यो । सावनमुदिरसमा
न ॥ ५१ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचंपू
स्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहच
रित्रे नवमो ६ मयखः ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
म० प० ॥ आलमसाहवकीलहुतेअवरंग
निकटजिन । समयसाहअवसानपत्रलि
खितप्रपंचिन । जतुगुटिकाविचरकिव
दूतकरिबेसदिगंबर ॥ काबलधरमुकल्लि
यअनिअटकियरेवापर । उनमत्तहोयस
रिताउतरिगतिसवेगकाबलगयो ॥ निद्रि
तजगायअद्वियरजनिआलमप्रतिदल
अप्ययो ॥ १ ॥ बुल्लोदेकगरहिंछत्रभया
तमुनसगी । अबनिवारिनिंदरियपिकिव

पचयदवलगी। घरफुहाजरिफुहिफुहिहिं
 दुवमिलिआवत॥ आजमअनयसिचान
 परतदिल्लियपारावत। बंधहुप्रपंचमंडहुवि
 हितयहनबेरफिरिआयहे। विनुजतनगये
 लवलवबहुदिदूजेकलपदिखायहे॥ २ ॥
 निशशाणी॥ अहीकेधरियारपैचरपत्रलगा
 या। धूजिथरत्थरनाजरूअवरोधचलाया॥
 साहबहादुरसैनसैनबरजोरजगाया। जिनकं
 धैसुखनिंदतेपरलोकपलाया॥ ३ ॥ जि
 नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अबउ
 दैंहीअप्यनानहिबत्रपराया॥ यैसुनिबे
 गमअप्यनीकरअँचिउठाया। जाकौंकंतक
 हावतेवहबासरआया॥ ४ ॥ लायसि
 लगीभकरोंतुमनिंदलुभाया। यैसुनि
 आलमजगिँकँअवरोधउठाया। कगारबँ

नि प्रयत्न के बुद्ध सिंह बुलाया नि नमिलाया
 नेह ते मुज मार मिलाया ॥ ५ ॥ वंस सता
 के वीर लूक हियो विरुदाया । हिंदू भूपहराम
 के सब फोरि मिलाया ॥ दिल्ली के कुच कुंभ पै
 क जमलाया । जो रजन बिजार कानहि
 जात पचाया ॥ ६ ॥ अब तेरे मुज दंड पै
 ल वीर बढाया । बाजी में और न ह्या पण प्रा
 दलगाया ॥ हारि मुग न हूर है जितै जस मा
 या । यो सु निरावउ छाहै के कर सुख मिलाया ॥
 ७ ॥ मुट्टि स हरी संभरी रस सल उडाया ।
 धाई वीर उ ह का ह के ह का था ॥ ज्यों के ह
 ल कल उज्ज के मट संज मजाया । कै गोरी सु
 रतान पै सजिक न्हय काया ॥ ८ ॥ ज्यों स
 मा सुर जंग पै सल सल सुहाया । कै दोरा च
 ल लैन को कपिराज कसाया ॥ पीवन पारा

वारके घटजातधुमाया । कैबनसुत्ताबिंदि
 कैमृगराजजगाया ॥ ६ ॥ कैकाकोदरचंप
 तैफनफेलबनाया । सैरकिधौसाबातमैंद
 वदुंगमिलाया ॥ जमकाश्वरवलजानिकैक
 हिपावदबाया । यौंसुनिबत्तैसंभरीभनजंग
 लगाया ॥ १० ॥ सोकसिलगासाहकाक
 हिबैनसमाया । यौसिरजोलोकंधपैसुरवश्य
 पकुमाया ॥ गद्दीज्यांनपनाहकीहमबीरसि
 वाया । धर्महरामीसेरहैकोऊनकहाया ॥ ११
 अगौंपंडवजित्तिकैकुरुबंसनसाया । राबन
 किनीरामसौं सोहीफलपाया ॥ पापनपक्की
 होनदैदलहोहुसिबाया । अँचौंआजमकंठ
 मेंधरिबापअधाया ॥ १२ ॥ यौंसुनि साहसि
 राहकैतवअमबनाया । भाबीभूलसुनायकै
 तजबीजलगाया ॥ सेनानीसंभरकियाचतु

रंगसजाया । बड़े प्रात प्रयानकौ फरमान बढा
 या ॥ १३ ॥ जंगल गारौ नदहूँ धर का बल ।
 ह्याया । सिंधू रागरन किया बढि सोर सिवाया
 ॥ डैरौ डैरौ सज्ज है नर बाजिक साया ॥ जौ लग
 तीजे जाम का धरियार बजाया ॥ १४ ॥ किंग
 जघैरौ घल्लिकै चैरौ गरदाया । काहु व्याज प्रप
 चकै बिरुदाय मिलाया ॥ अंगरु मालौ मंजि
 कै रजरंग उडाया । है है मन के मानकै संजाव
 रिलाया ॥ १५ ॥ केजल देगौ पायकै सुरब
 लोम लगाया । अंगैर किव गजीनकौ बिस
 वास बहाया ॥ ऊपि महा उलकंध पै गति बंदर
 आया । जंगी होदन मंडिकै गुडन दू बनाया ॥
 ॥ १६ ॥ घाय घस्वारी घोर ज्यौं घलि घंट मि
 लाया ॥ नापतु पक्षौं आदिकै सब हेतिस जा
 या ॥ बंधि बरतौ सज्जकै बड बाक लगाया ।

फोजों नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥
 यों कहि कंधा थपि कै रन रंग रचाया जंगी अंग
 दुकडारि कै आलान बुराया ॥ बरी बाहिर
 बाक तेर चिडा कड गाया । के कमल गों तुंग के
 धुज दंड मुकाया ॥ १८ ॥ मेघा डंबर के कसे
 सिर अंबर लाया । के कहव हों सज्ज हूँ गल
 गज्ज मचाया ॥ यों नभ अंबर अभ्र भू परिमान
 गिनाया । हत्थी आलम साह के रन राह सजा
 या ॥ १९ ॥ लकवतुर गों लेन पै बर साज ब
 नाया । देतर वली नों दोर पै नचि कंधन माया
 ॥ जंग पलानों डारि कै कसितंग मिलाया ।
 घोर घमंकी पकरवों छोनी तल छाया ॥ २० ॥
 रंग बिरंगे राहें गज गाह लगाया । छोरि दुब
 गों गान ते चर बाहिर लाया ॥ तुकि मल गों
 तुंग पै रबिरु कि लुभाया । तोप हजार तीर

कैचहकालचलाया ॥ २१ ॥ डारिदवाली
 वीरजेसजिजंगलुभाया। साहबहादुरस
 ज्जुहैअबबाहिरआया ॥ बारनपहअरो
 हिक्केफरमानलगाया। कुंचनकीबोंबुल्लिके
 हरवल्लबढाया ॥ २२ ॥ एतेमानबिहान
 काथरियारबजाया। पाथरकाबोंमडिकेच
 हिबीरचलाया। छोनिमचकीभारकेफनना
 गडगाया। चोंकेदिगजचिकरैउरकल्पभ
 याया ॥ २३ ॥ ध्यानसमाधीछोरिकेमन
 चित्रबढाया। तद्दिनधूरिवितानकेघनमान
 पिधाया ॥ सारदपुसिमकासलीजिमबहर
 छाया। दक्षिधरिलीपकरवैरैकअथोयलरवा
 या ॥ २४ ॥ सेलौअंबरढंकियानभचार
 रुकाया। छंडेबातमपेटकेफीलोंफहराया
 ॥ ताराउत्तरिपोदकीसुभसोनबताया। दक्षि

नभारहाजनैद्रुतलामदिरवाया ॥ २५ ॥
 योंदरकुंचअनीकनैलाहोरनिराया। पंजाबी
 दलबुल्लिकैरुद्धुतत्यमिलाया ॥ आलम
 साहसिपाहयोंसजिसेरसिवाया। दिल्लीके
 सिरदावपैकरिचावचलाया ॥ २६ ॥ इति
 श्रीवंशमास्करेमहांचंपूस्वरूपेदक्षिणायने
 नवमराशोबुधसिंहचरित्रेदशमो १० म
 यूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३
 गीर्वाणभाषा ॥ वसन्ततिलका ॥ लाहोर
 नामपुरतोपिकृतेप्रयाणे। मेघानुकारक
 हादुरशाहचम्वा ॥ आयातमाशुदलमी
 शितमागरातो। जीमस्यभूतयुतमाविवि
 दःस्वसूनोः ॥ १ ॥ उपजातिः ॥ शुत्वाव
 रङ्गङ्गुतकायहानमयासमागत्यमनोजशु

र्थाः ॥ तत्रत्यभूतिर्द्रविणादिरात्तादुर्गज्ज्व
 सञ्जीकृतमागरायाः ॥ २ ॥ स्वास्थ्यंगृहाणे
 तिविचार्यवसर्जहीहि तत्सोदरचक्रचि
 त्ताम् ॥ विरच्यतेऽत्रापिमयाप्रयत्नः प्रल
 द्यतेचाजमशाहमार्गः ॥ ३ ॥ आग
 यतान्द्रागभवतापि विद्वन्सेनाभृताबुद्धिर्नृ
 पेणसाकम् ॥ न्यस्यात्रशुद्धान्तमुरवांविभू
 तिञ्जाल्मोरिपुर्जजिवसीमिजयः ॥ ४ ॥
 शुद्धमाकृतभाषा ॥ गीतिः ॥ इतिपत्रं^(१)पत्तंसो
 ऊणं अर्द्धमलिहिअंजयायमेणसमम् ॥
 साहबहाउरजोहाहरिससमड्डा जिईसवो
 ह्दुआ ॥ ५ ॥

(१) इतिपत्रंशुत्वान्प्रजीमलिखितञ्जयागमेनसमम् ॥ साह
 बहादुरयोधा हर्षसमृद्धा जिगीषवोभूताः ॥ ५ ॥

(१) जहससमाणखित्तेबुहोमेहोपरूढशालिके ॥ अथवादिनकरउदि
 ॥ अथवादिनकरउदि ॥ अथवादिनकरउदि ॥ अथवादिनकरउदि ॥
 हलपहिअगणे ॥ ६ ॥ (२) वारोअमिअसजे
 मिलिअोधन्वन्तरीछुहाइसमम् ॥ अथ
 वाकुणवसरीरेअबोपञ्चागयागयाअसु
 ए ॥ ७ ॥ प्रा. मि. ॥ य. प. ॥ कियउच्चाहइ
 मसाहबचिकरारचूरासम। बुल्लिनृपति
 बुधसिंहकक्षोतदुदंतविहितक्रम। डकइ
 कसंजोगहोतजिहिंविधिरकादस ॥ इम
 अजीमगढलेतदइवदीसतअप्पनबस
 । अल्लाहमहरसूचकयहै अबनबीचअरिअ
 यअटक। आगराअोरपहुतिउचितकरसजे

(१) यथाशुष्यमाणक्षेत्रेचक्षोमेघः प्ररूढशालिके ॥ अथवादिनकरउदि
 तोनिशिदिङ्मूढे विहूलेपथिकगणे ॥ ६ ॥ (२) वारोगेअसाधोमि
 लितोधन्वन्तरिः सुधया समम् ॥ अथवाकुणवशरीरे अहहप्र
 त्यागतान्सवः ॥ ७ ॥ —

गहं कहु कटक ॥ ८ ॥ यह प्रपंच अनुकूल
 पिकरि बुध सिंह चमूपति । किय फोजन दर
 कुंचमंडि बूहन बिदग्धमति । सेनमध्य सुर
 तान हड्डु बरनाह हरोली ॥ सुवन साह के ती
 न बाम दाकिवन चंदोली । जय सिंह अनुज
 दूरम बिजयल धुबयल खिन्नुप संगलिय । इ
 हिं क्रम उपेत दक्षत प्रवनि चलि सबेग चतु
 रंगिनिय ॥ ९ ॥ काको दरकलमलत फनन
 पुं करि पलटावत । कद्रू हिय अकुलातल
 खत पुत्त हिल चकावत । त्यों बिन ता उरति
 कव पुछ चिलत दासीपन ॥ यह कोतुक अद
 भूत फैलि करण पधार फोजन । संकर समाधि
 तजित जिस हजकारन लखत बिचार करि
 नवमाल हेतुक हि कहि इनहि गह कि सोद
 बाढत गवरि ॥ १० ॥ मिजल इक साहस

नअंगचोकीत्रिसहस्रन।अरिनछन्नउप
 चारप्रबलविसत्रादिपरकवन।निधितून
 अन्ननिवानमगमैदानमुकामिक॥खगभृ
 गतरुउद्यानजातसोधतद्वमजामिक।प्रति
 दिसजिहानखलभलपरिगमनद्रुवज्जभुव
 फेरिहे।पापिननिदानत्रायकिप्रलयछ
 लिसमुद्रहृदबोरिहे॥ ११॥कमठभंगगि
 लिअंगप्राननारिनपरिबुडिय।भिरिहम
 ल्भुवभारपिद्विपावकघसिउडिय।मगिद
 मंगबढिजालजातकच्छपपतंगजरि॥दरि
 तदारिदंतुलियटिकतसूकरतुंडाकरि।
 आतंकसुरनउतपातइहिंकंपतजगकार
 नकहिय।बुधसिंहमनहुँआगमविजय
 अकूपारआहूतिदिय॥ १२॥अहिक
 च्छपभूदारहुहिनदिगजदिगपालक।भू

लोकरु तिमभुवरबहुरिसुरलोकविसालक
 । इतसमस्तअतलादितिमहिसागरइत
 आसहिं ॥ इकहिं परिआयासअवरआ
 तंकउपासहिं । संकितबिनासधुञ्जतस
 कलचकितचेतभूलनभजिय । प्रियजिय
 इतेननारिनपरिगमदननेहनारिनतजिय
 ॥ १३ ॥ इमअपनीकदरकुंचआयउत्तरिबुं
 दानन । संभरपतिबुधसिंहमंनमंडियप्रपं
 चमन । रानियरानाउत्तिआदिअपनअंते
 उर ॥ कामविपिनब्रजबीचतत्परकिय
 जुझातुर । सजिकुंचबहुरिआलमसहित
 नृपतिआयअकबरनगर । मिलतहिअ
 जीमसंबोधिमुहजदितपिकिवीरनज
 गर ॥ १४ ॥ तेरीबेरअजीमन्यायरद्वारि
 सहियदुरख । तेरीबेरअजीमयालबज्यो

सुसबनसुख । तेरीबेरअजीमपट्ट दिखिय
चढिपानी ॥ तेरीबेरअजीमजन्योँअरनतुर
कानी । इमलिहिँसिराहिबुँदियअधिपस
बदलदुगसम्हारिलिय । मिलिसुतहिँसा
हमंडियमहरकहितुमबिजयप्रपंचकिय
॥ १५ ॥ कछुकालरहितत्यसेनपिकिव
यसेनापति । दलसारथदुवलकवतोपह
ज्जारबिबिधतति । सवालकवतुकरारजं
गपकरजिन्हडारिय ॥ दुवदीननबरबी
रबरसिगजगामबढारिय । इमसहँसद
कअँचतनिगडबहुनिसानफहरानिबनि
। इमसबसम्हारिबुँदियनृपतिप्रतिजवने
सप्रयानभनि ॥ १६ ॥ दो० ॥ अंतहपुर
धनआदिसब । राजबिभवरखितत्य ॥
त्रंबकडकबज्जिगबहुल । संगरपढतसम

त्थ ॥ १७ ॥ अप्पनदलरुअजीमदल
 । सबरकत्तसम्हारि ॥ करियकुंचतजि
 आगरा । रोपनजाजवरारि ॥ १८ ॥ इ
 ति श्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणा
 यनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे एकादशे
 ११ मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 दो० ॥ मेचकफागुनसाहमरिइनसुनिम
 थुअवदात ॥ आवत बिन्नेमासदुव । अ
 वआषाढप्रभात ॥ १ ॥ आजमकट्टु
 कबिलंबकिय । साहबहादुरभाग ॥ हल
 निवाहिआतपदिनन । आवतभुवअनु
 राग ॥ २ ॥ तपतजेठदिनकरदुसह ।
 आजमकट्टकदुरंत ॥ चलतपंगुजयचं
 द्रजिम । बसुधातलदबंत ॥ ३ ॥ इमप

तोगवालेरपुर। आजमबिभवउपेत॥स
 जिकिस्माबनितादिसब। रकिवयततथनि
 केत ॥ ४ ॥ ष० प० ॥ अग्रजअवरंगी
 यसाहदाराअभिधानी। ताकीतनयाब्या
 हिलईआजमअभिमानी। यहअंगैइ
 कबेरपकरिबंदीपरहहुन ॥ तबअनिरु
 द्नरेसजित्तिआनीभुजदंडन। दीदारब
 रवसजाकेउदरताहिनगरगवालेरधरि। उ
 ततैउफानसागरउपमआयोआजमको
 पकरि ॥ ५ ॥ अकबरपुरइनतजियतजि
 यगवालेरनगरउन। एदकिवनसममुहलुवे
 सुउत्तरपरआरुन। इमआवतदुबकदल
 मिलेजाजवदिनअतै ॥ रहिसुकामबह
 रातिकलहउगतारबिकतै ॥ दुबदलप्र
 पातसोहतसहजमनहुसिंधुबीचिनभरि

ग । बहुल उदीचिः प्रावाचिके प्रबल बात
 भेट कि परिग ॥ ६ ॥ दो० ॥ सकच उख
 ट सत्रह १७ ६४ समय । असित
 णाह ॥ दिय मुकाम दुबदलन इम । मिलि
 जाजव गहि गाह ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥
 दैदल मुकाम बुंदिय नरेस । किय मंन पि
 किरि अप्रिदल बिसेस ॥ रति बाह बाह
 रोकन बिचारि । निजदल प्रबंध बंधिय नि
 हारि ॥ ८ ॥ परवरैत सहंस द्वादस प्रबीर
 । सजिथ पिय सेन बाहिर सधीर ॥ निज भट
 रन पंडित जै तनाम । तिन मां हि मुख्य करि
 र किरताम ॥ ९ ॥ यह बैरि सल्ल कुल मव
 अमंग । निज बंधु जैत दिय सोधि संग ॥ क
 हिनेह बचन सनमान कीन । अब काकादि
 ह्मीत वअधीन ॥ १० ॥ जोर चहिं सचुरति

वाहजाल । तोमेलिचासभेजहुउताल ॥
 इमभारिबिछबीनां कियतयार । हयजेतसंग
 द्वादसहजार ॥ ११ ॥ दलपरिधिजायनि
 नचक्रदिन । कमइमप्रबन्धचहुवानकिन्न
 ॥ पुनिकहियनीतिसाहहिंप्रबोधि । सुरव
 सैनकरहुअबकालसोधि ॥ १२ ॥ निसजा
 मरहतनिंदहिनिवारि । पिकवहुबिहान
 रनभटप्रचारि ॥ सुनिसाहसैनमंडियसतो
 स । भूपालबुद्धमुजहुवभरोस ॥ १३ ॥ स
 बसाहहसमडेनसम्हारि । नृपसिबिरअ
 यकटिपटनिवारि ॥ लियसबहिफोजना
 यबबुलाय । समुमायकहियअगमसुना
 य ॥ १४ ॥ अगौप्रमादसमुपेतसुत्त । पा
 हुवदलमास्योदोनपुत्त ॥ निससुत्तसाह
 गोरियअनीक । कइमासइककियकादि

लीक ॥ १५ ॥ तसमातः प्रसनः प्रल्पहि
 विधाय । सज्जहि समस्तसो बहु सुभाय ॥
 करितीनस्वस्वपरिकरविभाग । कदहुत्रिजा
 जामजयरकिविराग ॥ १६ ॥ गजहयनदे
 हुविश्रामबंधि । अमपिकिविप्रल्पः आहा
 रसंधि ॥ वपुमंजिसजहुहयगजबहोरि ।
 जंजीपलानसंधानजोरि ॥ १७ ॥ निसर
 हतजायतजितजिनिकाय । पतनासुरका
 ननदेहुपाय ॥ बुलियविदग्धतोपनचला
 क । करिबिंदुदलहिंमंडहुकजाक ॥ १८ ॥
 पंद्रहहजारपायकतुरंग । आरेपिसाहतो
 रतः अभंग ॥ इममंडिबूहजाधिकः अनूप
 । चहुवानः प्रसनकिर्नोचमूप ॥ १९ ॥ द्रुत
 युनिप्ररोहिहैवरदिवान । सबठिगफिर
 किर्नोसावधान ॥ इमसिविरपिकिविनिज

थानआय।सुरवसयनकिन्ननयबलसुभाय
 ॥ २० ॥ यहसुनिअनीकब्यूहनविबेक।
 आजमदुधपिजामिकअनेक॥इमकिय
 मुकामदुबदलअमान।दुवधौनिघातब
 जतनिसान॥ २१ ॥ रनमाहताबउदित
 दुओरचकिचौकिपरतजिनलखिचकोर॥
 बदिदुबलचंद्रजोतिनविकास।पुसिमम
 यंकषुदुबिफुरिपास॥ २२ ॥ दुहुँओरबा
 जिगजरवदुरंत।दुवसेनउच्छेदनदिपंत॥
 दुहुँओरसरजामिकदुरुह।सजिसजिअने
 कविचरतसमूह॥ २३ ॥ दुहुँओरलखत
 प्रच्छन्नदूत।दुबदलनकीबआरवअभूत॥
 मंडनऊपेटमअतदुओर।सिंधुवअलापदुव
 दिससजोर॥ २४ ॥ दुहुँओरकरतजामिक
 दुराव।दुहुँओरखीनलखतदाव॥दुहुँओ

रबाजि फाँदत दुबंध। दुहुँ और दंति गज्जत
 मद्धं ॥ २५ ॥ दुहुँ और सुइसे लन चमक
 दुहुँ और धं पकवर घमक ॥ दुहुँ और सरर
 रन उचाह। दुहुँ और होत हरि हरइ लाह ॥
 ॥ २६ ॥ दुहुँ और सुतर जंघाल जात। दुहुँ
 और चार पल पल दिखात ॥ दुहुँ और करत
 बहुरीति दान। दुहुँ और होत विधि जुत विधा
 न ॥ २७ ॥ गुन जा मरति हुबहु मअतीत।
 महकिय सुजंग अपारं भगीत ॥ निंदहिं निवा
 रि बुंदिय नरेस। करि नित्य बंदि प्रभु द्वारि केस
 ॥ २८ ॥ जा मिक न साह आलम जगाय। बु
 ध सिंहु तब हिलिय द्रुत बुलाय ॥ कहि उचि
 त संनमै डहु नरेस। अब नहिं बिलंब वस
 असेस ॥ २९ ॥ सुनिवृप उबान वनय कहु
 सनम। अब होत जंग विधि विधि अधर्म ॥

बहुते पकरत दूरहि बिनास । बीरहु सकै नय
 हटारि नास ॥ ३० ॥ लै जात सब न धरि सि
 स्त थोर । मन माँहि रहत सुभटन मरोर ॥ तस
 मात अप्य दल पिट्टि दूर । रहि छन्न काल कह
 हु जसूर ॥ ३१ ॥ हम सुभट जु द्वपडित हरो
 ल । बिधिस बनिदाहि नय धर्म बोल ॥ मधि
 दल समुद्र भुज मंदराग । निज बल कृपानर
 चि चंड नाग ॥ ३२ ॥ जयरत्न कहि जलन
 जरूर । द्वैरव्यात निवेदहिं निज हजूर ॥ इहि
 नीति छन्न साहहिं निकासि । बल सजिय अप्य
 पहिय जय बिकासि ॥ ३३ ॥ दल चढन
 बेग दै निज निदेस । बिधिकरि बिहान स
 ध्या बिसैस ॥ साज उनहु चढन आय सप्र
 सारि । नर गज तुरंग कल कल निहारि ॥ ३४ ॥
 दो० ॥ दुव दल इमर बल भल परिग । गहकि

नफीरियगान ॥ किलकनकीवनहुवकहर
 । पहरपलानपलान ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात
 म् ॥ जगीसेन दोऊरहीजामरती । बजेबंब
 मेरीबहीहल्लबती ॥ दुहँओरहेसुद्धकेनि
 त्यमंडै ॥ दुहँओरसंसारतैप्यारखंडै ॥ ३६ ॥
 दुहँओरगंगोदकैअंगमंजै ॥ दुहँओरगी
 तादिगीतादिरंजै ॥ दुहँओरबानितनगो
 दबंथै ॥ दुहँओरकेटोपसन्नाहसंथै ॥ ३७
 ॥ दुहँओरजालीदवालीनहारै ॥ दुहँओ
 रधारालधारालधारै ॥ दुहँओरसिंघूनड
 आहजगै ॥ दुहँओरबाजीनपैजीनलंगै
 ॥ ३८ ॥ दुहँओरमुंडालमुंडालगज्जै ॥
 दुहँओरहिंजीरजंजीरबज्जै ॥ दुहँओर
 उज्जलनेजाफरकै ॥ दुहँओरकजोरखोली
 मचकै ॥ ३९ ॥ दुहँओरधानुकवटंकार

पूरे । दुहं प्रोरदेरवें लगी लोमहरें ॥ दुहं प्रो
 रमें दूत हें भूत मिहैं । दुहं प्रोरबेताल रवेता
 लखिहैं ॥ ४० ॥ दुहं प्रोरकेभीरु उद्वाव
 मंडें । दुहं प्रोरकेबीर बानैत तंडें ॥ दुहं प्रो
 रबहीन को सोर बड्डें । दुहं प्रोरतोपि दरावी
 न चड्डें ॥ धरें कुंत बंदूक तुल्यै वरच्छी । हुलै
 हंकि हत्थीखुलै सज्जकच्छी ॥ चही
 सेन दोऊ बही जंग चाहैं । प्रवाची उदीची
 घटाज्यौं उमाहैं ॥ ४२ ॥ दो० ॥ बुंदियप
 तिस ब्रह्म बनि । नयनिकासिनिज साह ॥
 दल सारध दुवल कवलै । चढ्यो तुरग जय
 चाह ॥ ४३ ॥ उत प्राजम प्रारोहि गजलै
 दल समुह प्राय ॥ मुलक प्रलय प्रागमन
 महुं । उदधिसत्त उफनाय ॥ ४४ ॥ इति
 श्रीवंशभास्कर महाचंपूस्वरूपे दक्षिणाय

लेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे द्वादशो मयू

रतः ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ सकचउखटसत्रह १७६४ समय।

मिलिचउत्थिसुचिमास ॥ असितपकरउ

गातअरक। बहिदलविजयविलास ॥ १ ॥

सुतादाम ॥ बहेदलतोपनको करिअप

। मिलेमदउद्धतसंगरमगा ॥ इतेविचको

तुकजंगअच्छक। उयोउदयान्चलकेसिर

अक ॥ २ ॥ लख्योरबिदोउनबंदिबि

सेस। भयोतबतोपनपुननिदेस ॥ पलह

निपिफिरुमालनसैन। लगीहुहुंअोरअ

लातनदेन ॥ ३ ॥ मिलीतंहतीनहजार

नअगि। बहीअफलेतहुहुंदिसदगि ॥

भयोनमधूमितधुंधुरिभान। लगेहुगमीच

नदेवविमान् ॥ ४ ॥ परेऽप्यगोलकविद्यु
 तपात । जुरेनरगैवर है उडिजात ॥ उगह्व
 तफैरहिं फैरश्चरवंड । चलै चटकारिनके
 मितचंड ॥ ५ ॥ भुजंगमके सिरनचतमु
 मि । धरै फनतै फनघायनधुमि ॥ नचेजि
 मकन्हरकालियकंध । वनै इमछोनियतंड
 वबंध ॥ ६ ॥ लगेडगममानअद्रिनभृंग
 गिरै जिनतै म्मभ्रामितभृंग ॥ निवाननअ
 कुलितुहृतनीर । पखोइमअतपश्रीरबम
 पीर ॥ ७ ॥ तजै बहिबीचिनसागरसीम
 । भ्रमै प्रलयानिलमै जिमभीम ॥ जुरखोदि
 बदबिहुहृतमजगि । अलाललगेजनु
 प्रेतनअगि ॥ ८ ॥ परैदृगवउतसोरप्रका
 स । लखैइनहूइतफैरउजास ॥ दुहँदिस
 यौलखिमारतदाव । भयोदुहुँघाँइमसोर

भ्रमाव ॥ ६ ॥ सज्यो बद्धिधूमसुगलयसंग
 । अज्यो नमबद्धलरजिहिरंग ॥ गिरि बिच
 गोलक गोलक फेद । मनो पवित्रै पवित्रं
 दुचपेद ॥ १० ॥ गिरि जमत्यक्षिन छिन
 दूर । कटै पविपान कि अद्रिन कूट ॥ गिरि
 गजगंडु गोलन गोल । गिरि तरु लाल कि
 पक्षय पोत ॥ ११ ॥ लरयो रबि रगत ज्यो
 तम लाल । किते अबुल्लत अद्रि कला
 ल ॥ बिहान कूको कनल गि वियोग । वि
 नानर जानत जा मिनि जोग ॥ १२ ॥ परे
 जगंडन गोलक पात । करै जलु मल्लक जाति
 नरव्यात ॥ परे दुहुँ अोर लुप कन पंथ । स
 अोर वधाष्टक ज्यो हरि मंथ ॥ १३ ॥ चहुँ दि
 स चंड चहुँ अोर ज चूर । पर्योर जत च ल लो
 उडि पूर ॥ जदी जटजूटहु पंकिल जात । ल

तोपनकोमगटारि ॥ ३० ॥ इमकहायबुंदिय
 आधप। मंड्योतोपनजंग ॥ इहिंअंतरदूतन
 कद्यो। भोआजमअसुभंग ॥ ३१ ॥ बलहिंअ
 चारतभटनविच। होहत्थियआरुह ॥ गोला
 लगिदेजरदगयो। महाअनयरतमूढ ॥ ३२ ॥
 अबताकोसुतसज्जहुव। तथासचिवनृपती
 न ॥ नरउरपतिदतियानृपति। काटापतिइक
 कीन ॥ ३३ ॥ ष० प० ॥ सुनतरहबुंदीसमंन
 निजदलसहमंडिय। अरिआजमउडुतहिल
 रनतससुतहरोललिय ॥ अरकजामअवरोस
 तोपचल्लतत्रिजामगय ॥ अबहयदेहुउठाय
 जानिहरिहत्थजयाजय। इमकहिनैरससुम
 टनउचितहयनहंकि समुहहलिय। नीरद
 उदीचिदिसतैमनहुंचंडपवनदकिवनचलिय
 ॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वहृष्ट

क्षिणायनेन कमराशौ बुधसिंहचरित्रे त्रयोद
 शो मयूरः ॥ १३ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 नराचम ॥ उठाय जंगयों तुरंग बुद्धसिंह उपस्थो
 । मची कजाक हड्ड हाक बीर बाक बित्यर्या । म
 हागमीर थीर बीर नीर बीर ज्यों मिले । हमल्लो
 क भुमिलो कर बंदर बंदु है रिले ॥ १ ॥ रनं कि
 तंति सिंहवी अलापराग मुक्तयो । रनं कि जी
 न पकरि न पौं न गौं न रुक्तयो ॥ रनं कि धार
 है प्रहार अंग भंग उल्लटें । सनं कि सास से सकी
 फनालि फुंकरै फटें ॥ २ ॥ छनं कि बान लै उ
 डान आसमान छदयो । रनं कि धं द जंग जीम
 नागती मन दयो ॥ तनं कि रचर वंचतै प्रलंच च
 पटं करै । मनं कि पच्छरि भच्छ गिहनी जरफ
 रै ॥ ३ ॥ चली नली कृपानसान सुद्धराव बुद्ध

की ॥ अरीन जुद्ध की उमंग राजरंग रुद्ध की ॥ म
 थ्यो अनीक संभरी क अजमी क अंग थ्यो ॥ च
 लैं कुच न भोगि भोग भोग पै भूम्यो भूम्यो ॥ ४ ॥
 अहार खगाधार मार लुत्थि लुत्थि पै पै ॥ चिरै
 बितंड गंड मंड खंड खंड है मरै ॥ दिसा दिसान
 में कृपान बिजुमान निखर सी ॥ भिरै गूरूर पूर
 सूर पि कि व हूर हूर सी ॥ ५ ॥ सुबाजि सोक
 ओक ओक भीरु लोक मगाय ॥ लरै निघाल स
 खपात इ करी ठ लगाये ॥ ऊरै स सुंड गै भु सुंड कं
 ध बंध तै कटै ॥ अलै सु रुंड गोल कुंड फादि सुंड
 उच्छटै ॥ ६ ॥ छिकै बिछे क बान के पलान
 हान बित्यरै ॥ गिरै उल हि सूर पि कि व हूर हूर
 मरै ॥ जमाति जुगिनीन की पि बंत पै य प
 त्त कै ॥ किल कि बीर बावनी फिरै इस तर त्त कै
 ॥ ७ ॥ चलै समगार खग के कटार पार निक्क

सैं। सुबीरसीससंचयी गिरीस दुल्लसैं हसैं॥
 बरारि बारि जंन ज्यौं बुलकि घाय उबकैं।
 अनीक नारिके छइल्ल सोह बाकमैं बकैं॥

८ ॥ ठुरैं बिभान मुक्ति दान कुकि मुक्ति
 के करी। बजंत हेति हेति कै मनो कि दंड च
 जरी॥ जरैं बितंड पिट्टि ऊंड अद्रि कूट ताल
 ज्यौं। बहंतर तरवाल के बिसाल ताल नाल
 ज्यौं॥ ९ ॥ सिल गि सोर ओर ओर ज्वा
 ल जोर संक्रय्यौं। भयो निसान ध्वान जो दि
 सा दिसान मैं भ्रम्यौं॥ पिधाय भानुरेनु को बि
 तान व्योम बित्थर्यो। लरे परै न अप्य पार
 अंधकार्यौं भर्यो॥ १० ॥ चल चली म
 हीरु सेन आजमी खल बली। कल कली
 किल काल ज्वाल की मल जली॥ गिल
 ल गिहनी फिकारि फिकरी फिरैं। रि

गेकुवकंजनपुंजलसात ॥ १४ ॥ भज्योससि
 भीरुकभालहिंछोरि। रहैरजलेतसुधासज
 चोरि ॥ अकंजसकंजभयेदूमईस। समात
 तसादमयोभरसीस ॥ १५ ॥ महानदर्यौल
 हिरवेदसमाज। निमीलतनैलसमाधिकव्या
 ज ॥ जलंधरबंचितचंद्रियअग्ग। लरैवंधन
 संकिमहाभयलग्ग ॥ १६ ॥ भयोयहविग्र
 हसंकरभौन। गिरैपृतनाइतगोलनगौन ॥
 थरत्थरभुमिजथाजलथाल। बन्धोरनलोए
 नयौबिकराल ॥ १७ ॥ सिलगाहिंतज्जहिं
 गज्जहिंसौर। लरज्जहिंबज्जहिंसिंधुहिलौर
 ॥ भजैगजसंगरलंगरतोरि। महाउतराउतला
 वतमोरि ॥ १८ ॥ दिसाबिदिसाजगिजार
 तज्वाल। मनौकुहुउज्जदसंधनमाल। चले
 उडिसौरसिरवाचमकाल। परैजिमभहववि

ज्जुवपात ॥ १९ ॥ भ्रमैकटिसुंडिगिरैउडि
 भाग । सनैजनमेजयश्चवरनाग ॥ पराव
 लिगिष्ठनकीप्रजरात । जतायुकश्चभजज्यो
 गिरिजात ॥ २० ॥ उडैश्चजदंडनखंडश्चका
 स । रचैजिमउद्धहिकेकियरास ॥ जरैमजपि
 द्विपताकनजूट । किर्यौदवलगिष्ठश्चद्विन
 बूट ॥ २१ ॥ कहैपुरजाजवहोश्चधकोस ।
 दग्योचहुँयाँतउसंगतिदोस ॥ तथ्योसमरं
 गनतोपनताप । चढ्योनमजामलजामदि
 वाप ॥ २२ ॥ दो० ॥ इमतोपनरतहोतइत
 । इतकोतूहलश्चास ॥ रविदुपहरलौंचढि
 रुक्यो । तक्कनलुमुलतमास ॥ २३ ॥ इहिंश्च
 तरदुवदिसश्चतुल । घुरततोपनिग्यात ॥
 साहबहादुरभागसन । वज्योउत्तरबात ॥
 २४ ॥ ष० प० ॥ पलटतउत्तरपवनदाहती

पनइतदगिय। उहुतपिक्खिअनीकिल
 यसत्रुनउरलगिय। आजमगजआरुह
 हुतोनिजकटकहरोली॥ गेलालगिलैगय
 उपरिदलमध्यप्रतोली॥ इमतोपजनकआ
 जमउडतनिजदललखिखरभरनयो। दीदा
 रबरवसतससुतहुसहद्वैनायकहरवलभयो
 ॥ २५ ॥ आजमसुतइमकहियमरनमंगल
 भदसंगर। करहुसोकजिनबीरधरहुपायनल
 जलंगर। इमबिसासिसबसेनअगगड्डोआ
 जमसुत॥ गतिअंगदपयगडिमरनमंड्योज
 नूनजुत। दैपुनिनिदेसतोपनदगननृपनबा
 बहलकारिसब। दीदारबरवससज्ज्योदुजन
 गुमरटेकमंडलगजब॥ २६ ॥ दतियापति
 राउत्तनामदलपतिबुंदेलह। नरउरपतिग
 जसिंहवंसकखवाहसमेलह। राजसिंहच

बुधनिश्चयश्चाकरकोटापति ॥ लगिबुंदि
 अक्षरलोयगिनतभोरोनकालगति ॥ सचिव
 नइतेनआजिमसुवनगजारूढहरवल्लगहि।
 इममंत्रव्यबहिआजिमउड्योसुवनसासअ
 जसेसरहि ॥ २७ ॥ इमआजिमउडुतहिसुव
 नरंष्टोचदिसिंधुर। दगततोपदुहुँओरउगत
 बीरनरसअकुर। इहिँअंतरजयसिंहनगर
 नमैरनेसर ॥ निजनकीबमुकालियबुद्ध
 पतिप्रतिआतुर। गृहविधिकहायप्रच्छन्नग
 वजाभिपतुमएखलजवन। कुलस्वसुरदारि
 मंडहुकलहहोततोपसालकहवन^{२८} ॥ दो०॥
 बुंदिपतियहसुनिबिनय। प्रतिउत्तरपठ
 वाच ॥ घरअप्यनसंबंधधन। यँहँरनदंडउपा
 व ॥ २९ ॥ ततैतुमसाहसतजहुँबयनयस
 मबिचारि ॥ बचहुँबामदकिवनबदलि।

लंतकंकस्थारखगधारधारतैंखिरैं ॥ ११ ॥
 उडैंदुप्रोरबीरयोंतुपकतोपत्योंचलैं ॥ जरैं
 दुकूलकेहदीहकारिसमुहहलैं ॥ छिकैंबि
 लंडकालगंडरवानगिझनीधसैं । गिरिंद्र
 खामकीगुफामहामुनिंद्रज्योंबसैं ॥ १२ ॥
 सिलगिअगिकीसिरवाचमंकिगैनलों
 चढैं । विमानअच्छरीनकैंउछाहदाहयों
 बहैं ॥ उडैंअलातप्रोकप्रोककोकसोक
 संकुलैं । खुलेंसमाधिईसकीधृतीदिगीस
 कीडुलैं ॥ १३ ॥ उदीचिवातकेप्रपातसेन
 आजमीचली । हरोलचंडबुद्धकीकरालकु
 डकीहली ॥ डरातडक्कडिंडिमीडमंकिडा
 किनीनकी ॥ १४ ॥ बिकुत्तघत्तरत्तकीब
 बकिचिंचिउच्छलैं । चलैंकिजअजाव
 कीसिरवाकिपावकीचलैं ॥ हबकिधाय

नसैंउअंगिसाकिनीननारिनाकिनीनकी बुदि३

नहकेकपोतभायउच्चरैँपलहिकहिकेउल
 हिहकहकपैँपैँ ॥ १५ ॥ दो० ॥ लरतमर
 तचहुँदिससुभद। मिलिपयभत्तमिलाप॥
 कछुकछुतोपनदगनक्रम। धपतइक्कअसि
 धाप ॥ १६ ॥ प्र०प० ॥ कोटापतिवारनबढा
 यरसबीरअधायो। बरखतबाननबिंदुनिबि
 दुनीरदबनिअधायो। सुंडिबीचइहिंसमय
 धायगोलालमिधख्यो॥ इभपोगरउडिजा
 तचकितचिकारिभजिचख्यो। गजभजतकु
 द्विबरबीरगतिकहिअसियदारुनकलह। ह
 यमेधचरनडारतहलियपरनमंडिअतिको
 पमह ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटिसकूपानी
 चंडचलानीघेरघलानीसेनघटा। तंडैँर
 चितालीजुगिनिजालीभूरिभटालीकरत
 कटा ॥ कालीकिलकारैँबीरबकारैँचंडचिका

रैंकुंभिकरैं। अतिपानइसारैं बोधबिसारैं
 मुंडनमारैं प्रेतपरैं ॥ १८ ॥ असवारउल
 हैं कंकट कहैं पूरपलहैं सूरसजैं। पन्नगफन
 फहैं अवनिउ छहैं बंबबिकहैं बंबबजैं ॥
 बुंदीपतिवारी कालकरारी तेगदुधारी बेग
 चली। कोटेस अबाहन उग्र उछाहन मंडि
 महारनबीरबली ॥ १९ ॥ गिद्धीगहिअंती
 अबा उडंती जोकफिलंती चंगनिभा। सूरम
 सिरछायारचनरचाया बेसबनाया छत्रवि
 भा ॥ सुंडिनभरिफुंके भैरवभुंके चोसहिचुंके
 नचनसा। हल्लीसकमंडैं तालिनतंडैं स्वाय
 अरवंडैं बीरबसा ॥ २० ॥ गद्गद्गद्बडिबानी
 भटनभयानी धारधपानी मारमचैं। बालन
 लगिढल्लरि के असिकल्लरिरावसुद्धल्लरिभा
 वरचैं ॥ कटिहडुकरकैं पिप्पपरकैं तेकतरकैं

एक उडैं । चोटन असि चंडैं रवंडैं रवंडैं चोरि बि
 लंडैं गिरत गुडैं ॥ २१ ॥ बिनु मत्थ दुबाहे सं
 भुलिराहे चंडिय चाहे उद्विष्टै । डोलैं गजडा
 रे फुहिनगारे पत्थ हगारे बत्थ परै ॥ गजदंत
 उषारै कोप करारै मीरन मारै बीर बढे । कटि
 धार रूपानन गात सुगानन बीर बिमानन के
 कच्छे ॥ २२ ॥ जुमिनि जय जय पै कातर
 कंप बाजि बिहंपै बैग बली । लुत्थिन भुवछा
 यै बीर बढावै मित्रुन मारै चोह छली ॥ कोटे
 सविना हय छंडि महा गयरुद्वि बडे रयरारि रु
 प्यो । गज बाजि गहमह कूह कह कह कह बंबन
 ह अह लोक लुप्यो ॥ २३ ॥ हो ॥ कोटा प
 ति किलकत पर्यो । आलम दल सिर प्राय
 ॥ करि सुसंध चंडासि कुल । तुह्यो असिन अ
 याय ॥ २४ ॥ म० प० ॥ तजिम तंग भुवकु-

द्विकट्टिप्रसिवरधकिकुप्यो । नटमलंगनचि
 प्रंगरंगप्रंगदजिमरुप्यो । रतनभोजरविम
 लमगगउज्जलकरिमानी ॥ तिलतिलधार
 नतुहिभयोप्रमरनप्रगवानी । पैतीसबं
 ससिरववतप्रकटधारततदपिनधर्मधर ।
 चंडासिबंसरतभजिचलनननसिकर्षोपि
 कर्षोनिडर ॥ २५ ॥ चकव्यो कछुचिल्ह
 निनकछुक गिद्धिननिजकिर्नो । कछुकल
 ह्योविसकंठकछुककालियलगिलिर्नो ।
 स्वायकछुकखित्तालडमरुधरितालडका
 स्यो ॥ भरिवजुगिनिकछुभागबहुतप्र
 नुरागवडास्यो । अटिप्रटिहड्डुफगुन
 उपमकटिकटिफोजनउफर्न्यो । कोरान
 रसकटिकटिअसिनबटिबटिबहुपेस
 कबर्न्यो ॥ २६ ॥ दो० ॥ कोटापति

पयस्वदुर्जनजोरिचतउप्यरनरुंदन । सजि
 मुंडिनउच्छीसपंजुकंदुकनृपमुंडन । गुडप
 करवरगद्दीरुबंधिनहुअंतबरत्तन ॥ इहि
 मंचकआरुहमातकालियअधपमनः
 लैतिहिपिसाचबाहकबहतमहतउद्धा
 हकमहमहत । जितजितसुगंधतितलित
 सज्जवरुहिरमिदुहेरतरहत ॥ ४ ॥ भट्टन
 कहुं कहुं मिरत कहुं कहुं करैत आकंदत । कर
 भकहुं कहुं कल्लरत गिरत गज कहुं कहुं चिह्नर
 त । कहुं कहुं अकटिपरत कहुं कहुं घायल भट
 तुमत्त ॥ कहुं कहुं बंधु उदिलरत कुहुं कुहुं
 पन कहुं कुहुं मत्त । कहुं कहुं मेद कवल न कर
 त कहुं सिचानगरत मपट । कुहुं त फिरत
 डाकिनि कहुं कहुं ल गिजरंत पाव कलपट
 ॥ ५ ॥ कहुं कहुं न कहुं कहुं कहुं कहुं कहुं कहुं

भौहं फदकृत । उत्तमग कहुँ उडत गहत हर
 उड मोदगत । कालखंज कहुँ कटत बुद्धि बुक्क
 न कहुँ बुद्धत ॥ कहुँ फुल्लत हिय कंज मधुपमा
 न स उडि उडुल । करपय विभिन्न तरफत क
 हुँ कमनहुँ मीन जल तुच्छ मत । दीदार बरब
 स बुध सिंह दुवर सिक प्राण बाजिय रमत ॥
 ६ ॥ रुहिर रंग बढि बहत छेद छत्तिय
 पिचकारिन । डफ मद्दल डिं डिमिय तानमं
 डत सिवतारिन । पात गुस्ज पुटलिय पुह
 प प्रंगार प्रकासत ॥ खग खग मिलिर ख
 रत बूर प्रबीर बिभासत । जुगिनि जमाति
 पन नारि जिम आलापन मुकि उच्चरत ।
 दीदार बरब स बुध सिंह दुव कलह फग को
 तुक करत ॥ ७ ॥ पडुमि ब्रकटि परत
 जरत चामर ज्वालानल । बरत बीर प्रच्छ

रियुग्मतहेतिनकुसानु मूल । कोसनक
 लहदुरंतबाढअसिबरइकबज्जत ॥ ब
 दु निषंयविकवरतचापतुहतसरसज्जत
 । तरफतप्रमत्तहिंदुवतुरकअालमदल
 जालमजम्यो । नववयखिलहारबुंदिय
 नृपतिअजमसुतबढिअंगम्यो ॥ ८ ॥
 ॥ लोटकम् ॥ धरसंगरअजमपुत्तध
 वर्यो । राजउपरलोहनबाकछक्यो ॥ द
 तियापतिअादिकरीनचढे । बहुअगाप्र
 बीरउमीरबढे ॥ ९ ॥ रसघोरनिसानन
 ध्वानरच्यो । बिदिसानदिसानकुसानुम
 च्यो ॥ मिलिसूरमुरैपरपैनमुरै । जिमतक्कि
 यसहियबादजुरै ॥ १० ॥ स्वगधारनधा
 रसमारखिरै । फलभोजनचोसठिसंगफि
 रै ॥ नटकेबट्टैभटकेलटके । मटकेनमुरै

बटकेबटके ॥ ११ ॥ किलकारतभैकरि
 भूतमिलैं । हलकारतखित्तरपालखिलैं ॥
 उमडेअसि बिज्जुवअंकनसे । घुमडेदल
 भद्वकेघनसे ॥ १२ ॥ गहिभैरवनर्त्तक
 कीगतिकों । मिलिबंचतकालियकीमति
 कों ॥ करितुंडससुंडससुंडकसैं ॥ बनिआ
 खुगसंकरअंकबसैं ॥ १३ ॥ सुतजानिप्रचुं
 बनईससजैं । भयधारितबैकिलकारिभजैं
 ॥ छहजोजनफोजनभुमिछई । अतिपाउ
 सजानिघटाउनई ॥ १४ ॥ पवमानदिगुत्त
 रकोप्रसह्यो । सुमनोंघनपोसकहोयसह्यो ॥
 चहुँघांतरवारिनकीचमकैं । तिदिपैमनुवि
 ज्जुवकीदमकैं ॥ १५ ॥ मिलिभूरवनओ
 जइरम्मदलों । लगिसिंजितददुरकेनदलों ॥
 बहुंजुंडसुरोहितचापबनैं । तनितारवहुंदु

भिडोलतनै ॥ १६ ॥ करकावलिहडुनखं
 डकिरै । फटिदोपउडेबकपंतिफिरै ॥ चमकै
 जोइरिंगालौचिनगी । उदसोनितबुद्धि
 रैइसगी ॥ १७ ॥ रनजाजवपाउसयैबिर
 च्यो । मुगलानचुहाननदावमच्यो ॥ भटख
 गानकेकटिसुडिभरै । अहिज्यौजनमेजय
 अछरै ॥ १८ ॥ करकैकटकावलिकोच
 कटै । फरकैकठिकालिकबक्षफटै ॥
 रवारिनहडुनुटै । छरकैछितिछिंछिनरन
 छुटै ॥ १९ ॥ लटकैअसवारतुरवारलरै ।
 पटकैगहिइकहिंइकपरै ॥ चटकैकटिदो
 पनकीचटकै । छटकैभटबाजिनलोहछकै
 ॥ २० ॥ गटकैपलगिइनिधेतगिलै । खट
 कैअसिरुप्यारिखंडखिलै ॥ अटकैकिरका
 वनपायअरे । भटकैभटगज्जहिंछोहभरै ॥

॥ २१ ॥ लगिकोसनजंगनकीलरसैं। बर
 खानरअंगनकीबरसैं ॥ सननंकतप्रोथन
 प्रानसरैं। अननंकतआयुधअगिअरैं ॥ २२
 तननंकततेगनकीतरकैं। थरकैंरननंकतलो
 हथकैं ॥ रनहोतमुहरतभानरह्यो। बलतैंब
 ललोहसुमारबह्यो ॥ २३ ॥ दो० ॥ बलब
 ललोहसुमारबहि। घोरमचिगघमसान ॥
 आजमसुतअधारभो। चंडकिरनचहुवान
 ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ घटियदोयरबिरहतप्र
 थितआजमसुतपिह्यो। नरउरदतियानृप
 तिठानिहरवलदलरिह्यो। कुक्कपरिगचहु
 कोददुक्कदुक्कनदलतुहत ॥ हूरनमोहहुला
 सद्योहसूरनअसुछुहत। निजसाहभागरन
 रीतिनवप्रबलनीतिफलपक्यो। बुंदियन
 रेसपावकबिसमतूनआजमदलतक्यो

॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटानिभफोजनभो
 धमसान । उलैं जवनेसदतैं चहुवान ॥ बजैं
 असिहडुनअहुविदारि । किथौतरु कहहि
 दूरकरि ॥ २६ ॥ अस्योदतियापतिसम्पु
 हआय । पस्योमरिबीरलयोफलपाय ॥ रुथो
 गजरिहडुकरभराज । सज्योदतहडुनकोसि
 रताज ॥ २७ ॥ बढीबुधभूपतिकीहतबाह
 कटेभटअोरभज्योकछवाह ॥ धरानभसंगर
 संकुलिधुंधि । लयोनृपआजमकोसुतरुंधि
 ॥ २८ ॥ रुपेइमजाजवहैदलरारि । करैंअ
 सिअरिलौंऊनकारि ॥ महानटनचतमुंड
 नमोह । करैंकिलकारतकालियकोह ॥ २९
 ॥ रुकैंबिहसैंचउसहिनुंड । रुकैंअसिवार
 नचैंबहुहुंड ॥ अरैंइकतैंइकबत्थनआय ।
 परैंगजणछयज्योपविषाय ॥ ३० ॥ अरथर

भुमिचलच्चलथान । लम्योअहिभोगनको
 लचकाम ॥ कुलालकचक्रभयोभ्रमिकच्छ
 । वरकृतसूकरदडुबिलच्छ ॥ ३१ ॥ लगे
 अतलादिककंपनलोक । इतैअकुलातत्रि
 विष्टपशोक ॥ रमैपलचारहुआरुनरंग । स
 बैडमसूचतसोनितरंग ॥ ३२ ॥ चढ्योगज
 आजमपुत्तसचाव । धप्योनृपसम्पुहउद्धत
 धाव ॥ कमाननअँचतकाननकानि । तक्को
 इमभारतवाननतानि ॥ ३३ ॥ लगेसरल
 तिनहैइमलीन । मनें बिलसप्यकिसंवर
 मीन ॥ स जैबजिपन्नसायकसोक । उडैस
 लभाजिमअंबरशोक ॥ ३४ ॥ चलैअसि
 कुंतबरच्छिनचोट । असूरदुरैबहुहत्थिन
 ओट ॥ उडैबहुअंबरअगिअलात । जरी
 गिरिगिद्धनिचिल्लनिजात ॥ ३५ ॥ फिरे

रक्षिफेरवफेरनफाल। विबुल्लतकंकउडैं वि
 कराल ॥ कमानफटैंरुहटैंकमनैत। पलान
 कटैंउलटैंपरवैत ॥ ३६ ॥ हरैंकड्डंमानल
 रैंकड्डंहाकि। जरैंकड्डंमुच्छपरैंकड्डंजाकि ॥
 बरैंकड्डंहरमरैंकड्डंबाह। गिरैंकड्डंभीतधरैंक
 ड्डंगाह ॥ ३७ ॥ रुलैंकड्डंमत्तरवुलैंकड्डंरो
 स। डुलैंकड्डंहत्थिडुलैंकड्डंहोस ॥ बकैंकड्डं
 प्रेतलकैंकड्डंबीर। धकैंकड्डंज्वालहकैंकड्डं
 धीर ॥ ३८ ॥ चढैंकड्डंबाजिबढैंकड्डंचाव।
 पढैंकड्डंबंदिकढैंकड्डंपाव ॥ धमैंकड्डंस्वास
 नमैंकड्डंधूल। अमैंकड्डंगिह्रमैंकड्डंभूत ॥
 ३९ ॥ मचैंकड्डंरीठजचैंकड्डंमुंड। रचैंकड्डं
 सायनचैंकड्डंरुंड ॥ बजैंकड्डंप्रोथसजैंकड्डं
 बाह। लजैंकड्डंभीतभजैंकड्डंलाह ॥ ४० ॥
 रचरैंकड्डंशुग्निहरैंभटसग। ब्रसैंकड्डंरोय

कसैं कहुं तंग ॥ चटैं कहुं सोनघटैं कहुं चेत ।
 हटैं कहुं पिकिरटैं कहुं हेत ॥ ४१ ॥ बहैं
 कहुं संगिरहैं कहुं बैर । खहैं कहुं भिटिचहैं क
 हुं सैर ॥ चबैं कहुं उट्टफबैं कहुं चोट । अरबैं क
 हुं मिच्छहैं कहुं ओट ॥ ४२ ॥ मिलैं कहुं
 बारखिलैं कहुं धुमि । मिलैं कहुं धुमिमिलैं
 कहुं धुमि ॥ लगे कहुं मोहबगे कहुं लोह । द
 गैं कहुं तोपजगे कहुं दोह ॥ ४३ ॥ गिनैं कहुं
 घायबनैं कहुं गाय । हनैं कहुं दोरिभनैं कहुं
 हाय ॥ चिपैं कहुं सोनलिपैं कहुं चैल । छि
 पैं कहुं भज्जिदिपैं कहुं छैल ॥ ४४ ॥ तनंक
 तचापप्रतंचनतुहि । खनंकतरवगासुसुहि
 नखुहि ॥ सनंकतबाननप्राननसंकि । अनंक
 तपकररोचिभमंकि ॥ ४५ ॥ बहेपणवान
 कनहबिहद । महाबलबुद्धरच्योअवमह ॥

पर्योऽपरिसेन उपक्रमपूर। सज्योऽमसंभरपुं
 ॥ ४६ ॥ येऽत्येडनञ्च हिंउट्टिकबंध
 । मलप्यहिं देकरतालमदंध ॥ निरादिनजा
 दिनहिन्मअनंत। भिरैगजतैगजभक्तभ्रमंत
 ॥ ४७ ॥ अरै बहुबीति बिना असवार। उल
 हाहिं सुहाहिं जीनअपार ॥ गिरैडभपालक
 दारितगत्त। मनों तरुलैकपिनिंदप्रमत्त ॥
 ४८ ॥ पलाकिन होत सुदंडप्रपात। बडैतरु
 तालसकीसकिवात ॥ किरै बहुमस्तकल
 स्तककहि। गिरैगुनतुहि किरैधनुफहि ॥ ४९
 ॥ रवरै विरवरै सरहोरि निरवंग। जथा। तै
 बहुभीमभुजंग ॥ इ लीअसिधेनुनबुद्धिअ
 पार। किर्यो मलयाचलनागकुमार ॥ ५० ॥
 बहै परियातनकुलसवेग। त्रिमीसकिसंगि
 रसहि सलेग ॥ अरै कतिअम्यनमंडि निसु

इ । करै तुमुलाहवकेमटकुद्ध ॥ ५१ ॥ परै फ
 दिदुंदुभिमेरिनप्र । गरज्जाहिं केनरमंडिगहर
 ॥ परै गरिबग कबीरुपलान । कटै रुरप्रोयह
 यच्छटकान ॥ ५२ ॥ रची इमसंभरजाजदरा
 रि । हनी अपरिसेन घनीहलकारि ॥ घटागज
 मध्यसुदे घनघाय । लयो नृप आजमपुत्तनि
 राय ॥ ५३ ॥ भयो जबही असु आजमभंग
 । सबै नृपतत्य टेरतजिसंग ॥ भज्यो इकमूप
 रुद्वैहनिभिंति । लयो अब आजमकोसुतबिं
 ति ॥ ५४ ॥ चढ्योगजहो अबहारि बिचारि
 । रची सुत आजम बाननरारि ॥ सुसंभरहे
 तिसबैबरसाय । द्यो अपरिनिबलपारिदबा
 य ॥ ५५ ॥ हुती हयलकवचमूहमगीर । भ
 यो अवसानन इकहुभीर ॥ रच्यो जिहिं बि
 ग्रहभुग्नराज । बचै वहतिनिरिक्यौलहि

बाज ॥ ५६ ॥ फितूरदफैकरिमंडलफेरि। घ
 नीनिजसेनलयोगजघेरि ॥ कियोतउबानन
 जंगकराल। कहालगजोरकरैलहिकाल ॥ ५७
 अथर्मनहोतसहायकअंत। लगेबुधआयुध
 मर्ममिलंत ॥ भयोसुतआजममोहिबिभान
 निल्योसमतंगहिलैचहुवान ॥ ५८ ॥ दो० ॥
 घटियइछरिलरविरहत। घल्लियसंभरघत्त ॥
 आजमसुतइभपालसह। मोहितभयउप्रमत्त
 ॥ ५९ ॥ इभसमेतलैतिहिंअधिप। उमडियु
 कामनआय ॥ साहबहादुरदिगसजव। पत्रवि
 जयपढवाय ॥ ६० ॥ सरिताइकदिगसजत
 हो। सफरनबडिससिकार ॥ आयोडेरनबि
 जययुनि। कहतबुद्धजयकार ॥ ६१ ॥ इति
 श्रीवंशाभास्करेमहानंभूस्वरूपेदक्षिणायनेन
 वसराशौबुधसिंहचरित्रेपंचदशो १५ मयखः

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

दो० ॥ आजमदलअबलगवज्यो। पृथक
लोभगतिपाय ॥ अबदरिदरिसबउत्तरेआल

मदलबिचआय ॥ १ ॥ ष० प० ॥ चरमाच

लरबिचढतचित्तप्रमुदितनिसचारन। आ

जमसुततजिमोहबडुरिबुल्ल्योथितबारन।

कोजित्योदलकोनसुसुनिइनकहियकुसी

लित ॥ जित्योआलमसाहकटकवाकोतुम

कीलित। दीदारबरवसयहसुनिदुचितहोदा

सोंसिरहनिमरिय। अतिलोहछकितइमपाल

हू। परिप्रमत्तअसुपरहरिय ॥ २ ॥ दो० ॥

जिहिँउप्परआजमसुवन। मरिगफोरिउत्तमं

ग ॥ बारनवहसोनितबमत। आयुधधेदितअं

ग ॥ ३ ॥ आजमसुतमृतसुनिअधिप। इम

सुसम्हारियअनि ॥ कोटिइक्कजेवरकहिय
 । पृथक्सुधरियप्रमानि ॥ ४ ॥ स्वचरमेजि
 निजसाहडिग । कथसबविदितकहाय ॥ आ
 जमसुतगतअसुभयो । प्रभुअप्यनजयपाय
 ॥ ५ ॥ कोटिइक्कजेवरकह्यो । सोयितफी
 लसमेत ॥ आयसबसिप्रातकिअबहि ।
 अऊँ सबनपेत ॥ ६ ॥ ष० प० ॥ सुनिबु
 द्दोदितसाहस्वासनिजदासरिनायो । मंडि
 विविधमनुहारिकथितअतिनम्रकहायो ।
 बलतेरेबुंदीसउमंडिआजमपरआये ॥ काब
 लजेतैकहियबैनकरिसत्यबताये । अबप
 रियरलितुमअमितअतिबपुविसल्यकरि
 विधिबिहित । सेनासम्हारिमंडहुसयन । आ
 बहुआतनरेसइत ॥ ७ ॥ दो० ॥ तबयहसु
 विसन्नाहतजि । निजबपुसत्यनिकारि ॥

कियविधानभिसकनकथित। सबदलप्रथमस
 म्हारि ॥ ८ ॥ क्रमसबसायंकृत्य करि। संभरमंडि
 यमैत ॥ मीषानिसा आगमभयो। इहिं अतरतिहिं
 अंन ॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिभानुछपासुजि
 हानछई। मिलिकंजविरंजहुसोकमई ॥ बि
 बुधालय अत्तरि घंट बजे। सुरभीनस्वबच्छनमे
 लसजे ॥ १० ॥ दिनमूकनधुकनहूकदई। चि
 तचकनचौकितजीचकई ॥ चिलकारिनपि
 गलिकाचहकी। निधिसीनिसचारनधारनकी
 ॥ ११ ॥ चहुं औरनचौरनचायचढे। बहुजारन
 दारनमोदबढे ॥ दिनचारभयारअगारदुरे। कवि
 व्योमनछत्रनचित्रपुरे ॥ १२ ॥ जुरीदीपनिवा
 सनभासजगी। दहनोदयचुल्लिनहेतिदगी ॥
 रचिगायकगोरियगानरहे। गनिकानउमंगिसु
 जंगगहे ॥ १३ ॥ रसपीयस्वकीयनहीयरंज। पर

कीयनतीयनपीयतजे ॥ भयमुद्धनवोढनचि
 त्तभर्यो । ह्रियहृच्छयमध्यनबोधहस्यो ॥ १४
 ॥ बसिप्रोढनकेलित्रपाबिसरी । क्रुधधारिअ
 धीरनरारिकरी ॥ छमिआगसधीरननाहछले
 । चहिचावबिदग्धनदावचले ॥ १५ ॥ रसभूति
 स्तद्वृत्तिनऊतिरची । वयनारिनलच्छितिका
 नवनी ॥ कुलदालजिगेहसनेहक्रमी । जिय
 मैसुदितानसुप्रीतिजामी ॥ १६ ॥ अनुपुषस
 याननभीतिअरी । पियसंगसहेदनमेदपरी ॥
 परभोगदुखीनसरवीपरवी । हियरूपरुप्रेमव
 तीहरवी ॥ १७ ॥ पतिप्रोषितकानबिलाप
 पखो । क्रुधमानेसरवंडितिकानकखो ॥ दिनदे
 कनिवाहिअबैहरिता । तजिमानउठीकलहं
 तरिता ॥ १८ ॥ रुगिबिप्रसलब्धनसोकप्रि
 ल्यो । मनसेदसहेदनआनिमित्यो ॥ उतकंठि

निपुच्छिनिदानअली। लखयोमगबासक
 सज्जलली ॥ १९ ॥ भरदर्पअधीनइनानभज्यो
 । अभिसारिनिबेसनदीउपज्यो ॥ बहुगंधकु
 बेलनकोविकस्यो। ससिहूबउदैगिरितैनिक्
 स्यो ॥ २० ॥ सारिकेबसिअोषधिपोषलह्यो। ग
 हकायचकोरनमोदगह्यो ॥ भुवपैइमहोतनिसी
 यभयो। रसप्रेतनहासनयोरचयो ॥ २१ ॥ पित
 निदप्रजाव्यवहारथके। निमसंजमइंद्रियजो
 गिनके ॥ गतियाभतिरत्तिसुबित्तिगई। भलझ
 समुहरतबेरभई ॥ २२ ॥ बिरुदारवबंदिनको
 विथल्यो। क्रमजगितहाँनृपनित्य कर्यो ॥ छ
 कतैकसिअ्रायुधजोमछल्यो। चढिबाहरुसाह
 हजूरचल्यो ॥ २३ ॥ इतअ्रागमप्रातलुभेअह
 के। चटकीरचनायुधहूचहके ॥ दिक्प्राचिय
 आरुनरंगदिपी। लगिअंबरभुमिसुरोचिलि

पी ॥ २४ ॥ लघुदिदिन छत्रननिद्विलहैं । चि
 लज्यौं तजि भोगन ज्ञान बहैं ॥ भजि कै तम
 गुफान भयो ॥ जिमत त्वलहैं गृह दंद जस्यो ॥
 २५ ॥ दुति पूर जसूर इतैं दमक्यो । चढि अक्क
 दौं ॥ चमक्यो ॥ छकमैं तिहिं बेर नरे स
 यो ॥ गति अर्जुन साह समीप गयो ॥ २६ ॥ दो०
 ॥ साह बहादुर तिहिं समय । बैगो आय बना
 य ॥ लजरि निष्ठावरिलेत निज । परिकर तैं ज
 मपाय ॥ २७ ॥ सुनि आगम बुंदीस की । दारु
 अटा चढि देखि ॥ प्रमुदित आयो तर त
 । लोभ बिजय हिय लेखि ॥ २८ ॥ मनोहर म
 रति मै नरे स आय अंदर प्रवेश होत । उमडि
 कीव कीनी सूचना अछूती है । जाय करि
 रि निष्ठावरि मिसल लेत निकट बुलाय साह
 बरवसी बिभूती है ॥ देख हाथ हिय सों लगाय सु

सिकाय कद्यो मरदबलीतें राखी खूब मजबूती
 हे दिल्लीपुरगादीमें लही जो यहवादी बीरमहा
 रावराजा रावरी सपूती है ॥ २६ ॥ पादा कुलक
 म् ॥ महारावराजा इम अकख्यो धूपहिं छिनक
 लाय हियर कख्यो ॥ पुनि बरवसीस करी दिल्लीय
 पति । राम नृपति वह सुनहु रक्षिवरति ॥ २७ ॥
 कोटा दिक चोखन गढ दीने । कहत नाम जे सबह
 मचीने ॥ कोटा बुद्धि रत्न पट्टनि । गागरोनि
 तीजो दुर्गो नमनि ॥ २८ ॥ साहाबाद से रगढ था
 नक । अरु बडो दचे चत अभिधानक ॥ छबडा
 अरु गौरी दुर्ग बर । यंच पहाड पडा पडग नगर ॥
 २९ ॥ मधुकर गढ के पो न प्रमानहु । रवेत अंत
 एरंड बरवानहु ॥ मांगरोल बारीये बुब बर । अं
 वा अरु कनवास सुभग धर ॥ ३० ॥ गढ सुकुंद
 दीगोदरु अनता । रामगढ सुकुंजै डवानता ॥

आदोनीसांगोदप्रत्यावा। भीलबातचाचरनि
बधावा ॥ ३४ ॥ सीसवालिघाटीघाटोली। रै
राबादमऊगतजोली ॥ नरसंगढकोकिलपुर
ल्यौबर। बासथौणमोहीसुवफावर ॥ ३५ ॥ से
रगढरुछौपाबडोदसह। देवीरेवरीछवाअरिद
ह ॥ पर्णवादिगागपिरटलाई। अठरोईरुवका
अरिआई ॥ ३६ ॥ खाताखेरीबहुरिबरवानहु।
भालतोरुनरैलोमानहु ॥ काकुरनीकूंडीरुखा
नपुर। एप्रपुदियआसन्यआनिउर ॥ ३७ ॥
साहसिकवडेनदिनीजब। बिभतिनृपकर
जोरिकरीतब ॥ कूरमनृपजयसिंहहरामिय।
पैसेवकर्मगीतसजामिय ॥ ३८ ॥ तातैति
हिंसंबंधअरजयह। आजमदोसआहिजर
मीवह ॥ जोआयसतिहिंढिगतोजऊं। सेव
ककरिअपनससुजाऊं ॥ ३९ ॥ सुनियहअ

रजसाहकछुअकरैवें। तवसंबंधमहरहमरकरैवें
 ॥ पुरआमैरसुतोफिरिपावहु। अबतवसंगभ
 लेंढिगआवहु ॥ ४० ॥ यहसुनिनृपकूरम
 ढिगआयो। अदरघायसिक्ततवहपायो ॥
 तीरएकनुजसव्यलग्योतस। जाजवरनइक
 कंठलहनजस ॥ ४१ ॥ सोजसभयोबुद्धसरना
 गत। बकिकूरमपायेकेवलछत ॥ तिनसिक्त
 तजायरुनृपतक्यो। करिमनुहारिमोदहियछ
 क्यो ॥ ४२ ॥ कहीबदुरिनृपनेहकहाई। आ
 जमबसिआमैरबिहाई ॥ आलमसेवाअब
 हिअराधहु। स्वस्त्यजोरदुल्लभसुखसाधहु ॥
 ॥ ४३ ॥ डेराअबआलमदलभंडहु। रबमिक
 छुदिननबिपतिदुरवरवंडहु ॥ कूरमकौलैसं
 गयहैकहि। चाहुवाननिजदलआयोचहि ॥
 ४४ ॥ अप्पनढिगकछवाहउलारे। सालक

ए. वं. भा. बु. च. अजितसिंहजकोजोधपुरकेराज्यासनपरविराजबो १४२ मयू. १७
६

जापिपबिनयसम्हारे ॥ विधिइहिंकदनअ
पूरवबित्त्यो । जाजवरनकुल्लभनृपजित्त्यो ॥

६५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूखरूपेद
क्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रेषोडशो

१६ मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

ब० प० ॥ मरतसाहअवसामंनमंडियरद्वो

रत्न । अवनसाहअवनीसमूढतससुतप्रभा

दयन । इहिअंतरयहपिकिविआनिबंभन

अणारसन ॥ पटतरवतजोधपुरनृपहिंरकव

दुनिसंकमन । यहमिसलअवृउपजायउर

द्विजगृहतेतवआनिद्रुत । नृपअजितसिंह

रकरव्योतरवतसबनतत्यजसवंतसुत ॥ १

॥ दो० ॥ इतअल्लमहिबिजयअरु प्रभुप

नरसत्यप्रभानि ॥ मृतजरवमिनआजमभट

न। नृपनहरामीजानि ॥ २ ॥ इहिं अंतरमरु
 धरखवरि। फुहं चीविबिधपुकारि ॥ रद्वोर
 नजसवंतसुव। दयोतरवतबैठारि ॥ ३ ॥
 ष० प० ॥ यहसुनि आलमसाहकहरहिंदुन
 परकुप्यो। प्रलयरुद्रजिमप्रबललज्जधीर
 जसबलुप्यो। दियआयसतिहिं बेरनगर
 आमैररुनरउर ॥ कोटापत्तनबद्धरिपुरीदति
 यारुजोधपुर। आमैरआदिचउराज्ययेआ
 जमदोरबउतारिलिय। रद्वोरहुकमबाहिरर
 हतधन्वसीसअमरखधकिय ॥ ४ ॥ समर
 जित्तियहसाहरहियचउमासभुसावर। इसद
 समीअवदातअनखिमारवधरउपर। पीर
 नजारतिकरनबुस्तिअजमेरबहानों ॥ करि
 फोजनदरकुंचआयआमैररहानों ॥ बुधसिं
 हहिंतुजयसिंहतबकहियएहपरिनयसमय

इतसाहसंगअनबधिगमनबहिनिभईइत
उदितबय ॥ ५ ॥ दो० ॥ साहजेरकरिजोधपु
र। करिहैदकिवनजेर ॥ वेगनपुनिआवनब
नै। व्याहनकीयहबेर ॥ ६ ॥ लगीहमरीरवा
लसै। रजधानीरनरोस ॥ अंतहपुरसामोदग
ह। रक्ख्योभदनभरोस ॥ ७ ॥ तातैंहैदिनसि
कवलै। बहिनीलेहुबिबाहि ॥ संगहिअैंहैं
साहहिग। पित्तबहुरिभुवचाहि ॥ ८ ॥ बुंदि
यपतियहसुनिकहिय। सुनहुअरजममसा
ह ॥ सुलतानजुसंबंधभो। जानतज्यानपना
ह ॥ ९ ॥ कूरमनृपयातैंकहत। सहरनिकट
सामोद ॥ हैदिनअंतरलगनहै। बिरचहुव्या
हबिनोद ॥ १० ॥ तातैंजोआयसलहोंआ
ऊंकरिउदबाह ॥ हैदिनकीयहसुनिमुदित
। सिक्खदईतबसाह ॥ ११ ॥ संभरकूरमसि

कवलै। आयेदुहुं सामोद ॥ बनिदुल्लहबुध
 सिंहनृप। सहिलगनसबिनोद ॥ १२ ॥ जामि
 बडीजयसिंहकी। अमरकुमरिअभिधान ॥
 बुंदियपति हियहितविरचि। व्याहीबिहित
 विधान ॥ १३ ॥ इतआलमअजमेरपुर। प
 हुंयोगजबगरूर ॥ बुंदियपतिआमैरपति
 । आयेबहुरिहजूर ॥ १४ ॥ ष० प० ॥ इम
 आलमअजमेरआयपूजनपीरनकरि। र
 चिमारुनपरीसहल्योदरकुंचअलसहरि।
 अजितसिंहसुनिएहनमितमरुदेसनरेसुर
 ॥ बेगआयकरबंधिप्रख्योपायनअल्हनपुर
 । इमसाहधन्वकियनिजअमलसत्थरकिरण
 सवंतसुव। उपरिउफानसागरउपमदक्खि
 नपरगज्योगरुव ॥ १५ ॥ रहिकछुदिनअ
 जमेरसज्जिसंभरसेनापति। दक्खिनपरदर

कुंचगन्धधरिचलितजनकगति ।

लौरहेठ दस उर मिलानदिय ॥ यैहं

समनतिमनुहारिपराविय । हिंदवानसीसमि

चमहुकमतानि कुलराननदस्यो । अ

दपिनिकसतनिकट प्रनतिद्वयपठवनप

स्यो ॥ १६ ॥ दो० ॥ अमररान अप्पन अ

ज । तरवलसिंह अभिधान ॥ देवसिंह

पुरष । दुवपठये सनिदान ॥ १७ ॥ इक्क

नैक्कपचारिहय । साहकाजदियसंग ।

वाजि-बुधवानहित । इमपरवाय अभंग ॥

१८ ॥ वृ० प० ॥ अट्टवाजिगजइक्कमेर

मेरसपठये । तरवलसिंह अरुदेवलैरु स

रदुवप्राये । वाजि चारिबुधसिंहहेतन

बुनिबेदिय ॥ मंडिविबिधमनुहारिजानि

मियप्रमेदिजिय । पुनकहियसाह । ह० १॥

प्रभुहयहत्थियपठयेहुलसि । मिलवायहमहिं
 यहमेठअवदिदितनिवेदहुसमयबसि ॥ १६
 ॥ दो० ॥ सुनिसंभरतिन्हसंगलै । जवनईस
 हिंगजाय ॥ मिलवायेदसतरमित । क्रमस
 लामकरवाय ॥ २० ॥ सीसोदनअकवीस
 बहि । नुतिजुकहाईरान ॥ आलमअंगीका
 रकिय । नुतिरुमटसनिदान ॥ २१ ॥ बुंदिय
 पतिकरिसिक्खतब । लैतिन्हडेरनआय ॥
 नपकूरमरदोरहु । लिन्हैउभयबुलाय ॥ २२
 ॥ अजितरिंहजयसिंहको । इकसंभरअव
 लंब ॥ पुच्छियमंत्रनैरसप्रति । कहिकहिकि
 त्तिकदंब ॥ २३ ॥ प० प० ॥ बदहुबुत्तबुंदी
 सआयरुक्कतहमआतुर । लियउकुपिजव
 नेसछिनिआमैरजोधपुर । नहिनिबाहिअ
 बसकतविभवगजवाजिविमनअति ॥ स्तो

तसफरजिमसाह ॥

। सुनियह नरेस अकियय उचित वासर कछु

धीरज बहदु । सेवन बढाय कछु

मही सुनिज निजग हदु ॥ २४ ॥

को द्रु कम साह दल मां हिं सवन सिर । सी सो

दन यह पि किये जानि जा मिष जग जाहिर ।

सुमदरा उत्त देव सिंह ह बेघम पति ॥ सभर

प्रति कर जो रि बिहित अकियय यह ।

। करि नेह गोह पावन करु मंजु बिबाह द्रु

मम । सुनियह नरेस स्वीकार किय सिक्ख

मंगिय साह सम ॥ २५ ॥ दो० ॥ दस

रकी सिक्ख दिय । साह बिहित सनमान ॥

अजित सिंह जय सिंह सो । तब अ

दुवान ॥ २६ ॥ बेघम व्याहन जात हम ।

लुमरहि साह समीप ॥ मनन गिन द्रु

महर। उर बिचारि अवनपीप ॥ २७ ॥ ष० ष०
 ॥ सुनि कूरमरद्वोरदुहुन अकिवय सनेह सधि
 । साह कितवके संग अबहु जै है रेवा बधि । इहि
 अंतर कछु होय त तोरहि है संगतिसर ॥ नहि
 तो अहे है मुररि आप्य करियो कछु उपर । यह सु
 नि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचितन तुमकों
 अबहि । जो लौं बिबाहि आऊँ सजव तो लौं पु
 निर कवहु हितहि ॥ २८ ॥ दो० ॥ इम प्रबोधि
 बुंदिय अधिप । मन जय बुधन मत्त ॥ दस उर
 तैं दर कुंच करि । पुर बेद्यम हुत पत्त ॥ २९ ॥ पुत्ती
 अनुपम सिंह की । फूल कुमरि अभिधान । द्वेव
 भ्रात सविनय दई । बुद्धहिं बिहित बिधान ॥
 ३० ॥ बानत ककुमुनि इंक १७६५ सक । पु
 सिम माधव मास ॥ चुंडावति व्याही चतुर । बुंदि
 य पतिस बिलास ॥ ३१ ॥ इति श्री वंशमाखरे

महान्दं पूरुख रूपे दक्षिणायने नवम राशौ बुध
सिंह चरित्रे सप्तदशो १७ मयूरवः ॥ ॥

॥ ७९ ॥ ७९ ॥ ७९ ॥ ७९ ॥

॥ ७९ ॥ ७९ ॥ ७९ ॥ ७९ ॥

षष्ठ्यः ॥ चोवन गढ जब साह दये जाजवरन
जिलत । कोटा हतिन माहिं नृपहिं दिनों अति
विलत । जय उद्धत चहुवान नाहिं सम विसर्मा
चारयो ॥ आतन भुवलरिलेन प्रथम दल उतहि
हकारो । कम्गर पढाय निरि विअप्य कर बेधम
सन बुंदिय नगर । करिलेहु प्रथम कोटा अमल
भट मंत्रिय सत्सलिसमरं ॥ १० ॥ यह कम्गर द्रुत
चंचि मंत्र मंडिय इत बुंदिय । जो धराज परधान व
निक नय वृद्ध प्रपंचिय । धावर गंगा राम सरसु
भटन इकत करि ॥ कोटा उपर कटक बेग मंडि
य बीर नयनि । सुहृद कम्बंस कन केस सुत जोगी

रामहिं मुख्य किय । यह वीरधीर हड्ड सुउमं मि
 चलि सहरि चतुरंगि निय ॥ २ ॥ दो० ॥ को
 दापति जाजव मर्यो । तासत नय नृप भीम ॥
 बेस तरुन लैष हृबल । सोनत जत निज सीम ॥
 ३ ॥ बाल कृष्ण निज व्यास अरु फले चंद काय
 त्य ॥ बुंदिय पटये भीम नृप । करन साम नय क
 त्य ॥ ४ ॥ आर्य दुंदुन किन्नी अरज । कोटा इ
 कान लेहु ॥ मुल क और सब ही नजरि । निज गि
 नि धरहु सनेहु ॥ ५ ॥ नाथा उति नृप मात तव
 । अरजन मन्नी एह ॥ हिंदु न के दिन पत्तरे ।
 उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥ तम कित ल्य दो
 ऊस चिव । पच्छे निज पुर पत्त ॥ भकवी भूष
 लि भीम सेों । रन मंडहु अनुरत्त ॥ ७ ॥ इत बुं
 दिय ते उमंडि दल । चमलि उत्तरि चंड ॥ गजन
 जोगिय राम गो । भिरत अब्रामुज दंड ॥ ८ ॥

सुक्तादाम ॥ सज्योउतभीममहादलसूर।
 सज्योदूतजोगियरामगसूर ॥ कचौंदियरे
 दमिलेदुवभाय। दयेदलदोउनबाजिउगाय
 ॥ ६ ॥ बजीरनरीठमचीधमचक्र। चलञ्च
 लछोनियलगिलचक्र ॥ खटक्रियहहु
 नहहुनरवगा। मचक्रियपचयलैडामगा
 ॥ १० ॥ बडेबलभीमकरीहतवाह। कदे
 बहुबुंदियसेनसिपाह ॥ तिलचिलतुहि
 गसामियकाम। पखो। कनकाउतजुगिय
 राम ॥ ११ ॥ दयोसबबुंदियसेनबिगारि।
 जयोदूतभीमहजारनमारि ॥ उतैसुकबध
 रुकूरमनल्य। गयेदुवमेकलजालगसल्य ॥
 ॥ १२ ॥ तथापिनसाहमयोअनुरत्त। चलो
 दरकुंचनजातउमत्त ॥ वहेसरितातबसाह
 उतारि। फिरेदुवभूपतिडेरनजारि ॥ १३ ॥

उदैपुर द्वैदरकुंचनपत्त। मिल्यो नृपराज इहाँ
 अनुरत्त ॥ इतै दुलही नृपबेधमव्याहि। च
 ल्यो जवनाधिप सेवनचाहि ॥ १४ ॥ लयें
 अयरानिन संभरसंग। मिल्यो जवने सहिंधा
 रिउसंग ॥ गयो दैरकुंचन दकिवनसाह। स
 जेदलसबलसूरसिपाह ॥ १५ ॥ इति श्रीवं
 शभास्करे महाचंद्रस्वरूपे दक्षिणायने नवम
 राशौ बुधसिंहचरित्रे अष्टादशो १८ मयखः
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 दो० ॥ कामबरवस निजभ्रातहो। दकिवन
 धरखवार ॥ भागनगर बीजापुरप। हुव
 तिहिंसिरहुमियार ॥ १ ॥ विक्रम नृपपर
 मारभो। उज्जइनीपुरईस ॥ तापि च्छै नृप
 भोजभो। धारनगर अधास ॥ २ ॥ इति

गहिंदुल्लभ्योः । क्विचिद्वितरनद्योम ॥
 इनपिच्छैन्नयधरमतजि । लग्नोकेवललो
 भा ॥ ३ ॥ पृथ्वीराजचुहाननृप । जयचंद
 हरद्वार ॥ इनलग्नककुचनुसरी । हिंदुन
 धरमहिलोर ॥ ४ ॥ तिनपिच्छैत्तुरकान
 कुव । निजनयधरमनिधान ॥ पीठिनककु
 चंतरपरत । छंदीतिनहुकुरान ॥ ५ ॥ इ
 तवुंदियपतिअहरिय । केटाउपरकोप ॥
 इतआलमरनअकुस्यो । लाजधरमकरिलो
 प ॥ ६ ॥ कामवरवसआलमअनुज । अ
 ग्नीतिहिअवरंग ॥ मागनगरबीजापुरह । स
 बादियहितसंग ॥ ७ ॥ प० प० ॥ तुरक
 नदिनविपरीलआयआलमतिहिउपर ।
 धरदकिवनधमचक्रसजिसबीजापुरसगर
 । बुधसिंहहिबलईसविरचिआलिकोपव

दास्यो॥ कामवरवसकौपकरिमुद्धागसवि
 नुमारयो। वपकेदयेबलकरिकुविधिलिय
 बीजापुरभागपुर। सुवासहारिसज्जियअ
 मलअलामअनयउमंगिउर॥ ८ ॥ इतहु
 रमरद्वोरआयबिरहितअतिआतुर। मेक
 लजासनपुररिउररिहुवपत्तउदैपुर। दहवा
 रीदिसइक्कुहुतेबहुराजुबिनायक॥ आयरा
 नअमरेसतत्थमिंद्योबल्लतच्छक। तीनहि
 नरेसकेकानतजिमनप्रसन्नवत्यनमिले। रा
 नहिंनिहारिभूपनहुहुनरवृविद्यहियपंकज
 रिले॥ ९ ॥ दो० ॥ अगैरनअतामरे। म
 येअरतिनमी॥ आयसहुअहिअदह्यो।
 साहनकोजिनसीम॥ १० ॥ साहसिकंदर
 जुलिकन। अरुगजनगोरीस॥ अगैहिं
 दुनजिनिहिं। मयेप्रबलहुईस॥ ११ ॥

तिनतैँअबलगनहितक्यो।सीसोदन
 साह॥ यहकुलराउलबपको।रकैँहिंदुन
 राह॥ १२ ॥ पुरआमैररुजोधपुर।
 पटसरसाय॥ आलमतैँअबतोरिकैँ।उम
 उदैपुरआय॥ १३ ॥ अमरानअल
 दकरि।मिंद्योसनपुरवआय॥ १४
 यसिंहकछु।चरननहत्यचलाय॥ १५ ॥
 पकरिहत्यहियलायतब।कहियरान
 स॥ भूपतिमैँपावनभयो।
 सेस॥ १६ ॥ ब०प०॥ इममिलायकोरे
 नआयतिनसहितउदैपुर।महलन
 दमंडिउभयबुल्लेअवनीसुर।बाहिर
 लंघिरानसम्पुहपुनिआयो॥ करिजुहार
 सीसरकिबबहुमोदबढायो।
 निजसंगकरिहुलसिखासपरिसद

उमगव बुल्लि निजनिज उचित करन मंतराक
 त किय ॥ १६ ॥ बहिनी बुद्धहिं व्याहि दूत ।
 देव सिंह तरवतेस ॥ बेघम तेँ दूत आर्यकैँ । भिं
 ल्योरान नरेस ॥ १७ ॥ दिलखुसाल प्रासा
 दके । गोख मध्य पगधारि ॥ बैरे भूपति तीन
 ही चो रोग दरडारि ॥ १८ ॥ मध्यरान अम
 रेस अरु । कूरम नृप दिस वाम ॥ दक्षिण दि
 सरद्वार नृप । इमरहि सज्जिग साम ॥ १९ ॥
 चप्पई ॥ कूरम पतिकर जोरि कहिय सी सोद
 नृपति प्रति । तुरकन को नहि तोर भयो सब
 जोर मंदगाति । राजा कुल तुमरो सुहृद हिंदुन इक
 रकैँ ॥ जोखा दिखिय जार प्रबल आनन
 तुम पकैँ । साहसों तोरि हम आग्र इतराज
 धरम साहस परखि । हिंदुन हकारि हिंदुन
 अवनि हिंदुन पति भुगहु हरखि ॥ २० ॥

॥ दो० ॥ इतबुह्योरद्वोरनृप । हमरावरेसु
 भह ॥ पुमाहुआर्यावर्त्तभुव । लहिदिल्लि
 यपुरपह ॥ २१ ॥ मुक्कादाम ॥ यहैसुनि
 रानकहीअमरेस । नमैपुरदिल्लियजोग्य
 नरेस ॥ सुनैहमदिल्लियकोदसतूर । रहो
 सबसांजालिसाहहजर ॥ २२ ॥ प्रबेसत
 सासुअहकनआम । सजैसबबाहिरवार
 सलाम ॥ जहाँबिनुआयसबुल्लिसकै ।
 नमैइकटकनिहारतनै ॥ २३ ॥ जहाँ
 नहिबैठकदुखबदुहह । तरज्जततंडिन
 कोबनजह ॥ चलैसबपैदलआननअ
 गग । प्रभुजिममनिपलोततपग ॥ २४ ॥
 पटावतनारिनकोनवरोज । उठावतपन्न
 नकोहताओज ॥ बजावतबंजनजावत
 नार । सजावतपुनिनआहि सिंगार ॥ २५ ॥

॥ सुनो यह साहन को दसतर । हलैं सबहि
 हुनयुजि हजर ॥ प्रमुपनमिच्छन मोम
 हिरह । लिख्यो विधिहिंदुन गोविन लेह
 ॥ २६ ॥ रुकोउ करै हमहिंदु वराज । भिरे
 तब जाति असखन भाज ॥ हलैं तसमातन
 दिखिय होत । दहैं सरकरन ही निस होत
 ॥ २७ ॥ रुजोहु छै उनको मत रह । गिने
 तब दिखिय ही यह मोह ॥ रज्जु तुम साह उष
 पनराज । उदै पुरही तब दिखिय आज ॥
 पुरानुप कूरम मान जु किल । पधारि सुधा
 रिहै तुम लिल ॥ अबैहु छै अथन ज्यो ज
 सहोय । जंथा करिये बल कालहिं जोय ॥
 ॥ २८ ॥ बहो पुनि कूरम भूप बतंत । भली
 सबही करिहै भावंत ॥ अबै करिहिंदुन
 इकात अथ । सजे पुनि आलम पै निजस

त्य ॥ ३० ॥ दो० ॥ हिंदु बना कर रान के । इक
 परंतु यहें और ॥ आलम तैं हम तो रि कै । लि
 य उ रा व रे और ॥ ३१ ॥ देस दुहुन के खाल
 सै । और न लेन उपाय ॥ तो हम जि तैं गुल
 क निज जो दल देहु सहाय ॥ ३२ ॥ जिनि
 तुल क पुनि कट क स जि । है दुवरान हजर ॥
 द किन पर दर कुंच करि । जि त हिंसा हजर
 र ॥ ३३ ॥ रान कहिय कछु दिन उभय । रह
 दुअल्य सह जानि ॥ पुनि जो जो भवित व्य
 है । लै है सब हिम मानि ॥ ३४ ॥ बादि न डे
 र न सि कर व दिय । दोउन तैं कहिए ह ॥ इक
 इक गज है है अरब । दोउन अपि सनेह ॥
 ३५ ॥ अतर पान पुनि बुल्लिकै । इनादि ग
 र करे रान ॥ तब देउन कर ओडि कहि दे
 दुअप्य कर दान ॥ ३६ ॥ रान तथापि न

पानदिय । पानदानगहिहत्थ ॥ जिहिअंतरक
 रहुहुनके । संगहिधरियसमत्थ ॥ ३७ ॥ दोऊ
 रूपद्वयपानलै । निजनिजडेरनआय ॥ दूजे
 दिनकियगोदितव । रानअमरसभाय ॥
 ॥ ३८ ॥ दोऊनूपबुल्लियबहुरि । पतिपरियव
 हुंछोर ॥ करियअरजतहंशनप्रति । पुनिकूर
 मरहोर ॥ ३९ ॥ इकथातबिचअपनो । ह्म
 सहभोजनहोय ॥ अबतैंसंततएकता । कर
 हुनसंसयकोय ॥ ४० ॥ सुनिबुल्ल्योभतरान
 को । इहमनगंगादास ॥ सगताउतपुरबानसी
 पतिकछुरोसप्रकास ॥ ४१ ॥ कूरमपतियह
 राकरे । पुरुरवनअगौंकीन ॥ तोहकुलउज्जल
 यहै । मोनहिधरमबिहीन ॥ ४२ ॥ ॥ ४० ॥ ॥
 अगौंअकबरसाहलैनगुजरातलुभाये । भगव
 तसिंहरुमानपितामुतउभयपराये ॥ दरकुंजन

इन दोरिजोर जिनीशुजरधर ॥ पलटेपुनिमु
तजनकमिजलपंचककेअंतर। भगवंतसिंह
आयोप्रथमदिल्लियजावतरानधर। जिनदि
ननछत्रानाउदयधारतहिंदुनधर्मधर ॥ ४३
॥ नृपभगवंतहिरानजायसमुहयहलायो। उ
तहूभोजनकरनरानजुतप्रसभरचायो। दियउ
त्तरतबरानदेततुरकनतुमपुत्रिय ॥ हय। १०६९
अकलंकधरमहुँडैनजातजिय। तसमातसुन
हुँदोउनअसनइकथालनाहिनउचित। यह
सुनिनरेसभगवंततबपृथकजिम्मिबुल्लोवि
दित ॥ ४४ ॥ पद्धतिका ॥ नृपसुनहुपंचबा
सरविहाय। सुतमानइहाँअहेसुभाय ॥ वा
सौनरेसहुँहठप्रमत्त। बुल्लहुनभुल्लिअैसीकु
बत्त ॥ ४५ ॥ यहकहिनेरेसभगवंतवत्ता। द
रकुँवनदिल्लियनगरपत्त ॥ दिनपंचकअंत

रकुमरमान । भिंद्यो पुनिसम्पुहजायगान ॥

४६ ॥ मिलितासबिरचिअतिमानुहारि । पुनि
रानस्यहतिनजुतपधारि ॥ रचिगोठिबिबि
धब्यंजनरसाल । बैदास्योमानहिं पृथकथा
ल ॥ ४७ ॥ रहिरानदिदिपरुसनलगाय
। तबकुमरमानबुल्ल्योहिताय ॥ तुमकोहु
उचितबैठननृपाल । मुज्जैदुवमुज्जनइक
थाल ॥ ४८ ॥ तबकहियरानराजाधिरा
ज । एकासनव्रतमैकरियआज ॥ कूरमत
थापिबुल्ल्योनिहोरि । सागसनहोतब्रतद्व
कछोरि ॥ ४९ ॥ हमरोहुवआगमसमय
पाय । हैइकथालभोजनहिताय ॥ इमप्रस
भपुंजमानहिंनिहारि । पदुरानउदयबुल्ल्यो
प्रचारि ॥ ५० ॥ तुमलोभधारिलियजवन
रीति । हमरेधरहिंदुनधर्मनाति ॥ तुमअध

मज्जापिदुहिताकलत्र । तुरकनसमपिदुव
 सचिवतत्र ॥ ५१ ॥ अकलंकयहैइकलिं
 मज्जेन । तरपालसंगभोजनबनैन ॥ यहमु
 नतमानकुप्योकराल । बुल्ल्योसुउद्विक्कि
 छोरिखाल ॥ ५२ ॥ तुमलियनपारितुरक
 नप्रसंग । कछुदिननअंतरेहैवसंग ॥ यह
 कहिद्रुतदिसिधमानजाय । अकबरहिं
 अत्यन्तान्योकुपाय ॥ ५३ ॥ बहुबरसर
 हियचितोरजंग । राननतथापिखंड्योस्वर
 ग ॥ बिनुबललहियबरसनदियलि । छि
 तिहिततथापिकेपीनछति ॥ ५४ ॥ यह
 कुलवहैहिनिजनयउपेत । दुहितादितुमसु
 तुरकानदेत ॥ इकखालन्यसनलालैबनैन ।
 मरहमनिमंकमिअनैन ॥ ५५ ॥ यहसुनि
 कबंधकछकाहराय । रसमिसमयजानिरोस

नदिरवाय ॥ करजोरिकहियबुवनृपनफेरि
 । हिंदुननेरसतुमधर्महेरि ॥ ५६ ॥ हमकि
 यअधर्मगिनिबिभवहानि । मस्जीसुकरहु
 भटहमहिमानि ॥ अमरेसरानयहसुनिउ
 दार । बुल्ल्यासुव्यावहारिकबिचार ॥ ५७ ॥
 ममगेहओरनहिं तुमहिंदेय । इकबत्तसुन
 हुदुवनृपअजेय ॥ सौंपहुजोनिजकरलि
 खितसुत्थ । अबतैनदेहितुरकनअफत्थ ॥
 ५८ ॥ तोदुवसुतासुदेउनबिबाहि । देसहु
 लेदेहैंअरिनदाहि ॥ सहभोजनतो नहिउचि
 तआहि । पत्रावलिजिम्मतहमसदाहि ॥
 ५९ ॥ तुमडारिरजतबिहरबिसाल । नमज
 तितमध्यधरिकनकथाल ॥ इमसुज्जततु
 रकनराधमान । इत्यादिहेतुसहअसनह्यो
 न ॥ ६० ॥ करिलिखितदेहुजो कथितचा

हि । तोर्देहिं सिकव पुत्रिन विवाहि ॥ दुवन्
 पनय है सुनि असन किन् । रान सुपरुसावन
 रहिय भिन्न ॥ ६१ ॥ नृप दुव जिमाय इम
 सिकव अपि । डेरन इन आय रुमंत्र धपि ॥
 यह उभय साहसौ तोरि आय । करि लिखित
 दैन इत इन कहाय ॥ ६२ ॥ अब करहिं सा
 ह कुमहर अजेय । तसमातरान कथित हि बि
 धेय ॥ यह सोधि लिखिय नय दुहुन आदि ।
 तुरकन नै देहिं अबतै सुतादि ॥ ६३ ॥ क
 हि है जु रान धरि है सुसीस । इम लिखित रा
 नि दुव भुव अर्धीस ॥ यह लिखित रान कर
 दिय उ आय । प्रभुरान सुनत बिस्वास पाय ॥
 ६४ ॥ दुहिता दुहुन व्याहन विचारि । विर
 चिय विवाहि उच्छव बढारि ॥ कूरमन रेस
 यह समय पाय । प्रच्छन्न रान प्रतिकथ कहा

य ॥ ६५ ॥ संग्रामसिंहपट्टपकुमार । मुहिता
 सजामिदैहोउदार ॥ सुनिरानबहुरिपच्छीक
 हाय । इकलिरितअोरअपडुलिरवाय ॥
 ॥ ६६ ॥ याकैजुपुत्रजगदीसदैहिं । वहमुख्य
 राजअमैरलैहिं ॥ अमैरईससुनियहउ
 पाय । लिखिस्वकरपत्रदिनोषठाय ॥ ६७ ॥
 दुहितास्वकीयजनिहैसुपुत्त । अमैरपटल
 हिहै ॥ यहलिखितरानबंचिरुबिचारि । नि
 जपुत्तिउचितकूरमनिहारि ॥ ६८ ॥ दो० ॥
 निजपुत्तियसंबंधतब । कूरमसनकियरान
 ॥ जिनकाकासुतपुत्रिका । दियरद्वोरहिंदा
 न ॥ ६९ ॥ चंद्रकुमारिकूरमलहिय । रुखा
 कुमारिरद्वोर ॥ इमबिबाहिदुवभुवअधिप
 । जचियसिकवइनजोर ॥ ७० ॥ हाटक
 दोलाजंत्रतब । दुहुनराननृपदिन ॥ दुहु

नतुल्यदायजः प्रपि । कुसलसिकवतब
किन्न ॥ ७१ ॥ सत्तसहंसनिजदलसबल।
करिदुवभूपनसंग ॥ रानसिकवदेसनदर्ई।
अवनीलेन अभंग ॥ ७२ ॥ तबदुवभूपति
सिकवकरि । बढिचल्लियवरजोर ॥ छोनी
दक्षतसाहकी । उमंडियसंभरप्रोर ॥ ७३ ॥
दुवन्नुपद्रमदरकुंच करि । संभरउपरजात
॥ नारनोलसय्यदसुनी । रुमाबिलुहनबा
त ॥ ७४ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूख
रूपे दक्षिणाथनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे
ऊनविंशो १६ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

तनमनधाख्यो ॥ दुसनअलीसय्यदनबाब
 आदिकसम्मतकरि । जितिसजवजोधपुर
 धायदकिवनसाहसधरि । कूरमकबंधअव
 नीपइतअमरगानपुत्रिनपरनि । पृतनाप्रचा
 रिलुहनप्रथमपत्तेलगिसंमरसरनि ॥ १ ॥
 दो० ॥ नारनोलपुरसेनपति । दुसनअली
 केभ्रात ॥ घिंसीखानरुनूदी । तहंपत्नीयह
 बात ॥ २ ॥ ष० प० ॥ दुसनअलीसय्यदन
 बाबसुभटनअग्रेसर । नारनोलकेफोजदा
 रताकेसोदरभर । घिंसीखानरुनूदीनतिन
 बत्तसुनीयह ॥ लुहनसंभरनगरसुपहुहु
 मकबंधसह । सजितबहिसेनद्वादससह
 सरुमानगररक्खनचलिय । इतनृपनलुहि
 संभरसहरकहरकालवेहालकिय ॥ ३ ॥ दो०
 ॥ पुरहिंलुहिदुवनृपकढत । सय्यदपत्तेअ

य ॥ भट्टकूरमरहोरके । बुद्धेतिनबिहसाय ॥
 ४ ॥ हरवैराउतहंकिये । आतपकरतउमेल
 ॥ आमजलहत्यपसीजिहै । मुद्दिनपैहैमेल ॥
 ५ ॥ सुनतरहसत्यवभटन । दियउत्तरअ
 तिन्नाय ॥ छोहानलनिचिछिझिकै । नदोद
 रितनिदाय ॥ ६ ॥ इमकहिबाजिनबगलै
 । मुहेहिंदुनसीस ॥ दलदोउनधमचक्रव
 सि । त्योकिटमजगदीस ॥ ७ ॥ ष० ए० ॥
 भिलिहिंदुबसुगलानधिदुरनरिदुरुमापुरि ।
 भिरिदलचंगलसयनपयनचंचलजिमपातु
 मि । तुत्थिनतुत्थिअहुहिबुत्थिबुत्थिनभट
 कदिय ॥ हहुनरबगरवनकिरुहसुडनभुचप
 दिय । डाविनिनडहिंदिमल्लमकिनचिभैरव
 देननदिय । जिनननिजकारदेडाहरतइम
 अनीकसुखमच्छदिय ॥ ८ ॥ दो० ॥ चिंसी

खानरुनरदी। दुवसय्यदलियमारि ॥ सह
 समरदुहंशोरके। करियथोरखगकारि ॥ १६ ॥
 इमहरमरद्वोरनृप। पुरसंभरजयपाथ ॥ दि
 लीगहिदोउनदई। लहंगेअंदरलाय ॥ १७ ॥
 सोरहा ॥ निजनिजदेसनअप्राय। दुवनृप
 संभरलुहिदै ॥ थानादियेउवाय। न्यालम
 केकरिकरिअमल ॥ ११ ॥ दो० ॥ इतको
 टापतिभीमदिय। बुंदियकटकबिगारि ॥
 जुज्योनुगियरामहद। मारिभरदतरवा
 रि ॥ १२ ॥ धावरगंगारामपुनि। सेनानाय
 कहोय ॥ कोटाउपरउपर्यो। उत्तरिचम
 लितोय ॥ १३ ॥ कायध्यासीरामविय।
 पंचोलियपरधान ॥ मंत्रिबनिकहरिरा
 मविय। गुजरकुमतिगुमान ॥ १४ ॥ अ
 लीखानअभिधानदक। जवनरुहिस्त्राव

ह्मि ॥ पंच सहस्र पतिरकरवयो । खमगपता
 कनखुह्मि ॥ १५ ॥ यह सुनिकगरभीमनृ
 प । धावरमलिपठवाय ॥ बाबाधावरहमहु
 को । रकरवाहिबुंदियराय ॥ १६ ॥ जार्थीथा
 वरनीतिजड । गुज्जरठाहलगमार ॥ बाबा
 कहिकहिजा लिरवत । भिरैनसोरनमार
 ॥ १७ ॥ दैमिलानबहु दिनरह्यो । लबधाव
 रनयहिह ॥ अलिथरवानकोहकचढ्यो ।
 दोयमार दिनलिन ॥ १८ ॥ पञ्चनिका ॥
 लहिसमयभीमतबकियरपाय । बहुबिल
 रुहिल्लाहेतपठाय ॥ अकिदयधाकप्रति
 बरहुबैन । हकदेहुनलोअबहमलरैन ॥
 १९ ॥ धावरहिंकहियथहअलिथरवान ।
 जलविलकुदकगुज्जरअजान ॥ बुंदियस
 टबुहिल्लरुहियरहु । लिलिसबहिजवन

हकबित्तदेहु ॥ २० ॥ जोबित्तनलोहय
 करभटारि । सबयाहिदेहुभरनौबसारि ॥ सु
 नियहकुमंत्रदुर्मनसिपाह । चहिचहिसम
 स्तलगिघरनराह ॥ २१ ॥ तुरकनदियधा
 वरकैदघनि । यहरवबारीदेसदकिवनहु
 धनि ॥ सुनित्पतिबुद्धआयसपदाय । न
 हिलेहुमूढधावरबुलाय ॥ २२ ॥ बहुदिन
 तबधावरकैदलिन्न । हरिरामसाहपुनिअ
 रजदिन्न ॥ तबहुकमपायजवननचुकाय
 । हरिरामलियउधावरबुलाय ॥ २३ ॥ को
 टानेरसइमरवगगारि । द्वैबरकटकदिने
 बिगारि ॥ इलकामबरवससोदरहिंयारि ।
 निजअमलदेसदकिवनबिथारि ॥ २४ ॥
 दरकुंचउतरिरेवादुरंत । उज्जेनिआयकरि
 आतअंत ॥ गिरिबरमुकुंददरमध्यहोय ।

पुरप्रहनिचम्मलिलंधितोय ॥ २५ ॥ ल
 कवेरियगिरिहरकडिसुभाय । अजमेरपीर
 भित्तनचलाय ॥ सकसत्ततकमुनिवृक्क
 १७६७ मानअजमेरआयदिनोंमिलान
 ॥ २६ ॥ तबबुद्धसिंहप्रतिकहियसाह । हु
 रप्रकबंधकिन्नोएनाह ॥ संभरहिंलुहिलिय
 स्वस्वदेस । तसमातजंगमंडुनरेस ॥ २७ ॥
 कहिभूपजियतअवरंगसाह । हिंदूनकि
 यउसासननिबाह ॥ यहआहिमुलकहिं
 दुनअसेस । बिनुनीतिअमलकरनोनबे
 स ॥ २८ ॥ फरमानदैरुदोउनबुलाय । अ
 बहीनहिंरुक्कदुदुनआय ॥ अवरहुअ
 नायकियभुमिभाज । तिनसबनसमप्य
 दुस्वस्वराज ॥ २९ ॥ यहकहिपरायफर
 माननस । संभरहुलिखियदुवनपनपत्त ॥

हमकहिगुनाहसबकियउदूर। आवहुनिसंक
तुमअबहजूर ॥ ३० ॥ यहसुनिकबंधकूरमच
लाय। अजमेरसाहमिंद्योमुआय ॥ तबकहि
यसाहगिनिअप्यतोर। संभरदुहनलुहियस्व
जोर ॥ ३१ ॥ कूरमकबंधतबकहियएह। निज
स्वामिनिमकरवद्धोसनेह ॥ आजाअधीनअब
उभयआहिं। जहंस्वामिकामतंहंलरनजाहिं ॥
३२ ॥ आलमसिराहितबदुवनरेस। दोउनलि
खायदियस्वस्वदेस ॥ दतियादिराजअवरहु
लिरवाय। सहदेससबनदिनेबुलाय ॥ ३३ ॥ इ
महिंदुनृपनविस्वासिसाह। गहिनीतिसबन
अपियगुनाह ॥ दिनकबुबितायअजमेरदंग
। अबआयतरवतदिस्त्रियउमंग ॥ ३४ ॥ इति
श्रीवंशभास्करेमहान्वंशस्वहृयेदक्षिणायनेनव
मराशौबुधसिंहचरित्रेविंशो २० मयूरवः ॥

कटअजीम ॥ ११ ॥ बिनुबिक्रमअरुनीतिवि
 नु । रहतपिकिवदिल्लीस ॥ दकिवनकाबल
 दोहुदिस । सीमादबियसरीस ॥ १२ ॥ इतअ
 लमतेँसिकवलेँ । चितद्वन्तघरचाव ॥ चलि
 यमनोहरदंगतेँ । बुंदियदिसबुधराव ॥ १३ ॥
 ष० प० ॥ इक्षकनफटानित्यनाथकउलन
 आचारिज । हरिहरधरमहदायकरतअधम
 नमतकारिज । छात्रबहुततससंगसुभदहय
 गयसिबिकासह ॥ जावतदकिवनदेसवृष
 हिंमगमाँहिँमिल्योवह । गजमुखहपुरोहित
 नृपतिकोकउलमगसेवतरहत । तिहिँजाय
 नाथभिंद्योत्वरितपरियपायकिनियकहत
 ॥ १४ ॥ दो० ॥ नित्यनाथकोँगुरुवनमि ।
 गजमुखनृपदिगआय ॥ सिद्धमन्निगोरक
 रस । महिमाकहियबनाय ॥ १५ ॥ याँतेँस

सकतिप्रसन्नप्रति । याहिसकतिबरदिद्ध ॥ दैम
नबंछितयहकरत । सिस्यहुकोँसमसिद्ध ॥ १६ ॥
अनुष्ठानजपहोमअरु । मंत्रजंत्रमतिमंत ॥
कहैंजाहिभसमहुकरैं । कहैंजाहिमुखकंत ॥ १७
॥ कियनृपगजमुखकथितसुनि । नाथनिकेत
प्रयान ॥ बुंदियकोबिगरनसमय ॥ अरुभावी
बलवान ॥ १८ ॥ नित्यनाथढिगजायनृप ।
पयपरिकरियप्रनाम ॥ कहियसिस्यमेकोँक
रहु । धरहुभेटधनधाम ॥ १९ ॥ लकरवरुपय्य
नकरसुलभ । अैसेग्रामअनूप ॥ गहहुदच्छि
नाछत्तगिनि । रहहुइहाँगुरुरूप ॥ २० ॥ नित्य
नाथयहसुनिकह्यो । हमदक्खिनबसवान ॥
गुरुमृतसुनिद्रुतजातहैं । नरहैंनासनिदान ॥
२१ ॥ हमभवदीयपुरोहितहिं । सुख्यमंत्रदे
जात ॥ यातैंसिच्छालेहुतुम । देहुयाहिबसु

ब्रात ॥ २२ ॥ यह कहि मनु गज मुखहिं दे।
 गयो कन फटा देस ॥ ब्रत बुंदिय दिग कुंच करि।
 आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥ जब कावल नृप बुद्ध
 हो। तब निज सो दर जोध ॥ चढित रंड गुन गो
 रि दिन। किय जल केलि कुबोध ॥ २४ ॥ सुभट
 सचिव अनुचर सकल। बैठे पोतन तत्थ ॥ न
 चिगावत पातुरि निकर। श्रुति स्वर तारन सत्थ
 ॥ २५ ॥ राज इक लिंग प्रसाद इक। इहि अंत
 र मय मत्त ॥ निज दायज आयो हुतौ। उदय नै
 रते अत्त ॥ २६ ॥ बह बारन प्रतिदान बक।
 जल पीवन तं हं आय ॥ ताल पि किय पोतन ति
 रत। कुपि च ल्यो अति काय ॥ २७ ॥ सत्थ स
 कल आपान थित। किनो कहुन उपाय ॥ नि
 ज पोत हि पकरी निदुर। एते मै गज आय ॥
 २८ ॥ धादू ब्रात निज संत हो। ता सभयो इक

वार ॥ एतेविचउलटायइम। बोरीनावसुबा
 र ॥ २६ ॥ नियतिजोगसबतिरिक्कदिय। अ
 सुबसुत्वरितअवेरि ॥ थाइभातअरुअप्य
 दुव। खसुत्तनिकासेहेरि ॥ ३० ॥ निकसन
 खिनगुज्जरमरिय। असुनिजकछुअवसेस ॥
 सोचउत्थितसमातसो। पत्तोमृतपरदेस ॥
 ३१ ॥ अनुजरानजयसिंहको। भीमसुतायह
 तास ॥ जोधनारिसहगमनकरि। पत्तीदिव
 पतिपास ॥ ३२ ॥ यातैँपुरप्रविसतअबहु।
 सोदरसुचनसमाय ॥ मलितयापिसंबोधि
 न। इमपुरदियनृपअप्राय ॥ ३३ ॥ सुनिमृपहिं
 आवतसुभट। सचिबूर्गसमुपेत ॥ बुंदियपुर
 सननिकसिसब। सम्मुहअप्रायसहेत ॥ ३४ ॥
 नगरजैलगढतालतट। रहिनृपअंत्यमिला
 न ॥ प्रातपुरहिंप्रविसतप्रकटि। गृहगृहमंग

लगान ॥ ३५ ॥ कोटारन निजमटमरुयो । जु
 गियरामनिसंक ॥ ताको सुतसालमलयो ।
 गजारुह नृप अंक ॥ ३६ ॥ इम अलमकेपे
 सरहि पंद्रहबरस बिहाय ॥ हयखट सत्रह
 १७६७ महसित । प्रबिस्यो बुंदिय प्राय ॥ बुं
 दियपुर प्रविसत समय । सउन किद्वमगरुह
 ॥ विधवा बालरजस्वला । पिकवी सम्मुह बुद्ध ॥
 ३८ ॥ इत्यादिक असउन विविध । मनमन्नेन
 हितत्त ॥ प्रबिस्यो उत्तरद्वारपुर । जाजवजय
 उनमत्त ॥ ३९ ॥ इति श्री वंशभास्करे महार्च
 पूरुषरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुद्धसिंह
 चरित्रे एकविंशो २१ मयूरवः ॥ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

॥ ३०५० ॥ बुंदियगदियवैठि बुद्धिगजपुरव

हपुरोहित । मन्त्रिगुरुवसुनिमंत्रकउलमारग
 चाहोचित ॥ लकरवरुपेयनमुलकहत्थिसिबि
 काहयअपिय ॥ गदियतकअधिकारवरु
 सिगजमुखगुरुथापिय । आचारअधमअह
 रिरहिय पंचमकारनमुदितमन । बुंदीसबुद्धि
 बिगरीबिबिधकउलकम्मलमोकरन ॥ १ ॥
 जबकाबुलबुंदीसहुतोआलमअनुगामी ।
 तवहिरानजयसिहगायोपरलोकसुनामी ॥
 तासतरवतअमरेसरहोराणांकछुबच्छर ।
 पत्तोवहपरलोकसुनीबुंदिययहसंभर । ले
 सिकवतवहिपटरागिनीरानाउतिपीहरग
 र्द । उमेदकुमरितत्थाहिअचिरभावीबसि
 असुबिलुभई ॥ २ ॥ दो० ॥ पटरागिनिपंच
 त्वइम । लयोउदैपुरजाय ॥ चारिलकरवमु
 द्राप्रमित । रह्योतहोतसराय ॥ ३ ॥ इहिअ

तरबुंदीसप्रति । सगपनहितसरसाय ॥ पुरम
 नायरद्वोरके । नारिकेलदुतआय ॥ ४ ॥ सो
 सगपनस्वीकारकरि । नारिकेललियफलि ॥
 मनपरंदुलगिकउलमत । प्रथितबेदमतपे
 लि ॥ ५ ॥ रहतचक्रपूजानुरत । विधिनय
 धरमबिसारि ॥ आलसमयप्रमादकरि । बि
 गरीरजसम्हारि ॥ ६ ॥ इहिअंतरलाहोर
 ते । दिक्षियआयपुकार ॥ सूबाविचदलबं
 बिसब । सिरबमिलिकरतबिगार ॥ ७ ॥
 नानकमतअनुयासिसिरव । अजितसिंहति
 नईस ॥ सोमंडतअपुनअमल । सूबारवंडि
 सरीस ॥ ८ ॥ ४०५० ॥ सुनतरहदिल्लीसब
 वरुदिलकटकअंगजित । सजिचक्षियहु
 लसाहराहउदुतजयरजित । सबहिपुत्रनि
 जसंगदुरम बेगमसबहाजरे । तीनलकरव

तुक्वारभारसतपंचतोपभरि । संक्रमितसाह
 आलमसबलक्रमप्रवेसलाहोरकरि । वहअ
 जितसिंहसबसिरवनहनिदंडिखाडे लिनोंप
 करि ॥ ६ ॥ दो० ॥ आसितकरिसबसिरवन
 हैं । नानकपंथपुराय ॥ मुंडितडंडीमुच्छकरि
 । दंडिदयेनिकसाय ॥ १० ॥ सालमारउपवन
 निकट । रह्यो कलुकदिनसाह ॥ अबअभाग
 लुरकानको । उलटीकरतइलाह ॥ ११ ॥ ष०प०
 ॥ कलिजुगभूपनकुमतिनिलयनारिनभरि
 करै । रहैइकअनुरत्नअवरजारनतबचकरै ।
 यौहीअलमसंगनिकरनारिनअतहपुर ॥ ति
 नमैबेगमइकलज्जलंधियकामातुर । सैंहंस
 नसिपाहजामिकरहतुरुकततोहुनकामरय ।
 निसदीहजारइच्छतनिलजसरमाजिमसारद
 समय ॥ १२ ॥ दो० ॥ गायकआवतगानगृह ।

सिखवननारिनगान ॥ तिनविचपिकव्योरूप
 वर। गायकइहजवान ॥ १३ ॥ बनेंताहिक
 हायकै। रकव्योचिकनदुराय ॥ प्रतिसीरापल
 टायपु नि। लिन्नौरतिबुलाय ॥ १४ ॥ दिनर
 कर्वेमंजूसथरि। रतिनिकरैताहि ॥ योंवेगम
 दिल्लीसकी। चिपीकलाचतचाहि ॥ १५ ॥
 पिकिवसउत्तिनइह^{निस}इह^{निस}अकवीआलमअगमा ॥
 सुनलअसादीसाहयकि। लयोतासग्रहमग
 ॥ १६ ॥ साहागमवेगमसुनत। बनेंसंगलगा
 य ॥ जायसउच्चसंकानिलय। आईताहिदुरा
 य ॥ १७ ॥ पादाकुलकम ॥ इहिअंतरआल
 मतहंआयो। लियजुबनतसकरनहिपायो ॥
 तबनचायसोतिनदमलास। सउच्चगेहदिअहं
 नइसारा ॥ १८ ॥ सुलरिवसाहअकिवयवेगम
 सन। मैबिरकगदअज्जबिकलमन। यहसुनि

गायकमिन्नुविचार्यो। रंजरदोरिमाहहियमा
 स्यो ॥ १६ ॥ रीढकफारिपारवहफुटो। छिनअंत
 रआलमअसुखुटो ॥ नियतिजोगइमलेहुनि
 हारै। दिल्लीसहिंगायकहनिडारै ॥ २० ॥ गायक
 हुनारिनगाहिमास्यो। साहकुविधिमरिसुजसवि
 गास्यो ॥ अंतहपुरतबवजिगाअचानक। इतउत
 रुदनरागउरआनक ॥ २१ ॥ ष० प० ॥ कुरमहार
 अंगारतोरिभूरततोबाकरि। ऊरिऊरिबंगरिनपर
 तलुदतउदतपरि ॥ भोजदीनपहपकुमारयहसु
 निद्रुतथायो ॥ सुत्तोकुपरअजीममुदताकंहंहनि
 आयो। लघुभ्रातदेयतिनसिरनिलजपिल्योद
 लहलकारिकै। दोउनमरायगाहियलईआजम
 अनयविचारिकै ॥ २२ ॥ दो० ॥ आलममरन
 अपुबहुव। फुटीदिसदिसवत्त ॥ भोजदीनअ
 घातहनि। बैंगीतरबतप्रमत्त ॥ २३ ॥ ष० प० ॥

आलममृतसुनिअजितसिंहमरुदेशनरेसुर
 । करिफौजनदरकुंचआयअजमेरनिडरउर।
 लिन्नोबिंदुलिदुग्गसाहथानांहनिसंगर॥ सू
 बादक्षिसजोरभयोबिनुसंकगबभर। इततकि
 चिह्नदकिवनअवनिमरहट्टनबलमंडयो। जित
 तितउगायदिहियअमलबालिकातरपनछं
 डयो॥ २४॥ दो०॥ मतिप्रमादआलममर
 त। दिल्लीतियवरजोर॥ तक्कीमारिकटाच्छ
 दृग। सहरसिताराअोर॥ २५॥ ष० प०॥ दे
 देसदेसमचिदंगचंगभूरवनचमकाये। पुरपुर
 धादिप्रपातपयनयुग्धरधमकाये। अलसअे
 सअन्यायहावभावनबिसतारता॥ आसवपान
 अपारमारआतुरदुगमारत। गनिकानबिभव
 अधिकारगतचंडातकधुम्भरचिय। दिल्ली
 नयोटदुलहनिबनियसहरसिताराबरनप्रिय

॥ २६ ॥ दो० ॥ मौजदीनइतभ्रातहनिबेहि
 तरवतबनिबीर ॥ निलजदूरकिनोंअनखि
 । आलमसाहवजीर ॥ २७ ॥ ष० प० ॥ हुसन्नअ
 लीआलमवजीरकरिदूरकुसिकरवन । जुलफ
 कारखानामअवरथप्योलखिहुकरवन । तजि
 पत्तनलाहोररचियदरकुंचगेहरुख ॥ अतिज
 वदिलियआयपहपायोसुपरमसुख । आसव
 बिपानअनुरत्तअतिहठप्रमत्तत्रयभ्रातहनि
 । गनिकानसंगगीदरहतदिलियपादपदीम
 बनि ॥ २८ ॥ दो० ॥ नायकलाडकपूरदूक ।
 गायकगहिरगुमान ॥ तासलालबीबीबहि
 नि । अधिकरूपगुनआन ॥ २९ ॥ पहदुरमंत
 कौंकरी । मौजदीनबसहोय ॥ गलबाहीछिन
 छोरिकें । कमसुनैनहिकोय ॥ ३० ॥ पादाकुल
 कम ॥ नारिनसंगफिरतकांतारन । नारिनही

३० ॥ अहलविकारन ॥ इकदिनबागरीअसवा
 ही ॥ लज्जरसंगतथासबनारी ॥ ३१ ॥ पानकापि
 सामअतिकिन्नो ॥ सामचढनसासनपुनिदि
 हो ॥ छिन्नेलाबसिकेलिविहाई ॥ अपरअह
 संझाअवअर्हि ॥ ३२ ॥ मौजदीनअतिपान
 छिन्ने ॥ रहसिलालबीबीअनुरत्तो ॥ सोधि
 तससिविकाबिचसोयो ॥ जावत्खिनकाह
 नहिंजोया ॥ ३३ ॥ असवारीकेसमअचान
 क ॥ इनउतबजेचढनकेअनक ॥ कहिकहित्व
 रादरोगनकिन्नी ॥ सबदुरमनसिविकाकसिदि
 नी ॥ ३४ ॥ लैलैचलेकहारनृजानन ॥ जोयतफि
 रतसाहकोसबजन ॥ भटनलालबीबियद्विग
 भास्यो ॥ खोजनतबतहंजायनिकास्यो ॥ ३५ ॥
 खोलिवधसिविकाइकनाजर ॥ अन्योसाह
 भटनकेअंतर ॥ अतिअचेतसिविकाबिच

डार्यो । बुद्धिं राजसमस्तविचार्यो ॥ अहं
 तवदिल्लिय असवारी । मनजितसाह^{१०५} हइम
 मारी ॥ दैअधिकारविभवसुखदायक । गुरुमं
 त्रीकिन्नैसवगायक ॥ ३७ ॥ इतदिल्लियइम
 मविअनय । इतबुंदियअवनीस ॥ साहबह
 दुरमिचुसुनि । सोचिअधुन्योसीस ॥ ३८ ॥
 इतिश्रीवंशभास्करमहावंशसुखेदक्षिणाय
 नेनवमगणौबुधसिंहचरित्रेद्वाविंशो २२ म
 यूरवः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ~ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥ मतिविगारमन्त्रवाममन्त्र । सजि
 निधिरहितसमा ॥ आलसपरप्रासिकम
 यो । राजकाजतजिरज ॥ १ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥
 सनअलीसयदनबावइकमंत्ररचियइत ।
 मोज नकोमत्तजानिचिंतियप्रपंचरित ।

पूरबपुरपटनासुसाहफूरुकअजीमसुत्र॥त
 बपत्रनमिलिताहिभिरतआन्यौदिल्लीभुव।
 रनमोजदीनतासानबिरचिभजिदिल्लियअंद
 रगयो।लमिपिद्विसाहफूरुकसजवआयता
 हिहनिअंकुरयो॥ २ ॥ दो० ॥ सकनवरवट
 सन्न १७६६ समयबिक्रमहयनबह॥मोज
 दीनकौमारिकै।बैठोफूरुकपह॥ ३ ॥ जुलफ
 का रवांसचिवतस।हन्यौसोहुहमगीर॥स
 यदफूरुकसाहकिय।हुसनअलीसुबजीर॥
 ४ ॥ पलटीगदियतीनद्वम।बरसडक्केसौ
 हिं॥आलमपिन्हेमोजदी।अबयहफूरुक
 आहिं॥ ५ ॥ बुधनृपकैयाहीवरस।मयोकु
 मरकुलमान॥कछवाहीराबीउदर।देवसिंह
 अमिधहन॥ ६ ॥ होतजनमदिसदिसदये।
 लकरवनद्रमलुदाय॥जातकरमअरुदानजप

।सबविधिपुत्रसधाय ॥ ७ ॥ कुमरजनमञ्चा
 मेरपुर। सुनिजयसिंहनरिंद ॥ पठयेकुलपहि
 रावनी। दसहयदोयकरिं ॥ ८ ॥ मासतीन
 र। कुमरबह। बोरिगयोनिजदेह ॥ बिगारिवा
 ममगबुद्धमति। आलसगहिय ॥ ९ ॥
 येसोआलसअवरगत। सुन्योनपिकव्योर
 च ॥ सातोंप्रकृतिसमहारिनहिं। बिगरतस
 बहिप्रपच ॥ १० ॥ पुरभनायसंबंधमो। तिहिं
 परलगनलिखाय ॥ रद्वोरनकोरवबरिदिय।
 आवतबुंदियराय ॥ ११ ॥ बिप्रपुरोहितनि
 जबिबुध। नामभवानीदास। महडूकेसोदा
 सपुनि। कुलचारनमतिकास ॥ १२ ॥ येदुव
 भूपतयारकरि। पठयेनगरमनाय ॥ लगनबे
 रहमआयहैं। दिन्नीराहकहाय ॥ १३ ॥ दि
 जचारनदुवजायकैं। भाखिलगनरहितत्य ॥

इत नृपको आलस अधिक । उपजत विवि
ध अनत्य ॥ १३ ॥ वहे लगन नृप चुकि कै ।
हू । लगन दिखाय ॥ लगन पंचदश मुखयो
। व्याहनग । भनाय ॥ १४ ॥ द्विजचारन प्र
तिदहियतव । पति भनाय करिरीस ॥ अब
तुम सिर कन्या हनौ । कै आनहु बुंदीस ॥ १५ ॥
तब चारन तत्था रह्यो । द्विज आयो नृप पा
स ॥ बुल्यो अल मरिहौ न तो । व्याहहु आल
स बास ॥ १६ ॥ यह सुनि द्विज संकोच करि ।
गोनृप नगर भनाय ॥ परनि सुतार द्वोर की ।
विविध त्याग बदाय ॥ १७ ॥ बुंदिय दिम पु
निरुं च किय । अति आलस अलसात ॥
आल आत मगमौ हिरुकि । बहु मुका मरहि
जात ॥ १८ ॥ चलत रुकत रुकि चलत दूम ।
नगर गलपुर आय ॥ तहें तडाग अंतर उत

रि। कटकमुकामकराय ॥ १९ ॥ व्याहोमासत
 पस्यविच। साह्योअलससुगाढ ॥ रहतमालपु
 रतालविच। आयोसिरआषाढ ॥ २० ॥ ष. य.
 गरजिमेघधनधोरओरउत्तरसनआये। अधि
 कमंडिआसारविहितसंभरबरसाये। आयोज
 लजबतालतबहिस्यदनभगायइक ॥ तिहिं
 उपरथितहोयरह्योबहुदीहआलसिक। मा
 लपुरसचिवयहसोधिमनकूरमपतिप्रतिपत्र
 दिय। उनकहियनीरपरिवाहमगकहुहुतबयह
 इनकरिय ॥ २१ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥
 इत्थंसवसोदयसेकूपीटे। रणस्थितोमालपु
 रेतडागे ॥ बहून्यहानिह्यवसत्यमत्तश्चिरकि
 योविन्दुमतीक्ष्णीशः ॥ २२ ॥ अनुसुप्त ॥
 तत्रैवफूरकेशाहे। जालेभदसहस्रभृत् ॥ स्वा
 मिदर्शनसाकांक्षो। जैत्रसिंहःसमागतः ॥

॥ २३ ॥ बंशस्थः ॥ ततो नृपः श्रावणिके समा
 गते । बुन्दीं समागत्य विषुप्तबुद्धिभूतः ॥ आल
 यमा ० चिरक्रियेश्वरो ॥ वसधया पूर्वमव
 स्थितः पुनः ॥ २४ ॥ प्रा० मि० ॥ दो० ॥ इतम
 रु नृपः प्रजमेरलिय । तब बिग्रहद्वबरक ॥
 रूपनगररद्वोरनृप । राजसिंह कियटेक ॥
 २५ ॥ मरुभूपतिसौं नहिं मिल्यो । हठपूरव
 हमगीर ॥ साहहिं गिनिभानेजसुत । भौवह
 दिस्त्रियभीर ॥ २६ ॥ याकै अरु मरु इसकै । व
 नी नहिं जब बत्त ॥ तबरजधानी संगलै । दि
 स्त्रियपुरवहपत्त ॥ २७ ॥ बुंदियदूतव आयव
 है । राजसिंहरद्वोर ॥ नहिं किनो सतकारतस ।
 बुद्धअलसबरजोर ॥ २८ ॥ राजसिंहनिजपु
 त्रिका । सगपनहित कहिबत्त ॥ सोह नृपमं
 नी नही । अलसनारि अबुरत्त ॥ २९ ॥ पाव

अनादरतवगयो । कोटापुररद्वोर ॥ कन्याभी
 महिं व्याहिकै । जुरिमंड्योदकजोर ॥ ३० ॥
 रूपनगरपतिरीतिइहिं । भीमहिंतुकरिमं
 त्र ॥ निजरजधानी । दिस्त्रियगयउस
 तंत्र ॥ ३१ ॥ मरुवृपके वनिबनिपिसुन ।
 अनयसाहसौं अक्वि ॥ साहलगतभाने
 जसुतयातै अदररकि ॥ ३२ ॥ फद्धति ॥
 इतबैठिपहफूरुकसिताव । की सचिवसु
 रयसयदनबाव ॥ फरमानदेसदेसनपठा
 य । सतकारपुषसबनृपबुलाय ॥ ३३ ॥ बु
 धसिंहपासनतिसहिततत्र । निजहत्यमंडि
 पठयोसुपत्र ॥ द्रुतसदलआयसचुनलितारि
 । चाचावरचहुममधरमहारि । ३४ ॥ सोह
 नपत्रमन्त्रों नरेस । विधिजोगराजबुहुनवि
 सेस ॥ कियचत्रमहलविदसततवास ॥ अ

वसुमतमं निहवसन उतास ॥ ३५ ॥ दो० ॥
 चारन के सो दास सौं । इक दिन अकिय बुद्ध ॥
 मरु नृप जी आयन मिलैं । नुरै साहसों जुद्ध ॥
 ३६ ॥ बुं दिय तजि उत हम चलहिं । विआव
 हैं इत लेग ॥ ततो अभय मग मां हि मिलि । ध
 र दक्षि हैं हितेग ॥ ३७ ॥ महडू के सो दास त
 वा यह सुनि गो अज मेर ॥ मरु नृप सों मिलि कै
 कह्यो ॥ अब नहिं करहु आवेर ॥ ३८ ॥ हेरत
 हैं मरु नृप यहहि । कोरु मिलहिं सहाय ॥ या
 लें हुत दर कुंच करि । बुं दिय तरफ चलाय ॥ ३९
 कुंच लीन मरु नृप करिय । चढ्यो तथापि न बु
 द्ध ॥ तब आलस्य अचेत गिनि । फिलो कब
 बुद्ध बुद्ध ॥ ४० ॥ दिल्ली पति फरमान हुत ।
 नहिं मने बुंदीस ॥ यालें अनख बिचारि उर ।
 रची साहस हरीस ॥ ४१ ॥ रूपनगर पुर भूपको

तबहीलगोदाव ॥ संभरकोमरुप्रतिसहित।
 चरच्योपिसुनचवाव ॥ ४१ ॥ ष० प० ॥ रूपन
 गरपतिकहियसुनहुममवत्तसाहसुत। मरु
 पतिअरुबुंदीसजुरतमिलिउम। मंजुत
 । कोटापुरपतिमरदवाहिबुल्लहुकरिअहर
 ॥ दैतिहिंहुंदियदेसप्रबलपिल्लहुतिनउप
 र। क्रमनरेसजयसिंहकंहंखदलिस्वायहि
 यप्रीतिबकि। उज्जैननगरसूवाअरपितत्थ
 पठाबहुनीतितकि ॥ ४२ ॥ सुनतएहदि
 लीसपत्रलिरिभीमबुलायो। माराबक
 हिमिलिरुबहुतसतकारबदायो। दैतिहिंहुं
 दियदेससाहपिल्लयोदेउनपर ॥ इहितबक
 दाआयसेनसजियहितसंगर। इतसाहमे
 निआमैरदलअयसिंहहिंहुमहुकमदिय
 सूवासम्हारिउज्जैनपुरकरहुजाहममहर

क्रिय ॥ ४३ ॥ दो० ॥ सुनिहूरमउज्जेनदिस
 । करिदरकुंजचलाय ॥ मूरसबल नासहि
 त । बुंदियनिकसोआय ॥ ४४ ॥ सभरसम्भ
 ह नायकै । आन्योपुरहिं रि ॥ रकव्यो
 बुदिनप्रीतिरस । मंडिविविधमनुहारि ॥ ४५ ॥
 अंतेउरकछवाहको । अंते रनिचआय ॥ म
 लिननंदभाउजमुदित । रहीहृदयहरवाय ॥
 ४६ ॥ उपालमदूरमदये बुद्धनेसहितत्य ॥
 मनेनहिंफरमानतुमकिनोबहुतअनत्य ॥
 ॥ ४७ ॥ कोदापुरपतिभीमअव । बुंदियलि
 नलिखाय ॥ तुमप्रमत्तवहछिन्नतवि । करि
 हैबिग्रहआय ॥ ४८ ॥ यतैमममलआ
 य । सज्जुभातदुवरास ॥ अथिलसत्यमै
 दीनपरि । वहेद्रोहनिम ॥ ४९ ॥ लवअ
 मन्तनपदहिदफिरि । यहुगेहकीरारि ॥ य

रहीमैंहमसमुझिहैं। लिनीविविधविचारि॥
 ५० ॥ सकञ्चबररिखिसत्तससि १७७० फगु
 नदादसिस्थाम ॥ कछवाहीउरकुमरहुवभा
 वतसिंहसनाम ॥ ५१ ॥ भागिनेयहितहर
 खकरि। करिथकुंचकछवाह ॥ पहुंचावनबुंदी
 सह। चढ्योतुल्यहितचाह ॥ ५२ ॥ चढतवा
 जिप्रासादसिरबुल्यो। विकटउलूक ॥ काक
 नकंकनकुक्कुरन। कियफेरंडनकूक ॥ ५३ ॥
 यहअसकुनचितेनचित। चह्योचढिचहु
 वान ॥ कूरमकौपहुंचायकौ। मुरखोअलस
 अमान ॥ ५४ ॥ नाथाउतनगराजकोशु
 ढानामइकगाम ॥ मातुलकुलचहुनानको
 । किनैतत्यमुकाम ॥ ५५ ॥ सकञ्चबररि
 खिसत्तइक १७७० फगुनमेचकभूत ॥ को
 टापतिलैदलकढ्यो। बुंदीपरमजबूत ॥ ५६ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचंपूचरूपे दक्षिणा
 यनेन वमराशौ बुधसिंहचरित्रे त्रयोविंशति
 तमोऽक्षमयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 प्रहृषदी ॥ पोतनचम्पलिचायघायबज्जि
 गनिसानयन। पकरवरधंदधमंकिवेगहल्लि
 यहयवारन। साधानीसबसगभिरनअवर
 हुअनेकधट॥ संहंसबीलहयसज्जिभीमआ
 यउबटउबट। निसघटियदोयरहतैनिड
 रलरनयेरिबुंदियलई। प्रातहिपुकारबुंदीस
 प्रतिभयबिहालहाजरिभई ॥ १ ॥ सुनतरा
 हबुंदीसचलियचढिवाजिमुदमन। खबरि
 इलेबिचआयघेरिलिन्नोंअरिपत्तन। तब
 हिरूपटारिवामलंधिअसतोलीभूधर ॥ आ
 वसुरधपुरकरियरक्तदंतादरसनवर। गज

मुखहपुरोहित कहियतबमैंतो जावतलरन
 रन । भीमसोंभिंदि दिखरायभुजनगरद्वार
 चिहोंमरन ॥ २ ॥ यहकहिगजमुखआय
 प्रबिसिपच्छिमपुरतोरन । दक्खिनतोरननि
 जनिकेततहेंजायरचोरन । भरिभरिबाहत
 तुपकपिकिव नृपभीमकहाई ॥ दोऊनकैंतु
 मवंचमिलहुकरिबंधलराई । गजमुखदुपाय
 तबलोभगतिमंदजायभीमहिंमिल्यो । पकराय
 तबहिलिनों निपुनगुरुतामदतबद्विजगिल्यो
 ॥ ३ ॥ दो० ॥ गजमुखकौंपकरायइम । तोरन
 अरनफारि ॥ आयतरवतकीदिसअरि । बुदि
 यअमल बिथारि ॥ ४ ॥ इतनृपसोंसालम
 कह्यो । मरनउचितइहिंजुद्ध ॥ जोनरुचतलो
 लरहिंहम । हमहिंसिकवअबसुद्ध ॥ ५ ॥ य
 हकहिसज्ज्यो जायगह । निजपुरकरउरनाम

॥ नृपसुसुरथपुरतैँ मुररि । गोमेवारनगाम ॥
 ६ ॥ मेवारहिँ पुनिदाहिँ नैँ । करिगोमालवदेस
 ॥ सालक भिँव्यो जायतैँ हँ । पुरअमैरनरेस ॥
 ७ ॥ इहिँ अंतरउ नियारपति । नरुव बंस संग्रा
 म ॥ नैन नगर के गाम कति । दबेत कत कुकाम
 ॥ ८ ॥ कारतैँ गज मुखहु कढि । गोमालवनृ
 प पास ॥ तवहिँ अनादर तरजिनृप । अंतरभो
 जु उदास ॥ ९ ॥ छिनिँ अखिल अधिकारत
 स । द्विज सिवदास हिँ दिइ ॥ कउलमगा गुरु
 सिरकहर । कोप बिगारि अब किइ ॥ १० ॥ को
 दापति बुँदिय मुलक । इत समस्त अपनाय ॥
 अनायत्त कर उरस मुझि । घेस्यो सालम जाय
 ॥ ११ ॥ बुँदिय पुरअ वरोधतैँ । रानिय बिपति
 तिरत्त ॥ इक बेधम अमैर इक । पुरभनाय इक
 पत्त ॥ १२ ॥ अवर लोक अवरोधके । बिभव

सचिवतिहिंवार ॥ सबबेधमपुरसंचरे । देव
 सिंहकेद्वार ॥ १३ ॥ रवरचरुपये अहसत ।
 अपि नित्यतिन्हएव ॥ इकहायन बुंदिय बि
 भव । दुभरनिबाह्यो देव ॥ १४ ॥ इत नृपमाल
 वजायकै । लिखै तुरग अनाय ॥ बेधमपतिप्र
 तिमोलकी । दुंदियदि नपठाय ॥ १५ ॥ देव
 सिंहवहबचिदल । गिनिसगपनव्यवहार ॥
 दिनीहयसोदागरन । मुद्रातीसहजार ॥ १६ ॥
 बिपतिबीचइमबंदगी । चुंडाउतकियचाहि
 ॥ अप्पनसिररुनकियअधिक । बुंदियबि
 भवनिबाहि ॥ १७ ॥ इतकरउरपुरभीमनृप
 । रह्योबिंदिरनरत्त ॥ अट्टारहअहअंकुर्यो ।
 मुखोनसालममत्त ॥ १८ ॥ पलपलबिचगो
 लनपरिग । प्राकारनबिचपंथ ॥ सबकरउरतो
 पनसिलगि । हुवभ्राष्ट्रकहरिमंथ ॥ १९ ॥ मुहु

कमकुलउमरावद्वक।सुखसिंहहचहुवान।
 सुत्रहिंदैयरविभवपद।कियकसायपरिधान
 ॥ २० ॥ वहअनिच्छविचरतफिरत।कोटा
 दलविचआय ॥ मिलिगदियतजिभीमनृप
 ।दयोताहिबैठाय ॥ २१ ॥ कह्योभीमकरजो
 रितब।मोसिरकरदुनिदेस ॥ सुखसिंहहुयह
 सुनिकह्यो।चढियरजाहुनरेस ॥ २२ ॥ तब
 हिकहंसुखसिंहकै।वहचढिबुंदियआय ॥
 नलो किलोकरउरनगर।लेतोद्रुतहिबुराय।
 २३ ॥ पादाकुलकम् ॥ कोटापतिसुखसिंह
 कथितकिय।जान्यो लोकन सालम जितिय
 ॥ कूरमपतिइतअनविचार्यो।जामियबुंदिय
 हीननिहार्यो ॥ २४ ॥ अमररानकेपहुउदैए
 र।लसतरानसंग्रामधरमधुर ॥ तिहिंप्रतिद
 नजयसिंहपदायो।स्वकरमंडिसतकारसिवा

यो ॥ २५ ॥ हेनृपतुमभीमहिंसामुगावहु । बुद्ध
हिं बुंदिय देस दिवावहु ॥ यह मोसिर अँ प्रैसान क
रहु अब । तुमरो हुकम भीम स्वीकृत सब ॥ २६ ॥
तब हिरान यह पत्र बिचार्यो । क्रम पतिसंको
च सम्हास्यो ॥ निज काका तरवते सबुलायो ॥ बुं
दिय भीम समीप पग्यो ॥ २७ ॥ तब हि अँ प्राय
तरवते सभीम प्रति । अँ किय बिबिध रान की
बिनि ॥ बुंदिय तजि निज गेह पधारहु । मोसिर
यह अँ प्रैसान बिचारहु ॥ २८ ॥ यह सुनि भीम क
ह्यो धरि गबहिं । बुध नृप तैं बुंदिय नहि दखीहिं ॥
जमी समस्त साह की जानौं । तजि होतैं हँ हँ तुर
कानौं ॥ २९ ॥ यह कहि सिक्ख दई तरवते सहिं
। तजत भीम नहिं बुंदिय देसहिं ॥ तब देसहिं
साल मल मिलुदन । कोटा पति थानन करि कुह
न ॥ ३० ॥ दो० ॥ मेवावत लामंत हर । इनहु

नमहितेग ॥ बुंदियदिगपुरजेतगढ । लुदिय
 आयसवेग ॥ ३१ ॥ तिनपरपयोभीमनृपाधा
 द्वातभगवान् ॥ वानैजायधनावपुरकिनौहद
 यमसान ॥ ३२ ॥ मेवावतसामंतहर । मरेबहुत
 करिजंग ॥ धाद्वभातभगवानकै । धायबिल्लो
 अंग ॥ ३३ ॥ इतिश्रीवंशाभाकरेमहाचंपूस्व
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
 चतुर्विंशो २४ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 पक्षतिका ॥ संग्रामरानसादरकहाय । सोभी
 मनाहिंमन्नियसुभाय ॥ तकसीरतासमेदन
 विचारि । कोटसउदयपलनपधारि ॥ १ ॥ सी
 सोदयिंदिसंग्रामरान । दियभीमतत्यकछुदि
 नपिलान ॥ अहालसीसइकदीहअय । बिंठ
 दुधूपपरिवदवनाय ॥ २ ॥ प्रासादतासके

हेदुपास। इकनदियआयकिनोंतमास॥ कोटे
 सकुजसकारिकाहिकुबन्त। बुल्लियसालमजस
 चढिबरत्त॥ ३॥ सोसुनतभीमकरसुच्छध
 लि। लैसिकवआयबुंदियउमल्लि॥ रद्वोरसुम
 दजयसिंहनाम। सालमसिरपिल्ल्योजयसका
 म॥ ४॥ दलसँहँसबीसलैतबदुरुह। जयसिं
 हबिबिधसजितोपजूह॥ करउरसुजायविंदि
 यसजोर। इकमासरहियघमसानघोर॥ ५॥
 करउररजपूतनइमउपेत। सरपूरसरधिजिम
 सोभदेत॥ जयसिंहपुरसुतुदतनजानि। मन
 सोधिअ्रेयसामहिँप्रमानि॥ ६॥ सालमसमी
 पलिरिवदलपगाय। अबसामहमहिँतुममि
 लहुआय॥ अरुतुमरेसुतसौहअजेय। ममदु
 हितासगपनहैबिधेय॥ ७॥ सालमकहाय
 तबदनअनीक। परतोरनअंदरमिलनगीक॥

मनीय है दुरद्वोर तत्प । पुर द्वार गयो ले तुच्छ स
 त्प ॥ ८ ॥ उत्तलें चढि साल मसदल प्राय । रद्वो
 र लिय उअंदर बुलाय ॥ साल मसु मिल्यो जा
 ल मज नून । दुव घटिय अद्वैक बुद्धन ॥ ९ ॥
 दो० ॥ बीस सैं हंसदल तैं बचैं । अयो कर उर होन
 ॥ यहै न जानैं कूं मिल्यो । भीरु कबंध मियोन ॥
 १० ॥ साल मसु त पर ताप सौं । स्त्रीय सुता संबं
 ध ॥ करि बुंदिय गो कुंच करि । सुजय सिंह हत
 संध ॥ ११ ॥ जायो जुगिय राम को । अंकुरि क
 र उर राम ॥ जेर न दोहू बेर भो । भावी भितैं सुकन ॥
 इत कूरम कहि संभरहिं । उज्जयिनी हम जानत ॥
 जेलों लुम अत्य हिर हहु । हम करि हैं भुव हात ॥
 १२ ॥ यह कहि वह उज्जैन गी । सूबा पति सरसा
 य ॥ माम नाम काय थिया । रह्यो सुबुंदिय राय
 ॥ १३ ॥ इत मरु पति निज भटन पुच्छि लखि

समयमंत्रकिय । मिलिअप्पनकूरमनअप्प
 संभरपुरलुहिय । अबकूरमपतिफुहिभयोस्
 बासिरखामी ॥ एकाकीअप्पनहिरहेदिल्ली
 सहसामी । अवरनउपायसुज्जतअबहिउचि
 तअहिदिल्लियगमन । सुंदरबिबाहिसाहहिं
 सुतारहेसदासिरकूरमन ॥ १५ ॥ दो० ॥ अमर
 लिखाइउदयपुर । मेदिरीलिवहमुद्ध ॥ पुत्रिनसं
 दैपहुमिपुनि । लग्गोरखवनलुद्ध ॥ १६ ॥ निज
 तनयातबसंगले । यहकुमंत्रउपजाय ॥ अजि
 तसिंहदिल्लियगयो । पखोसाहकेषाय ॥ १७ ॥
 तबहिंदुनजिमतासकी । सुताबिबाहोसाहा
 अजितसिंहकोइछूठे । किन्नेमाफयुनाह ॥
 १८ ॥ साहवनायोसय्यदन । यालेदेहमगीर ॥
 हुसनअलीइच्छितकरै । कहिबेमात्रवजीर ॥
 १९ ॥ तिनसोंसाहुदुदबिरहत । समुहसज

तनसत्थ ॥ हुसनअलीकेहुकमकों । मिह्नको
 नसमत्थ ॥ २० ॥ हुसनअलीकहिमुकल्यो ।
 यहपरुभूपतिपास ॥ संभरपुरभाईहनें । बैरवि
 मंगोतास ॥ २१ ॥ यहसुनितबमरुपतिगयो ।
 हुसनअलीकेगेह ॥ करनजोरिअरुसपथकरि ।
 अकवीतिहिंयतिएह ॥ २२ ॥ मैंकूरमबरज्यो
 बहुत । साहसतदपिसम्हारि ॥ जयसिंहहिंपु
 रलुहिगे । आतराबरेभारि ॥ २३ ॥ सपथवृथा
 करिहुममिल्यो । सय्यदसोंमरुमोर ॥ सय्यदत
 बसागसगिन्यो । जयसिंहहिबरजोर ॥ २४ ॥
 जयसिंहहुयहसबसुन्यो । मरुपतिसय्यदमेल
 ॥ तबउज्जदनीनीतितकि । अंकुरिरहियअठे
 ल ॥ २५ ॥ इहिंविचदकिवनदेसकी । पत्नीअ
 निपुकार ॥ मरहहेलुदतसुलक । करिकरिबि
 दिधबिगार ॥ २६ ॥ ष० प० ॥ हुसनअलीस

य्यदनबाबदक्खिनपुकारलहि । पुरअवरंगा
 चादचल्योदरकुंचविजयचदि । सारधलकरव
 तुरंगसंगमतदोयतोपसजि ॥ आवतधनजि
 मउमडिबबनिकरंबतनितबजि । उज्जेननिक
 टअप्रायोजबहि कूरमपतिदूकनीतिकरि । पैती
 सकोसदरकुंचगोदुलहनिब्याहनब्याजदरि ॥
 २७ ॥ दो० ॥ सरत्रिकोस उज्जेनतैं । इकचहुवा
 ननगाम ॥ तिनतनयासगपनकियउ । कूरम
 सौंसहसाम ॥ २८ ॥ वहसगपनमनचिंति
 अरु । सय्यदगिनिबरजोर ॥ बितुहिलगन
 ब्याहनगयो । कूरमकुलसिरमोर ॥ २९ ॥
 गीर्वाणभाषा ॥ वंशस्थः ॥ लग्नंविनोद्वाहचि
 कीर्षयागतो । नीतिस्थअमैरपुश्यभूषतिः
 तत्तस्यपत्नीखलुचाहुवाणजा । पलङ्कयाया
 बलयान्यधारयत् ॥ ३० ॥ आ० मि० ॥ दो० ॥

कूरमकोपरि नायइम। सय्यददकिवनयत्त॥
 नवबरतब उज्जेनपुर। आयोपरनिउमत्त॥ ३१॥
 ष० प०॥ नवबरआयअवंतिजानिसय्यदद
 किवनयत्त। लिखि बिनातिमुक्कालियसाहू
 रुकहजूरतत। बुंदीपतिआयत्तस्यामिआय
 सलुप्योकिन॥ आलमकेअतिसोकनोहिंफर
 मानलयेइन। बुंदियलिरवायबरवसहुइन
 हिंसिरसबहुकमदहायहै। फरमानदेरुहुस
 हुहुयहिंअबहुजूरहुतआयहै॥ ३२॥ दो०
 ॥ यहसुनिसाहनबायइक। नामदलावरखान
 ॥ लिखितपदाजुतमुक्काल्यो। कूरमअरजम
 खान॥ ३३॥ आयदलावरखानतब। कूरमस
 चिवसमेत॥ बुंदीलैहुतभीमसो। अप्पीइन
 हिंसहेत॥ ३४॥ अयमसाहकियखालसै।
 बुद्धहिंतदनुसमाधि॥ कोटाकेउठवायकै। था

नांनिजइनथपि ॥ ३५ ॥ सुताभनायअधी
 सकी। रानीजोरद्वोरि ॥ सुतानामसरजकुमरि
 । हुवताकैगुनगोरि ॥ ३६ ॥ सकअंबरहयसत्त
 इक १७७० । अमारुफगुनमास ॥ कोटापति
 बुंदियलई । गिल्योसुदुज्जरयास ॥ ३७ ॥ स
 कजालेमहयसत्तइक १७७२ । अगहनदाद
 सिस्याम ॥ आईपुनिबुंदीसकै । वसुधाकुलटा
 बाम ॥ ३८ ॥ बुल्लिसचिवबुंदीसके । फेरिबु
 इनपअन ॥ देबुं । दीदिल्लियगयो । जवनदला
 वरखान ॥ ३९ ॥ अवरदेसबुंदीसकै । आयो
 सबहिवहोरि ॥ भीमनगरचारामऊ । द्वैयरग
 नांनछोरि ॥ ४० ॥ तदनंतरफरमानपुनि । पठ
 येसाहजर ॥ बुद्धसिंहजयसिंहनृप । बुल्लेउ
 भयहजूर ॥ ४१ ॥ ष० प० ॥ फरमाननहुने
 लिसज्यो कूरमनरेसजब । बुंदीसहिं बुलवाय

कह्यो आहतउभयप्रब॥ रापिकवहुफरमानचल
 हुदिल्लीहमसत्ये ॥ लैहैंसाहरिगायमुकुटहैं
 अपरिमत्ये । कूरमनरेसयहकहिचढ्योबुदीप
 तितदपिनचढत । आलसअचेतमतिमंद
 अपतिपलपलप्रतिचलिहैंपढत ॥ ४२ ॥ सुन
 तरहजयसिंहआसुबुंदियदलआयो । जाभि
 पडुछहिंकहियसालसजिमोदसिचायो । अब
 नृजानआरुहुहुचलहिंधरिवंधभृत्यहम ॥
 निजअसुसपथदिवायरहअकिबयनृपकूरम
 । लंकोचतासचहुवानतबचढितुरंगतिनसं
 गहुब । इहिंरीतिछोरिमालवअवनिदिल्लि
 यचल्लियभूपदुव ॥ ४३ ॥ दो० ॥ कहिमुकुंद
 दरउत्तरे । चम्मलिपहनओर ॥ लकरैवरियगि
 रिलंथिके । आयग्रामअनघोर ॥ ४४ ॥ क
 हुदिनतल्यमुकामकरि । चरमुकालिहित

चां-न। सभर निज उमराव सब । दै दल
लिन बुलाय ॥ ४५ ॥ प्रथम इंद्र सलोत
भटनगर इन्द्र गढनाह ॥ मेघ सुवन छित्तर
मरद । आयो अधिक उच्चाह ॥ ४६ ॥ छित्तर
रसौ जय सिंह नृप । मिल्यो न बल्य न धालि ।
इन् अकवी तुम आमर्द । हम मिलि है अब
हालि ॥ ४७ ॥ हम कहि कूरम सौ मिल्यो ।
दै पय गदिय सीस ॥ इक सरपन अनुस
र्यो । अनखि इन्द्र गढ ईस ॥ ४८ ॥ कर उ
र पति आयो तदनु । मिल्यो उर उद्योत ॥
सालम जुगी राम सुव । भट सुहु कम सिंह
त ॥ ४९ ॥ रन कर उर पति पचिर हो । सु
नृप भीम हत संध ॥ यातैं दो उन अह र्यो ॥
सालम घप्प लिखंध ॥ ५० ॥ सुभट वै
रि सलोत सजि । नगर पलोधी नाह ॥ जे

तसिंहजाजवजयी। आयोसरसासपाह
 ॥ ५१ ॥ बैरिसल्लकुलउद्धरनहडारनह
 मगीर ॥ बलवनपतिआयोबहुरि। अभ
 यसिंहअतिवीर ॥ ५२ ॥ पुरवातोली
 पतिप्रबल। अमरसिंहअभिधान ॥ इंद्र
 सल्लकुलउद्धरन। चायमिल्योचहुवान ॥
 ५३ ॥ मिल्योआनिउद्धतगुमर। चंडसमर
 चहुवान ॥ सेरसिंहसामंतहर। भजनैरीपु
 रमान ॥ ५४ ॥ नाथाउतनगराजहू। नग
 रगुहाकोनाह ॥ पुनिदूजोनिम्मानपति।
 आयोमिलनउद्धाह ॥ ५५ ॥ दो० ॥ सब
 लमिलेउमरावसब। हमस्वामीढिगआ
 य ॥ सबहिसिराहेसरपन। जयसिंहहुज
 सगाय ॥ ५६ ॥ सबनकहोदिल्लीसदि
 य। बुंदियलिरिखतलिराय ॥ तेकगरपि

कैवैहमद्गु। तबइनदिनदिरवाय ॥ ५७ ॥
 पिकिवपटासबहिनकह्यो। कूरमनृपाहिंसि
 राहि ॥ मऊनगरबारोंमुलक। एनपटाबि
 चआहि ॥ ५८ ॥ कूरमतबमुसिकायक
 हि। दुवहमदिल्लियजात ॥ अबलैहैकहि
 साहसों। ऐसमुलकबसुआत ॥ ५९ ॥ इ
 मकहिअवरनसिकवदै। चलेउभयनृप
 तत्य ॥ सालामसिंहरुजैतसी। सुभटलये
 दुवसत्य ॥ ६० ॥ इमदुवनृपआमैरपुर। द
 रकुंचनचलिआय ॥ जामियसालकप्री
 तिजुत। रहेकछुकदिनराय ॥ ६१ ॥ तहं
 करउरनरीफतकि। सालमहितबरबसी
 स ॥ नैननगरकोपरगनां। सबदिनोंबुंदी
 स ॥ ६१ ॥ सालमकैइकतमई। पडुमिद
 मनवलकरव ॥ कतिकनतबर्योइकह्यो ॥

बनिहै कबहु बिपकव ॥ ६२ ॥ मुक्तादाम
 ॥ करीइम सालमकोँ बरवसीस । गयेपुनि
 दिखियहै अवनीस ॥ उभै हित संग गयेपु
 निआम । सजीनृप दोउन साहसलाम ॥
 ६३ ॥ अनामय दोउनको जवनेस । सिता
 धरपुच्छिय प्रीति बिसेस ॥ उभै नृप अप्पन
 अप्पन ओक । सिराहहिँ पाय रबरेहतसी
 क ॥ ६४ ॥ उभै भट सालम जेत समतथ ।
 बुलायउरहु सभा बिचततथ ॥ नकीजनकी
 दूतमाम उमल्ल । परील करीइक सालमह
 ल ॥ ६५ ॥ दईपुनि साहस मस्तन रिक्कव
 रही नृप कूरम की आति तिक्कव ॥ रहैइम
 दिखियहै नरनाह ॥ सदारिखिलिबल बुला
 वतसाह ॥ ६६ ॥ लयो नृप कूरम साहरि
 माय । असब कहै सु करै हित पाय ॥ सुसा

हवसालमकों करि मुद्ध। पगायउ बुंदियपै
 तब बुद्ध ॥ ६७ ॥ सभादिन इक्क बडीर चित्ता
 ह। बुलायउ ग्राम सबै नरनाह ॥ गयो ज्ञाय
 सिंह हूरु मईस। गयो बुध हड्डन वंस अधी
 स ॥ ६८ ॥ गरबत साहन केस सुरत्त। गयो
 मरुईस अजित्त दूतत्त ॥ गयो नृप संभरभी
 मम बंध। गयो पुनिरूप पुरे सक बध ॥ ६९
 ॥ गये इम हिंदु व मिच्छ असेस। गयो पहि
 लैं तैं हें बुद्ध नरेस ॥ सलाम करी कसि पहिस
 ठल्ल। लई नृप बुंदिय पह मिसल्ल ॥ ७० ॥
 गये तदनंतर सब हि ग्राम। सजी हित पूर
 बनम सलाम ॥ बिले बकलू करि आय
 उभीम। लक्यो हिय हेत रची तसलीम ॥
 ७१ ॥ सिरे लखि बुद्ध हिं मुद्ध रिसाय। जस्ये
 मन मां हिं मुक्यो मिटि जाय ॥ दइ उदिसा

हसामस्तनसिकव । रही तैं हें बुद्धबलापति
 तिकव ॥ ७२ ॥ शुद्धप्राकृतभाषा ॥ मालि
 नी ॥ ^(१)इयउ अयउराओतत्यसङ्गामर ए
 । एरवडजयसीहं पेसिअं एहपत्तम् ॥
 जायिकुण्डपसान्प्रफूरुओतुवधीए । व
 सदृण एतदोमेपदृणं चित्तऊडम् ॥ ७३ ॥
^(२)एयमयजयसीहो तंखुददृणयसं । समय
 बलविएगी एीइ एकलुबुद्धिम् ॥ दडवड
 हिययो सोसाहअममि कुम्पो । कहिउज
 वणएणहं फूरुअं राणवत्तम् ॥ ७४ ॥ प्रा.
 मि० ॥ प० प० ॥ अंगै अकबरसाहलि
 यउ चित्तोरदुगावर । पन्धो अपिपियबहु

(१) इतः उदयपुरात् तत्र सङ्गामराणां नरपतिजयसिंहं प्रेषितं स्तैह
 कम् ॥ यदि करोति प्रसादं फूरुखः तव कन्यायां वसति ननु तदा पत्त
 नं चित्तऊडम् ॥ ७३ ॥ ^(२)नयमयजयसिंहः तखलुदृष्ट्वा पणं समयबलविवेकीनीत्या
 एउरवडिम् ॥ श्रीगंगेसोसाह कामे कूर्मकर्थाय तु यवनमायं फूरुखं राणवार्ताम् ॥ ७४

रिरह्योतबतैँवह उज्जर। साहडुकमबिरा
नजायस्वच्छंदबसैँ किम॥ यातैँ पठईअ
त्यअरजसंग्रामसिंहइम। अण्डुनिदेस
बसवायअव चित्रकूटहैँहमरहैँ। सतपंच
सुभटपरबैँतमम कथितकहोतैँहं निबहैँ
७५॥ दो०॥ नजरिद्वय करिहैँ कितो। यहैँ
कहीजबसाह॥ तबाहि समग्रयलकवमि
त। अकवेकूरमनाह॥ ७६॥ प० प०॥ सु
निसुरानमुकालियनजरिहुँडीत्रयलकरव
न। कूरमकिन्नीनजरिसाह पिकवीसुमोद
सन। लियउपटालिखवायरहीमहूरहुअ
वसेसह॥ अरजइक पुनिकरियनगरअ
मैरनरेसह। बुद्धसिंहभीमविग्रहविरचि
छिज्जहिँलरिलरिपरसपर। दोउनमि
लायअवअण्डुतमेटिवइरमंडहुमह

॥ ७७ ॥ शी० ॥ सुनलराहकोदेससों ॥ दि
 शीसाहकहाय ॥ करहुमेलबुंदीससन ।
 जयसिंहहदिगजाय ॥ ७८ ॥ जोतुमखि
 ओहुकमलहि । सोसबपच्छो देहु ॥ उभ
 यभातरकतजुरि । सुनयसामकरिलेहु
 ॥ ७९ ॥ हरिगीतम् ॥ लरजोरआयससा
 हकोसुनिमीसमीजुतधीभई । जयसिंह
 केवनरूपडेरनजायलिनलिमंडई ॥ कछ
 बाहकहिवारों मरुअब शोरिइनलिरिदि
 दीजिये । बुंदीससों मिलिसामकैइकथा
 लामोजनकीजिये ॥ ८० ॥ तवसाहओ
 कछथाहहुमनमेंनइकतजानिकें । कीदे
 सतजिबहदेसदीनों लैरवकगरदानिकें
 ॥ करिअसनइकाहियालओभूयाल
 नयहितवित्तरयो नृपमीमउपरओर ।

ओमनमोहिंदोरवभस्योजस्यो ॥ ८१ ॥ सक
 तीनहय रिरिइंदु १७७३ मैयह बत्ततीनन
 केमई । इहिंबीचजहनकीपुकारअपारदि
 स्त्रियउत्तई ॥ इकनैरथूहनिईसजहसुनाम
 चूडामनिरहैं । धनजोरओमनजोरनजोर
 रफोजननिहैं ॥ ८२ ॥ तबसाहजहपुका
 रपैकछवाहभूपतिपिल्लयो । बुंदीस बिनु
 सबसंगनृपकारिसेनसंचय दिल्हयो ॥ इन
 जायतोपनमालकैरचिजालथूहनिबिंदई
 । इतसाहबुंदियनाहबुल्लिरुनबत्तसुस
 च्छई ॥ ८३ ॥ बुधसिंहरानपठायविन्न
 तिचित्रकूटबसावहीं । कियभेटदमत्रिल
 कवओअपनोनिदेसउठावहीं ॥ नयमंद
 हडनरिंदयोंसुानकुम्भकानिहुनांकरी ।
 जयसिंहउक्तप्रपंचजानतहयहेकथउच्चरी

॥ ८४ ॥ वह दुर्ग प्रकबर साहरन करि अ
ब्रह्माद समै लयो । हम आदि बहुत नरान
तजित बसी स साहन कौनयो ॥ वह चित्र
कूट बसाय कै पुनिरान फैल प्रचारि हैं । अल
नीप हिंदुन फेरि अंकरि साह नाह बिसारि
हैं ॥ ८५ ॥ यह राह फूहक साह सुनि वह प्र
भीत बिदारयो । जय सिंह पै इत भीम यह
निजंग मोह प्रसारयो ॥ कर जोरि कहि ममगे
ह पुत्रिय आष उपयन कीजिये । कछु बाहत
बजय सीह कहि कछु दीह अंतर दीजिये ॥
८६ ॥ नृप बुद्ध सोदर की सुता हम पु बस गप
न कै बरी । वह व्याह करि दुतरावरे यह बच उप
नय अहरी ॥ जय सिंह यह कहि भीम सौं बुध
सिंह प्रति दल पिल्लयो । तुम व्याह मड्डु बग
मै पुनि भीम को बच फिल्लयो ॥ ८७ ॥ बुध

सिंहयहसुनिसाहसौलहि सिंकरवधहमिसं
 क्रम्यो । जलघोरसिंधुहिलोरज्यो दलजोरज
 दनपैजभ्यो ॥ निखिपत्रबुदियजोधसोदर
 कीसुतानृपबुल्लई । उमैदकुमरिसुनामजोप
 रिनायकूरमकौंदई ॥ ८८ ॥ कोदिसभीमहु
 अप्पनीतनयासुतत्यबुलायकै । बरजेरकू
 रममेरकौंदियपीतिसहपरिनायकै ॥ सक
 अग्निहयरिखिदुंदु १७७३ हायननैरसहनि
 जंगमै । कबवाहइमहुवब्याहकीनेवीरसुनि
 रसरंगमै ॥ ८९ ॥ करियाहकूरमनाहयोपु
 नितावजहनपैदयो । हरिमंथप्राधकरानज्यो
 तरकावतोपनकोमयो ॥ उडिकोटअहनध
 हयो गढवहनहनकै परे । कढिबेग बगहि
 तेगवेसबसेनसमुहहैमरे ॥ ९० ॥ जयसिं
 हयहनितोरिकै इमजहचूडामनिहन्यो । अरु

बदनसिंहहिंसरिक्विसरनें अण्णजयच्चकउप्फ
 न्यो ॥ जिहिं दनसिंहनिकेतसरजमल्लजट्ट
 सुपुत्तभो । जरबंदिक्केंसिरसंदिलैभुवफोजल
 करवनजुत्तभो ॥ ६१ ॥ द्वैकोटिआमदमुलक
 दब्बिरुतावसाहनपैंदयो । धरिबीसकोटिस्व
 कीयकोससरोससबुनकोजयो । लरिआग
 रलहिमारिदिल्लियसाहकोसनलुट्टिकें ।
 कियभरतपुरनिजराजधानीजंगमिच्छनजु
 ट्टिकें ॥ ६२ ॥ गढभरतपुरकुम्भेरडिग्घरु
 वैरयेच्चउनिर्मये । औसानसिरआमैरकोभु
 ल्ल्योनजोहुइतेभये ॥ वाकैजवाहरमल्लपुत्र
 सहायसरहुजाहिलै । बैंगसुमरुपतिविजय
 सिंहहुइक्कगदियताहिलै ॥ ६३ ॥ जिहिंपु
 त्तनातियएभयेतिहिंसरनकूरमस्वीकस्त्यो ।
 गढफेरिदुहानितोरिसबनृपजोरिदिल्लिय

संचर्यो ॥ रसराहसंरुधिराहसों मिलि साहसों
जय अप्ययो । सिरमोरभूपसमस्तमैं वरजीर
कूरमयोंभयो ॥ ६४ ॥ कछवाहसाहसोंमैहि
इकगिनिव्याजभीमविचारयो । जामातपर
रचिघातजडनृपसस्त्रमंत्रसम्हारयो ॥ पुररु
पनगरनरेसअरुमरुदेसपतिदुवबुल्लिकैं ।
मिलिइकसम्पतिमंत्रमंडियभूपतीननभु
ल्लिकैं ॥ ६५ ॥ लिखिपत्रसय्यदपैततकिव
नदेसदकिवनमुकाल्यो । इतसाहकीहित
चाहसोंकछवाहभूपतिउज्जल्यो ॥ जयसीह
यहकछुदीहमैंअधिकारअप्यनपाहोव
निकैंकजीरसमस्तमस्तकचंडघातचलायहो ॥
६६ ॥ रहनोंतुमैंजुवजीरहैअरुबंशुबैरनि
वेरनों । तोवेगआवहुतेगमंडिधुमंडिकूरमये
रनों ॥ इतपिकिवयहदसजिसय्यदसेन

सम्पद उपस्थो । सजि अग तो पन मग को प
नल जल लोपन संबह्यो ॥ ६७ ॥ उज्जैन आ
यह साहको लमंडि दूतन प्रप्ये । हम आनि
पूरब देस सौ तुम पद दि लिय थप्ये ॥ जय
सिंह नृप मम भ्रात भार क ताहि निज हिय ला
यकै , मम तुल्य अदर अदर्यो सुदये नि प्रप्य
धुलायकै ॥ ६८ ॥ कबु चासनहि बिसवा
स है अब वास आयरु अकिबहों । रन चाय आ
यम पाय मै निज बंधु बैर नर किवहों ॥ सुनि सा
हयह निज भात सौ सब बात सय्यद की कहि ।
तब बात अकिबयथात यह जय सिंह उपर
है सही ॥ ६९ ॥ तिहि देह सादर सिखव सौ
आमै रनैर पगयकै । तब चूक प्रप्य माहि
नाहि लरै जु सय्यद आयकै ॥ सुनि साहयह
कब वाह सौ हिल चाह अकिबय सर्वही । तुम

जाहु देसहिं सिकवले अति फैल सय्यद को
 ही ॥ १०० ॥ जयसिंह अकि वय भो कजी रजु मो
 जु दीनहिं मारिकैं। लैहैं सु आवत बेरये सब और
 उतारिकैं ॥ तस मात सज्जहु सेन सस्युहस
 सुसय्यद मारिहैं। सब हिंदु पायन लाय हिंदु स
 थान आन बिछारिहैं ॥ १०१ ॥ कहिसाह तु
 ह जाहु जो अति जोर सय्यद जानिहैं। एनि तुम
 हिं बुझि प्रपंच करिति हिं मारि बैर प्रमानिहैं ॥
 तब कहिय कूर मरान हित फरमान जो वह निर्म
 यो। चीतोर दुग्ग बसाय बे हित सो ससुब्रहु नो
 भयो ॥ १०२ ॥ बुंदी सबै नन चिंति तब यह साह
 नाहिं न स्वीकरी। कहु और मंग दुशान हित दैहैं
 सुयह पुनि उज्जरी ॥ आंमैर पति तब राह अकि व
 य रामपुर निखदी जिये। करि मान भूपति राजन
 वसमान कीजिये ॥ १०३ ॥ दो० ॥ मालव

धर अंतर पुलक । नगर ग्राम पुर नाम ॥ चंद्रा उत
 री सो दतें हैं । स्वामि नाम संग्राम ॥ या के पुर रुक्म
 अगग अति से ये दिखिय साह ॥ किये सुभट
 त बराव कहि । राज बराव सि हित राह ॥ १०५ ॥
 तब तैं बुंदिय जोध पुर । पुर आभैर समान ॥
 नमानित सी सो दह । सेवत रहि सुलतान ॥
 १०६ ॥ नि कुल यह संग्राम नृप । रह्यो मुररिल
 हि काल ॥ चिद्रय है तकि गहन चिति । कहि कूरम
 भूपाल ॥ १०७ ॥ ष० प० ॥ कहि कूरम कर जो
 रिसुनहु मम बत्त सा श्रुत । राम पुर प संग्राम
 रहिय अब मुररि जोर जुत । जन पद लेहु उतारि
 रहै सु रैन काना । रान हिं देहु लिरवाय रचि हैं
 सेवन यह रन । सुनिय ह लिरवाय फरमान दि
 य । करिस मुद्र जय सिंह कर । रान तुम दखि गढरा
 म पुर सज्जहु ने न सुभट बर ॥ १०८ ॥ दो० ॥

कहिसाहसामसय्यदविरचिराजकाजनिबह
 दुसकल । नदियउडारिसय्यदश्रवनउनस
 वफोरियमंत्रबल ॥ ११२ ॥ एतीनहिप्रव
 नीपलचिगप्रतिभुमिलुभाये । बदलिसाहसों
 चनअधमसय्यदविचआये । साहहिंदैविरु
 वासइकबसरजुरिइकत ॥ बैठेकनरहस्यसा
 हपंचमकीसम्मल । तबसाहतीनभूपनफ
 रिबंधिजाहि कीपग्यकरि । मखतूलपासिगल
 गरिकैमारिगिरायउगारिलरि ॥ ११३ ॥ हरिगी
 तम् ॥ सकवेदहयरिखिइंदु १७७४ हायनमास
 फगुनगोरमैं । हनिसाहत्रयनरनाहसय्यदचा
 हहुवप्रतिजोरमैं । परिकुदिसदिसदुरमखा
 नननारितोबहउच्चैरैं ॥ आतंकसय्यदकोअ
 तीविसुद्रव्यगोपनहकरैं ॥ ११४ ॥ लैसबनदुस
 नद्वयधन्वधोरुधीगहमैंधखो । मरुईसमुनि

वसुजुत्तपुत्तिय बुल्लिलोमहि अहस्यो । सवि
 त्तमुकालिधन्वदिय तनया सुयो मरुईसनै । अ
 रुभीमसय्यदसौं कही बुधसिंह बैर रचै धनै ॥
 ११५ ॥ जयसिंह जामि प हैय है तुम सौं हू छल
 करितो रि है । तसमा तमारु याहि सब मिलि
 जोर छल यह जोरि है ॥ सुनि एह सय्यद फेरि फे
 जन बह बुंदिय बंधयो ॥ अ वनी नती न न अण
 ले बुधसिंह डेर न पै गयो ॥ ११६ ॥ बुंदी सयह
 सुनि सेन सज्जिरु सेन समुह संक्रम्यो । तब जे
 त अक्खिय घोर यह अति जोर सय्यद को जम्यो
 । लाहोर तोर न होय नृप तुम जाहु कूरम देस मै । ह
 मधीर गन हम गीर जु कहिं बीर जारु बेस मै ॥ ११७
 ॥ यह कहत आतुर प्राय खल दल जानि बहल
 लुं बये । बजि बीर आनक यो अचान करग सिंधु
 वलगये । बजि डैरु डिंडिम डक श्री बहरक अर

करकई । अहिभोगलेतलचक्कओधरनीसुध
 कनधकई ॥ ११८ ॥ परिओरओरनरोरदिल्लिय
 जोरजालमजंगभो । हटनारिहटनलगिपटन
 अंगरंगबिरंगभो ॥ प्रजरातजातबजारबीधिन
 योंअलातसुउच्छरे । जिममासबाहुलदरसपै
 नेहासकासकैरंजरे ॥ ११९ ॥ आकासधूमहधू
 लिधुंधरिमानभासनलुप्ययो । बजिकंकगिद्ध
 सिद्धानपच्छतिरारिसय्यदरुपयो ॥ अनिरुद्ध
 सुबलबलेगमारतभीरमारतनिहल्यो ॥ कुलबै
 रिसल्लजजैतसिंहसुसेनसमुहउज्जल्यो ॥ १२० ॥
 पुनिजोधराजप्रधानकरुजआयएरनअंकुरे । ल
 हिरोककोकनसेकभोपुरलोकओकनमैदुरे ॥ क
 मनेतफोजनमैपसोभटजैतहुहुहकारिकै । रननैर
 दिल्लियकीरहीलियजालरंघनिहारिकै ॥ १२१ ॥
 तरवारिनागिनेजैतकीबिसमोहसत्रुनकोदयो ।

दलजुद्धजाव प्रबुद्धै नृप ताव तोरन लंघयो ।
निकसाय स्यामिय संकरैं वनि ओट तोरन पै अस्यो
। बजिह करन धमचक्रयो बिनु मत्थ जै तलस्यो
पस्यो ॥ १२२ ॥ परि बीर सत्रह संग के दल जाम
इक सुरु क्यो । लरि जोध कै परि जोध ऊरुज स्वा
मिरन सब बुक्यो ॥ लाहोर पदति भूपक ठिक
छवाह जन पद संक्रम्यो । इत जीति संगर धीर स
य्यद जोर दिल्ली में जम्यो ॥ १२३ ॥ किय साहना
मरफील दोलामास छह बिच सो मस्यो । तब ओर
किय दुव मास बिच तजि सो हू संवर संचस्यो ॥ त
ब किय मुहुम्बद साह साह सुचाह सय्यद की भई
। यह यों छाया न मै छ साहन धापि दिल्ली मुग
ई ॥ १२४ ॥ ष० प० ॥ सक बसुर वट हय हंडु
१७६८ मरिग आलन ओरंग सुव । गुन ह तरि
हनि मोल दीन पुरु क बट पट्ट ॥ किय दीन देल

सुताहिहनि सकचउहत्तरि ॥ पचहत्तरियहमर
तअवर किय सोहु गयो मरि । सय्यदवजीर पुनि
मंत्र सजि आलमनाती जानि जिय । तक्कतरफी

लकदरहतनयसाहमुहुम्मदसाह किय ॥ १२५

॥ दो० ॥ सकसरहय सत्रह १७७५ समय । सय्य
दय्यपिसुलाह ॥ पुरदिल्लीकेपदपर । धस्योमुहु

म्मदसाह ॥ १२६ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महा

चंद्रसूत्रे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहच

रित्रे पंचविंशो मयूखः ॥ २५ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

ष० प० ॥ इत कूरमयूह आयसेन सय्यदडरस
जिय । लिखितरामपुरपत्ररान अंतिक मुक्त

लिदिय । मुलकरामपुरदक्षि अमलमंडहु हुत

अप्यन ॥ दलपुनिसजहु दुरंतमंत बलवंतय

यिमन । हमसीसधात सय्यदतकत आतता

यिदलदर्प्यति । जोपरहिं कामतो इतसज्जव
 पिह्नुदलचित्तोरपति ॥ १ ॥ दो० ॥ यहकहा
 यसजिदलअतुल । इतकूरममतिमान ॥ गाम
 सुटोडाभीषकैं । दिन्नैआनिमिलान ॥ २ ॥ इहिं
 अंतरकूरमसुन्यौ । दिस्त्रियजामिपजंग ॥ लंघि
 पहरवटअसनलिय । पुनिसुनिकुसलप्रसंग
 ॥ ३ ॥ दि स्त्रीतैं इहिंविचनिकसि । रनकरिबुंदि
 यनाह ॥ मिलियआनिजयसिंहसौ । दोडाअ
 धिकउछाह ॥ ४ ॥ कोटापतिअमैलियउ ।
 सोपुरमुलकछुराय ॥ इंद्रसिंहसोपुरअधिप ।
 निकस्योप्रानबचाय ॥ ५ ॥ गोरबंसअवतं
 सयह । सोपुरपुरअधिराज ॥ आयो मिलिबुंदी
 ससौ । कूरमदिगभुवकाज ॥ ६ ॥ उद्दुरः ॥
 इतउदयपुरपतिएस । संग्रायसिंहनरेस ॥ पुर
 रामपुरलहिपत्त । सजिसेनपिस्त्रियतत्त ॥ ७ ॥

तिनरामपुरलियघेरि । कियरारिखगगनखेरि ॥
 तबरामपुरनरनाह । संग्रामसिंहसन्नाह ॥ ८ ॥
 करबन्धिनैरबिहाय । पयसानलगियआय ॥
 तबरानलखिनतएस । दियमंडिअद्दहदेस ॥
 ९ ॥ लहिअद्दभुवतबरव । दुवरानकोउमराव
 ॥ भुवअद्धिछिनियरान । धितचारिपुरजुतथा
 न ॥ १० ॥ जिन्कोदजीरनद्रंग । सजिकुक्कुटेश्वर
 संग ॥ लियनैरमीमचिनाम । कियतत्थसेनमु
 काम ॥ ११ ॥ भुवअद्दलैइमरानदियफेरिअ
 प्पनअन ॥ भुवअद्दपतितिहिंरदिव । लिय
 बंदगीरसचकिव ॥ १२ ॥ खटसत्तहयइक
 १७७६ मान । लियरामपुरइमरान ॥ इतजेर
 सय्यदकिन । गहिहत्थदिल्लियलिन ॥ १३ ॥
 निजपतिमुद्धम्मदसाह । ताकीनकछुजियचाह
 ॥ कोदेसअरुमरुनाह । कियदेहुबुल्लिसुलाह ॥

॥ १४ ॥ तुमजायनिजनिजदेस । सज्जहुअनीक
 बिसेस ॥ रवगमारधारनखेरि । लैहैं बहूरमधेरि ॥
 १५ ॥ दुवसालजामियमारि । अमैर बुंदियधारि ॥
 रहिहैं निरंकुस होय । पिछैं न कंठक कोय ॥ १६ ॥
 मरुईस सुनियह वत्त । मरुदेस आयउमत्त ॥ लगि
 सेनसज्जन अंध । कछवाहसीसकबंध ॥ १७ ॥ इ
 तभीमभुमिउमंग । ब्रजआयगोकुलद्वंग ॥ गुरु
 गोकुलस्य विचारि । लियमंत्रवल्लभधारि ॥ १८ ॥
 दो० ॥ वल्लभमतचहि मंत्रलहि । रजततुलाकि
 यदान ॥ हुबसेवकु ब्रजनाथको । कोटापतिबहु
 वान ॥ १९ ॥ पादाकुलकमू ॥ कृष्णदास निजन
 मकहायो । नंदगामकोटालिखवायो ॥ सेरगढसु
 थपियबरसाने ॥ इननामन अवहार चलाने ॥
 ॥ २० ॥ कोटकोटअंतरकोटापुर । कियब्रजनाथ
 निवेदितआतुर ॥ दानरुद्धिजमेजनबहु किन्हे ॥

चिकनमों हिरहनों पुनि निनों ॥ २१ ॥ दुस्यो कि
 लवडेरन के प्रंदर । बाहिरनाथो पंद्रह बासर ॥ रोग
 रोग कहि मृत्यु उड़ायो । कोटापुर सुनि सो कप्रधा
 यो ॥ २२ ॥ माधानी मिलि बाहि जुद्ध चित । सावधा
 न कोटा किय सज्जित ॥ द्वारन अरल गायधीर धु
 व । बुरज बुरज सिर मरन मंडि हुव ॥ २३ ॥ जान्यो
 मृत भीमहिं सुनि प्रैं हैं । बुंदिय कटक छिनि गढ
 लैं हैं ॥ सोहि मई साल म सुनि धायो । लुटन कोटा सु
 लक लगायो ॥ २४ ॥ दिखी तैं नृप साल बिहत्तरि ।
 साल म पठ्यो मुख्य सचिव करि ॥ इहिं तब अये सो
 राज अवेस्यो । फिस्यो समुझि विनु फेस्यो फेस्यो ॥
 २५ ॥ अब यैं हं साल बहत्तरि अंतर । मृत मृत सु
 नि भीमहिं बालि सवर ॥ बुंदिय तैं चढि बेग कुबुडी ।
 रुपि साल म कोटा धर रुडी ॥ २६ ॥ विनु नृप आय
 ल दोह बहायो । मार लूट करि फैल मचायो ॥ सुसु

निभीमगोकुलसनचल्यो। गिनिसागसमुच्छतक
 रघल्यो ॥ २७ ॥ कोटापुरपत्तो निसबेला। द्वारआ
 यसुभटनदियहेला ॥ खुल्लहुअररजियतहमआ
 ये। प्रातसबहिकरिहैंमनभाये ॥ २८ ॥ यहसुनि
 अजबसिंहमाधानी। प्रेमसुवनबानी पहिचानी
 ॥ हसितबआयउद्वारकन्हराअररखुल्लिभूप
 हिंलियअंदर ॥ २९ ॥ बंटियघरतबकुसलबधा
 ई। इमसुभीमवहरतिबिताई ॥ प्रातहिकदकअ
 चानकसज्यो। गहिगुमानसालमसिरगज्यो ॥
 ३० ॥ पुरआदोनिहुतोवहसालम। पढ़ूंछोभीम
 जोरिदलजालम ॥ सालमदलहिंपिकिरबित्थर
 सह। सबनसुनायभीमअकरीयह ॥ ३१ ॥ लवंग
 मम ॥ सालमदलबहुसज्जिमुलकनिजमारयो ॥ अ
 प्पनअबइहिंरेतलरनललकारयो ॥ बुढनिय
 तिबलवानतलोहसजितिहैं। कोटापतिसकुदंब

न तो यहँ बिनिहँ ॥ ३२ ॥ दो० ॥ अर्जुन नाती हड
 हो । पुर बडो दपति पास ॥ तिहिँ अकवीनृप भीम
 सौं । उलटी यह किम आस ॥ ३३ ॥ भीम कहिय जि
 लै विनो । अप्पन जिय तरहँ ॥ अप्पन बिनु यह ड
 ग्रहै । लैहँ बुंदिय अँ ॥ ३४ ॥ यह कहि बाजिन ब
 यालै । पस्यो भीम पविपात ॥ खर को न न मनु चुगत
 रिदन । छली सिन न थात ॥ ३५ ॥ मरुभाषा ॥ डिंग
 लभा पेत्ये के ॥ अस्य त्सजा तीये ज्येव प्रसिद्ध गीत ना
 म कं मरुदेशीयं छंदः ॥ गीतेष्वपि सुप्रसो गीतः ॥ मूसी
 लागै लुभाणों डारों संपातिरूपराभडों लेतां लागे
 बागैरै लुभाणी लीह अथायो रवागै बीस भागै
 ऊपरा अथायो साल मेस नागै धूपरा भीम सी हद्यटा
 बीज आद की उतोलै रवागों बीर घाँचै रदात्रं बाद की
 बागों घोलै नागों राडि दै कावीरा मरै ददा बिहंग
 राद की दोले फटा सेना लिये लेका द की फा डि फा

डि ॥ डाँणाँ प्रोक् प्रोक् जाँगी जैतरा रुडाया डाकी
 तो कचं चं केवाणाँ । बुडाया बीर ताल पाँणाँ जो कसं
 मरी प्रसं रव के उडाया प्राणाँ बाँणाँ सो कपं रवाँ के उडा
 या बूँदी वाल काटी पूँछ मंडाले कि सार दू जै दाटी को
 पिसे ना फटा फाटी मै कटार पंजाँ साजि बैन तेय भी
 मरी सपा दी तेरा आगै बंदे योगी जोगी रामरो नपाटी
 गयो भाजि ॥ ३६ ॥ प्रा० मि० ॥ दो० ॥ अहि साल
 मइमम । जिगो । फोज फटा लु फटाय ॥ ब्याधिस
 हत कृमि बेर की । प्रतिजव बुंदिय प्राय ॥ ३७ ॥
 कोटे सहु द्रुत पिद्विलगि । लिनी बुंदिय घेरि ॥ सठ
 साल मइ कदी हलरि । गोमजि प्रायुध गेरि ॥ ३८
 जायो जुगिय राम को । प्रायो नगर कलाय ॥
 कोटा पति इत लुह करि । बुंदिय दिन्न जराय ॥
 ३९ ॥ फगुन बिसद चउ तिस क रस हय सन
 ह १७७६ मान ॥ बहुरि भीम बुंदिय लई । इम के

रीनिजआन ॥ ४० ॥ सबहिदेसबुंदीसको।
 अडरभीमअपनाय ॥ लूटमाहिबहुद्रव्यलै
 इमपुनिकोटाआय ॥ ४१ ॥ पादाकुलकम्
 ॥ अवरहुभीमदेसबहुचिनें। चउदहसहंस
 गोंमनिजकिनें ॥ अगोंलिरितकूरमहिअ
 प्यो। सोसबलुपिलोमहियथप्यो ॥ ४२ ॥
 कुलसिएहअकियसुभटनहित। अबब्रजना
 थकरहिंसबहुच्छित ॥ रनजयसिंहबुद्धलरिआ
 रहिं। वसुमलिआनअमोघविथारहिं ॥ ४३ ॥
 इकपुत्रहिंबुंदियगढअप्यहिं। थिरइकहिंकोटा
 गढथप्यहिं ॥ इकसुतहिंसोपुरगढदैहें। हमउ
 ज्जेनराजअबलैहें ॥ ४४ ॥ तदनंतरसय्यदम
 तिकगार। पढयोद्रुतलिरिभीमअप्यकर ॥ इ
 तदलसजवसज्जिहमआवत। उततुमआव
 हुकदकआवत ॥ ४५ ॥ पकरिबुद्धजयसिं

हविषकरवन। लैहैं पद्मभिमारिभटलकरवन॥ य
हलिरिबसंगरभीमउमाद्यो। चमुसजिसैंहंसबी
सजयचाद्यो॥ ४६॥ दो०॥ इतसय्यदसोंसि
कवलाहि। अजितसिंहमरुप्राय॥ जैंहंसुभट
नएकत्तजुरि। अकिवयमंत्रउपाय॥ ४७॥
ष०प०॥ मिसलअद्दुउमरावजबहिरद्वोरइक
जुरि। अजितसिंहप्रतिअकिवअनयकिनों
तुमअंकुरि। कूरमपतिसोंतोरिअप्पसय्यदचा
द्योउर॥ अज्जगईअमैरकलिहैजैंहंसुजोधपुर
स्वामिकोंमारिसय्यदसबलकानिनरकरवहिंअ
प्पनी। तसमातजोरिजयसिंहसोंधन्वपद्ममिर
करवहुधनी॥ ४८॥ दो०॥ कूरमसोंसगपनवि
रचि। मरुधरबुल्लदुताहि॥ रुचिरसुताअबरा
वरी। विधिजुतदेहुविवाहि॥ ४९॥ मरुपति
सोंयहमंत्रकरि। पठयोसुभटनपत्त॥ लखहरम

आवहुनिउर। मैं हँ व्याहनअनुरत्त ॥ ५० ॥ कूरम
 सुनिपच्ची कहिय। धराअलपतुमधाम। रकव
 दुपुत्रिनजतनरचि। परहिँ साहसौकाम ॥ ५१ ॥
 यहसुनिइनपच्ची लिखिय। हमतुमबिचहरि
 आहि ॥ आवहुअप्पनइकहँ। जावहुसुसुस
 बिहाहि ॥ ५२ ॥ सुसुनिकुंचजयसिंहकिय।
 सजिदलसबलसिपाह ॥ बुंदीसेपुरनृपउभय
 चलियसंगहिलचाह ॥ ५३ ॥ सादाकुलकम्
 ॥ रसहितविनयपरसपरत्ते। तबनृपतीनजो
 थपुरपत्ते ॥ रदोरनअक्खियकूरमसन। लगनदे
 रअवचलहुविवाहन ॥ ५४ ॥ मरुपतिसौतव
 सवनसमकवी। कूरमपतिसुभटनयहअकवी
 ॥ हमनृपपरनिपधारहिँजोलौं। हमविचरहुध
 वपतितोलौं ॥ ५५ ॥ अजितसिंहयहमचि
 रह्योयँहँ। कूरमपतिगोतवव्याहनकँहँ ॥ रनजि

शु. वं. भा. बु. च. कलीजरवांकीदिल्लीपरचढाई २४६ मयखः २६

मसज्जिकवचधारनकरि। बरदुलहनिरहोरि
लईबरि ॥ ५६ ॥ दो० ॥ इकनबाबकलीजखं
। इहिअंतरलहिकाल ॥ दक्खिनसनआयोदु
सह। दिल्लीपरचिजाल ॥ ५७ ॥ ष० प० ॥ इ
सनअलीसय्यदवजीरसुनिरहबंदिजर। नाम
दलावररवानसुगलपिछ्योतिहिउपर। नरउ
रपलिगजसिंहसंगसहसेनदयोसजि ॥ कोटा
पतिप्रतिपत्तितरितलिरवदायगब्तजि। मार
इकलीजरवानहिंमरदखानदलावरसंगरहि
जयसिंहजेरपिछ्योकरहिंयहकरिजेरकलीज
अहि ॥ ५८ ॥ दो० ॥ सुसुनिमीमसिरधुनि
कै। दियदलअधिकछुराय ॥ जान्योतपजय
सिंहके। अंतअप्यनोआय ॥ ५९ ॥ बुडूबीर
नसंगलै। तबयहभरनविचारि ॥ समुहरवान
कलीजसों। रचनचलोअबरारि ॥ ६० ॥ ख

नदलावरभीमअरु। नरउरपतिकवचाह॥
 दरकुंचनचलिभितये। सत्रुनसबलसिपाह॥
 ६१॥ मेकलजकेपारइक। तटिनीकोढीनाम
 ॥ तीननखानकलीजसों। सजियतत्थसंग्राम
 ॥ ६२॥ ष०प०॥ सल्लीजुरिदुवसेनहुलसिजु
 ज्जनबढिहल्ली। कादंविनिचल्लीकिवाढयम
 कतधनवल्ली। दिट्टिजुरतहयदपटिमिलेरन
 रसिकमहाभट॥ तबवज्जिगतारवारिभीरुभ
 जिगबटउबट। गिह्निनिचानसंकुलिगगन
 रबिमयूरवअवरोधकिय। खुरतारमारजवधार
 खुदिदिसदिसपुहविदरारदिय॥ ६३॥ लगो
 जिमजिमलोहछोहतिमतिमउरछायो। धायो
 जिमजिमधीरवीरतिमलिमप्रकटायो। जिम
 रवादितजैपालमथतअन्ननहुतदुज्जर॥ इम
 कलीजदलअतुलमध्योसायुधसयसंभर।

हैदराबादभटबहुलहनि । चिरञ्चरिरसच
 करवयो । भूषालभीमकोटेसमिररुद्रमालननर
 करवयो ॥ ६४ ॥ हृत्पीभज्जतहृद्चढ्यो हयवर
 रयचंचल । हयकहलपयचारबन्यो रवयकारम
 हाबल । तौमरतुहलतेगतेगतुहलकरिकलिय ॥
 कलियफहतकरदधोरक्षतियप्ररिधतिय । दे
 रयो कलीजजीवनदुलभमिलतभीमभद्वबुदि
 र । जिमजिमस्वसीसरजरजरचिय तिमतिमधु
 न्नियसंभुसिर ॥ ६५ ॥ दो० ॥ मुनिहयस्तुत
 इक्क १७७७ सक । जेठरुपुसिमदीह ॥ पस्योद
 लावरखानरन । सहितभीमगजसीह ॥ ६६ ॥
 नरउरपतिजाजवभज्यो । पस्योइहांतजिप्रान ।
 मारिहजारनभीमजिम । पस्योभीमचहुवान ॥ ६७
 ॥ ष० प० ॥ सुनिकोटापुरभयउभीतमरतहिनि
 जभूपति । थाइभ्रातभगवानहुतोबुंदीसुजानि

शु. नं. भालु. च. हुसनअलीकोजयसिंहजसोंदेष २५२ मयखः

हति । बुंदिय बिच बुधसिंहअनफिरवायसोधि
उर ॥ अणन सब धाना उढाय आयउकोटापुर
। सुनिखवरिएहमतिमंदसह सालमअयऊला
यसन । बनिमचिवमुख्य बुंदिय बुदुरिराजका
जलमोकरन ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ तनयतीनवृष
भीमकै । जेठोअज्जुननाम ॥ अमररानभानेज
यह । तबमूपतिहुवताम ॥ ६९ ॥ स्यामसिंह
अथमसुनन । लघुसुतदुरजनसाल ॥ राज
लोभनिसदीहरखि । कहतएहकाल ॥ ७० ॥
ष० प० ॥ हुसनअलीदूतसज्जिछोहदूरमसि
रधायो । साहमुहुमदकोचढायअमैरचलायो
। सय्यदअतिवरजोरसाहदुम्पनइहिंकारन ॥
चिंततरहतउपायमनिनिहचैतिहिंकारन । त
दनाममुहुमदरकानइकदरानीतक्योप्रबलार
निर्मलसाहतासौरहसिमायोसय्यदछेदिछल

॥ ७१ ॥ दो० ॥ लब पच्छे दर कुंच करि । हुसन अलीकों मारि ॥ बनिस्तंत इम साहह । पुर दिखिय पगधारि ॥ ७२ ॥ बरस तीन नृप कै बच्यो । याव त सिंह कुमार ॥ चुंडा उति उर प्रथम भो । पद सिंह सुरवकार ॥ ७३ ॥ कुमार बधाई जो धपुर । पत्नी स मर पास ॥ जय सिंह हुत त्यहि सुन्यो । सख्यद सत्रु बिनास ॥ ७४ ॥ सुनत कुंच जय सिंह किय । बिनरयो सख्यद बैर ॥ सो पुर बुंदिय नृप न सह । आयो पुर आयो ॥ ७५ ॥ संभर किय दुंढा हरहि । बसवानि बसथ बास ॥ अनाहु त जय सिंह गो । साह मुहम्मद पास ॥ ७६ ॥ अहु सलहय इक १७७८ सक । चित्त महार करि चाह ॥ अकबर पुर सूबा दियउ । कूरम पतिकों साह ॥ ७७ ॥ पद्धतिका ॥ पुनिक हिय साह कछवाहराय । क्यों नाहिं अत्र बुंदी सखा

य ॥ जयसिंह कहिय सालखनेरस । आबाहर
 खल पुनि नहिं आसेस ॥ ७८ ॥ कोदिसभीम
 करि जोरदाय । बारों मऊ सुलिने छुराय ॥ बिनु
 खरच नोहि निबहत प्रबास । जर को सख
 हिहुवन हुआस ॥ ७९ ॥ सतपंच सुमटसादी
 सुमंत । मसंग दिय सुहाजरिरहंत ॥ सुनि
 साहदयो अपर खनिवारि । औसी आने कहिय
 दुष्मटारि ॥ ८० ॥ नडासनि सुत मुहुकसज
 द । इनदिन न बहुरि लग्यो कुबह ॥ करिल्ल
 मुलक सिरया सिधत्त । सरई सरन सरदैस
 पत्त ॥ ८१ ॥ जयसिंह बदन जही रहैत ।
 बहु भुवदिवाय धरनि समेत ॥ हैसाह हिंदु
 मुहुक महशाम । यालें पलाय गय धन धाम ॥
 ८२ ॥ तब साह कहाइ हिनरेस । आतुर गहि
 भेजहु जहरास ॥ मथ्यो नहुक मयह मरुगही

स। रचिसाह मुद्रुम्भद सुनतरीस ॥ ८३ ॥ इत
लहि प्रमाद अलस अनंत। बुंदीस गाम बस
वा बसंत ॥ तें हें किय अनीति लोक न अपार।
दबिय अनेक परकीयदार ॥ ८४ ॥ ताडन रुलू
टतर्जुन बिधाय। पत्तन प्रजा सु किय दुरित
प्राय ॥ पुरजन सब लहित बदुरव अपार। कू
रम प्रति दिल्ली किय पुकार ॥ ८५ ॥ सुनिक
हिय भूप कूरम हसेत। बसवा सुगाम अबहू
बसंत ॥ कहि पुनि वेजामि प अस्मदीय। सह
नों समस्त दुक वहु गरीय ॥ ८६ ॥ तुम मां हिं
अबहु जो परहि त्रास। तो कहहु जाय बुंदीस
पास ॥ मम ढिग जो अहो बहुरि भजि दै हों
निकासितो ताडित जि ॥ ८७ ॥ यह कहि
पुरवासिन सिकव दिन्न। कूरम दूम जा मि पहि
तहि किन्न ॥ मन्यो नहु कम डत मरु नरेस। बल

सजिय साहतिहिं सिर विसेस ॥ ८८ ॥ मरुपि
 खिदहा दुरखानमीर। पिह्यो पुनि कूरमपति
 प्रवीर ॥ इमहु वचलाय मरुदिस अमान। मरु
 पुरुनिस मुहकिय प्रयान ॥ ८९ ॥ मयखर
 रबनि मरु महीप। सजि आय मनोहर पुरसनी
 प ॥ इतल ससेन मारन उपाय। जयसिंह बहा
 दुरखान आय ॥ ९० ॥ मरुइत अतुललरि वसाह
 सैन। सजि गोत जिडेरन प्रण प्रै न ॥ सक
 कस सहयइछ १७९५ बीन। रनछोरिल गाई
 मालितीच ॥ ९१ ॥ सुनिसाह कटक प्रति
 जवचलाय। रद्वीर विभव लिय तुहि आय ॥
 संगर बिनु कहुल तहु सुन्यौ न। मजिमजि गो
 संगर छोरि भौ न ॥ ९२ ॥ अगौ जब अत्तम गो
 चलाय। अल्हन पुर लगी पयन आय ॥ पुनि
 अमरान कर लिरित दिन्न। सोमेदि साहजा

मात किन्न ॥ ६३ ॥ अरु बहुरिसय्यदनमिलिन्न
धम्म। जामात साहहनि किय कुकर्म ॥ पुनि अरु बह
तीयरन समय पाय। पतना तजि कातर गोप लाय ॥
॥ ६४ ॥ जयसिंह बहादुर लगिय पिहि। इनराचिय
मंत्रगृह जाय निहि ॥ रघुनाथ सच्चिवरद्वोरसर्वा मि
लिकहिय राजगय अण्ण गर्ब ॥ ६५ ॥ कुरबं भिपर
हु अरु साह पाय। जोयहन देहु कुमरहि पठाय ॥
भटसच्चिव मंत्र इमत ब विचारि। जयसिंह नरे
सहिं वीच डारि ॥ ६६ ॥ सुत अण्णया सिंहा पह प
सामत्य। पठयो पुर दिखिय कुम्भ सत्य ॥ रघुना
थ सच्चिददिय संगताम। लहि साहजाय बल किय
सलाम ॥ ६७ ॥ गृहजहु कुमरसह कहिय साह
। आवत हम मड्डुरन उछाह ॥ तज कुम्भ कहिय
यह गिनत प्राण। याको न दोस जन कहि अण्ण
न ॥ ६८ ॥ पुनि कहिय साह जोयह जाय न। तेज

न कहनहु तमहम प्रसन्न ॥ यह सुनिउवाचक
 लनाहरीस । द्वैहैंजुहुकमधरिहैं सुसीसा ॥ ९९
 ॥ प्रह्लादएहलुमहरिप्रमान । मरुपतिहिरल्य
 कसिपुवसमान ॥ यहसीससाहसेवनबहंत ॥
 चितजनकहहिंनयातैचहंत ॥ १०० ॥ प्रह्लाद
 बलदूरमसुनाय । इसअभयसिंहहितरिसउ
 डाय ॥ कहिसाहहमहिंजोगिनतईस । सुततो
 अदभानहुजनकसीस ॥ १०१ ॥ रघुनाथस
 चिवकियअरजतत्य । सबकरहिंषायआयस
 समत्य ॥ डेरनबहोरिलियसिखवआय । दल
 अभयसिंहपठयो लिरवाय ॥ १०२ ॥ निजअ
 तुजआतबरदतेसनाय । तिहिंप्रतिउदंतसब
 लिखियताम ॥ यहमिच्छजनकसिरकुपितआ
 ज । तैहैंउतारियुवधन्वराज ॥ १०३ ॥ लीहिरा
 जसोवजोचहतलाल । तोआतहनहुजनकहिं

उताल ॥ देहोंतव तो कहें अछ देस । नागोरपुर
 पकरिहों नरेस ॥ १०४ ॥ बरवतेस मुद्धयह पत्र
 पाय । जनकसुनिजमाख्यो मुद्धजाय ॥ हाकारजो
 धपुरनगरहोय । रनवास अचानक उठियरोय ॥
 ॥ १०५ ॥ सुनिमिसल अहु उमरावरह । गहि
 तेगकुमर बिंद्यो खगेह ॥ बरवतेस भीत तव
 नति बिधाय । दिय अभय सिंह कगर दिखाय
 ॥ १०६ ॥ गिनितब समस्त यह मंत्र गूढ । अब
 किय नरेस चितिका अरूढ ॥ नाजरन सहित
 सुदांत नारि । विति अग्नि भस्म हुब असिय
 च्यारि ॥ १०७ ॥ सक गगन अहु हद इ को ७००
 साल । यह रव बरि मई दिखिय उताल ॥ सुनिरी
 मिमरा तब बरवसि साह । किय अभय सिंह मरुदे
 सनाह ॥ १०८ ॥ अरु कहिय राज्य जमवाय जा
 य । पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥ मरुपति उवा

नतदनायमत्थ । नागोरदेतमेंअनुजअत्थ ॥
 १०९ ॥ सोसुभदमोहिनाहिंदैनदेत । करिलि
 रिदतअपपुठवदुनिकेत ॥ राजाधिराजपद
 नाहिंदेकु । अपपुठनिदेसकरिमहरएहु ॥ ११०
 ॥ इमअभयसिंहकहिथत्त्वआय । पुनिदियउ
 साहलिरितसुफाग ॥ राजाधिराजउपपदस
 भेत । नागोरदेहुअवतेसहेत ॥ १११ ॥ यहसुनि
 रदोरनलजियदेक । कहियदिनमरुपतिमरुकि
 तेक ॥ हनिअजितसिंहपितुहुछिहीन । इमब
 खलसिंहनागोरलीन ॥ ११२ ॥ पदपकुमारगज
 सिंहजाम । हुवअभाबीरअमरेसनाम ॥ नृपद
 हसिंहनागीनुतास । सोकरतपहुनागोरबास ॥
 ॥ ११३ ॥ नृपअभयसिंहतार्कहंनिकारि । नागोर
 रदअनुजहिंविचारि ॥ इतकुम्भसाहसेवनवि
 आय । ताहिसिक्करअहहुअभिरआय ॥ ११४ ॥

आमैरदुतोबुंदीनरेस। पुनिकियउभूपकूरम
 प्रबेस ॥ मिलितबहिसालजामिपसमोद। वि
 रचियदुहूनकतिदिनविमोद ॥ ११५ ॥ दो० ॥
 सकससिबसुसत्रह १७८१ समय। कहिबुद्धहिं
 कछवाह ॥ विरचदुराज्यप्रबंधतुम। बाहमरच
 हिंसुलाह ॥ ११६ ॥ बिबुप्रबंधआलसबहत
 । रहतनसुरपुरराज ॥ कहतहोतबुंदियकुनय।
 अहप्रतिमहतप्रकाज ॥ ११७ ॥ बुंदीपतिअ
 किवयतबहि। अच्छीकरहुबिचारि ॥ पढबहु
 कोऊनीतिपटु। सबजोकरहिंसम्हारि ॥ ११८ ॥
 नाथाउतनगराजतब। नृपमातुलकुलजानि
 ॥ पठयोवहकूरमसुपहु। बुंदीबिबिधबरवानि
 ॥ ११९ ॥ आयलंधिरकव्योनृपति। द्विगुनख
 रचनिजसत्य ॥ सबमेठ्योनगराजसो। अहि
 परिवज्योइमअत्य ॥ १२० ॥ कछवाहीसेवनक

रत । श्रीहरिमूर्तिसुमंत ॥ कउलभूपवरजतकुठ
 त । तदपिबदेकतजंत ॥ १२१ ॥ पतिपतनीकैया
 हिपर । बनेनहितकीवत्त ॥ हडुनलोपैतियहुक
 म । तदपिकउलमतरत्त ॥ १२२ ॥ अग्गेनवहय
 सत्तइक १७७६ । कळ्वाहीयहकिहु ॥ लैसाल
 यसौसचिवपन । निजअनुचरकौदिहु ॥ १२३
 ॥ रामनामनिजदासइक । सोकरिसचिवसुभाय
 ॥ इसरानीपतिहुकमबिनु । रहीराज्यअपनाय
 ॥ १२४ ॥ अद्वरचकहतलग्यो । नाथाउतबि
 खरूप ॥ रानीप्रतितबशीतिरत्ति । भारवीबुंदि
 अभूप ॥ १२५ ॥ निजअनुचरप्रतिरिखहुतुम
 । रनकरिरक्खहुगेहु ॥ नाथाउतनगराजकौ ।
 हंगनप्रबिसनदेहु ॥ १२६ ॥ रानीहुसमुकीतब
 हि । रुक्काहिंमोरनिदेस ॥ सोकरिहैनगराजजो ।
 कहिहैकुम्भनरेस ॥ १२७ ॥ यातैअनुचररामप्र

ति । दियलिरिपत्रपगय ॥ ननसौ पडुनगराज
 कौं ॥ अप्पनगृहव्ययप्राय ॥ १२८ ॥ तबबुंदिय
 नगराजतिन । दिन्नौ प्रबिसननाहिं ॥ महुँरछाप
 नैहिं नकह्यो । अधिपनिदेसनप्राहिं ॥ १२९ ॥
 तिनहिं गिस्तिनगराजतब । प्रबिस्यो बुंदियप्रा
 य ॥ राजकाजलगोकरन । नूतनछापघराय ॥
 १३० ॥ प्रायरवरचसबलिरिलियउ । खंधावा
 रसम्हारि ॥ स्वामिसमुम्बुधसिंहकौं । बिगरत
 लिन्नसुधारि ॥ १३१ ॥ द्विगुनवरचमेढतकिय
 उमातुलपरनृपरोस ॥ अच्छीमै उलटीसमुम्बि ।
 दियकूरमसिरदोस ॥ १३२ ॥ इतद्रुतजामिपरा
 ज्यको । करिप्रबंधकछवाह ॥ दरकुंचनदिल्लिय
 गयो । सबिनयभिंद्योसाह ॥ १३३ ॥ तदनंतर
 मरुईसहू । जयनयराज्यजमाय ॥ दिल्लियभिं
 द्योमुगलद्रुत । साहमुहुम्मदप्राय ॥ १३४ ॥ कूर

कनतिरुपति कहिय । मम मठ अपति मरिहार ॥
 जामनेत नहिं राज्यजुरि । करहु अपपमचदूर ॥
 १३५ ॥ पढयो कूरमजोधपुर । तब निज कदक खुता
 ल ॥ रद्वारन ससुमायरहि । कह्यो तैं हें वहु काल ॥
 १३६ ॥ हुते भूपजय सिंह हैं । सुता देख्युत दोय ॥
 सुनहु रामचरण नाम तिन्ह । सावधान रहति होय ॥
 १३७ ॥ ज्येठो सुत सिव सिंह जो । मार्यो जनक प्र
 मत्त । अतुज ह्वै मरी सिंह तस । तात कथित कर
 तत्त ॥ १३८ ॥ सुता विचित्र कुमारि इक । वृजी
 कृष्ण कुमारि ॥ सुपदुरान संग्राम की । जामेयी नि
 रधारि ॥ १३९ ॥ मयो विचित्र कुमारिको । बयउ
 पयम अनुसार ॥ जानि जनक जय सिंह जल । रवि
 य व्याह व्यवहार ॥ १४० ॥ अमय सिंह मरुई स
 र्यो । करि सग मन कछ वाह ॥ सामथी किय उचि
 त सब । नय पदुजे पुर नाह ॥ १४१ ॥ सिकवत द

हिलहिं साहसों । दुवनृपमथुराआय ॥ अंतह
रआमैरतैं । लिन्नौ सकलबुलाय ॥ १४२ ॥ सक
ससिबसुसत्रह १७८१ असित । अट्टमिमहवि
चारि ॥ तनयाब्याहीमरुपतिहिं । कुम्भबिचि
त्रकुमारि ॥ १४३ ॥ मातानृपसंग्रामकी । राना
अमरकलत्र ॥ चाहुवानपुरवेदलापति कीत
नयातत्र ॥ १४४ ॥ सस्त्रबहजयसिंहकी । गंगा
न्हावनआय ॥ मुरतमगामथुरामिली । ली
नीकुम्भबधाय ॥ १४५ ॥ चाहुवानिपिकरव्यो
रुचिर । बिहीतनयाब्याह ॥ बरनिबिचित्रकु
मारिनवनवदुल्लहमरुनाह ॥ १४६ ॥ षष्ठ
सस्त्रकीजयसिंहकानि किंकरजिमकिन्नी । इ
कदिनगोकुलजातरबंधसिविकातसलिन्यी ॥
इकबंसगहिअप्यंमरुपकरइकगहायो ॥ मा
तासों गिनिमहतबिहितसतकारबढायो ॥ अ

प्य नौं गिनु हमो को अंगु गय हैं तीर थ हरि अरु
 तरिय । तुम देहु बैठि हाटक तुला करन जोरि हम
 अरज किय ॥ १४७ ॥ दो० ॥ यह सुनि महिषी
 अमर की । बोली नयन मय बैन ॥ दुहिते के बसु
 तै तुला । हमको उचित यहैन ॥ १४८ ॥ रानभा
 त जामात प्रति । पुनि अखि वय चित प्रेय ॥
 पुल कालिंदी सरित पर । बंधौं सुगम बिधेय ॥
 ॥ १४९ ॥ इन तब लिखि दिल्ली ससौं । लिखौं
 हुकमों गाय ॥ सद्वि सैं हंस सुद्वार वरचि । इन सु
 ल दिय बंधाय ॥ १५० ॥ कुमर रान संश्राम कै ।
 जगत सिंह अमिधान ॥ ताहु कै तिहि दिन तन
 य । भो प्रताप कुल मान ॥ १५१ ॥ सुत सुत सुत
 की मधुपुरहि । सुनी खबरि चहु वानि ॥ दिख हा
 ट कल करव न द्विजन । सुदत बधार्द्र मानि ॥ १५२
 दूर समति पठयो तदनु । अंत हपुर आनैर ॥

इतपत्तीचहुवानिह। निजउदयादिकनैर। १५२
 ॥ अभयसिंहजयसिंहए। दुवपुनिदिल्लिय
 आय ॥ हाजिरसाहहजरहुव। लाहबिनयहि
 तलाय ॥ ^{१५३}सकहगबसुसत्रह १७८२ समयासे
 यरिआयोसाह ॥ सोहिकरतदिल्लीससब। क
 हतजोहिकछवाह ॥ १५४ ॥ सूबादुवजयसिं
 हकै। आगरारुउज्जेन ॥ अबसूबाअजमेरको
 बहुरिदयोहितबैन ॥ १५५ ॥ मतिमैनयमैसं
 चमै। सबमैकूरमसेर ॥ बिबुवजीरदखेबहत।
 जवनहिंदुसबजेर ॥ १५६ ॥ ष० प० ॥ अभय
 सिंहमरुईससुन्यो। निजदेसदवरदुरव। सिकव
 साहसौमंगिरचियदरकुंनगेहरव। संगदिथउ
 जयसिंहसेनबसुसहंसनुतबर ॥ राजामलनि
 जसचिवकेरसिवदाससहोदर। कहिजायराज्य
 मरुईसकोसजवजमावहुजोरसन। समुजाय

सब हिरद्वोर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ॥
 १५७ ॥ दो० ॥ आये मरुपति गेह डम । सत्य स
 जिव सिव दास ॥ इत मे द्यो कूर म अथिय । तँहँ
 इक हिंदु न आस ॥ १५८ ॥ दिल्लीमें यह दुस सह दु
 ख । सहि सब कहत काल ॥ गहि गहि हिंदु न ब
 र स प्रति । कर संगत चंडाल ॥ १५९ ॥ बीस दम
 वसु मान सौं । इक अब सु सौं लेत ॥ जन प्रति
 हेरत रच पच जर । दिन प्रति यों दुख देत ॥ १६० ॥
 पाव कुल कस ॥ दिवा किनितिन मैं इक नायब
 । स्वपच औरत सकथित करै सब ॥ दिन प्रतिक
 रि हिंदु न हर बली । स्वपच कहै स्वामि हिंजुरि स
 ली ॥ १६१ ॥ हमरी यह रेयत हे नायब । आई हा
 सिल दैन इहाँ अब ॥ तब वह अकिस्वामि जि
 म उतर । कथितरीति सब हिंदु गहै कर ॥ १६२ ॥
 कर गहि लिरि वं धै दल कंठन । यह लखि स्वपच

तजैइकहायन ॥ दूजेबरसबदुरिगहिलार्वै ॥ अ
हप्रतिदंदमदंधउपावै ॥ १६३ ॥ हिंदुनहेरतफिर
तहीनदल ॥ करतरोहिदिनप्रतिकोलाहल ॥ स्व
पचनप्रनतिकरहिं हिन्दूसब ॥ तदपिदंडअप्यहिं
बुद्धहिंतब ॥ १६४ ॥ दिल्लिययहदिनप्रतिदुस्स
हदुरव ॥ सबकरदयैबिनानलहैसुख ॥ कूरमन्यप
यहमाफकरायो ॥ लिखितलिखायसाहसनला
यो ॥ १६५ ॥ लापवजीरकरैन्हैउद्धत ॥ बहुतबे
रसुनिटारिगयोलब ॥ द्विजइकदयाबहादुरनाय
र ॥ सोजावतदक्खिनसूबापर ॥ १६६ ॥ जाकौम
नसुबसत्तहजारी ॥ तीनअयुतभदसंगतुरबारी ॥
वासोंमिलिकूरमयहअक्की ॥ रहैकानिहिंदुन
तवरक्की ॥ १६७ ॥ कहिद्विजसिकवकरनह
मजैहै ॥ तबछपायबलकरिदललैहै ॥ जोवजी
रसमुहपिल्लैदल ॥ तोतुमकरहुसहायखंडिख

ल ॥ १६८ ॥ यह कहि विप्र तास गृह पत्नी । संग
 सब हि सुभदन अतुर तो ॥ वह वजीर बर खान सु
 हुम्नद । हुसन अली सु हुन्यों जिहिं सय्यद ॥ १६९
 ॥ सुभदन संग संहसन तरानी । इम बर जोर रहैं अ
 भिमानी ॥ यह द्विज बीर मयो तस आलय । रे किम
 दसुर केन बड़ेय ॥ १७० ॥ दैपय खान सु हुम्नद
 गदिय । इहिं दल छाप करहु यह बहिय ॥ लखी
 वजीर छाप यह लै हैं । जोर करैं अति बल हनि जै
 हैं ॥ १७१ ॥ इम बिचारि पत्र सु ब्योउन । हदिम
 गोत बलें दुर बहिंदुन ॥ सकयुन अहु सत्त इक
 १७२ अंतर । किय वर जोर समुद्र सु कमर ॥ १७२
 ॥ यह जय सिंह अष्टूर बकिनी । नागर किनि बंदि
 इम लिनी ॥ बहु अैसी किनी दूर मवर । कहि सा
 हहिं मिद बाय गया कर ॥ १७३ ॥ ष० प० ॥ कौदि
 क अर काद विक द्रव्य बिक्रय दिग धारै । अहुक

मःपनःप्रवलिक्त्रेय निजनिजवित्थारै। सोह
 साहहिंःप्रक्विप्रबलमेदीकूरमपति॥ इमकरि
 कित्तिःप्रनेकसाहसेयो नय सम्प्रति॥ लहिधर
 ममग्गमनुमत समुक्तिश्रुतिनिदेसकद्धुःप्रनुसरि
 य। पदुबुद्धिभयोइहिंसमयपेकहिहेंदसःप्रनुचि
 तकरिय॥ १७४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहावंषू
 स्वस्तेपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
 षष्ठविंशोमयूरवः॥ २६ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 दो० ॥ इतकोटाःप्रजुननृपति। पायोत्रिवरख
 प्रान॥ स्यामरुदुज्जनसल्लकै। भोभूहितयम
 सान॥ १ ॥ अग्रजस्यामहिंमारिकै। भोनृपदुज्ज
 नसल्ल॥ बुंदीपरदावाविरचि। हठिसुविचारत
 हल्ल॥ २ ॥ इतदिलियकूरमअधिप। साहनिहा

यन लेय ॥ सकचउवसु सत्रह १७८४ समय ।
 आये निलय प्रजेय ॥ ३ ॥ करि प्रमात्य नगरा
 जदिय बुंदिय कुम्भपठाय ॥ बुंदी पति इहिं पर बि
 मन । रक्वत बिरसरिसाय ॥ ४ ॥ कछवाही प्र
 तिनृप कहिय । अनुज प्रबोधहु प्राज ॥ राजतु
 है जो दहनों । तोर करवहु नगराज ॥ ५ ॥ आतहिं
 हमरानी भनत । कह्यो तम कि कछवाह ॥ भगिनी
 तुमरी भुम्बिकी । चितनर करवत चाह ॥ ६ ॥ जामि
 पप्रलस समाद जुत । अरु तुमरी मति एह ॥ गेहहि
 भूपन बिगारते । बिगत्यो इ कहि गेह ॥ ७ ॥ हम
 जान्यो बिगारत बिभव । लै हैं अबहु सुधारि ॥ तुम
 रीमति भ्रम मां हें तो । हमहु दयो हित दारि ॥ ८ ॥
 यह कहि नृप जयहिं हत ब । लिय नगराज दुला
 य ॥ रंच सिराही रागिनी । इहिं पर बुंदिय राय ॥ ९ ॥
 चुडाउति उर जो मयो । कुमार पदम अभिधान ॥

आमय बसि तिहिं नदिनन । किन्तु महाप्रस्थान
 ॥ नाथा उत कूरम नृपति । बुल्लो विविधरिसाय
 ॥ राजकाज लग्गो करन । बुंदिय सालम प्राय ॥
 ११ ॥ कछवाही सनयाहि पर । कछु प्रसन बुंदीस
 ॥ चुंडा उतिर द्वेरि सिर । यह हिरही बनि ईस ॥ १२
 दिल्ली सन बुंदीस जब । बुंदा हरथर प्राय ॥ चुंडा उ
 तिर द्वेरि तब । लिनी ही बुलवाय ॥ १३ ॥ कछवा
 ही के डर दुहुँन । रक्खि निवाइ नीर । पतरानी के ब
 चन बसि । अप्परहिय आमेर ॥ १४ ॥ षष्ठ ॥
 बुंदी लोकन बहु अनि ति आमेर । अकिय । सर
 नाजर किस तूरनगर कुतवा ल । निरिख । पकरि
 पकरि पर दारजार बहु तनग हिरखी । आर लूव
 मचवाय नगर लज्जा सब न करी । सुनि सुनि न
 नीति कूरम सहिय कहिय कछु न बुंदीस प्रति । जि
 मजिम सही सुति मति । बुल्लो न न न न न न न न न

रनञ्चति ॥ १५ ॥ दो० ॥ दिनदिनञ्चकूरमदुमन
 । कलोरुद्धुनजाय ॥ अंधुर्बाहजिमककुञ्चनखा
 रकवीहृदयसमाय ॥ १६ ॥ पटरानीनितप्रतिकरै
 । सेवाश्रीगोविन्द ॥ अन्तररहतउदासअवाता
 तैर्बुद्धनरिंद ॥ १७ ॥ चुंडाउतिपरप्रीतिअतिरा
 खतगुप्तनरेस ॥ हितअनहितबुपिनहिंरहत।
 प्रकटतअंतअसेस ॥ १८ ॥ कछवाहीनिजभात
 के। भरतरहतनितकान ॥ कर्मनिरविनृपबुद्ध
 के। कूरमकरतप्रमान ॥ १९ ॥ तालैर्नृपजयसिं
 हहू। रचिजामिपपरीस ॥ हृदयविचारतअ
 करमै। करिहोकोउबुंदीस ॥ २० ॥ य० प० ॥ साहि
 बरसजयसिंहनगरजयपुरबसवायो। सितस
 हस्यद्वादसियमकररबिलममिलायो। सिलप
 तंअनुसारसवहिव्यवहारसधाये ॥ बारहको
 सविथारविबिधप्रकारबधाये। रचिजुकतिद

ममकोटिनखरचिपुरअपुबकिर्नोप्रकट। हिंदु
 वसथानदुज्जो नहिनसहरप्रातिबिबकसुघटा॥
 २१॥ गीर्वाणभाषा॥ भुजंगप्रयातम्॥ विधा
 यैवमग्निपुरदुर्मराजः। श्रुतीधीरिअसेव्यलब्ध्वा
 स्मृतीश्च॥ द्विजेन्द्रान्समादृत्यधर्मानुगस्तत्सव
 र्मश्चमश्रेयश्चाविश्वकार॥ २२॥ विधायाग्नि
 होत्राऽह्वराद्येकयज्वा। नियम्याप्यधर्महृषीकेश
 भक्तः॥ सितारेशदिल्लीशसंस्पृष्टमंत्रःकृतीपु
 ण्यभूमौबभूवाग्र्यनामा॥ २३॥ कृतोधीसरब
 खानदोराभिधेन। प्रणत्यैवदिल्लीन्द्रसेनाधिपेन
 ॥ महात्मासविषावात्मजःकूर्मराजोराजारिकेले
 ष्वय्यमैकोयथाहि॥ २४॥ कामकीडा॥ तंनवा
 योपेतंस्कन्धावारंसर्वेच्चीकुर्वन्। वज्राजश्रीवि
 ष्णुत्रातोनीत्यादिल्लीशोनुरव्यम्॥ आन्वीशि
 कथाधर्मार्थार्थचिन्तेराज्यदुन्तारिः। योजान्दरंभे

जेधूयुध्याशीभिर्जिहूमर्त्ता ॥ २५ ॥ नकुटकम् ।
 मातिरुडुदाराउल्लवाकुनीतिमिश्रहरिः । समिद
 तल्लग्नगर्भविलङ्घनएकतरिः ॥ जयनयधार्य
 कार्यमननार्थउदग्रगति । भुवियशसारराजजय
 सिंहइलाधिपतिः ॥ २६ ॥ प्रा० मि० ॥ ष० प० ॥
 इमकूरमजयसिंहहिंदुमिच्छनउप्परद्ववं । जाप
 धरमश्रुतिजजनभूरिअध्वरबित्थरिभुव । निंद
 तनिगमपिछानिजोरतुरकानप्रजारन ॥ सहर
 सिताराधीसमंत्रिबुल्ल्योतिनमारन । साङ्गनैरस
 लहितवसमयदिल्लीपतिउप्परदुसह । संधिया
 बहुरिहुलकरसुभटपिल्लेदुवदलअमितमह ॥
 ॥ २७ ॥ दो० ॥ नृपसाङ्गनवलकरवदल । सहरसि
 लाराईस ॥ पिल्लेहुलकरसिंधिया । दह्ननभुव
 दिल्लीस ॥ २८ ॥ इनअवरंगाबादलरि । पाहि
 लैअमलप्रचारि ॥ वहनागरसूबाअधिपादया

बहादुरमारि ॥ २९ ॥ इतगुज्जरधरजवनइक।सर
 बिलंदसप्रसाद ॥ सूबापतिवहसाहको।नगरअ
 हमदाबाद ॥ ३० ॥ सुबसुग्रामसत्तरिसैंहेंस।आ
 यसजासअधीन ॥ मरहदुनसोहू मिल्यो।लिरिवि
 पत्रनअघलीन ॥ ३१ ॥ उज्जयिनीअकबरनगर
 ।अरुपत्तनअजमेर ॥ सूबानयजयसैंहैंकैं।सो
 बुल्लतबलसेर ॥ ३२ ॥ इतरवटकलदिल्लीउदर
 ।साहमुहुम्मदसूल ॥ कंटकअरिकजीनकैं।अ
 नयअैसअनुकूल ॥ ३३ ॥ मंदनपुंसकरतमुदि
 त।यैंहीपुनिअनुचार।रत्तकाप्रिसायनरह
 त।सचिवहुमंदसमार ॥ ३४ ॥ मोजदीनतैंइ
 कसे।भयेपंचदिल्लीस ॥ दिनदिनबोरिकुरा
 नदिय।रचिवनबीपररीस ॥ ३५ ॥ इतबुंदिय
 पतिबिनयकरि।रचिसालकसनसाम ॥ बिही
 हितजयसिंहवरि।आरंभियउपयाम ॥ ३६ ॥

नगरनिवाहहिंदुलिय।रानीउभयबुलाय॥सु
 ज्ञकुमारिजयसिंहकों।प्रथितदईपरिनाय॥३७॥
 संगानैरसमीपयह।बुंदीपतिकियव्याह॥दायज
 बसुनयलकवदिय।अधिकदिरवायउछाह॥
 ३८॥सकचउबसुसत्रह१७८४समय।तिथित
 पस्थसितआदि॥कूरमइमजामातकिय।पतिच
 हुवानप्रमादि॥३९॥इतिश्रीवंशभास्करेमहा
 चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमशशौबुधसिंहचरि
 त्रेसप्तविंशो २७ मयूरवः॥ ७२ ॥ ७२
 ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ ७२
 ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ ७२
 नाराचः॥इतैअरीनजावदारव्यनैररानकोहन्यो
 ।सुनीअवाजकूर्मराजसज्जभीरकोंबन्यो॥भनं
 किमौरमौरकेठनंकिअंदुगैगुरे।कुदारनैनदार
 केतुरवारसज्जसंजुरे॥१॥चमूहजारअभवा

नलै रूपानमानकी । रिसायकुम्भराययौ चलोस
हायरानकी ॥ बुलै नकी ब दोयसे डुलै हरो लहो करै
। कुकै भटालिभीरत्यों रुकै समीरसों करै ॥ २ ॥
बजै निसाननादसो दिसा दिसान बित्यै । मरू
कदंदसूक की फटा हजार फुं करै ॥ मवासबास
सपासजासत्रास कंपये । चकार चीसकै पुरीसदि
कारीसचंपये ॥ ३ ॥ चले मतंग अद्रि अंगस्था
मरंग सज्जके । कुरंग फांदके चले तुरंग जंग कज्जके
॥ चले दुबाहके सिपाह स्वामि धर्म सीसलै । चली
सुतोप सद्वित्यौ चटवटि वक्र चीसलै ॥ ४ ॥ मिले
प्रबीर पत्र बाह पत्र बाह वेधते । कमान पत्थके क
मान पत्थकी निसेधते ॥ भिरे भुवाल भुलियौ सु
भागधेय भेटलै । कहौ न अज उन्धयो जुतास फोज
फेटलै ॥ ५ ॥ फरकिके तुगै नयौ बिजेय बैन बि
त्यरी । सहाय दैन कुम्भसैन रान अैन संचरी ॥

सुनीसुरानकान्त्यौप्रयानसमुहो कियो। हिले
 मिलहुहुंनरेसहेतहुल्लस्योहियो॥ ६॥ ष० प०
 ॥ मिच्छनधाटिप्रपातरानजनपदजावदसुनि।
 पृतनासैहंसपचासचंडकौधनजोधनचुनि।
 मैरोनरनाहपत्तहितचाहउदैपुर॥ दहबारील
 गसलआयसमुहमुदआतुर। महिपालउभय
 हियलायमिलिसुरवसहपत्तनसंचरिग। करिदल
 मिलानकूरमरहियसुपहुगानमहलनसरिग॥
 ॥ ७॥ बी०॥ सकसरबसुसत्रह १७८ पसमा।
 लहिकूरमनिजभीर॥ अतिआदरगनोंकियउ
 । हैमरासनहमगीर॥ ८॥ इकजामिपपुनिद
 लअतुल। बहुरिबढ्योलहिकाल॥ यातैतंहं
 प्रतिनअति। भयउरानभूपाल॥ ९॥ इकथा
 लकिन्तौअसन। पुहरीतिसबपेलि॥ कछुअंत
 तरहितमैनकिय। हियतबहिंदुनहेलि॥ १०॥

कूरमहकरजोरि कहि । प्रतिनतिकरि पलटाव ॥
 मन्त्रहु ॥ प्रणन सुमट मुहिं । जिम सोलह उमराव
 ॥ ११ ॥ मै इन हूँ ॥ अनुगत । मम हित नहिं मर
 जाद ॥ बिधिसब के हों बंदगी । पै हों रान प्रसाद
 ॥ १२ ॥ यह कहि कूरम चरगहि । किय उरान
 सिर उट्टि ॥ रचि ॥ अंजलित बरानहू । बर जैनि
 द्वि हित बुद्धि ॥ १३ ॥ इत्यादिक किय ॥ अनुगप
 न । कूरम हित निकरं ब ॥ जामि पबिन्दुरानहु ज
 प्यो ॥ अवरन मम ॥ प्रालंब ॥ १४ ॥ ष० प० ॥ कू
 रम प्रतिदिन इहू कहिय सी सो दजोरि करे । रा
 मपुर पसंग्राम बदलि ॥ अवरहत टेक बर । नैकन
 करत निदेस भुमि ॥ अड्डी पुनि भुगत ॥ सुनि
 ॥ अकि वय जय सिंह वाहि हनि हों रन उद्धत ।
 रामपुर देहु मो कहें नृपति मै सेवन करि हों मुदित
 । कहिय हसलाम जय सिंह किय मुल कलै नल

करनप्रमिल ॥ १५ ॥ महासुंदरी ॥ सुनियो
 मनरानों रिसानों महाअहिग्रस्त छुछुंदरि
 हैनों पस्यो । दुबबेर कही हमरो ही दुतो तबदम
 तिलकवदे लैनों पस्यो ॥ सुनियो है सलामक
 रीजयसिंह नयो तबरान कों नैनों पस्यो । लिय
 साह कों सेवजो रामपुरा सुकती कछवाह कों दि
 नों पस्यो ॥ १६ ॥ दो० ॥ नीतिनिपुन भुवलोभ
 लागि । इम कूरम तैं हैं आय ॥ लिय उरामपुर
 रानसों । करिनुतिलिखित कराय ॥ १७ ॥ रान
 सचिव कायस्थ तैं हैं । कगर छाप करीन ॥ तब कू
 रम गृह जायतस । पाई कीति प्रवीन ॥ १८ ॥ पदु
 प्रपंच इम रामपुर । लिय नीतिलगिलाह ॥ ब
 दुरिरानसन अनुगचनि । किय रहस्य कछवाह
 ॥ १९ ॥ ष० प० ॥ कहिय मंत्र कछवाह दइवहिं
 दुन सुभदायक । मिदत जानियत मिच्छनिगम

निंदकभुवनायक। कबहुनसुनतकुराननहिंन
 कलमोनिमाजनत॥ काजिनउप्परकुहमुह्न
 नजातमहज्जत। रतपानकापिसायनरहतभा
 सूकनजानतमहत। विधिथपिसंडमोहनबह
 तचितप्रपंचकबुहुनचहत॥ २०॥ अत्रबिचि
 रिहमएहमंत्रिबुल्लतमरहद्वन। सजिप्रपंचति
 नसंगबोरितुरकानहिंदुवन। हेवृपहिंदुगंहलि
 अप्पदकळरहद्वअब॥ भुगद्विस्त्रियभुमि
 सचिवहमकरहिंजेरसब। मरहद्वपारमंडहिंअ
 मलअप्पनचम्मलिवारइत। यहअकिवबुद्धि
 कूरमअधिपबिन्नतिकतिमडियअमित॥
 २१॥ दो०॥ कछुदिनरहि कोतुककरत। नृपद्व
 मतिहिंनैर॥ पायशनसनसिकवपुनि। आयेपु
 रअमेर॥ २२॥ गोकूरमजबसानगृह। वृहत
 हिबुंदीस॥ सहकुटुंबअमेरसन। रचियप्रया

नसरीस ॥ २३ ॥ द्विजवरगुरुजयसिंहकोरत
नाकरअभिधान ॥ कानीखोहसुगामतसादि
चेतत्यमिलान ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ जिहिंरतनाक
रविप्रसुगुनजयसिंहसिखायो। स्मृतिरुनिगम
खटसत्यविबिधनृपधर्मबितायो। चउदहपुनि
चउसद्विकलाविद्यापदुकिन्नों ॥ जयसिंहगदा
रिहजेगभूसुरजिहिंभिन्नों। धारनकरायसब
कुलधरमकलिभूपनसिरमेरकिय। जिमजिम
अलापदूरमजग्गोअन्धरिजतिमअदरिय ॥
॥ २५ ॥ विनुत्रिसंध्यजलपानजग्यपंचकवि
नुभोजन। विनुस्मृतीनअवहारख्यातनयविनु
बसुखोजन। द्विजसुपात्रविनुदानध्यानहरिहर
विनुधारन ॥ विनुविधिकालअवायमंत्रनय
विनुअरिमारन। विनुन्हाननिगमपाठनबहुरि
विनुप्रपंचसंगरविकट। इहिंद्विजप्रसाददूर

मइते ननरकवेनिजमुवलिकट ॥ २६ ॥ जबकूर
मजोधपुरचल्यो व्याहननयचातुर । तबसय्यह
उरतकिपुबपठयोअंतहपुर । नगरकरंलीनाह
भूपजदुबंसजासमुव ॥ द्रगबहादुरदुगाधीर
कव्योसुततथधुव । अवीरधसंगहो द्विजयहहुति
हिं तं हं दिनीं देहतजि । तबकुमलासजेगोनय
भूसुरगंगारामभजि ॥ २७ ॥ गंगारामहुअमिलम
ति । भोद्विजराजसुभाय ॥ बहुमरबनृपाकिअस
बल । बलिजेपुरबसवाय ॥ २८ ॥ निवपयका
नीखोहतसं । रहियआयउंदी त ॥ कबवाही
आमेररहि । रचतस्वामिपरीस ॥ २९ ॥ वरप
॥ इतकूरमगृहआयकालकोबिदप्रपचकिया ।
मरहदुनछन्नमिलिदर्इअरजीपुनिदिल्लिय ।
रचतदोरमरहदुलूटमंडतवमलिलग । जिमे
जहुबलवित्तप्रबलहमलरहिंमंडिपया । सुनि

साहसुच्छि सचिवनमवन उचितमंत्रयहं उच्चर
 हु । कथतावरवानदोरांकहियकहतकुम्भजिम
 तिमकरहु ॥ ३० ॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचं
 पूरुदरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
 त्रे अष्टाविंशो २८ मयूरवः ॥ ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 दो० ॥ इतकोटापतिनृपउमंडि । संभरदुज्जन
 सल्ल ॥ पायो कुम्भजुरामपुर । हडि लुह्योरनह
 ल्ल ॥ १ ॥ पा० कु० ॥ पंचअष्टमुनिससि १७८५
 सस्मितसक । इक विग्रहकोटा कुवभौचक
 ॥ मेवाउतहडुभटछित्तर । प्रबलसिपाहबहो
 छकउप्पर ॥ २ ॥ महारावभटयहैमत्तम
 न । धंटीपतिराउत्तगबधन ॥ कबुकबत्तउप्प
 रवहकोप्यो । लज्जरुस्थामिधरमसबलोप्यो ॥

॥ ३ ॥ कर उर अगलस्यो जोर न करि । तिहिं
 कबंध जय सिंह हिं संहारि ॥ रत्ति निकसि हड्डा
 सुबडेस्य । रामपुर पसंग्राम सरन गय ॥ ४ ॥ को
 टापति सुनि एह कहार्इ । सरन नर कवहु चार स
 हार्इ ॥ चंद्रा उत सु सुनी न धरी दित । तब धकि
 दुज्जन सल्ल चढ्यो तित ॥ ५ ॥ हरि गीतम् ॥
 करि हल्ल दुरजन सल्ल नृप तब रामपुर पर उपर्यो
 । बजिन दम हल हह स हल भद बहल ज्यो भस्यो
 ॥ उडि केतु दंतिन पंति पंतिन सिंधु तंतिन ल
 गये । नखराल चालन बाजि जालन ज्वाल
 नालन जगये ॥ ६ ॥ ठननं कि घंठन घोर ल्यो
 रननं कि कोचन की करी । सननं कि सल्लिन ल
 ससा सऊनं कि पकर कल्लरी ॥ बिरु दैत बीर पटै
 त कइ कमनेत सज्जित संक्रमे रन सैन लखि
 लगिलैन केगल गेन गिहून के भ्रमे ॥ ७ ॥ डगम

गिआहनेन कूटतूटतसेतुसागरलुण्ययो। दरदि
 द्विदैमुवपिद्विकच्छपनिद्विनिद्विनरुण्ययो ॥
 नउवत्तिनादनबीरबादनद्योनिद्यादनबित्थस्यो
 । जिममहसंवरधूलिडंबरएमअंबरउच्छस्यो ॥
 ॥ ८ ॥ फटकारिसुंडिनमतगैनमधत्तपच्छि
 लकेकरै। जिनमानपक्षयप्रानगक्षयदाननि
 ज्जरनिज्जरै ॥ असवारतोकि तुरवारकेमद्वचक्र
 चारफिरावहीं। अबलोंसुसिकवतपौनपैवह
 गौनरंचनआवहीं ॥ ९ ॥ जिनधारमारभयार
 भारहजारभोगपजक्यो। खुरतारअग्रनभु
 मिफुहतज्यैउदुंबरपक्यो ॥ १० ॥ खुरलीसु
 रिलहलबीरकेसुरलीसुसिंधुवउच्चै। किलका
 रिजुगिनिसंगहैहलकारिभैरवहुंकरै ॥ ११ ॥
 मटभीमलोंनिजसीमतैसुतभीमयौचढिसंच
 स्यो। लियघेरिदुगासुरामपुरदलफेरिसंगर

वित्यस्यो ॥ लगिअगितोपनकालकोपननैर
 लोपनमंडयो ॥ खगिगोरखजालनसौधसालनदु
 गगगोलनखंडयो ॥ १२ ॥ जरिहटपहनबहबह
 नधूमधोरनिधुंधरे ॥ दुरिअोकअोकनसोककैपु
 रलोकसंसयमैपरे ॥ प्राकारगिरिगिरिजातकहुँ
 छिकिबअकपिसिरउच्छटैं ॥ कहुँफुहिरबोमन
 लोमगिरिपरिरखानपरिसुउप्यटैं ॥ १३ ॥ दगिदाव
 तुहिलदावमंडपग्रावगिद्धनिज्योचहैं ॥ प्रासाद
 पत्थरसोरसत्थरहैथरत्थरकेकहैं ॥ छकिछिन
 तोपनबूटकेपरिकूटगोपुरतैंगिरैं ॥ फुल्लिंगफाल
 नजगिज्वालनचित्रसालनकेकिरैं ॥ १४ ॥
 बहरातगोलनधमकेबहरातछत्रिनहुहिकैं ॥
 छिकिजातछप्परछज्जकेदिकिजातछप्परतुहि
 कैं ॥ अंगारछारअंगारद्वारबजारबीथिनउच्छटैं
 ॥ नरहैंनिवाननछिज्जिनीरसमीरश्रीरदमलौस

हैं ॥ १५ ॥ जरिजात परपरिजात गिद्धनि डोरितु द
 लं चं गज्यो । जरिजात मंडन दंड के गिरिजात के कि
 यमं गज्यो ॥ धक्षि धाम धाम न धुम तै पुर राम वि
 बल कुक्षयो । इत हल्ल दुरजन सल्ल करि हर वल्ल
 जल्ल न शुक्षयो ॥ १६ ॥ दै दै नि सैनिन बीर के हम
 गीर अहन पै चढे । के दोरि अरन तोरि अगल
 पोरि अगल गे बढे ॥ वह हहु छित्तर आय चत्तर
 धीर धार न मै धस्यो । करि जंग कछु विधि करि ख
 का लु करि फेज हिं नि करवस्यो ॥ १७ ॥ संग्राम नृ
 पय ह काम सुनित लराम पुरत जिभ ज्ञयो । इ त
 जिति दुरजन सल्ल हल्ल न लुहि पत्तन गज्यो ॥
 बर जौर दूर ममेर कौ गिनि नीति मान स सौ भिरी
 । जय सिंह लिय वहरान सौ इम अन्न अप्न नौ
 फिरी ॥ १८ ॥ दो० ॥ कोटा पतिन हिं अमल कि
 य । दूर मनुष्य भार ॥ लुहिराम पुर जाम लग ।

प्रायउप्रप्यप्रगार ॥ १९ ॥ व० प० ॥ चंद्राउत
 लीसोदनृपतिसंग्रामसिंहइत। पुरबिंमोलीआ
 यरह्योचिंततप्रपंचचित। सातुलहोपरमारनाम
 विक्रमबिंमोली ॥ इहिंकारनतैंहैंआयरबूबभ
 जतकदिखिली। धनकुमारिनामजननीहुतस
 हीपीहरइमतत्यरहि। दिनकछुबिहायदिल्लिय
 गयोसाहमुहुम्मदसरनगहि ॥ २० ॥ दो० ॥
 कछुबसुहुंडीनजरि। लियनिजभुम्भिलिरवा
 य ॥ दियकोटाआमैरदुव। बनिबनिपिसुनब
 ताय ॥ २१ ॥ कछुदिनरहिनिजपुरक्रम्यौ। पटा
 मुलकसबपाय ॥ सरनिमध्यजयसिंहसो। माखे
 चूककराय ॥ २२ ॥ व० प० ॥ लदनंतरसकबान
 अहसन्नह१७८५संबल्लूर। अनाअहमनि
 पोसमयउपुनिसुलकूरमधर। रानाउतिजाठ
 रजनाममाधवनृपनंदन ॥ सुनतरदवरिजश

सिंहयुग्मिमंदिर्यउच्छवधन। दियद्विजनदान
 रूप्ययअयुतकथितरीतिजपजज्ञकरि। सुतप्र
 सबकर्मसिद्धियसकलआमनायअनुसारसरि॥
 ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ तदनुईश्वरीसिंहसुपुद्गजय
 सिंहपदसुत। रानकुमारजगतेससुताब्याहो
 उहितसंजुत। सरबसुसन्नह १७८५ सालमाघ
 सितलगनमिलायो॥ जबहिउदैपुरजायउचित
 उपयमकरिआयो। इतदक्षिमुलकमालवकिय
 उमरहहुनयंडूअमल। आजलौदूरसुनतेहुन
 हिंअनिसनअबलगेप्रबल॥ २४ ॥ दो० ॥
 रनअवरंगावादरवि। पहिलैकटकप्रचारि॥
 दयाबहादुरविप्रवहसूबापतिलियमारि॥
 २५ ॥ ष० प० ॥ इहिंद्विजदिस्वियअगमेदि
 हिंदुनदुरवदिनौ। सहहुकमपुनिपायकुंचद
 किरनसिरकिनौ। तीनअयुततुक्वारसुभत

सर्वसुखीसुखिनिसारकदम्बरदिनकरे। ३६१

निजसंगसिधारै। कोटानरेसमलिपनलिखिदु
 ज्जनसल्लङ्घसंगदिय। इनजायसरितोरवाउतरे
 कछुदिनपारसुकामकिय॥ २६॥ कोटापतिकरि
 कपटतल्यकछुकालबिहायो। द्विजद्विगनिज
 दलरखिअप्यकोटाचलिआयो। उतअवर
 गाबादलुहिपरहदुचलाये॥ द्विजत्रिबेरदलपि
 लिपिखिरचकवहरये। अतिजोरबढियभरह
 दुअरितबद्विजसमुहजिह्वये। पासककृपान
 चोपरिप्रथितखेतप्रानपनरिबिह्वये॥ २७॥
 दयाबहादुर बीरविप्रनागरसूबापति। खूबजा
 रिरनखग्यमारिबहुसन्नुमहामति। तिलतिलति
 कनतुहिबिरचिअच्छरिगलबाँही॥ गंजिअरि
 नकरिगरदमरदपत्तोदिवमोही॥ जिमजिमप्रस
 दमिच्छनजगियभोगनजिमजिमभुख्ये। तिम
 तिमकटाच्छतिरछे बिरचिदिल्लीजारनभुख्ये॥

॥ २८ ॥ दो० ॥ मारिद्विजहिंमंडत अमलारेवा
लंधिरिसाय ॥ मरहट्टन मालवलयो । उज्जयि
नीलग अयाय ॥ २९ ॥ लैमंडूदस उरलियउ । निज
निज धानां सकिय ॥ सूबापति गुजरातको । सोडु
मित्यो हितस किय ॥ ३० ॥ तब के आवत दक्षि
नी । सुबद छत बर जोर ॥ अब दूर म कहि मुकल्यो
। तज दूराम पुर मौर ॥ ३१ ॥ जानिइनहु जयसिंह
को । राम पुर सुदिथ होरि ॥ अवर देस उज्जैन लग
। बढिवाढि लिनब होरि ॥ ३२ ॥ दूर मतब मुकल्यो
कटक । अमल राम पुर किन ॥ मरहट्टन सन छन
मिलि । दिल्ली सिर मरदिन ॥ ३३ ॥ इति श्रीवंश
भारकरे महानं पुरस्व रूपे दक्षिणायन नवम राशौ
बुधसिंह चरित्रे कृतं त्रिंशो २६ मयूरवः ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दौ० ॥ अमयसिंहमरुईसइत । मरुधरराजजमाय
 स्वामिधरमबहिसाहको । अतिजवदिल्लीआय ॥
 १ ॥ इत नृपकानीखोहरहि । खुंडाउतिपरनेहो ॥ स
 करसबसुमुनिइंदु १७८६ मित । हुवउदंतअबएह
 ॥ २ ॥ ष० प० ॥ असितपकरअ । भाढमासशनि
 बारचउदसि । खुंडाउतिउरकुमरभयोदहमासज
 ठरबासि । धान्नेयीनृप निकटउल्लसहितहिगहि
 आन्यो ॥ हड्डनधरयहरीतितबहि निजसुतपहि
 चान्यो । करिजातकर्मकुलबेदविधिगणकन
 बहुबसुब्रातदिय । बहुद्विजनधेनु हाटकलुरग
 मणिपटसहितप्रदानकिय ॥ ३ ॥ बडुरिनृपति
 बुधसिंहकुम्भनृपसौंदुकहार्ई । सतमतारुप्यय
 सबनदईजयसिंहबलार्ई । पुनिकहिपठईएह
 बांडिममस्वसाधर्मरत ॥ खुंडाउतिसंगबसिरु
 पुत्रउतपन्नकरियतत । अबचहड्डराज्यबुंदिरक

रन तो मम कथित प्रमान करि । यह मय उ पुत्र अ
 प्यहु हमहिं चुंडा छति सन रहहु दरि ॥ ४ ॥ अरु
 हमर कवहिं गोद ताहि निज सुत करि मानहु मम
 भगिनी संगर हहु याहि निज हित करि जानहु ॥
 संगहि दिय इक सचिद नाम ताको हीरामल ॥ ति
 हिं संगिय यह तनय देहु कुम्पहिं चाहहु भल ।
 अविबरिसाय बुंदिय अधि प पुत्रहु केंहु मंगे
 मिलत । बर जोर लेहु होतु म प्रबल हमर न इच्छ
 तख गहत ॥ ५ ॥ दो० ॥ कहिय ह सुत उत्सव
 करिय ॥ धरिय नाम उमेद ॥ सो सुनि नृप जयसिं
 हके । मय उ अमित जित देद ॥ ६ ॥ अ० प० ॥
 सुनत एह जयसिंह यस्त्रि कर मुच्छरिसायो । पद
 मपय दछो किरु धित सहूल रिजायो । लमकि
 तत काल सचिव राजा मल बुल्यो ॥ कह्यो क
 हा कर तब रिजि अब उल बल बुल्यो । करि

उचितलेहुखत्रीकहियगृहवासिनइनहनहुन
न । इच्छितहिंराजबुंदियअरपिप्रथितनिबाह
हुअप्पपन ॥ ७ ॥ दो० ॥ तबछित्तरप्रतिइंद्रगढ
। कुमलिरबीयहचाहि । दिवसिंहभेजहुकुमार । बुं
दीअप्पहिंताहि ॥ ८ ॥ प्रथमराजतुमकोमिल
त । जोयहतुमहिंरुचैन ॥ तोहमअवरहिंअपि
हैं । बदहुनपिछैंबैन ॥ ९ ॥ छित्तरसिंहहुतब
हिलिखि । पठईकूरमगेह ॥ हमकिंकरबुंदीसके ।
अनुचितकरहिंनराह ॥ १० ॥ अवरहुगोपी
नाथकुल । नट्योअनुक्रमपाय ॥ बुंहीलैकूरम
तबहि । सालमलिनबुलाय ॥ ११ ॥ कह्योभर
हुतुमरोकुमार । बुंदीगहियबीर ॥ थालैंनहिंसंभ
यधरहु । हमसहायहमगीर ॥ १२ ॥ सठसालम
यहलोभसुनि । बुह्योकुमारप्रताप ॥ नयबिचा
रिसोहनट्यो । अवरिदुरितअप्राप ॥ १३ ॥

जड़सालमबुह्यो जबहि । मध्यमकुमरदलेल
॥ करउरतैं प्रायो कुटिल ॥ मनइच्छितलहि
मेल ॥ १४ ॥ अभयसिंहइतमरुअधिद । ब
रवसिसाहबसुब्रात ॥ सरबुलंदसिरमुकल्यो ॥
दैसुबा गुजरात ॥ १५ ॥ दिल्लीतैंमारवनृपहु ।
प्रायो जैपुरअत्थ ॥ बरखनलगजैपुरबस्यो ।
होजयसिंहहुतत्थ ॥ १६ ॥ तबदरकुंचनआ
यतैंहैं । मरुपतिदिनमिलान ॥ इहिंसुनिकानी
खोहतैं । चढिप्रायोचहुवान ॥ १७ ॥ मरुप
तिसोंअतिहेतमिलि । कहिसबकुम्मकुकाम ॥
जयनिवासउपवननिकट । कियबुंदीसमुका
म ॥ १८ ॥ मुक्तादाम ॥ मिलेमरुभूपरुबुद्धवि
नोद । परस्परडेरनआयप्रमोद ॥ सुद्वैकरिगो
ठिनजिम्भनसाजि । दयेलियदेउनबारनबा
जि ॥ १९ ॥ मरुप्रभुडेरनकुम्महुआय । सुता

पतिजानिमिल्योसरसाय ॥ कह्यो करि पावन
जैपुरजेब । ममालयभोजनकैंचलियेब ॥ २० ॥
कह्यो मरुभूपदुयों सुनितत्य । चलैं हमबुद्धब
लापतिसत्य ॥ ठगेइनकों तुमजानि प्रमत्त । हमैं
इनतैं हितहेयनअत्त ॥ २१ ॥ यहै सुनिकूरमअ
किवयरह । बुक्यो मिलिजामिपतैं यहदेह ॥ य
है कहिलै मरुभूपहिं जाय । दई बिनुजामिपगेहिं
जिमाय ॥ २२ ॥ चल्यो लहि कूरमसिक्खकबंध
। बघो नृपबुद्धहिं फेरि प्रबंध ॥ रहो तुम कूरमकी
यहजानि । कछू करि है मममद्रप्रमानि ॥ २३ ॥
सुतो सबगो तुमरी कथसंग । अबैं ननरकरबुद्ध
राज्यउमंग ॥ चलो ममसत्यहिजो चहुयान ।
ततो इन्हठिल्लहिं लै तुमथान ॥ २४ ॥ यहै कुन
मन्नियबुंदियईस । रची मरुभूपतिहूकछुमिल ॥
क्रम्यों करिकुंचनधन्वकबंध । रच्यो धरगुज्जर

लैनप्रबंध ॥ २५ ॥ इतैसठसंभरमोहप्ररोह ।
 कय्योनिजडेरनकानियरबोह ॥ दर्दपुनिबुद्धहिं
 कुलकहाय । भयोसुतभ्योरससोंपहुभाय ॥ २६
 ॥ रुलैसुतसालमभंकदलेल । मनोइहिंपुत्रगि
 नौलहिमेल ॥ नमन्नियफेरिहुबुंदियनाह ॥
 कुप्योगहिमुच्छतवैकछवाह ॥ २७ ॥ दलेल
 तुलायउसालमनंद । मिल्योभृषकूरमप्रीति
 अभंद ॥ बरक्षरगदियपैबहुद्वारि । कद्योतुमबुं
 दियभृषहकारि ॥ २८ ॥ अबैतुमकोंदुहिताह
 मअपि । धिरानिजभुगानभेजहिथपि ॥
 विराजहुबुंदियगदियजाय । सबैहमरानस
 मेलसहाय ॥ २९ ॥ रह्योअभिषेकसुलोत
 हिकाल । सबैसाधिहैपुनिसनुनसाल । बहै
 कहिसालमसिंहबुलाय । प्रबोधितबुंदियदि
 नपदाय ॥ ३० ॥ कद्योबुधसिंहहिंअननदे

इसबैतसराज्यरजूकरिलेहु ॥ सज्योतबसालम
बुंदियसीस। हरामतजीनयधर्महदीस ॥ ३१ ॥ दो०
॥ यहसुनिकानीरवोहते। बुद्धनरेसहिंदोरि ॥ सु
रिभुरिसालममेंमिले। बहुभटसचिवबहोरि ॥
३२ ॥ पञ्कटिका ॥ इकबनिकनामबानांप्र
धर्म। कियसुरव्यसचिवजोरतकुकर्म ॥ यहजो
धराजजामिजअनीति। पलदयोसठसालममें
सप्रीति ॥ ३३ ॥ सुरवरामनामकायत्यस्थान।
भरिलोभचोधरीउदयमान ॥ नागरइकद्विजज
गदीसनाम। हड्डापुनिर्गितुबहुवहराम ॥ ३४ ॥
भटअनयपुंजहड्डापवान। धितनैरदुगारीजासथा
न ॥ पुनिधाइभातसुभरामपाप। सुरिकियउदुष्ट
सालममिलाप ॥ ३५ ॥ अरुसठअलोदपुरपति
अमान। मातुलसुमहारामाभिधान ॥ इत्यादिस
चिवभटसठअनेक। दरिदरिसालमविचग

देक ॥ ३६ ॥ इतकिय प्रपंच कछवाहराय । दिल्ली
सुअरज पठई लिरवाय । बुंदीस बुद्ध आलस ब
हंत । चित अवन साहसेवन चहंत ॥ ३७ ॥ नहिं
पुन आहि इन के निकेत । तस मात भ्रात जहिं रा
ज्य देत ॥ मुहु कम्म बंस साल म अठेल । बर कुमार
तास मध्यम दलेल ॥ ३८ ॥ अति गुन प्रपंच रन प
दुउदार । बिकांत सुमग बर मति बिचार ॥ बुंदीस
राज्य अब देत ताहि । अरु मरु परान हम मतिहु
आहि ॥ ३९ ॥ तस मात पठा मुद्रित कराय । मम
निकट देहु हजरत पठाय ॥ सुनिसाह मुहु म्मद
अरज एह । लिरवाय पठा पठये सनेह ॥ ४० ॥
बुंदिय दलेल सिंहहिं समपि । बुद्ध सिंह पट्टइ
हिं देहु थपि ॥ तुम जाहु कुम्म माल व सुदेस ।
आवत गिनी मरो कुहु असेस ॥ ४१ ॥ पठये
हम रुपय तिस सिल करव । इन बल अनी कबि

चरहुअपकरव ॥ उज्जैनवारआवननदेहु । लगीपि
द्विसमस्तनमारिलेहु ॥ ४२ ॥ कूरमनरेसतवभुज
भरोस हैं हमनिचिंतअतिमुदितहोस ॥ इमलि
रिपठायफरमानसाह । कछवाहबंचिमंडियउछ
ह ॥ ४३ ॥ ष० प० ॥ बंचिसाहफरमानहरखिजय
सिंहमहीपति । रूपयतेरहलकवपायमंडिगद
लदुमति । मनतैं मिलिदकिवनिनअकिवउ
परसाहायस ॥ कियमालवपरकुंचबुत्थिआ
मिरवजिमबायस । संगहिदलेलसालमसुवन
लेमंडिगदकिवनचलन । बुंदीसइतसुविगस्थो
विविधमन्निनउगगनअत्थमन ॥ ४४ ॥ किय
बुंदीसबिचारजानमालवसालकजिय । बिजय
सिंहजिनअनुजकुम्भकारागृहरुकिय । जाहि
कड्ढिबरजोरथिरहिजैपुरनृपथप्पहिं ॥ करि
फोजनएकत्तयाहिदारिदअबअप्पहिं । यह

किय प्रपंच बुध सिंह इत सो सब नृप जय सिंह सु
 नि । वह बिजय सिंह सो दर अनुज पठ्यो हनिक
 रि प्रनय पुनि ॥ ४५ ॥ घर मधार जय सिंह कर
 म अनुचित यह किनो । बिजय सिंह हनि अनु
 ज मे जि जा मि पढि गदिनो । कहि पढ़ पुनि कु
 म्म जा मि भ्रातरु तव सालक ॥ आय उय हम
 मई स प्रथित दुंढा हर सालक । इहिं विधि कहा
 य वह निज अनुज कटक बुद्ध दिगदगध किय ।
 पुनि लिखि पठाय बुंदिय पुरहिं प्रति साल मय
 हमंच प्रिय ॥ ४६ ॥ दो० ॥ हम जावत मालन
 पहु मि । मिलि रुकन मर हह । बुंदिय धर तुम
 जात न बल । करि रक्वहु नहिं कह ॥ ४७ ॥ सा
 ह भुहु म्मद तुमहिं स । बुंदिय धर दिय धीर ॥
 सट बुद्धहिं देहु नथ सन । हहु नपति हम गीर ॥
 ४८ ॥ साल मप्रतियह लिखि सबल । लै निज

संगदलेल ॥ मालवउप्परउप्पस्यो ॥ मरहद्वनहि
यमेल ॥ ४९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहान्दंयुस्व
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे
शो ३० मयूरवः ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
दो ० ॥ सकरददबसुसत्रह १७८६ समय। उ
ज्जमासअवदात ॥ कूरममालवकुंचकिय।
मनसिजतिथिउमहात ॥ १ ॥ सुतामनायअ
धीसकी। बुंदियपतिलधुबाम ॥ चुंडाउतिहि
तैतैअनखि। रहिकरिपृथकमुकाम ॥ २ ॥
रास्सूर्यहजयसिंहकी। सुज्जकुमारिप्रसूति ॥
पलटाईकूरमनृपति। अबनवीनरचिऊति ॥
३ ॥ पज्जटिका ॥ रद्वोरिनिकटजयसिंहराय।
पहुदियदलेलसिंहहिंपठाय ॥ कहियहसुपुण्य

तुमरो कुमार । इहिं गिनहु राज्य थं मन उदार ॥
 ४ ॥ सुनिय हद लेल सन अतिकसूर । कहि पु
 न मिली रद्वोरि कूर ॥ इम कूर मसंगानै रआय ।
 सरसूप लटाई छल सहाय ॥ ५ ॥ इम दुवद लेल
 कूर मअमान । मिलिनै रनिवाई दिय मिलान ॥
 बुंदिय लिखि पढई पुनि बिचारि । साल म तुम मं
 उहु धर सहारि ॥ ६ ॥ हम मिलन प्रथम आवहु
 हजूर । पुनि भुग्गहु बुंदिय कटक पूर ॥ सुनिय ह
 सत साल मअनय साम । कूर महि गआय उमिल
 न काम ॥ ७ ॥ मिलि उभय गाम जुडवा मिलान
 । दिय कुम सल महिं हित रवदान ॥ कहि जाव
 हु बुंदिय तुम निसंक । अवतव कुमार सिर पडु अंक
 ॥ ८ ॥ इहिं ले हम मालव जात आज । सूबा अवं
 तिर करवन समाज ॥ साल म तुम जावहु गृह सधी
 र । बुद्धहिं नन प्रबिसन देहु बीर ॥ ९ ॥ यह अ

किंवसालमहिंसिकवअपि । मालवचलिकूरमकुं
 चमपि ॥ दलभरनभुमिफुटतदरारि । चंचलमतं
 गहल्लियचिकारि ॥ १० ॥ बहिसजवतरारनले
 तबाजि । उद्धतमटमंडनकपटअजि ॥ रचिइम
 दरकुंचनकूर्मराज । कोटाधरसंक्रमिप्रथितकाज
 ॥ ११ ॥ नदिकुसकतीरपरिदलअनंत । दिसदिस
 नहुहिगययहउदंत ॥ कोटानृपदुज्जनसस्मकूर
 । हितसचिवदोयपठयेहजूर ॥ १२ ॥ नागरद्विज
 बेणीरामनाम । रनचतुरव्यासदोलत्तराम ॥ इ
 मदुवपठायकूरमअनीक । कोटसरचियअनति
 यकितीक ॥ १३ ॥ अ० प० ॥ कुसकद्वोरिपुनि
 कुंचरचियअगौनृपकूरम । सिंधुसरितनिवस
 यबडोदकियतहंसुकामक्रम । उज्जयिनीके
 अनुगगोडउस्मटसंभरगन ॥ अरुकबंधकद
 वाहसुपहुरिवचियपुनिसेवन । सूबाधिनाथ

कुम्भहिंसमुजिनृपयेसबप्रायउ निकट। सजि
सजि मिलापजयसिंहसन कियसासनसृणिसि
रकरह ॥ १४ ॥ दो० ॥ निजगढसोपुरगोडनृप
उममन्यहनिईस ॥ कोटापतिचंडासिकुल। स
मरवारबलीस ॥ १५ ॥ गढराधववज्रंगगढ।
येरिवज्रियचहुवान ॥ नरउरपतिकछवाहनृप
। सुतगजसिंहसयान ॥ १६ ॥ पतिईडररतला
मपति। दुवरदोरदलेस ॥ इत्यादिकउज्जेनके।
प्रायेअनुगअसेस ॥ १७ ॥ पादाकुलकम् ॥
खुलानुगनृपसमयसयाने। मिलिजयसिंहस
वहिसनमाने ॥ अरुकोटेसपटालयप्रायो।
भीमजनकभवसोकमुलायो ॥ १८ ॥ जान्योह
ईदलेलहिबुंदिय। होययहेइनकेसीकलहि
य ॥ इमविचारिकोटाअपनायउ। बहुमुदडेर
नजायबढायउ ॥ १९ ॥ जयहरिलैइमसवन

बडेजव। मंडुवपुरप्रविस्थो धरमालव ॥ प्रकटदि
 रवातसाहकिं करपन। मिल्यो कितवअंतरमरह
 दून ॥ २० ॥ कछु दिनसमरव्याजतहें कड़े। ब
 हुलपि किने दकिवनदलबड़े ॥ लुब्धिकटकअ
 पनलुटवायो। मरहदूनकहें बिजयमिलायो ॥
 २१ ॥ कछु धनबसननिवेदनकिन्ने। लोभबल
 टिनकबचलिन्ने ॥ द्वैकूरमइमसाहहरामी। कि
 यमरहदुमिलभुवकामी ॥ २२ ॥ दो० ॥ तदनंत
 रकरिसिक्वगी। कोटापुरकोटेस ॥ अवररहे
 हमारिअरिवल। नरउरआदिनरेस ॥ २३ ॥
 इतिश्रीवंशभास्करेमहानंदपूरचरुपेदक्षिणाय
 नेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे एकत्रिंशो ३१
 मयूरवः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ष० प० ॥ इतबुंदियअवनीसचाहिबुद्धहनुप

चल्लिय । कानीरबोहमुकामबोरिबुंदियदिस
 चल्लिय । रसबसुसन्नह १७८६ सरतपायअग
 हनसितपंचमि ॥ कियस्वदेसपरकुंचमुल्लिज्यो
 मृगधलजलधमि । बुद्धसूनिवाईमगचलि
 मगवतगढभीरोरहिय । इतसुनिउदंतसाल
 मयहसुबुंदियतजिसम्मुहबहिय ॥ १ ॥

उग्रबधिककछवाहसमयसरथिरुसरसाहस ।
 हृदगुनसाहनिदेसचापचतुरंगरंगरस । बन
 हड्डोतियविकटखानसालमदलेलसहा । कु
 बच बायुरालागिगाढमतकउलफंदग्रह ।
 मुदपनअलसलाहिमोहमनबुद्धसुमंत्रबिबे
 कबिन । उनमत्तएनसंभरअधिपइच्छतजल
 बुंदियइरिन ॥ २ ॥ दो० ॥ सुनिइतआवतसं
 भरहि । वनिसालमबुंदीस ॥ लैदलसम्मुहउ
 ल्लट्योस्वामिहरामसरीस ॥ ३ ॥ लहिसीमा

बुंदियमुलक। अड्डोठड्डो आय॥ यहसुनिसठबु
 दियअधिप। बाममुखोविहसाय॥ ४ ॥ जैतसि
 हजाजवजयी॥ दिल्लियरनअसुदिन॥ तासदेव
 सिंहहतनय। भकतिस्वामिरसमिन्न॥ ५ ॥ नग
 रपलोधीधामनिज। बैरिसह्यभवबंस। कुसथल
 पंचोलासपुनि। येदुवपुरउत्तंस॥ ६ ॥ साहसम
 पेसंभरहिं। चोवनगढगहिबोहिं॥ कुसथलपं
 चोलासर। उभयइजाफामोहिं॥ ७ ॥ तवसंभ
 रदियजैतहित। कुसंथलपंचोलास॥ सय्यद
 सनदिल्लियसमर। बिरंओजिहिंदिवबास॥
 ॥ ८ ॥ तासदेवसिंहहतनय। स्वामिथरमरतसूर
 ॥ ताकेपुरकुसथलतवहि। आयउबुद्धजंर॥
 ॥ ९ ॥ बिणुसिंहहतनयाबुद्धरि। अनुपमतन
 याआय॥ येसंगहिरानीउभय। पतिप्रमत्तग
 तिपाय॥ १० ॥ पुरवाहिरपृतनापरिगाघन

जिमडेरनघेर ॥ देवसिंहमहिमानिदिय । बुद्धहि
 गोठिद्विबेर ॥ ११ ॥ परिडेरनलगयामरे । धाम
 स्वीयपधराय ॥ निजसरबस्वनिवेदयो । देव
 सिंहहितदाय ॥ १२ ॥ यहसुनिपुरबलवनअ
 धिप । अमयसिंहअतिधीर ॥ निजदलसजि
 आयउनिडर । बुद्धियपतिदिगवीर ॥ १३ ॥
 अमयदेवयेभटउमय । बैरिसल्लभवबंस ॥ स
 मलिहुवबुंदीसकैं । देहअरपिसजिदंस ॥ १४
 ॥ यहउदंतसुनिइंद्रगढ । सुभटइंद्रसल्लोत ॥ दे
 वसिंहछित्तरसुवन । आयउदलउद्योत ॥ १५ ॥
 कछुकिलोरबयबसिकछुक । कुरमभयलहि
 दूर ॥ देवपृथकडेरादये । दलसभरतजिदूर ॥
 १६ ॥ इतसठसालयपिद्विपरि । कृतधनचिंति
 कुकाम ॥ पत्तनपंचोलासदिग । किन्नैलरनमु
 काम ॥ १७ ॥ कुलवधवमुहुकम्मके । मिलि

सबसालममाहिं ॥ पटोलीपुरपतिप्रथित । मि
 ल्यो जवानसुनाहिं ॥ १८ ॥ तोपनइकजंबूरस
 त । द्वैसतसजिबंदूक ॥ मिल्यो अनिबुधसिंह
 मै । अनुचरधरमअचूक ॥ १९ ॥ त्योंहीइकनग
 राजतहें । सुहुकमवंसवतंस ॥ सालममैनामि
 ल्यो सुभट । पटुबिरव्यातप्रसंस ॥ २० ॥ षष्ठ्यं
 ॥ सुनिइतरनजयसिंहभीरसालमदलमेजिय
 । तीनसहेंसतुक्खवारपंचउमरावपुरव्यप्रिय । ई
 सरदापुरईसनामकोजुवनिसंकनरा । सारलोप
 पुरस्वामिबिदितफलमल्लवीरवर । सांदलसुहा
 डपुरपतिसबलप्रबलअचलनानेडिपति ।
 बहादुरसिंहकूरमबकुरिबुझानीपुरपतिविम
 ति ॥ २१ ॥ दो० ॥ अजमुवबासीसुभटबलिनि
 रुचवंसकछवाह ॥ नामधेयसिरदारनिजा ।
 सोदियसंगसियाह ॥ २२ ॥ पृथ्वीसिंहरुकरन

पुनि । उभय नरुवप्रवतंस ॥ घासीरामरसोर
 पति । दलिमत कूरमवंस ॥ २३ ॥ सेरसिंहरिवि
 द्धिय सबल । पुनिज हवपरताप ॥ हरितौवर मल्हा
 झुकम । मारव करन मिलाप ॥ २४ ॥ उदयसिंह
 पुनिरूप प्ररु । जोध सुरत भट जत्थ ॥ सालमहि
 त कूरम सजे । सोलं रवी च उ सत्थ ॥ २५ ॥ आभे
 रूप पद ये इते । लरि बुंदिय मुवलैन ॥ बिय ह बडु
 रि प्रवास बसि । सबर किय दिग सैन ॥ २६ ॥
 नर उर पति गज सिंह सुव । जय सिंह हिं ते हे जं पि
 ॥ सगर म पंची मम सचिव । चाहत जय प्ररि चं पि
 ॥ २७ ॥ भेज दुति हिं इन संग भल । कूरमत बमु
 सि काय ॥ संग हि दिय नर उर सचिव । नाम सुरवं
 डे राय ॥ २८ ॥ ष० प० ॥ सुभट मान सिंहोत्तक
 ल ह इम पंच मुख्य किय । अवरु सुभट अने कसे
 न म मलि द्रुत सज्जिय । करिय ह दल दर कुंच मुल

कमालवतजिमंडुव ॥ जुरिआयउजंधालमीर
 सालमकुसथलभुव । करिदलमिलानसालमक
 टकहड्डनपतिदिगमिलनहित । इनपंचभटनआ
 यरु कहिय । बुद्धअवनधारहु विदित ॥ २९ ॥ दो०
 ॥ अभयसिंहबलवनअधिप । पहनिभज्जिगएह
 ॥ भीमहितुअतिमन्निभय । दुल्लभमन्नतदेह ॥ ३०
 जाकेबलजयसिंहतै । अबरनरचहुनएहु ॥ दिन
 प्रतिरुप्यदोयसत । रहिहुंदावनलेहु ॥ ३१ ॥ न
 हिबुल्ल्योबुंदियनृपति । क्रमसबसहियकुबेन ॥
 राजाउतपंचनसरिस । निदुरदिखायेनैन ॥ ३२ ॥
 ष० प० ॥ कूरमपतिभटकुबचप्रकटसुनिसुनिन
 लवनपति । अभयसिंहअतिबीरभयउद्यकिप्र
 लयरुद्रभति । करविमुच्छडसिअधर निरवि
 पंचनउफनायो ॥ पन्नगपयचंध्योकिमत्तसुगर
 जरिवजायो ॥ बुल्लयोविदितभुजवोकिबलम

स्रजजलगीदरद्वै । बुधसिंहप्राणकुरमबलहिं
 केहरिहमगहुरिकरं ॥ ३३ ॥ दो० ॥ ज्ञातनअगो
 हसभजल। गृहरनअनुचितगाय ॥ अवरनतैर
 नआहुरत। पद्यहडुनपाय ॥ ३४ ॥ इमहकारि
 बलवनअधिप। सुरिउद्विगमहिमुच्छ ॥ फटाटो
 पमंडिगपनहुं। पन्नगदहतपुच्छ ॥ ३५ ॥ तवहूर
 मसुमदनतमकि। सजियजायनिजसैन ॥ जुत
 सालमसवइहजुरि। लगिदलबंधियलैन ॥
 ३६ ॥ देवसिंहछित्तरसुवन। इंदुगढपसुनिह
 ॥ भीरुमनिजयसिंहमय। गद्योसपरिकरगेह ॥ ३७
 ॥ हृदयनरायनहरियकुल। विबंध्यवउमराव ॥ कर
 नमीरबुंदीसकी। द्रुतअपेरनदाव ॥ ३८ ॥ हडु
 मेवसामंतहर। मायवहरभटपौर ॥ कुलबल्लन
 अरुनाथकुल। येचालुकनृपअौर ॥ ३९ ॥
 शुद्धप्राकृतभाषा ॥ प्रार्थ ॥ विद्वहअरो

(१) ह्रीदिगी अणुप्रं बुंदीसपट्टवंपिकव ॥ सालमञ्ज
 पप्रवि जिदो मिलिप्रोबुहेण भूवइणा ॥ ४० ॥ प्रा
 मि० ॥ दो० ॥ राजसिंहप्रन्ययरतन । बंधवनिज
 वरबीर ॥ दोलतिसिंहदुसज्जिदल । भटप्रायउ
 नृपभीर ॥ ४१ ॥ हाजरिभटप्रथमहिदुते । महासिं
 हकुलमेर ॥ असितपकरवकेइंदुजिमालयो
 धटनदलप्रार ॥ ४२ ॥ दसहजारपृतनाबदलि
 । सबहुवसालमसंग ॥ दसहजारनृपनिकटद
 ल । रहियरचावनरंग ॥ ४३ ॥ उभयपकरप्रारि
 मित्रतजि । समयजोरहरसाव ॥ रहियइंदुगढ
 प्रादिबहु । उदासीनउभराव ॥ ४४ ॥ सालमहि
 गतेरहसहंस । नृपदिगदसनिरधार ॥ इतकुप्यो
 बलवनप्रधिप । भुजधरिबुंदियभार ॥ ४५ ॥

(१) विविधानेहोविनेकी अनुजम्बुन्दीशपट्टपस्पेद्य ॥ सालिमपुनः
 प्रतापः ज्येष्ठो मिलितो बुधेन भूपतिना ॥ ४ ॥

बुद्धनृपतिवरजतरह्यो । देउनसपथदिवाय ॥ ह
 द्वेभज्जननांसुनै । लग्गीप्रंदरलाय ॥ ४६ ॥ अम
 यसिंहअरुदेवइत । अरुकछुसंभरसैन ॥ जिहिं
 किंचजेमटसज्जकिय । वरनततिन्हकविबैना ॥
 ४७ ॥ महाराजमातुलकुलज । मुखोजुसालम
 मल ॥ वाकोतुलसंग्रामइत । सोहुसज्जोगहिसे
 ला ॥ ४८ ॥ अमसिंहसज्जोप्रथित । नाथाउतर
 नबूर ॥ वरदत्तसिंहजगभानुबलि । सजेहुहुअति
 मार ॥ ४९ ॥ साँवलदाससजेरसजि । गोरबंस
 उजिआर ॥ जेराउरकछवाहजुरि । परसुरामपौर
 हार ॥ ५० ॥ वरजतनृपबुंदीसकै । सहदिकाव
 तसौहैं ॥ अमयदेवसंगहिइते । भटनतनंकिय
 भौहैं ॥ ५१ ॥ देवसिंहअममल्लदुवा । दुल्लहललि
 तउदार ॥ अछरिदुलहनिअदरिय । जवइतेजु
 रार ॥ ५२ ॥ अवलभटनपिकव्योसमयासालमअ

युतप्रयुतप्रनीक ॥ वोरहुनृपहिनइक्कछिना
 कोजानैबकिलीक ॥ ५३ ॥ जोभूपहुसिरधातज
 ड। कूरमयल्लहिंकूर ॥ तोसबस्वामिसमीपही। स
 नुनजंगहिंसूर ॥ ५४ ॥ स्वामिदयेनलरनसपथ।
 बलिनृपतजननबेस ॥ नयबिचारिइमइननिकट
 । सकलरहेसुभदेस ॥ ५५ ॥ वीरजितेपहिलैंबदि
 य। तिनननमन्नियसौहैं ॥ अभयसिंहसंगहिउ
 दिय। भयदफुरावतभौहैं ॥ ५६ ॥ कहिकुबैनडारि
 कूरमन। निजदलपिल्लियजाय ॥ यहसहीनब
 लवनअधिप। लगियसेरदिबलाय ॥ ५७ ॥
 अभयसिंहअरुदेवइत। कुपिबलियजिमका
 ल ॥ सिरघरसतअजलोकसौ। पयपरसतपाया
 ल ॥ ५८ ॥ सालमअरुकूरमसुभट। जुरिइतप्र
 वलजसर ॥ बुंदियदलसिरबगलै। सकल
 लेबडिसूर ॥ ५९ ॥ इतिश्रीवंशशास्त्रे महा

चंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रेधा त्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ सकहयवसुसत्रह १७८६ समय । माघ
वदरसमिलाप ॥ घटियरुद्ररबिकेचढत । उल
दिससुद्रनप्राप ॥ १ ॥ दुर्मिला ॥ दुवसेनउद
गानरवगासमगानप्रगतुरगानबगलई । म
चिरंगउतंगनदंगमलंगनसज्जिरनंगनजंगजई
॥ लगिकंपलजाकनभीरुभजाकनबाककजाक
नहाकबढी । जिममेहससंवरयोंलगिअंवरचंड
अंडंवरवेहचढी ॥ २ ॥ फहरकिदिसानदिसा
नबडेबहरकिनिसानउडैंविथरैं । रसनाअहि
नायककीनिकरैं किपरामलहोरियकीप्रसरैं ॥
गजयदठनंकियभेरिभनंकियरंगरनंकियकेच

करी। परखराननं कियवानसनं कियचापसनं
 कियतापपरी ॥ ३ ॥ धमचक्ररचकनलगि
 लचकनकोलमचकनतोलकढ्यो। परखराल
 नभारखुभीरखुरतालनव्यालकपालनसालव
 ढ्यो ॥ डममगिसिलेच्चयशृंगडुलेकगमगि
 कृपाननमगिहरी। बजिरवत्ततवत्तनहत्त
 उरत्तनभुम्मिहमत्तनधुम्मिमरी ॥ ४ ॥ मचि
 धोरनदोरदुअोरसमीरनजोरउमीरनधोरज
 म्यो। अममत्तउच्छाहनहुहुहकीकछवाहनगाह
 नचाहक्रम्यो ॥ सुवजैतइतैमटदेवसहीकरि
 स्वामिमहीहितसंगसज्यो। दुहुंअोरकुलाह
 कतोपदगीलगिमहबलाहकनहलज्यो ॥ ५ ॥
 उतैकछवाहनउग्रउच्छाहनबेगसुवाहनबग्ग
 लई। बनिबुंदियनालमजंगसुजालमसंगहि
 सालमदोरदई ॥ परिरिट्टिकृपाननचंडचुहान

नगिद्धिउडाननगूदगहैं । गनधीरगुमाननवीर
 प्रमाननबीरकमाननतीरबहैं ॥ ६ ॥ बढिबु
 ल्थिनबुल्लिबुईवसुधालगिलुल्लिनलुल्लिप
 रैप्रजरै । घटसेलघमाकनरंगरमाकनहडसुहा
 कनहोसहरै ॥ लखिरवगाउदगानमगालगी
 जुरिअच्छरिजगाप्रजापतिज्यौ । गलबौहैंक
 रैकरिबीरबौरैगमनैगनगैवरकीगतिज्यौ ॥ ७ ॥
 छननंकिउडाननबानछयेठननंकिगयंदन
 यंदधुरै । फननंकिदुबाहनढोपफटेरननंकि
 सिपाहनकोचरुरै ॥ डुलिमैरबडैरुवतैंडहकीड
 रिडाकिनिसाकिनिचैंकिबली । नदिनारदनद्व
 बिसारदहौंविबिवारदमांतिमिलेरुहली ॥ ८ ॥
 कटिरवगाकलापरुदंतकहैंफदिकुंममउलिन
 मेहफुरैतरितातबुतेगतहोंतरकैंघनगज्जमतं
 गजगज्जधुरै ॥ बकपंतियदंतियदंतबहेचहैंओ

रञ्जयानकञ्जबु बढे । कटिकैँ उडिचातकघंट
 कढे प्रतिपक्वरमेकञ्जनेकपढे ॥ ९ ॥ यहञ्ज
 निसुमाकरमैँवरखाबढिमाधवमासञ्जमाविशु
 ल्यो । लखिनायकसूरनहूरनहूरनञ्जंगनञ्जग
 नञ्जगफुल्यो ॥ इतसूरनचंदनञ्जस्रचढ्येरसकैँ
 इतहूरनरागरचे । उमहे इतसिंधुनकीध्वनितैँस
 मुहेउतसिंजितसद्मचे ॥ १० ॥ इतडाकिनिदू
 तिकजाकिनिञ्जोइतसाकिनिनाकिनियास
 सरवी । सबहूरसुहागिनिइकञ्जभागिनिबुद्ध
 बिभागिनिसोविलखी ॥ द्रुतहारसिंगारविगा
 रिदयेधुपिञ्जजनरोदनबारिवद्यो । करकंकन
 फेरिमरोरिकलापहिँछोरिञ्जलापहिँतापस
 ह्यो ॥ ११ ॥ यहञ्जइयडाकिनिकीसिखईधव
 हीनभईञ्जबछोहछई । अतिअरतिअच्छरि
 कीलखिकैँहसिडाकिनिडिंडिमडकदई ॥ सह

नाइयसुं डिन की करि कैंगन बावन गावन मैंग
 हकै । कटि मुंडरुंड किरे इत को चउस दि न मुंड
 न चै च हकै ॥ १२ ॥ परवराल तुरंगन पूर किते
 नरवराल कुरंगन फाल न चै । भटवार कटार न
 पार करै अजिमार अंगार न मार म चै ॥ फटका
 रि मतंग ज सुं डि फिरै कटकारि चुहान न मुंड क्रमै
 । हलकारि चुरै लिनि हो स हरै ललकारि मयंक
 र भूत भ्रमै ॥ १३ ॥ रवगधार नधार खिरे रवटके
 पल चार न मुंड ऊटै ऊ पटै । रबुरतार न मार रवुदै प
 दुमी असवार न वार दटै द पटै ॥ उपकार न का
 र किते उमहे सिवधार न काज गहै सिर कौ । दल
 मार न मार मिले दुवधौ सद बार न बार चले चिर कौ
 ॥ १४ ॥ यमसान न बान उडान न लै अरिभान
 न पीवत काल अही । चहुवान न के कर की उप
 मापव मान न मान सहै निबही । करवाल न चं

डउडीचिनगीभटजालनभीरभिरैभुरसै।बढि
 ज्वालकरालनलोकवरैदिकपालकपालनसा
 लबसै ॥ १५ ॥ गजराजनढालढहैढरकैरत्नभा
 जनधायभरैभभकै।लगिलाजनसूरलरैलट
 कैछटकैभुवकाजनलोहब्रकै ॥ कटिकालिक
 पीहकिरैकलिमैफटिमस्तकरवंडउडैफबिकै।
 जिमसैलनशृंगरिवरैविरवरैप्रतिमल्लपुरंदरके
 पबिकै ॥ १६ ॥ मथिमंथनिमत्थगहैगलिसौग
 नगिद्धनिगोदगिलैगहकै।मनुग्वालिनिमहद
 हीमधिकैनवनीलनिकारनबारनकै ॥ चहिमार
 दुधारचलैचमकैअसवारतुरवारकटैउलटै ॥
 फटिमकुनऊरुफटैउछटैकटिबाहुलबाहुल
 बाहुकटै ॥ १७ ॥ दो० ॥ इहिरनबिचबलवनअ
 धिप।अभयसिंहअतिवीर ॥ फतमल्लहिंरवोज
 नफिरत।हुलसिहहुहमगीर ॥ १८ ॥ जबहिपं

चजयसिंहके। येदूरमउ मराव॥ बुंदीपतिअगै
 विदित। बुल्लेकुवचबढाव॥ १९॥ इनहमेंफत
 मल्लयेंहें। सारसोपपतिसूर॥ कहिकातरअ
 ममल्लको। गद्योबहुतमगसूर॥ २०॥ इहिंका
 रनअममल्लअब। तिहिंहेरतगाहितेग॥ दुखो
 कहोंदूरमदरि। बीरबतावहुबेग॥ २१॥ अ० प०
 ॥ जिमनागाहिंरवगराजमृगाहिंमृगराजमहावन
 जंमहिंजिमजंमारिमधुहिंमानहुंमधुसूदन।
 पानीजिमपावकहिंतनहिंपावकजिमतकत
 ॥ सजवकपोतहिंसेनहननहेरनजिमहकत।
 आरवुहिंविडालतिमिराहिंअरुननरंकहिं
 दारिद्वनिम। फतमल्लरूपोमिनिफिरितइम
 हेरियअममल्लइम॥ २२॥ दो०॥ समुरवपि
 विरफतमल्लसौ। इमअकिवयअममल्ल॥ गी
 दरगालजजायकै। अबकिनकरतउरुह्म॥ २३॥

इमहकारिबलवनप्रधिप। मंडतबाननमेह॥
 उफनावतआयोउमंडि। दंसनमावतदेह॥ २४
 ॥ व० प० ॥ पयदधतप्रहिपुच्छमुच्छ्रैचत
 मयंदजिम। सारमनहुंसावातप्रगिलगात
 प्रचंडइम। हेलिमशूरवहजारजेठदुपहरजनु
 जगिय। प्रलयउग्रजिमप्रथितलायप्ररिबि
 नप्रतिलगिय। काननप्रमानबाननकरखि
 कूरमदेहसुसेहकिय। मदमत्तलखहुहड्डेमरद
 गड्डेपदअंगदगतिय॥ २५ ॥ सुक्तादाम॥
 जुर्योअममल्लइतैरुपिजुह। अर्योफलमल्लउ
 तैकलिकुह। उमैनिजस्वामिनकीधुवआस।
 तकावतप्रकाहैचकतयास॥ २६ ॥ उमैरन
 दच्छबडेउमराव। उमैउमंडेरसबीरउगाव। उमै
 जयधप्यनहारिउथपि। उमैउफनायकुबैनन
 अपि॥ २७ ॥ निरलदुल्लहसज्जितप्रंग।

उमैमर^{३०}चतसुच्छ^{३१}अमंग ॥ उमै^{३२}अनुरूपरि
 जावतरंग । उमैरन^{३३}अंगनकेजयरवंभ ॥ २८ ॥
 उमैसिखदारिदमिहनहार । उमैपलचारनकेउ
 पकार ॥ उमैममकावतरवगगउदग ॥ उमैचलि
 भेतहसावतअग ॥ २९ ॥ उमैभवतैतजिमो
 ह^{३४}अलुह । उमैमनहलिलगावतउह ॥ उमै
 लुमवाहहुवाहहु^{३५}अद्विह । उमैकरिस्सरजको
 निजसकिव ॥ ३० ॥ उमैकनकाचलपायन
 बंधि । उमैदमउहृतसंहारिसंधि ॥ उमैतुलसी
 धरिमस्तक^{३६}आय । उमैजलगंगउमंग^{३७}अचाय
 ॥ ३१ ॥ उमैछरवजानिजुरेइकधेनु । उमैकरि
 राजकिइककरेनु ॥ उमैइकसिंहनिज्योवनई
 स । जुरेइमकूरमहहुजयीस ॥ ३२ ॥ मिलेपहि
^{३८}लेहुवतीरनमार । कहेसरदोउनभेदिकरार ॥
 चढहुहिचंडप्रतंचनचाय । उडै^{३९}सलभाजिमरी

यप्रमाप ॥ ३३ ॥ जहाँ करि बानन यौरन जोर। मि
 ले पुनि सेलन दै भट मोर ॥ सुकंकट भेदि कटै घट
 सारि। कियो तरु ते जन प्रगा कुदारि ॥ ३४ ॥ च
 ली प्रममल वरच्छिय प्रच्छ। पयो छिदि कूर म
 बाजि दुपच्छ ॥ वहाँ हय प्रौर चव्यो कछवाह। रु
 प्यो प्रममल हृप पयराह ॥ ३५ ॥ वरच्छिन जं
 ग प्रपुष्प विधाय। लई प्रवरवापन तै हिमला
 य ॥ कियो घन तै कठि विजु कराल। कियो बि
 लतै किलकुंडलिकाल ॥ ३६ ॥ कियो नभ तै
 ससि दै जकलाकि। कढीय मके मुरवतै दसना
 कि ॥ हली किहुत सनतै कठि हेलि। मयूरवन
 भोमनि तै प्रवेति ॥ ३७ ॥ कढी ध्वनि व्याकृ
 तितै किसकास। कढे मत गात मतै किसमास ॥
 कटाच्छ कियो कुलदा दृगकुञ्ज। पयो भव कोर क
 तै प्रलिपुंज ॥ ३८ ॥ कनिंदक तै निकसी जमु

नाकि । प्रजापति तैं परि पूर प्रजा कि ॥ गुन त्रय तैं
 किंचले महदादि । महानट की जट तैं प्रमथादि
 ॥ ३९ ॥ हिमालय तैं जिम मंग हिलोर । कटी श्व
 र के मुख दंतुलिकोर ॥ अनंत क प्रानन तैं जि
 म जीह । सटाधुनि थं महि तैं नर सीह ॥ ४० ॥
 न बोहन के उर तैं कि उरोज । उदै गिरि तैं कि दि
 वाकर प्रोज ॥ कि प्रजनि के उर तैं हनुमान । प
 रासर नंदन तैं कि पुरान ॥ ४१ ॥ सुराधिप के क
 र तैं जिम संब । कहे धनु गांडिव तैं कि कलंब ॥
 सही कपिलानन तैं जनु साय । लयायन गायन
 तैं कि प्रलाप ॥ ४२ ॥ धपी जनु नीरद तैं जल
 धार । महाबल माधव तैं मनुभार ॥ त्रिलोचन
 के कर तैं कि त्रिसूल । मउत्तिय सुत्तिय तैं कि प्र
 मूल ॥ ४३ ॥ कहे इम दोउन रवापत खगा । मि
 ले प्रलया नलुं डैर नमगा ॥ उभै कर लाघव दाव

दिग्गता । परस्परदेत प्रहार निपात ॥ ४४ ॥ उभे
 फिरि मंडल दारतवार । मचावत मार दुधारन मा
 र ॥ दर्द धापि संभर दाहिन ग्रंथ । पर्योकरि कू
 र मरव्यात प्रसंस ॥ ४५ ॥ दो० ॥ हठि कूर मफ
 ल मल्ल हनि । अभय सिंह चहुवान ॥ कूर मको
 जुवराम को । पिक्रवत गाहक मान ॥ ४६ ॥ ई
 सरदापुर पति अतुल । वह को जुव कछ वाह ॥
 अप्प हिंखोजत इकिव कै । अभि मुरवर विगउ
 चाह ॥ ४७ ॥ मिलि दोउन किन्नी सुदित । ना
 गफेन मनुहारि ॥ अकवी पुनि अभ मल्ल इम ।
 कूर म सुनहु हकारि ॥ ४८ ॥ सब तुम मिलि ह
 मरे सुनत । भूपहिं डारी भीति ॥ तुम हूँ फत म
 ल्ल तैं हैं । अकवी अधिक प्रनीति ॥ ४९ ॥ का
 को दर हिं कुपाय कै । कोउन जियत सकोय ॥ फ
 न न हन्यो फत मल्ल को । अब तव सिर आटोप

॥ ५० ॥ फवतवानफतमल्लके। छत्तिअमय
 छतछेक ॥ जनुधाननजयअरुअजय। वन्यो
 तितरसबिबेक ॥ ५१ ॥ यातैकोजुवरामअव
 । मिलिबुल्ल्योरनमाहि ॥ जिनकेवाननतुमछि
 दे। तिनतैगबुद्धुनाहि ॥ ५२ ॥ ष० प० ॥ यहै
 सुनतअममल्लरवगकोजुवसिरमारिय। सजि
 कोजुवइतसंगिहड्डुरतकिप्रहारिय। याकेख
 गाउदगाकहिबाहुलकरकह्यो ॥ बाकीसंगि
 अपुष्पचकिवहियरीढकचह्यो। अरितब
 सिराहिबलवनअधिपपुनिअसिमारियमत्थ
 पर। कटिदोपसीसकहियसकलमनहुबिबं
 धववंदिघर ॥ ५३ ॥ दो० ॥ कोजुवरामसुसि
 रकटत। बेगबसनसनबंधि ॥ करइकाहिअ
 सिबरकरवि। सिरमारिअजयसंधि ॥ ५४ ॥
 कोजुवकोदकिवनकरसु। इमकह्योअममल्ल

॥ यातैंगहिकरबामअसि। ऋरीबहुरिउमल्ल
 ॥ ५५ ॥ टोए कट्टितिरछीतरकि। तुट्टिपरियतर
 वारि ॥ अक्खियतबअममल्लइम। बाहहुनै
 कविचारि ॥ ५६ ॥ जिहैकरतैअसिबरजुर
 त। तिरछीतरकततुट्टि ॥ जनिताकौहरसै
 जननि। क्यौबहुधालनकुट्टि ॥ ५७ ॥ कहि
 इमकोजुवरामपर। असिगरियअममल्ल ॥
 सिवगहिलिन्नैउडतसिर। ढर्योयहहुनढ
 ल्ल ॥ ५८ ॥ ईसरदाकेपतिहिंइम। बलवनपति
 हनिवेग ॥ सावलदाससुहाडपति। तछ्यो
 मारततेग ॥ ५९ ॥ मुक्तादाम ॥ चवीयहदू
 तनभूतनचास। सुनीसबकूरमसावलदास
 ॥ उदायुधउग्रदिवाकरअस। रहैइतनीस
 हिक्खैरधुबंस ॥ ६० ॥ मिल्योअममल्लहु
 उद्धतमान। धपावतधारहिंदैबलिदान ॥ ध

थोरु बलायुध किधुंघुहिंधारि । किधौरनराव
 नरासहकारि ॥ ६१ ॥ किधौ बलपै बलवास
 वकुद्ध । जटासुरपै किबुकोदरजुद्ध । कुअत्थ
 भ्रमावतहत्थकपान । दिरवातसंकरकोअति
 दान ॥ ६२ ॥ सुहाडपहूइततैगहिसंगि ।
 मिल्योअममल्लहिंभल्लउमंगि ॥ नचीतैहंता
 लिनचोसठिनारि । रचीइमहडुरुकूरमरारि ॥
 ६३ ॥ जहाँतैहंआवहिआवहिजाप । जहाँतै
 हंखूटतरवगानरवाप ॥ जहाँतैहंप्रेतडका
 रतजोर । जहाँतैहंधायलधायनघोर ॥ ६४ ॥
 जहाँतैहंनारदकोअतिनञ्च । जहाँतैहंसूरन
 हूरनसञ्च ॥ जहाँतैहंभूतनभूखप्रकास । जहाँ
 तैहं गिह्निगूदबिलास ॥ ६५ ॥ जहाँतैहंडा
 किनिडिंडिमडक्क । जहाँतैहंधारनकीधमच
 क्क ॥ जहाँतैहंहत्थिनचंडचिकार । जहाँतैहं

फेरविकानफिकार ॥ ६६ ॥ जहाँ तँ हँ फुटतभू
 प्रतिजोर । जहाँ तँ हँ चंबकतंडवतोर ॥ जहाँ
 तँ हँ दिग्गजकातरगज्ज । जहाँ तँ हँ सोहतसूर
 नसज्ज ॥ ६७ ॥ जहाँ तँ हँ कातरकूकतकूक ।
 जहाँ तँ हँ चाहतचंचलचूक ॥ जहाँ तँ हँ फुट
 तफीलनमत्थ । जहाँ तँ हँ सूरनहूरनहत्थ ॥
 ६८ ॥ जहाँ तँ हँ खगानखंडखिरंत । जहाँ तँ हँ
 गैवरगंजगिरंत ॥ जहाँ तँ हँ जुगिनि कोजय
 कार । जहाँ तँ हँ रुंडनमुंडनमार ॥ ६९ ॥ जहाँ
 तँ हँ साकिनिसोरसुनाव । जहाँ तँ हँ पंडितजं
 गप्रभाव ॥ जहाँ तँ हँ हत्थिनबत्थनजुहि । ज
 हाँ तँ हँ तेगतरकलतुहि ॥ ७० ॥ जहाँ तँ हँ
 सोनितसौबढिसाद । जहाँ तँ हँ प्रेतनम
 च्छप्रमाद ॥ जहाँ तँ हँ चालचुरैलिनिचौकि ।
 जहाँ तँ हँ भैरवमज्जतभौकि ॥ ७१ ॥ जहाँ तँ

हैं हहुन जालमजोर । इतैं जैं हं दुस्सह कूरमओ
 र ॥ सुहाइ प कूरमसौवलदास । मिल्यो अमम
 लहि पुंज प्रकास ॥ ७२ ॥ कहैं दुव बाहु बा
 हहु कत्य । रचैं रनत्यों रदिरु कतरत्य ॥ सरे
 जल जंन किधायन सोन । जुरैं इन दोउ नतैं तैं
 हं जोन ॥ ७३ ॥ लरैं अमम लसु बुं दिय लाज ।
 करैं उत कूरम जै पुर काज ॥ बहैं असि बानवर
 छिन ब्रात । परैं मनु भइव बिजु वपात ॥ ७४ ॥
 येइत्ये इन चक बधन धूल । बने तैं हं कातर प
 त बधूल ॥ मलंगत भैरव सो नित मत्त । बलंग
 त गिह बने सिर छत्त ॥ ७५ ॥ नचैं निकसे हि
 य पै कदि नैन । सरोज कि सोन सिली मुख सै
 न ॥ कहैं फटि बुकन दुक बिकास । मनो सुम
 कि सुक माधव मास ॥ ७६ ॥ उडैं सिर अंबर
 एछिन पेलि । करैं जनु कालिय कंदुक केलि ॥

॥ उच्छृङ्खलनमैकहिंश्रंत। भुजंगटिषारनमै
 किंमंत ॥ ७७ ॥ हरेँ सिरप्रदफह्योइहिंरा
 रि। दयो जनु जुगि निरवप्परडारि ॥ सिरवा
 कटिसूरनकीफहरात। किधौं जयकेतुप्रभं
 जनपात ॥ ७८ ॥ किरैँ फटि टोपनतैँ करवा
 ल। फटा बिनु लेत भुजंग किफाल ॥ सुहाव
 ते के गिरिनक समूल। फबैँ इसमास मनौं ति
 लफूल ॥ ७९ ॥ लगैँ असि ओठ गुरैँ कटि
 लाल। पके जनु बिंब किपुंज प्रवाल ॥ उडैँ क
 टि दंत न ओध अखंड। रिरैँ फटि हीरन के
 जिमखंड ॥ ८० ॥ किरैँ सहसुत्ति प्रहार न
 कान। बनैँ सहसुत्ति सुसुत्ति विधान ॥ जहाँ
 गरिहत्य गिरैँ अति जुद्ध। किधौं फन पंचक
 के प्रहि जुद्ध ॥ ८१ ॥ तिरैँ बहु खेदक सोनि
 त ताल। मनौं किर सरस्यतिक चपमाल ॥

हुकैँ बहुसूरु टक्कनमार । गिरैँ जिमः प्रासव
 मत्तगमार ॥ ८२ ॥ डरावतडाकिनि दंतदि
 स्वाय । जरावत साकिनि लावत लाय ॥ ति
 हैँ भट नाट के के नट तोर । गिनैँ रसः प्रद्रुत ही
 नहिं घोर ॥ ८३ ॥ गिरैँ कहुँ भज्जत भीरु न
 सीस । उठावत पूर्व बिहावत ईस ॥ गिलैँ ति
 न को न न गूदहु गिद्ध । बुरेइ भजे कि भरे भय
 बिद्ध ॥ ८४ ॥ मिलेदु वया गति कर न माँहि
 । जचैँ जुर नौ तँहँ नाँहि सुनाँहि ॥ लगीगर
 बुंदिय जै पुर लाज । करैँ नहिँ अघ सरेँ नहिँ
 काज ॥ ८५ ॥ भयो बल साँवल को बल भा
 व । दयो अभ मल्ल पुरंदर दाव ॥ चली पविकी
 बुँवितैँ अ सि चंड । खुल्यो सिर साँवल ज्यैँ
 गिरि खंड ॥ ८६ ॥ ष० प० ॥ अभय सिंह
 सुत अत्य प्रबल सुगते सरूपूरन ॥ दासी

औरसदुवहिचलेचाहतअरिचूरन।सार
 सोपंकेसुभटबडिपहुंचेसुहाडबल॥भटसा
 चलकेभंजिदबिनांनेडिलयोदल।इन्हह
 नतपिकिवकूरमअचलदेउनभुगानहूर
 दिय।उभपुत्रमरतअभमल्लअबलरिअच
 लेससमीपलिय॥ ८७ ॥अचलसिंहत
 रवारिपरियअभमल्लबाजिपर।ऊरतरबंध
 हयहुकियइनहुगारियइहिंअवसर।सूर
 अचलकोसीसतरकितुह्योअसिउच्छ
 ट॥लियउमेलिलगिलाहनच्चबहुमंडिम
 हानट।अचलहिंबिदारिअभमल्लइम
 सुतनबैरकह्योसकलबिनुबाजिजाय
 गंज्योबलियबुधानीपुरपतिप्रबल॥८८
 ॥दो०॥वीरबहादुरसिंहतब।बुधानी
 पुरनाह॥अअरहितअभमल्लकौ।इकल

तरन्निगउच्छाह ॥ ८६ ॥ वेगहयहिंरुपटा
 यबलि । समुहभारियसंगि ॥ अममल्लहिं
 यहलगियद्रम । अगसिरपबि किउमंगि ॥
 ६० ॥ ष० प० ॥ लगतसंगिअममल्ल
 तिफुटतननछोहिउ । बिरचिबपाबरवसी
 सडंकि कूरमदलडोहिउ । बिनातुरगहठब
 धितुमुलकोऊनहितकत ॥ यहअचिज्ज
 सहिसंगिबल्लोसमुहजयबकत । जिम
 तुलादंडरवंमहिंजुरतउरप्रबिद्धअममल्ल
 द्रम । बुझानिनगरईसहिंसबिधितुल्लिपट
 क्रियअवनितिस ॥ ६१ ॥ दो० ॥ पर्यो
 बहादुरसिंहइत । इतसुपर्योअममल्ल ॥
 इमकूरममटपंचअरि । हनिसुत्तोहरदल्ल ॥
 ६२ ॥ पञ्चटिका ॥ चक्रवानदेवसिंहहिं
 बिचारि । सिरदारकुम्भनगरसुहारी ॥

नाथा उत्तचालुकप्रेमनाम । कियन्प्राहव
 नरउरसचिवकाम ॥ ६३ ॥ संग्रामनाम
 चालुक्यसंग । जुरिकरनसिंहकछवाहजंग
 ॥ परिहारपरसुधरबलमचंड । दियजोधन्दा
 लुकहिंदुसहदंड ॥ ६४ ॥ गंजनप्रिसां
 वलदासगोर । उडिरूपसिंहचालुक्यप्रो
 र ॥ जोरावरनारवकुम्भजत्य । सुरतेसबीर
 चालुक्यसत्य ॥ ६५ ॥ बरवतेसहदुप्रसि
 करतबाह । बलिउदयसिंहचालुक्यचाह
 ॥ जगभानुहदुप्रतिचित्रजंग । सजिकूर
 मपृथ्वीसिंहसंग ॥ ६६ ॥ दो० ॥ इमबुंदि
 यन्प्राप्तेरभट । रचितापरस्पररारि ॥ जुद्धमि
 लेजलदुद्धजिम । प्रबनजंगउपारि ॥ ६७ ॥
 मुक्तादाम ॥ सज्योइतदेवदैनैसिरहार ।
 परेसिरदोम चंडप्रहार ॥ ६८ ॥ लीप्रसिबान

बरच्छिनचोट । लगेकतिलेतकबुत्तरलो
 ट ॥ ९८ ॥ उलटियसत्तसमुद्रनप्राप ।
 प्रकटियकूरमकोयेंहंपाप ॥ थरक्रियत्यों
 अतलादिकथान । लरक्रियसेसफताल
 चकान ॥ ९९ ॥ तरक्रियकच्छपपिहि
 सनास । बनेंजनुअंडकटाहबिनास ॥ टि
 क्योकिरितुंडहिंदंतुलितारि । चिक्योदिक
 कुंजरपुंजविकारि ॥ १०० ॥ बुटेंसरवृत्ति
 नवृत्तिगच्छेकि । कढेंबनतैंजिमकुक्कत
 केकि ॥ करक्कहिंकोचनकोअसिकहि
 । फरक्कहिंविज्जुवज्ज्योयनफहि ॥ १०१ ॥
 खरक्कहिंढालनकेकटिरवंड । दरक्कहिं
 तालनसेध्वजदंड ॥ बरक्कहिंछोनियहिं
 छिनरत्त । बरक्कहिंबाहुलटोपविद्यत्त ॥
 १०२ ॥ ऊरक्कहिंइक्कहिंइक्कटकिथ

रक्कहिंरुंडलर कहिं थक्कि ॥ गरक्कहिंरुं
 जरपंजरगोदि । जरक्कहिंजोरमहाभटमो
 दि ॥ १०३ ॥ ल्पवंगनप्रोथसनंकियस्वास
 । भनंकियभेरिवलाहकभास ॥ रनंकिय
 कोचनरोचनरुड । रुनंकियअक्करवरप
 क्कररुंड ॥ १०४ ॥ रवनंकियहडुनहडु
 नरवग्ग । फनंकियफेनिलसेससमग्ग ॥
 छनंकियवानउडाननछूट । ठनंकियघंट
 करीकटिकूट ॥ १०५ ॥ इतैतंहं देवउतै
 सिरदार । हमल्लनभल्लनदेतप्रहार ॥ उमै
 ऊपटावतसत्तिनसूर । उमैअधिबीरमहा
 मगरूर ॥ १०६ ॥ दो ० ॥ महचंडअरु
 चंडमनु । दोऊभटजमदास ॥ असुदलगा
 हकअंकुरे । रनमारीभवदास ॥ १०७ ॥
 व ० प ० ॥ देवसिंहकेसुभटहनियसिर

दारसिंहरवट । नारवकेरुनरुपिदेवस
 द्वियद्वादसभट । द्विगुनजोरलारिवद्रुतहि
 अक्कपहिलैंतिन्हअदीर ॥ अरुमंडलभि
 द्वायप्रथमपठयेस्वधर्मपरि । डाकिनि
 पिसाचयह कूकदियसुसुनिसोरनारव
 सुभट । दसमानउग्रअडेदुसहबहुरि
 अनिठ्ठेविकट ॥ १०८ ॥ दो ॥ सुभ
 टअद्वनिजसंठिकैं । देवसिंहद्रुतदाय ॥
 नारवकेतेदसनिगलि । नारवलियनिय
 राय ॥ १०९ ॥ ब० प० ॥ अबउन्नतत
 मअसउपरदिनकरआरोहत । बिगजं
 गदियचच्छुमुदितसारथिसहमोहत ।
 देवसिंहसिरदारजयरुरावियमिलेजहं
 ॥ विरचतदुवबलबंधितुमुलथलरगजं
 गतहं । सत्तनरवलीनखंदियअरुन । दु

किसकतिफनिपतिचकिय । बुक्जाम
 अधिकसंजोगसुरवतदिनचक्रचक्रिन
 तकिय ॥ ११० ॥ जिमद्रोणाचललेनउ
 द्योअंजनिमुतलासक । अचवनजिम
 अंभोधिबिदितआतापिबिनासक । चं
 डीजिमचंडपरखानमुष्टिकसंकरवन ॥
 पन्नगपरकिसुपर्णगरबितमहिमकरया
 सन । इमवैरिसल्लकुलउद्धरनलरिसमीप
 नारवलियउ । मानोकिभीमदृढपयमुरारि
 दुस्सासनउपरदियउ ॥ १११ ॥ भुजंगप्र
 यातम् ॥ मिलेबह्मिकेभानुकेबंसमज्जी । दु
 हूंफोजमैंओजतैंमोजदज्जी ॥ दुहूंतेरके
 जेरतैंभुमिदबी । इतैंगोमुरवामेरिनज्जेअ
 रबी ॥ ११२ ॥ भयोसेसरंकेसकेबेसमिन्नो
 । किटीदंतुलीदारिकेंतुंडदिन्नो ॥ कढ्योव्या

लपातालनातानकोऊ। सस्यो बच्छबीम
 च्छदौलेयसोऊ ॥ ११३ ॥ हरीजूटतैमेरु
 केकूटहल्ले। चहूँकोइससोइकेओतचल्ले
 ॥ भजे लोकस्वर्गादिलोकेसभौनै। लगेई
 सकौसीसकेलाभलौनै ॥ ११४ ॥ भयेरा
 गसिंधूनकेलागभिन्ने। नचीजुमिनीता
 लबेतालदिने ॥ रिवरैहहुपैरवकाबुल्लै
 रबैहै। मनोफगायैचचूरीदंडमंडै ॥ ११५ ॥
 उमैमंडलीधावबाजीउडावै। उमैबारकी
 पारमैनांहिंआवै ॥ इतैलज्जबुंदीसकी
 रोकिगिल्लै। उतैरव्याल्लजेसिंहकेजोररि
 ल्लै ॥ ११६ ॥ उमैजेठकेमानकेमानउग्यो।
 पौफौजकेओजकेअंसुपुग्यो ॥ बकीडा
 किनीडकडैरैबजाये। चनेभेदकेभेदमैहो
 न्नायाये ॥ ११७ ॥ फिरैफेकरीचंडफेरंडपु

ल्हे । मिरैंभूतकेरत्तभैमत्तमुल्हे ॥ भूमैंगिह
 नीचिल्हनीमेदभकरैवै । रूमैपंकमैकंकनो
 संकरकरैवै ॥ ११८ ॥ तपैरंगबाजीनकेतं
 गतुहै । छपैभीरुबिद्रावकैचावछुहै ॥ उल
 हीनटीलोगिरैकोउछहै । फिरैरीसकई
 सकेसीसफहै ॥ ११९ ॥ कटीकेपताका
 उडीअबकड्डु । चपूमेघकेजोरज्योमोरच
 छै ॥ हुकैमंडबेतंडपैवातमपै । किर्योसेल
 केअंगरवज्जरिकपै ॥ १२० ॥ बढ्योसंकु
 लीसत्यलेबत्यबाही । निभ्योपोनपैहो
 सदागोननाही ॥ गहैकोदकदारकेपार
 गोदैं । रवुरोबाजिकेघुमिकैमुमिखोदैं
 ॥ १२१ ॥ फिरैकेगदामारिगेमत्तफोरैनि
 रिकैममत्तीनकोरंकचोरै ॥ कढैहत्थिहो
 दनकउदकच्छी । मुरैतारकीनगजोव

रमन्ही ॥ १२२ ॥ किते कुप्पि हो दे नमैं
 सरहुहैं। मरोरै निसा दीन के कंठ मुहैं ॥ भिदै
 त्यों गजा जीव के जीव मुहैं। बढे मोह मैं के
 पद ग्रस्त बुहैं ॥ १२३ ॥ नदैं मंम की कुहि
 भेरी नगारे। बढैं के बिदारे हहा हाय हारे ॥
 चढी अगि जंगी चिनगी चमकी। सिक्की
 मार संसार की बुद्धि संकी ॥ १२४ ॥ तपै प
 कवरी बाजि दर्जे तरकैं। जपै राम के घु
 मि कै भुमि जकैं ॥ खिरे हड्ड के मुंड के खं
 ड खंडी। मनो बुद्धि ओरे न की मेघ मंडी ॥
 १२५ ॥ चलैं रो पत्यों चाप जीवा चढहैं। न
 चैरे वचरी मूचरी प्रान नहैं ॥ बहैं बेग ते ते
 ग सन ह बडैं। कियो सख की पंति मै तंति
 कहैं ॥ १२६ ॥ मरै सुडि हथीन के मुंड मु
 कैं। कटै शीथ बाजीन के कंकड़ कैं ॥ भ

ईरुंधिनेलोक्य कौंधुंधिभारी । चईस्वर्ग
की सीमलौभीमबारी ॥ १२७ ॥ तैकैबीर
कायासअयासतंद्रा । चढीराति सोपै
अमानष्टचंद्रा ॥ सजीदैवत्रैजामकेपु
हसंजा । बनेंभानुकेविष्फुरीचंद्रबंजा ॥
सबैसंकुलीध्वांतसंग्राससीमा । भचकी
फिरीमारअंगारभीमा ॥ दिपैहोंकटारी
उडीअबदीसी । सुहीचंद्रकोंमोहिनी
रेहिनीसी ॥ १२८ ॥ जैरैगैनगिद्दीनके
नैननकी । सुहीमगकीतीनताराथर
की ॥ उडैहीरजोकालिनीइकउगै ॥
अभाजासअंधारपैमारपुगै ॥ १२९ ॥
कमैगैनकेमल्लज्यजोरकड्डे । महाकारि
अदित्यजेचारिचड्डे ॥ बुढ्योकाहिने
सूलउड्डीनबोहै । सुहीतीनतारीनतेपु

धसोहैं ॥ १३१ ॥ छुटैं चक्र द्वै बक्र प्राया
 स धाजैं । मधुमी भजो पंचतारे न भजैं ॥
 महाकारिह पंच अंगार उडैं । मधा जो मनो
 हंकि आइ हड्डैं ॥ १३२ ॥ जरंते उडैं का
 लिका पालिका पै । तिपु बोत्तरा फग्गुनी
 रिच्छैं दै ॥ उडैं प्रोजरैं हत्य लग्गी अं
 मारी । मपंचाल जो हस्त नक्षत्र मारी ॥
 १३३ ॥ चहैं अब्ध मुत्ती बनें इ कचिना ।
 अवाला चहैं स्वाति इ कें पविना ॥ धकं
 ती कवी अष्ट तैं अब्ध धावैं । बिसार खासु
 चेरिच्छ कारवा बनावैं ॥ १३४ ॥ उडैं
 त्यों तिले मान के के अंगारे । तिज्यों मित्र
 मच्छन के चारितारे ॥ चली कानतें कुंड
 ली ज्यो मचीनो । सुना सीर के रिच्छ के ते
 मतीनो ॥ १३५ ॥ इली बक्र पै रुद्र संख

अंगारे। तिज्योसिंह लंगूलत्योंमूलतारे ॥
 जौरेअबगोदंत दोअोर सोंजो। दिपैपुष्टा
 खाढसोरिच्छदैको ॥ १३६ ॥ अंगारीउमेअ
 वकाहुउकारी ॥ कढेउत्तराद्वैभयचादुका
 री॥ दतेमैउडैअबअोरैअंगारि। जिदोए
 भजेतेमिजित्तीनतारे ॥ १३७ ॥ भगोबिंद
 कोज्यो कह्यो मगत्योंभो। मृदगैलरव्योचो
 धनिषाभज्योंभो। उडैचर्मसोचंदमाला
 अरोह्यो। सुहीद्वत्तवारीसकोरिच्छसोह्यो
 ॥ १३८ ॥ महारतिअर्केन्दुकेसंगमने।
 छतारैरहेछत्तिकाअंतछने ॥ जिजाया
 हिंपुष्टाभइयोचिजामा। परीफैलिज्योव्य
 स्रउद्देदकामा ॥ १३९ ॥ हरीबीरजेसिंह
 केधूकहुके। कुहूसालमीसुरफैरंडकुहो
 फिरैसगुलीबगुलीगिहूफुले। प्रमैपिग

लासेनभालेनभुल्ले ॥ १४० ॥ भन्योवैरिस
 लोलभूलेसभायो । जग्योदेवक्रव्याददजो
 जेतजायो ॥ नरुजातसैंगातयौलीलिलि
 न्नौ । नहीईसजज्योसुपैसीसदिन्नौ ॥ १४१
 ॥ दो० ॥ गिरतगिरतनारवमजब । द्रुतमंडि
 गसिरदार ॥ देवसिंहकियछकितदैअसि
 उपवीतउतार ॥ १४२ ॥ अबसुदेवहनि
 नारवहिँ । रवायइकृतसरवगा ॥ धक्योम
 बलहरबलधुर । फिरतमचावतफगा ॥ १४३
 ॥ स० प० ॥ अगौतच्छकउरगबहुरिपयपु
 न्छबिदबिय । अगौबरबारुददोहिपाव
 कतिरछबिय । अगौदिनकरअसहसुर
 रिउत्तरमगलिदो ॥ अगौबुधितमयदब
 हुँरेबिन्ध्यअलबिदो । अगौसुदेवअ
 हवअडरअरुनारवअतिउफन्या । जयसिं

हमानभंजकसजववेतालनरंजकबन्या ॥
 १४४ ॥ निःशाणी ॥ नारवकों देवानिगलि
 अगौ उफनाया । इतनरउरनूपके सचिव
 चालुक चंपाया ॥ प्रेमसिंह हूँ दैपलट द्रुतदा
 वदिरवाया । रुल्लरिलो रुननं कते तेगा तर
 काया ॥ १४५ ॥ सूरों हूरों सत्य हूँ गलबत्य
 मिलाया । रवंडे राय रिलार हूरन फगरचा
 या ॥ पातगदा के पुहली फटकार फबाया ।
 घाय हव कैं रंग के जल जंत्र चलाया ॥ १४६ ॥
 रेहगर ही मेह लों अबीर उड़ाया । फूल फले
 जे फिफरे फबि फांक फुलाया ॥ गोली गोद
 गुलाल के चहुँ अोर चढाया । डैरों डिंडिस
 डाकिनी डफड कबजाया ॥ १४७ ॥ गनि
 काज्यों चिनं जुगिनी छे इथर काया । भैरों
 गायक भाय कैं आलाप उठाया ॥ नाथा उ

तमेमहुनिडररवगरदेल्हरिदल्हाया। दोऊ
 फयाउदयामैइमकोतुकम्प्राया॥ १४८॥
 छेदेतीरनछनियेँवीरनबिरमाया। सिल
 यमाकोँसंकुलेछाकोँकिछकाया॥ दोऊ
 भारतदावजेछनधावधुमाया। नरउरमंरी
 प्रेमकावहुबारबचाया॥ १४९॥ रवेडेरेवं
 डेरावकेहुतप्रेमदबाया। चंचलचंडचमं
 किँकेँगीवागरकाया॥ सिवकोँदेसिरप्रेम
 कागतप्रानगिराया। चालुककोँनरउर
 सचिवहनियेँरुहकाया॥ १५०॥ देरिदि
 निरंकुलदेवइहिंसजितसमुहाया। धर
 दोउनधमचक्रदेफनमालफिराया॥ हहु
 नमंसनिहारहीहहुहठप्राया। जिमलमो
 तिमलेचलैरवमपानपचाया॥ १५१॥ कं
 कटदोपोंकहिँकेँकडिजातअधाया। ज्यो

सबनीगरसहुमै चहितंन चलाया ॥ योंअ
 सिउच्छदेवकीरनचित्रराया ॥ खंडेराव
 रिल्लहारकीरवगो बलराया ॥ १५२ ॥
 दो० ॥ नरहरपतिकोस्तनिववहनि ॥ खंडेरा
 यधुनाम ॥ बहुरिदेवसिंह बल्यो ॥ कूरमद
 लजवकाम ॥ १५३ ॥ ब० प० ॥ महाराज
 पमाममूळ पहिलें शुभला हयो ॥ सुत लकिसं
 ग्रामसिंह कूरमदलकलो ॥ पारनसिंहकळ
 गद चाहितिहिं जेह बलायो ॥ पानीमान
 दुं प्रलयउदयिसंतनउपनायो ॥ प्रमका
 तरवकाप्रतकपविवाजिदयदिसमुह
 बल्यो ॥ त्रयनेरविदरिवेवयरयतदिनाय
 पयप्रतिजयजयबल्यो ॥ १५४ ॥ इतसं
 ग्रामअसं ककरनकूरमउतउद्धत ॥ इतहुं
 दियजयआसउतसुजेपुरजयइच्छत ॥

दोऊजुरिजमदावधावरवगधावधुमाये॥
 बहुविमानअच्छरिनलुब्धिप्रायासलु
 भाये। वीररुउद्दवीमच्छबलिअतिअरि
 ज्जरसउप्यज्यो। नञ्चतअनेकरुंडननिर
 रिदभालचंद्रतद्दिनभज्यो॥ १५५ ॥ करभ
 नश्रीवाकटतउनहिंवेतालउठावत। अत्र
 तत्रआरोपवीनलयलीनबजावत। मनु
 जनमुंडमृदंगढोलबज्जतहयढहूर॥ गो
 मुरवगतिगजमुंडिमचतसंगीतमनोहर।
 गावतपिसाचजुगिनिगहकिअहकिमु
 सिरआनद्धतत। करितालखंडसीसक
 किलकिहल्लीसकडाकिनिहलत॥ १५६
 ॥ दो० ॥ रनदोऊयाविधिरचत। सजि
 करनरुसंग्राम॥ आजिनरुकेलैअडर
 ताजिनवगातमाम॥ १५७ ॥ कुपिहनि

यकूरमकरन। सोलंरवीउरसंगि॥ प्रतिभट
 परअतिभटयहहु। इततैबढियउमंगि॥
 १५८॥ मारियखगन्चालुकमपदि। चल्ह
 यदपदिअचूक॥ कियसिरकूरमकरनको
 दोपसहितद्वैटूक॥ १५९॥ हनियाहिर
 मल्लाहुकम। खिच्चियसेरखपाय॥ लिय
 अबगायरसेरपति। घासीरामनिराय॥
 १६०॥ कूरमघासीरामतब। सिरमारिय
 समसेर॥ कहतरिदिनवहसिरकियउ। सि
 वनिजमालसुमेर॥ १६१॥ समरपह्योसं
 ग्रामको। देवसिंहहुतदेरिब॥ कूरमघा
 सीरामको। पूगोसमुहपेरिब॥ १६२॥
 देवसिंहकेउरदुसह। हुतकूरमखगदीन
 ॥ पैठोकटिनागोदपुनि। तरकिपेसुलीती
 न॥ १६३॥ इहिअंतरदेवहुअतुल। त

ससिरभारियतेग ॥ हनिरसोरपतिकोंडु
 लसि। बढ्योबढुरिअतिबेग ॥ १६४ ॥ हरि
 यसिंहतोंबरहरी। पुनिजद्वपरताप ॥ कर
 नसिंहद्वोरकुल। येअरिपिक्खिअमा
 प ॥ लिरितइन्हेंमानहुंलिरवे। खगसि
 चानरवरकोन ॥ १६५ ॥ आयोदेवसुउ
 प्परहि। प्रलयमांहिंजिमपोन ॥ १६६ ॥
 तबहिदेवकरबंधतकि। तोंबरभारियते
 ग ॥ तीननइनहनिकैतरु। दीरनभोहतबे
 ग ॥ १६७ ॥ जेतसुवनकेइमजबर। तीनल
 गियतरवारि ॥ अरुखटभटअमैरके। द
 रदलयेरनमारि ॥ १६८ ॥ अबसुदेवअ
 तिलोहअकि। पर्योभूरचितप्रान ॥ हूरन
 कोंहोंसहिरही। यंहंअयुहिबलवान ॥
 १६९ ॥ सालमदलसागरमध्यो। अभय

देवप्रतिलाग ॥ तोउनलद्धोजयरतनायें
 हेंबुंदीसप्रभाग ॥ १७० ॥ सठसालमह
 करवालबिच । दुस्योरहोभयदाव ॥ बुंदिय
 दलसमुहबढे । आमैरेउमराव ॥ १७१ ॥
 ष० प० ॥ परसुरामपरिहारजोधचालुक
 प्रतिजुहिय । सांवलगोरसजोररूपचा
 लुव्यप्रहृदिय । जोरावरनरुबंसलरि
 यचालुक्यसुरतसह ॥ बलिहडाबरवलेस
 उदयचालुकलियप्रगाह । जगमातुह
 डुडुद्धतजुस्यो कूरमपृथ्वीसिंहसन । सजि
 माहिंमाहिंदुवदलसुभटलगोइमरव
 गानलरन ॥ १७२ ॥ निःशाणी ॥ दो
 ऊप्रोरदुबाहयोंप्रसिबाहप्रब्रकैं । डैरों
 डाहलडिंडिमीडकैंडकडकैं ॥ सेलभन
 कैंसंकुलेप्रतिघायउबकैं । सीसकपाली

संग्रहैं काली सु किल कै ॥ १७३ ॥ खूब
 बजाईरवगनै धाराधम च कै । कुकै को
 उकराहि कै कमठे सम च कै ॥ नीसासा
 नासानुगी आसा गज त कै । भोगी भोगन
 मिलि स कै भुम्मी प्रक ब कै ॥ १७४ ॥
 चोहों दिस रोहों रुके छोहों भट ब कै । ज
 डे जंजीर नजरे बड़े गज ब कै ॥ ताजी तंगन
 तौरि कै फालों फरर कै । मेह प्रडंबर मंडती
 रज प्रंबर ठ कै ॥ १७५ ॥ केसूर नय कै
 कलह के हरन त कै । गातन मावै गिहनी
 गिलिगूद गज कै ॥ केयायक पायक कट
 लायक सकस कै । खंघेर देल्ह रिदल्हार के
 भट सेलम च कै ॥ १७६ ॥ खंड चट कै
 खुप्परी लगि लुत्थिल ट कै । सेलों मार सु
 मार है असवार उच कै ॥ धुकि हत्थी धीर

नधरै जंजीर नजकै । लकलकै बर छीलन
तल्लि धाय बबकै ॥ १७७ ॥ रीस बढकै
अंग के के सोस पढकै । के कंकट संकट कहै
के ते गतरकै ॥ सिरफ है धर उल्लटै कहि नै
नफदकै । हय ह है पय उच्छटै रय मगर उल्लै
॥ १७८ ॥ लोही बूढ निलाल की धारा धक
धकै । केडा कि निरवप्पर भरै के सादि नि
बकै ॥ चंड ह पानी चंचला चढि अब्ध च
मकै । यौ अंबर आयुध उल्लै जिम नाग लट
कै ॥ १७९ ॥ बीरों बीर बर बरी तरवारि
तरकै । दोह त्य न मारै दपटि के बस्य न ह
कै ॥ के न बक बक बक बजै के ढोल डमकै ।
के जंबुक मंडै कवल के कंक किलकै ॥
१८० ॥ के बदी बुल्लै बिरु दरस बीर उबल्लै
सूरठरकै समुही नम हूर थरकै ॥ तीरद

सरोँ निकवसैरनधीररटकैँ ॥ केमातरमा
 तर कहैँ केकातर चकैँ ॥ १८१ ॥ सोरस
 लकैँ संकुलीतपिघोरतुपकैँ । केकंकटअ
 दोपकैँ केदोपमचकैँ ॥ धायेबदलधूमके
 छायेछितिठकैँ । अपिफरकैँ केकुँ पयक
 पिलरकैँ ॥ १८२ ॥ धायहबकैँ केहकैँ ह
 त्थीनहलकैँ । गीतअलापौं जुगिनीलेजा
 तलतकैँ ॥ ग्रामसुपैगंधारमैतीरेस्वर
 तकैँ । ज्यौंनरत्यों हेवरउडै । ज्यौंगैवरजकैँ
 १८३ ॥ धाताजगनिम्मानकेअभिमानअ
 सकैँ । पानीभुमिपताललौं जिमथालथर
 कैं ॥ अघेअघेहोहुयों बैडेभटबकैं । त्यों
 त्योंपयपच्छे लौं छत्तीधकयकैं ॥ १८४ ॥
 समयघोरसंहारकोइहिरीतिउबकैं । कौं
 नपिताकोपुत्रयोंनातेसबथकैं ॥ उबरीवे

मैं इक्क से मन भीत भुरकैं । जिमति मय्यारे
 जीवकों तजनों ननतकैं ॥ १८५ ॥ कलब
 स्त्री बानी कहैं भ्रमिभीरु भटकैं । पाय अटकैं
 पगाडों लरि लुत्थिल टकैं ॥ अंत उलजै
 अंत सो जिम फंद जरकैं । इक्क टकैं इक्क
 कों परवरै तप टकैं ॥ १८६ ॥ केते होदन कें
 गुरों रवुर ताल रवनकैं । कंषि कलेजे के कहैं
 के छहर टकैं ॥ पिट्ठिम चकैं पंसुली रीठ क
 वरकैं । केते हूल कपान की बात लब बकैं
 ॥ १८७ ॥ फहैं मुंडन फांक ज्यो दारिम हरर
 कैं । कंध कफोणी कर कहैं कर के च करकैं ॥
 कहे किरत नित बके जिम कच्छप जकैं । क
 टिजंघा सत्थी कहैं । हत्थी हनिहकैं ॥ १८८
 व्यंजन प्रेत बनात के गह कात गटकैं । केते
 लोग कटाहकैं पयलो हित पकैं ॥ उंबी सिंबी

अंगुलीबहुसेकिबूतहैं । खाजेपूषीखल
 केलाजेकरितहैं ॥ १८९ ॥ रदुरमांखंडी
 रुधुपरीचकरैवैधमबूहैं । भेजाभातभराइ
 कैगिलिजातगजहैं । फैलेधेउरपिफ
 रनछैलेबनिबूहैं । बुझागोरबनायकै
 बुझाभरिहैं ॥ १९० ॥ भोजनअैसेभू
 तगनकरिकैककिलहैं । जिहिं देलासंके
 जुरतबंकेअकबूहैं ॥ फाटिबकत्तरवि
 करैरैकेतोपचूहैं । फीलबूहैं फांदते
 खगहडुरवहैं ॥ १९१ ॥ भुलैकैमगमा
 वरीपगपंकरबूचहैं । धुमैरेवतरपालले
 धनरत्तगुहैं ॥ चाहेरत्तचूहैं चउस
 दिचहैं । कायउगहैं केकटै करिपायग
 ॥ १९२ ॥ लगैअंबरलायसीकेघायुटप
 हैं । केवटकेवटकेकरै कटकेनकमहैं ॥

नाचन बुद्धें डकिनी लै डाच डच कैं । ज्वाल
 मरु कैं केजरी गज ढाल दरु कैं ॥ १९३ ॥ बीर
 बद्धतर पार के तीर तम कैं । दंत दम कैं हीर
 लौं चिनगी किन्चम कैं ॥ सत्तलोक उग्र
 रि कैं धर सत्तयम कैं । परिग्रहों दिक्पाल
 के कपाल कस कैं ॥ १९४ ॥ केहु कैं गाफि
 लक देल गिनेन पल कैं । सिस कर कैं संकु
 लीफन पंति फर कैं ॥ घायन सत्यै स्वास कैं
 रिफेन भम कैं । छोह गरु री जोरि के सिर
 फोरि स कैं ॥ १९५ ॥ मुल्लिम द कैं के भिर
 कतिरवान क द कैं । सहि लापय मंजीर
 लौं हिंजीर ठम कैं ॥ बंढ ह कैं जीर पै कैं
 बन ह कैं । पिट्टि कस कैं कच्छ पीथर धुजि
 धस कैं ॥ १९६ ॥ बेदंतुलि वाराह की ब
 हुवार बर कैं । लै के धायल लकल की ल

दिनिद्विसरकैं ॥ केरजपूतोंबलकढैधूतों
 परियकैं । पत्तरवरकैं जुगिनीकरतबरकैं
 ॥ १६७ ॥ तक्क्योजिनतैसोतुमुलतेफेरिन
 तकैं । तदिनपंचोलासपैनरनासनथकैं
 ॥ योंबुंदीआमेरकीअतिलाजअटकैं ।
 हडेकूरमहल्लसोंहरवल्लनहकैं ॥ १६८ ॥
 दो० ॥ इहिअंतरअवसेसअब । दुवना
 डीदिवसेस ॥ बुंदीमटबिज्जतबढ्यो ।
 बिजयकूरमनबेस ॥ १६९ ॥ इतिश्रीविं
 शभास्करेमहान्वंपूस्वरूपेदक्षिणायनेन
 वमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रयस्त्रिंशो३३
 मयूरवः ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६
 ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६
 दो० ॥ नृपकेवरजतजेनिडर । अभयदेव
 निमआय ॥ तिलतिलबुंदियबीरते । तु

हेप्रसिनप्रघाय ॥ १ ॥ तिनमै इकजैत
हतनय। देवालरनउदार ॥ मिश्रुनतउमू
रछिमरद। सुत्तोत्रिप्रसिसमार ॥ २ ॥
व० प० ॥ पर्योप्रमयहरिप्रथमपारिपंच
हिराजाउत। पुनिनिजसंगहिपरिगसु
गतपूरनदोऊसुत। हड्डदेवपुनिहनिय
नरुवसिरदारस्वतंत्री ॥ रिविजिपुनिरव
डेरायमारिनरउरपतिमंत्री। हनिपुनिर
सोरपतिवहहुलसि कूरमघासीरामकलि
। जहवकबंधतौवरजुरेबहुतेअरितीन
बलि ॥ ३ ॥ दो० ॥ रवगगनइमउमराव
रवट। मारिदेवबसिमोह ॥ रिपुरुंडनमं
चकरसिक। लरिसुत्तोबहिलोह ॥ ४ ॥
करनहुकमअरुसरइन। तीननहनिब
लेतग ॥ नाथाउतसग्रामनर। विनुसिरन

ज्योतिष ॥ ५ ॥ बद्धलें हयहवप्यके । नाभी
 बद्धल्यो नाहिं ॥ सीसप्ररथ बुधसिंहके ।
 द्वेपन्तो दिवमाहिं ॥ ६ ॥ ब० प० ॥ परसु
 रामपरिहार पश्यो-बालुकजोधहिं हनि । चा
 लुकरूपहिं चक्रिष्यो सांवल गोरन म
 नि । जोरावरन रुजात सुरत बालुक हनि सु
 त्तो । उदयसिंह हनि परिग हड्डु बरवते सधि
 रुत्तो । जगमानु हड्डु जुक्त हन्यो वूरमपृ
 एकी सिंह के हैं । लगि माहिं माहिं द्विजे
 लरत ते उन को पसमात ते हैं ॥ ७ ॥ दो०
 ॥ बुंदीपति को भट बलि । नामसुज द्यौराय
 ॥ अति उद्धत हनि पंच अरि । लुह्यो असि
 न अथाय ॥ ८ ॥ बारह सै इत्यादि बलि ।
 दुर्दिस मरिग दुबाह ॥ भट हजार थायल
 भये । निरुदेवति न नाह ॥ ९ ॥ ब० प०

कुसयलपंचोलासभयउ इमजंगभयंकर। चर
मप्रद्विदिगचपलहंकि पडुंचतरविहेवर।
बिरवमरारिद्रुव बन्धवृत्तिपत्थरि बटउ बट
॥ दुवघाँसौलरिविदानरेवेतरवेजनभेजेभट
। कुरापनकसानुचितिहोमकरिलायेडेन
घायलन। जयपुरनरेसजयसिंहजयबुंदी
पातिअनजयबिमन ॥ १० ॥ दो० ॥ बि
त्तोइमप्राहवबिकट। जितोसालमजोर
॥ सोधतअबघायलसुभट। प्रागमनिस
दुहुँअोर ॥ ११ ॥ त्रिअसिघायजेतहत
नय। देरव्योघुअतदेव ॥ निजसिविका
पठवायनृप। आन्योवहदिगाएव ॥ १२ ॥
सुनतपराजयरवगासजि। खिजितेंहंभो
परववास ॥ पासवानरघुदुहुँनपुनि। बिर
च्योलरिदिववास ॥ १३ ॥ बरजतहूति

लतिल्लबद्धो। कटिप्ररिनप्रतिकोप॥
 स्यामिहारिसाहिनहिसक्यो। भलमलनापि
 लमोप॥ १४॥ कलुप्रनीकबुंदीसको।
 अलयसंगइमलगि॥ यहरनकरिअब
 हरिगिनि। पलट्योदोहनपगि॥ १५॥
 समयघोरपररेसुमट। बदलैसबनयवोय
 ॥ घायहुसैकेघायलन। सालमदलबि
 चलोय॥ १६॥ रहेमनुजबुंदीसहिग।
 इकसहंसअनुदूल॥ सालमदलबिच
 नवसहंस। मुखोबुहरिअघमूल॥ १७॥
 हिहिअंतरअंधारअति। कुहुनिसआ
 ममजीन॥ बुंदीपतिमलिमंदबुध। नौती
 विपतिनदीन॥ १८॥ ष० प०॥ जिहिबुं
 दिवहितदेवसिंहमैननरनमारिय। जि
 हिबुंदियहितसमरसिंहबरदुर्गनिधारि

य। जिहिं हितसूरजमल्लरतनरानां खिजि
रवद्धो॥ जिहिं हितभोजसजेरलरिरुसूरति
जयलद्धो। जिहिं हितजयीससमरसता
साहजिहोंकोंसीसदिय। बुधधवहिं बेरि
ज्जारनविरवयतदिनवहबुंदियतकिय॥
१९॥ दो०॥ बुंदीपतिबहुबिधिबिगारि।
असोभयउअसत्त॥ अचविनुहलजिम
अंधकी। बरबीजायनबत्त॥ २०॥ कूरम
दलइतबिजयकरि। सालमसहितसहा
स॥ अमलकिनअमैरको। कुसधलम
चोलास॥ २१॥ इमकुसधलअनिरुद्ध
सुव। पायअनादरउअ॥ बिमनारनिबि
तायकै। कोटाकौकियकुद्ध॥ २२॥ संभ
रदेवसुजेतसुव। असिनयघायलअंग॥
बुंदीजानित्यकीयद्विति। सिदिकाचद्वि

दुवसंग ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ चढिचल्लियच
 दुवानछोरिबुंदियबुनाधम। कोटानिबस
 थमंगरोलकियतहंमुकामक्रम। हीदुव
 रानियसंगपुरसुकोटापठवाई ॥ पठयोसा
 लकपासकुमारनिजरुयहकहाई। तुमदेव
 सिंहजिहिंतिहिंतरहयाहिजिवावहुछ
 वन्प्रब। जयसिंहजोरपिकवहुजबरगुमर
 तोरमंडलगजब ॥ २४ ॥ दो० ॥ सेवासु
 हरीग्रामको। गुजरगेदागोत ॥ जिहिंनि
 जधावरधाइजुत। पलनांलियधरिपो
 त ॥ २५ ॥ बुंडाउतसीसोदभट। भारत
 नामसुभाय ॥ कढतछन्ननृपकुमरके।
 सोदियसंगसहाय ॥ २६ ॥ पादाकुल
 कम् ॥ धावरभारतसिंहपिधाये। चम्मलि
 उत्तारिसजवचलाये ॥ दुबियनामविन्दु

गु. वंभा. बु. च. बुद्धसिंहकोवूदीछेरिबो २७३ मयखः ३४

मतिआमह । आयाउहाँबिरचियविआमह
॥ २७ ॥ जहँदलसिंहहुहुभोजाउत । जत
ननरकरेगेहबिनयजुत ॥ कुमारउमेदरति
तहँकही । प्रातलगियबेधममगपही ॥ २८
॥ गिरिवरधंठियलंधिबेगगति । पहुँचो
बालनेरबेधमप्रति ॥ देवसिंहमातुलस
सुहहुत । जायबधायलयोउच्छवजुत ॥
२९ ॥ इतसालमलगिपिद्विउडायउ ।
मंगरोलबुद्धहिँपहुँचायउ ॥ पच्छोमुरि
आयाउबुंदियप्रति । अमलस्वकीयकिय
उजयउन्नति ॥ ३० ॥ दिनीमुलकदले
लदुहाई । सरकौंनृपताअधिकसुहाई
॥ छत्रमहलबिचरहिछत्राधम । कियउ
राजधानीभुगनक्रम ॥ ३१ ॥ भुल्लिगुन
हइमअसभुलायो । मनहुँराजपीदिनने

पायो ॥ इह लत कर दासिन ऊक जोरना क
 नक फउत्त कन कहि डोरन ॥ ३२ ॥ मंगरी
 ल तै इत मति मुद्ध ह। बिनु सुधि च ल्यो
 कर मजिम बुद्ध ह ॥ स्यंदन सत बारन
 बली सह। बहल दल डेरा इक बी सह ॥
 पुनिसत सत्तरि सकट प्रमान ह। रुचिर
 पाल की तरव तरवान ह ॥ इत्यादि कब
 दुरख त सुहाये। रवर च हीन त ल्यो हिर
 रव वाये ॥ ३४ ॥ अप्रप्य च ल्यो जित मुह
 तित न्ये सैं। पै न विचार को न गृह पै सैं ॥
 महन लंघितार जगिरि धं दिय। मूरन न
 भंजि बल हिंजरी बं दिय ॥ ३५ ॥ राजा इ
 म पहुं च्यो। प्रमाद रह। ग्राम प्रेम पुर है मथु
 कर गढ ॥ कछु दिन त ल्यो रह्यो कउ ले स
 ह। देरवन च होरान को दे सह ॥ ३६ ॥

दो० ॥ असिलजेठतेरसिदिवससिद्धि
योगरबिवार ॥ मधुकरगढले बुद्धनृप।
मुरिचल्लोमेवार ॥ ३७ ॥ कुसलसिंह
भट्टरानको। मैसरोरगढधाम ॥ तत्थवंभ
नीसरिततट। किन्नेजायमुकाम ॥ ३८ ॥
पादाकुलकम् ॥ सगताउतप्रट् मैसरो
रपति। बहुप्रजकुसलसिंहरचिबिजलि
॥ समुहआयनजरिहय किन्नौ। अरुति
हिंनृपहुवाजिइकदिन्नौ ॥ ३९ ॥ रत्ति
इक्क पिच्छे वेधमरहि। चाहुवानगोउद
यनैरचहि ॥ आग्रानसंग्राममच्चिसुह
। मोहिल्लानगरीलगसमुह ॥ ४० ॥ मिल
तहिमुदबुंदीसबलायो। चरनरानप्रतिह
त्यचलायो ॥ रानसुहत्यपकरिअनुरत्ते।
। मुसकिलायवृत्तियमयमत्तो ॥ ४१ ॥

इहिं विधिप्रकट कियो अति प्रदर। अ
रुविमना दूर महित अंतर ॥ प्रविश्यो पु
नि बुद्धहिं लै पत्तन। महि मानी पठई सं
कोचन ॥ ४२ ॥ इति श्री वंशमास्करे
महा चंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमरा
श्री बुधसिंह चरित्रे चतुस्त्रिंशो ३४ मयूर

रवः ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ इत कूरममालव प्रवनि। सुनि
कुसथल संग्राम ॥ कदनमन्नि निज भटन
को। कुप्पि फिह्यो जय काम ॥ १ ॥ पादा
कुलकम् ॥ मनहुं बग्य विच्छिद्य चटका
यो। जानि प्रलय भूते सज गायो ॥ कुञ्ज
कलह जय सिंह मानि किय। कोटा सीम
मुकाम आनि किय ॥ २ ॥ होद लेल सा

गहिसालमसुत । चह्यो राज जिहिं स्वाभिध
रमच्युत ॥ वाजुत नृ. कूरमउफनायो । इम
हुतसरितकुसकतटआयो ॥ ३ ॥ कुस
कहिगयो मिलनकोटापाते । बिरचिय
समयजानिअतिबिन्नति ॥ हयगजव
सननजरिकारिहडा । तजिनृपधरमरबु
च्योअधरवडा ॥ ४ ॥ पाज्जटिका ॥
पुनितिहिंमुकामकूरमप्रवीन । कमजुत
दलेलुअभिषेककीन ॥ कोटेसहत्यप
हिलेकराय । बलितिलकहत्यअवरन
विधाय ॥ ५ ॥ करिबदुरिअप्यकरति
लककुम्मा सिरधरिय बन्ननगललित
लुम्मा ॥ पुनिढोरियचामरअप्यपानि ।
बुंदीसरावराजावरवानि ॥ ६ ॥ अरु
कोटापतिसौंकहिअटेल । बुंदीसगिनहु

अवयहदलेल ॥ जोआवहिं बुंदिय सुभ
 दबुहि । तोताहिनरकवहुलेहुलुहि ॥
 ७ ॥ हयअदुसप्तइकं १७८७ अअब्दमा
 न । बनिबिसदजेठतेरसिविधान । इम
 करिदलेलअभिसिकअंक । समयानुकू
 ल्यकूरमनिसंक ॥ ८ ॥ निजदृष्टाकु
 मरितनयासुनाम । लांगलिफिलायता
 केललाम ॥ अविमुदलेलजायातस्वी
 य । गजइकअरोहिदोऊगरीय ॥ ९ ॥
 कोदेसपदालयकियप्रयान । थिरहुवत्र
 यइकाहितरवतथान ॥ सिरुपावदाजि
 हुवहुवनवीन । कोदेसदुहुनकीनजरि
 कीन ॥ १० ॥ तदनंतरकूरमतोरतिकव
 । कोदेसहिंकोदाखिउसिकव ॥ उज्जेन
 अनुगअवरहुअरेस । दैसिकवरुपठ

येस्वस्वदेस ॥ ११ ॥ कूरमदलेलजुतवि
 रचिकुच्छा प्रायउभुव कुस थलयुमरउच्छ ॥
 संग्रामभुल्लितहं लरिविसमस्त ॥ आलीय
 भदनबंदियअत्रस्त ॥ १२ ॥ दो० ॥ ह
 दुअप्रमयपहिलैं हरिया सारसोपपतिस्वा
 स ॥ वाकेसुतरतनहिंदियउ ॥ पत्तनपं
 चोलास ॥ १३ ॥ अजितसिंहको जुवत
 नय ॥ ईसरदापुरईस ॥ कुसथलपुरताकै
 दयो ॥ हरि जयसिंहमहीस ॥ १४ ॥ सां
 वलदाससुहाडपति ॥ सुतसोभागसना
 म ॥ वाहिपलोधीपुरदियउ ॥ कूरमनूपज
 यकाम ॥ १५ ॥ नाहनगरनानेडिको ॥
 आहवमृतअचलेस ॥ सुवनतास
 हरिसिंहको बसुग्रामकदियलेस ॥ १६ ॥
 सुवनबहादुरसिंहको ॥ पुरबुदानी

॥ दसग्रामकतिहिं हित दये। दुंढा हरगि
निढाल ॥ १७ ॥ घासीरामरसेरपति
। पुत्तहिं ग्रामकपंच ॥ दियभूपतिजयसिं
हदुत। पदुरदिनीतिप्रपंच ॥ १८ ॥ अ
भयसिंहआत्मजअधम। नाथरामहना
म ॥ पलद्वयोसरनकेप्रथम। सालयसौ
करिसाम ॥ १९ ॥ यातैनहिं बलवनलि
यउ। मिल्योजानिइनमोहि ॥ नाथरा
महिंमनिनिज। दिखास्योगहिबोहि ॥
२० ॥ देवसिंहकीमेदिनी। इमबंदीक
छवाह ॥ देवदुगिनिबुद्धहिंअधन। को
दागयउसचाह ॥ २१ ॥ पुनितजिपंचो
लासको। कियजयसिंहप्रयान ॥ प्रदि
स्योजेपुरनिजनयर। उद्धतदिजयअमा
न ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ स्वीयजननिकेस

रा. वं भा. बुच्च जयसिंहजको पुत्रीको बुलावो २५१ मगसुखः ३५

त्य । उदयनैर ही जो अचहि ॥ तनया बुद्धि
य तत्य । कारन व्याह दलै लके ॥ २३ ॥ दो०
॥ सुत समेत जयसिंह सौ । रनाउति सुरि
साय ॥ वररव छिया सीमा घबिच । पत्नी पी
हर जाय ॥ २४ ॥ ही तब तै तत्यहि सुन्यो
। अब तनया आहान ॥ सालम सुत के
व्याह कौ । यातै पठइ सान ॥ २५ ॥ कूर
म पुनि कहि मुकलिय । नहिय ह सालम
नंद ॥ है प्रवयह बुंदी स सुव । अधिपद
लेल अमद ॥ २६ ॥ दुकम साहलिरव
वाय हम । दियइ हिं राज्य दिवाय ॥ जिहि
र कवन हम रान जुत । सब कछ वाह सहा
य ॥ २७ ॥ यातै कछु न बिचार अब । इहि
ललाट नृप अंक ॥ तनया देहु पमाय तुम
। सो कविहाय निसंक ॥ २८ ॥ निजरा

रा. वं. भा. बु. च. बुधसिंहज्जकोपदयपुरविराजिबो २८२ मयूरवः ३५
६

नीप्रतिपत्रइम। पठयो कूरमपाल॥ पैकु
मरीक बुरोगपमि। आयसकीनहिहाल॥

२६ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरु
पेदक्षिणायने नवमराशो बुधसिंहचरि
त्रे पंचत्रिंशो ३५ मयूरवः ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

द्वे० ॥ इत नृपप्रविस्थो उदयपुर। स्वसुर
हवेलीपास॥ अथैव ज्जन के महल। उ
तरयो तत्त्व उदास॥ १ ॥ मोदक फलभा

जनप्रमित। पुनिरुपयसतपंच॥ महि
मानी इम मुक्कलिय। रानबिरविहितरं

॥ २ ॥ विपतिप्रतीव विचारिके। इक्क
त करि उमराव॥ कहिय रान बुधसिंहके

हुत धर आवन दाव॥ ३ ॥ पंचन कहि

तबरानप्रति। विधिकोटेस बुलाय ॥
 मंत्रस्वदुनृपतीनमिलि। पद्मीलेनउ
 पाय ॥ ४ ॥ पादाकुलकम् ॥ पद्मविचा
 रिइमरानमंत्रपन। कोटापतिबुल्लियइ
 हिंकारन ॥ पुनिगिनिबुद्धहिंजनकजा
 मिपति। अंतहपुरबुल्लियमंडियमति
 ॥ ५ ॥ रीतिसुसुनिकूरमपतिरानी। रा
 नसहोदरजामिरिसानी ॥ जनकजामि
 ममभुवाजियतनन। अंतहपुरबुल्लिहु
 जिहिंकारन ॥ ६ ॥ बिनुकारनबुल्लिहु
 ननबुद्धहिं। कहुमन्नहुकूरमपतिकुद्धहिं
 ॥ जामिबचनसुनिरानसोचिजिय। बुद्ध
 हिंनिजअवरोधनबुल्लिय ॥ ७ ॥ इहिं
 अवरोधगमनअवरोधहु। सुनिरुगमन
 चिंथोबिनसोधहु ॥ विष्णुसिंहपुरबं

सबहाला । भगिनीतसयुनरूपसुमाला
॥ नामयुमानकुमरिसुमलच्छन । बद्धरिसी
लगुनबिनयबिचच्छन ॥ बच्छरदुवके
पुहबिधाई । संमरपति सोंताससगाई ।
॥ ६ ॥ संपति बिनपुनिव्याहसुहायो ।
पत्रदूतद्रुतअगापयायो ॥ मंगियसिकव
रानप्रतिमुद्धह । वरजियतदपिराननृप
बुद्धह ॥ १० ॥ पद्दमीनिजहितमंत्रप्र
चारन । कोटापतिबुल्लियतुमकारन ॥
अरुममभदुधरनतजिआये । अप्पन
हितहममंत्रउपाये ॥ ११ ॥ तुमकौरुचत
अनवसरउपनय । मन्नहुतोइकवचननी
लिमय ॥ ममसालियपानियहमंडहु ।
बंभुनकैअरहुतनयावहु ॥ १२ ॥ जोहि
यरुचहिंव्याहितिहिंअत्यहि । सजहु

भुमिउद्यमहमसत्यहि ॥ संभरकहियहपु
 हसगार्ह । बलिछोरै नन होत बडाई ॥ १३ ॥
 हरिहरिरानबरजिपुनिहायो । बुद्धमुद्धनय
 तउनविचारयो ॥ पुनि कहिरानआलको
 दापति । आयेतुमघरहमहिंलज्जअति
 ॥ १४ ॥ यतैकछुअचतउपायअब । तुम
 इतजातकोनकरिहैत ब ॥ यहजोहद
 व्याहिरुद्रुतआवहु । जोबरसचिवरकि
 तिहिंजावहु ॥ १५ ॥ मयारामतबअप्य
 पुरोहित । अवनिउपायकाजरकिवयइ
 त ॥ अप्यविवाहहररबउफनायो । बहि
 दिसदकिवनहुतहिबलायो ॥ १६ ॥
 करहिंनव्याहविपतिबिचकेऊ । संभर
 पतिअच्छेगिनिसेऊ ॥ महीसरित
 उत्तारेप्रमत्तमन । पहुँचियदंसबहाला

पत्तन ॥ १७ ॥ सावनअसितसत्तवसु
संवत् । सद्धिलगनएकादसिसंगत ॥ व्या
हियद्विषुसिंहमगिनीवत् । राउलअज
वसुतारमनीरत ॥ १८ ॥ बहुविधिराउ
लहरदबधायि । स्वागतसवनअपुव
सधायि । रुन्निवरातअग्निनलगिरकि
य । अरुपुनिहूजाबहुननअकिवय ॥
१९ ॥ धरियेवरनितत्यहिअधानह ।
यतिं तें हेंरकिवयचहुवानह ॥ अमय
सिंहमरुधरनेरसइता । चहिदिल्लीसनि
देसकरनचित ॥ २० ॥ सुबापतिगुज्जर
धरस्वामी । ग्रामसहंससत्तरिअनुगामी
॥ अंबलअहमदाबादनगरपति । सरबु
लंदजितनकरिसम्पति ॥ २१ ॥ सकसु
निबसुअत्यष्टि १७८७ मासइस । हुत

हंकियगुजरातपहुमिदिस॥ बिदित
 बिजयदसमीसनिबासर। बिंदिअहमदा
 दादलयोबर॥ २२ ॥ जंगकछुकंतोपनर
 चिजाहिर। बुल्योबहुरेडाकदेवाहिर॥
 लरिविआवतरद्वोरलरनहित। चहिरन
 सब हंकियप्रसन्नचित॥ २३ ॥ ऊदाउत
 चंपाउतउद्धत। मेरांतयाकुंपाउतदृढम
 त॥ जैताउतपुनिजैतमालउत। बल्ला
 उतकरनोतजोरजुता॥ २४ ॥ पाताउत
 रुकलाउतप्रतिभट। बढिधूहडरानाउत
 रनबट॥ भदाउतरुमहेचेबिनुमय। रूपा
 उतरुसताउतअतिरय॥ २५ ॥ गोमाउ
 तरुकरमसीउतजहं। देवराजरनधीरबं
 सितहं॥ चाहडदेवउतरुयोकरनं चंदा
 उतहुमंडिदृढमरना॥ २६ ॥ जोधेरतन

पत्तन ॥ १७ ॥ सावन असित सत्त वसु
संबत । सद्धिलगन एकादसि संगत ॥ व्या
हिय दिव्य सिंह भगिनी बत । राउल अज
वसु तार मनी रत ॥ १८ ॥ बहु विधिराउ
ल हर रद बधाये । स्वागत सबन अपु ह
सधाये । रुचि वरा त आश्विन लगिर किय
ये । अरु पुनि हूजा बहु नन अ किय य ॥
१९ ॥ धरिय बर नित तथ हि आधान ह ।
या तै तै हें र किय य चहु वान ह ॥ अभय
सिंह भरु थर नरे स इता । चहि दिल्ली स नि
देस कर न चित ॥ २० ॥ सुबापति गुज्जर
धर स्वामी । आभ सह स सत्तरि अनुगामी
॥ अबल अहम दा बाद नगर पति । सरबु
लंद जिन करि स म्माति ॥ २१ ॥ सकुमु
नि वसु अलहि १७ ८ ७ मास इस । हुत

हंकियगुजरातपद्ममिदिस॥ विदित
बिजयदसमीसनिवासर। बिंदिअहमदा
वादलयोबर॥ २२ ॥ जंगकछुकंतोपनर
विजाहिर। बुल्योबहुरिडाकदेबाहिर॥
लखिअप्रावतरद्वोरलरनहित। बहिरन
सबहंकियप्रसन्नचित॥ २३ ॥ ऊदाउत
चंपाउतउद्धत। मेरांतयाकुंपाउतदृढम
त॥ जैताउतपुनिजैतमालउत। बल्ला
उतकरनोतजोरजुता॥ २४ ॥ पाताउत
रुकलाउतप्रतिभट। बढिधूहडरानाउत
रनबट॥ भहाउतरुमहेचेबिनुमय। रूपा
उतरुसताउतअतिरय॥ २५ ॥ गोमाउ
तरुकरमसीउतजहं। देवराजरनधीरबं
सितहं॥ चाहडदेवउतरुपोकरनं। चंदा
उतहुमंडिदृढमरना॥ २६ ॥ जोधेरलन

रा. वं. भा. बु. च. अहमदाबाद कोयुद्ध २८८ मयूरवः ३६.
५

केसरीकुलमवा धंधलअरुसिंधलअरि
वनदव ॥ धूपतिउतरतनोतबडेभर। मंड
नउतचुंडा। उतअसिकर ॥ २७ ॥ बरसिं
होतनराउतअतिबल। सोहडरायपा
लउतमदमल ॥ रनमलोतमंडलेरवरत
। मुदितभारमलोतलरनमत ॥ २८ ॥ ब
हुरिचंद्रसेनोतमहावल। इत्यादिकसंजु
रिचितउज्जल ॥ नृपअभमलोहिहत्यादि
स्वावल। लगेलरनमुच्छनकरलावत ॥
२९ ॥ सरबुलंदसरजकरसकिवय। निड
रमिच्छउततेहयनकिवय ॥ आकुलमो
मसहंसअकुलाने। उगमनिपद्यकूटडु
लाने ॥ ३० ॥ घनेधुमंडवगगइचिजेरन।
रारिमचिममिच्छनरहोरन ॥ किलकप्रे
तडाकिनिगनकिनी। लास्यव्यक्तिपर

रा. व. भा. बु. च. अहमदाबादको युद्ध २८९ मयख. ३६
६

सद्दिनलिनी ॥ ३१ ॥ डिगिवाचिनसिंधुन
जलडोहो। अरुनअरुससकअवरोहो॥
कटिकंकटनिकसतनपुकेसैं। जिलगगन
कंदुकतजिजैसैं ॥ ३२ ॥ कटिकटिकुंमति
रतसोनितकिम। जलअगाधघटउडुप
पृथुलजिम ॥ अलीइमामहोतउतआ
ख। इतहरिअच्छुतभूतनाथभव ॥ ३३ ॥
भूतकिलकिहुहुहयभरकावत। गोकिचो
रलारिगवालचलावत ॥ कहुंमटचरनर
कावनउरुत। मूढचित्तभोगनजिमहुम
त ॥ ३४ ॥ फहितकेतुइमनफहरावत।
रंभातरुकिअदिलहरावत ॥ गुदिकाअ
मतरीलियहराकिय। मनहुकुइसरया
मियमकिय ॥ ३५ ॥ निकलतगोदक
पालहितुइम। मंजुसदनमधुजालहितु

रा. वं. भा. बु. च. अ. ह. म. श. वा. द. को. यु. द्ध. २६०. म. य. र. व. : ३६

जिम ॥ बहुप्रायुधप्रायुधपरवज्जत । लखि
कल्लारिदेवालयलज्जत ॥ ३६ ॥ इमरनकरि
रद्वारबढेप्रति । मिच्छनहनतधन्वपति
सम्पति ॥ सरबुलंदलखिप्रबलमज्योसठ
। हास्योतजिगुजरातसहितसठ ॥ ३७ ॥
बलिदिस्तीपतिअमलबढायो । इममरु
मूपजित्तिरनप्रायो ॥ सुदितमयोसुनि
साहसुदुमाद । सरबुलंददकिवनगयडु
माद ॥ ३८ ॥ बुंदियपतिइतस्वसुरगेहर
हि । दुलहनि तत्थिहिरकिवगमनचहि
॥ कलियमासकुञ्जअप्पुनकिय । दायज
वसुबहुविधिराउलदिय ॥ ३९ ॥ दंति
अगड्डेरावसुदत्तह । मासरहतबारहमय
मत्तह ॥ नृपकेइमपालनवहनायो । अ
चतनिगडजोरउकनायो ॥ ४० ॥ यह

सुनिरानलयो वह हत्थी । सहंसमेजिरुप्य
 यंचरसत्थी ॥ इतकोदेसउदेपुरआयउ । अ
 धिपरानसहपत्रउपायउ ॥ ४१ ॥ मयाराय
 विप्राधसतत्थहि । बुल्ल्यो कुबचकुनयअ
 यसत्थहि ॥ कहारानपुच्छतकोदेसहिं ।
 दल्ल्योइनपहिलेनृपदेसहिं ॥ ४२ ॥ इ
 नकीलरिविअवरनमनचल्ल्यो । तबहुइ
 ननमुच्छकरधल्ल्यो ॥ कगारलिरिदजय
 सिंहकथितकिय । इनहिंपुच्छिलेहोकि
 मबुंदिय ॥ ४३ ॥ यहसुनिमहारावधवि
 उद्वयो । रानहु विप्रअधमपररुद्वयो ॥ इम
 नृपकाजविगारिविप्रयंहं । पहुंच्योम
 गाहिमध्यसभरपहं ॥ ४४ ॥ इमपुनिबु
 द्धउदेपुरआयो । विपतिजोरसबगुमर
 बिहायो । समुहआयरातहितसज्जिय

रा. वंभा-बु-च-बुद्धसिंहज्जकोउदयपुरविराजिदो २५ मयूरवः २५
५

। लैप्रबिख्योपत्तनचहिलज्जिय ॥ ४५ ॥

इति-श्री-वंश-भा-स्करे-महा-च-पू-स्व-रूपे-दक्षि-

रा-य-ने-न-व-म-रा-षौ-बु-ध-सिंह-च-रि-त्रे-ष-ट्-त्रि-

शो-म-यूर-वः ॥ ३६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

म ० प ० ॥ रा-न-न-ग-र-वि-च-र-हि-य-ह-डु-भू-ग-ति-

इ-क-हा-य-न-। स-र-स-त-रु-प-य-नि-त-य-र-ान-प-हु-ं-दा-

त-मा-न-म-न-। स-भा-स-म-य-स-भ-र-हु-जा-त-प-हु-रा-न-

नि-क-ट-ज-ब ॥ अ-द-द-र-कि-वे-अ-ति-अ-ग-ध-त-

र-द-त-त-जि-दे-त-ए-न-त-व ॥ लै-जा-त-अ-प्रा-य-स-

ए-ह-स-र-ल-इ-क्का-स-न-बै-ठ-त-उ-भ-य ॥ स-भ-र-

हिं-य-नि-पा-हु-न-स-मु-द-बि-नु-बुं-दि-य-घार-

त-वि-न-य ॥ १ ॥ पा-दा-कु-ल-क-म् ॥ बु-ड-पु-

रो-हि-त-म-न्त्र-वि-भा-र-यो ॥ नृ-प-ति-ए-न-हि-त-त-द-

पिन टारुको ॥ अक्रिय पुनि बुंदिय जन्म
हैं। तुमहिं रूप जावन नव देहैं ॥ २ ॥ अब
नि देन कूरम प्रति अकरवहिं। राणा पन कोय
छनर करवहिं ॥ जब स्याधीन राज्य निज जोद
हिं। सुख सहनिंद हम दुख सोवहिं ॥ ३ ॥
तो लो रवर चरच कीय मानतत। दिन प्रति द
स पंच सत पढ़ुं चत ॥ कहि नृप कुम्भर बुश
मदि केहो। लगि हमरे हित बुंदिय लेहो ॥
४ ॥ प्रनय रावरे तैं कूरम पति। मम भुव जो दे
हैं नटे कमति ॥ तोरन करि लेहो कित तकि
न। प्रीति तथा करि हो पर पक्रि वन ॥ ५ ॥
सुनिय हरान सुजान नीति सध। कहिय आ
जदिली कर कूरम ॥ अकबर पुर अजमेर
अवंतिय। सूबा तीन अधीन साह किय
॥ ६ ॥ मित्रवान दोरा जिहिं मन्नत सिना

नीजुजवनपतिसम्पत ॥ साहुजासक
धितखिरधारत । बलिअवरनजिहिंसम
नबिचारत ॥ ७ ॥ पुनिजिनबनिबनि
खसुरसालप्रिय । अकवरतैअबलौधन
संचिय ॥ अरुबहुमुलकअप्यननअप्रे
सो । जाससचिवराजा मलजैसो ॥ ८ ॥
रायकृपारामहुवकीलरत । जासकधित
जवनेसनलुप्यत ॥ गृहजाकेदिल्लियउ
मीरगन । पहुँचतकरजोरतकिंकरपन ॥
॥ ९ ॥ जिनकोअरजसाहप्रतिजंपत ।
वसुअधिकारमिलततिनकौबत ॥ डैडै
सतसिविकाजिहिंझारह । बढिपंतिनढ
किजातबजारह ॥ १० ॥ बैठकजाहिरवा
सरिलबतिय । रमतसाहसतरंजहुलसि
हिय ॥ जिनकेघरअैसेवकीलजन । धिरन

उद्यपि स्वामिजयप्रपन्न ॥ ११ ॥ जंगबिर
 चितिनतैकोजितहिं । बिनुहितकाहि
 विगारहिबित्तहिं ॥ इहिंकारनतिनतैरन
 उचितन । अवरउपायरचहिं बहुअपन्न
 ॥ १२ ॥ भेदउपायकेहुनहिंसंभव । लगै
 नहिंबिनुसमयजासलव ॥ यातैसामहा
 नअनुसरिहै । कूरमसैतुमसैहितकरि
 है ॥ १३ ॥ बिनुनयसमयहोतनहिंचाही
 । समरटेकनाहकतुमसाही ॥ निजहठजो
 ममराज्यनसैहो । प्रसतुमुहुकोफलतब
 लैहो ॥ १४ ॥ सञ्चकहतनृपमुद्धरिसायो
 । चलनहुकमसत्यहिंपहुंचायो ॥ हेसब
 अनुगमूढहथजोरे । नचलहुइमकाह
 ननिहारे ॥ १५ ॥ सकविक्रमअद्वरुब
 सुसत्रह १७ ८८ । बाहुलमासप्रथाक

रा. दंभा. बु. च. बुंदीशके उदयपुरविराजिबो २९६ मयखः ३७

रिबिग्रह ॥ अनरिविचल्यो संभरप्रज्ञानी
। करजतरह्यो रानहित बानी ॥ १६ ॥ जद
पिमुह्यो नरानतउसज्जन। गजभूरवनसि
रुपाव बाजिगन ॥ पठयेमित दसतूरबुद्ध
प्रति। इतअकिवयहम करजदारप्रति ॥
१७ ॥ इतकेदम्भपठावहुयातै। लनिकन
दैहमकरजदियातै ॥ तिनकीतीससहंस
मुद्रातव। जानिदिपत्तिरानपठईजव ॥
१८ ॥ करजगारितिनकरिकउलेसह। बु
द्धदलियपसुमतिनरबेसह ॥ इतवहुलमे
वकचउत्थिदिन। प्रायउचलिश्रीद्वार
हुहुहुन ॥ १९ ॥ इकरुतदम्भमेठहरिअजि
य। थोदलगासमुकामसुधपिय ॥ बलित
त्यरुदुवमासबिताये। लंघनपुनिचालीस
लगाये ॥ २० ॥ अधिकअफीमबढ्योनृ

पप्रगों । पैसेत्रिमितनित्यहितपगों । एनि
 तिममद्यप्रवद्यदुपीवहिं । जडबिनुभूरव
 आयुबलजीवहिं ॥ २१ ॥ असनलेलसत
 मप्रदुमदिन । तुच्छबहुतसोपैदपंचैतिन
 ॥ इहिंविधिप्रनप्ररुचिपरप्राये । लंघन
 तबचालीसलगाये ॥ २२ ॥ तबहिप्रकीस
 मद्यदुवत्यागे । लैपुनिपत्थलोभमुदलोगे ॥
 बिरचिकुच्चवहग्रामबिहाये । लुहनरातां
 मुलकलगाये ॥ २३ ॥ सठनृपनहिंपरि
 करसमुभाये । बहुबहुलूटप्रपंचबलाये ॥
 रानहुसुनिगिनिमुद्धरिसानों । दुद्धसुक्कड
 लनहत्यविकानों ॥ २४ ॥ दुबमिलान
 कुंपासणिकिन्ने । दुवन्नयपुरगंधेरदुदिन्ने
 पथइहिंरुक्कतचलतप्रमत्तो । एरबेधम
 ससुरालयपत्तो ॥ २५ ॥ बसुबसुसनाह

कुमितसंयत १७८८। गउरचउत्थिस
 हरथमासगत ॥ मंजुगित्योन जुद्धकरिमर
 नौ। स्वसुरअन्नजीवनलियसरनौ ॥ २६ ॥
 परदुरवसदय हृदयदेवहुपुनि। सालक
 निजबुद्धहिं आवतसुनि ॥ अमिमुरवजा
 यनिजा लयअनै। विनयप्रीतिकरजेरि
 बरवानै ॥ २७ ॥ बुद्धमुक्कव्यमहलनव
 सवायो। अप्पलालवारिय कहिआये ॥
 रावतसुराज वागरिलरकियय। अब
 कैसैनिमिहोइनअकियय ॥ २८ ॥ बुं
 दियलोकविचारविहीनौ। कमलुहन
 सत्यहिप्रतिकीनौ ॥ राउतदेवतिनहिं
 करजाये। भेनरहेतवग्रहनपठाये ॥ २९
 ॥ सटबुद्ध। सुनिरोकिनरकियय। उपा
 लंभदेवहिप्रतिअकियय ॥ धरनि विप

त्तिलोकममधारत। बलिअत्यहिआ
 धारबिचारत ॥ ३० ॥ लुहनखानदेहु
 तुमसालक। क्योंमोरनपकरातकपाल
 क॥ जोसुनिदेवतबहुकरजोरे। साफक
 रहुअंगुनकहिमेरे ॥ ३१ ॥ अतिस
 हनत्वदेवअबलीनों। बुद्धहितुबनिअ
 धिकअधीनों ॥ पंचहजारिग्रामदियपं
 चक। रुपयअढनित्यसुनिरंचक ॥ ३२
 ॥ निबहनकौयहदेवनिवेदिय। जडसंभर
 तोउनथप्पतजिय ॥ करजहुकरिरकरै
 नहिकोऊ। समुजीतुअमूढनृपसेऊ ॥
 ३३ ॥ अगगत्रिलखवहजारअगरह। भुग
 तेदम्भकर। जसहिभारह ॥ बसुसलनित्य
 दयेइकबन्धर। तीससैंहंसहयहितउदार
 तर ॥ ३४ ॥ बिभदेवजिहिंकरजबिलायो

। तोऊप्रबगृहनजरिवतायो ॥ होमबहे
 यच्छयमदृपहृडा । बिरचियतदपिदेवहित
 बद्धा ॥ ३५ ॥ मनोहरम् ॥ बुंदीकेबिनाम
 तिविडारिदेबेकेजेतिनै रारिवबहुबेरन
 विपत्तिबिदलायीनां । याहीतैरिसायरात
 कीनिलीनां बेघमकहायीनां हिरकरवहु
 तथापिचासतायीनां ॥ पाघपावलीनकी
 रुपैरिनकीपनईमिलीपैमजबूतीमानिधन
 लुरमायीनां । चौंडासौसपूतबप्पराउलकेबं
 लकाऊयमधुरधोरीधीरदेवासोदिरदायो
 नां ॥ ३६ ॥ इतिश्रीवंशभास्करमहाचंपूस्व
 रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरि
 नेसलत्रिशो ३७ मयूरवः ॥ ॥

॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥

पादा कुलकम् ॥ याहि वरसदुरमिच्छा
योऽमति । न हितनग्रनधनीदुधरैवति ॥
इकरुप्ययउपधान्यजतनइत । युल्लदिवयो
हैसतवकेनमित ॥ १ ॥ अन्ननृपतजि
जनजानलगेइम । तरुअपन्नअफलहिं
पच्छियलिस ॥ मनहुं तालसुकेजलम
न्दे । इमनहिं गये बसातकअन्दे ॥ २ ॥
यादिगजादिरवतअबआये । मंगरोल
रकव्यो सुमगायो ॥ नृपकेदिससोदुपठ
यो नन । खानखरचदेजाहुकह्योयन ॥
३ ॥ इमठोंठों बहुलिमवरह्योअब । सं
भरकौनिंदतजिहानसब ॥ पैअफीम
असवतजिपके । बुधाबढायअस
नवहुबके ॥ ४ ॥ अगाहितजिकेला
पतिअद्रुति । आइमिजपीहरचुंदाउ

लि॥ कोटापुरहिरहीकबवहिय। प्रबसु
नृपद्रुनेघमप्रवगाहिय॥ ५॥ जेतसु
वनउतदेवजंगजय। गिनिबुद्धहिंअधन
रुकोटागय॥ तत्थहिघायअच्छुवत
त्तो। पुनिकोटिससभावहपत्तो॥ ६॥ म
हाशुलककहियदर्पमत। सारधलकव
पटातुमरोगत॥ हमदुवलकवपटाप्रब
देहै। अरुअच्छुवतुमरेधरअैहै॥ अब
बुंदीसनामहुनअकरवहु। रीतिअदब
हुगुनोयहैरकरवहु॥ यहैसुनतदेवारिस
आयो। दरदीकरजिमपुच्छदजायो॥
७॥ उद्वेगोमटभुजगोकिअनानक। इत
उतपरिगसभाविवेअप्रोदक॥ अरुउत्त
रबुल्लोअसंकुउर। पतिदूरमअगोदि
ल्लिअपुर॥ ८॥ बुद्धरुभीमउभयकियइ

कत। त्रय नृप इच्छा लजि मिय तत॥
 हेममजन कजै ततें हैं हाजरि। कद्योतिन
 हि कूरमपति हित करि॥ १०॥ सुभटजै त
 तुम मिल दुभीमसन। अवन बिरोध साम
 दुव अप्पन॥ सुसुनिभीम अप्पण्यो कर
 कि नौ। हुतहि जै त उतरत बदि नौ॥ ११॥
 हडुन की जननी रे अघ हिय। भामिनि
 गिनि बुंदिय तैं भुगिय॥ यातैं स्वामि ह
 राम अप्पण्य मति। मिलहिं तोहि किम ध
 रम स्वच्छ मति॥ १२॥ कहि इम दिय उठ
 लिता को कर। वाके सुतहिं कहत इम अप्प
 करवर॥ अप्पण्य स्वामि तोहि न सुहावहिं।
 तोन हमहिं तव अप्पण्य भावहिं॥ १३॥
 देवन इम परिख द बिच द ह्यो। फिरि धरि
 उठत धाय इक फह्यो॥ महाराव क रजेरि

मनायो । यहमन्योनमुररिउतप्रायो ॥
 १४ ॥ फटतथायप्रतकगदफेलिय । कति
 कामासिन्चिद्विदिवबासकिय ॥ इममट
 देवधरमप्रवधास्यो । विपतिसहिरुध
 नप्रतयविडास्यो ॥ १५ ॥ कलिजुगका
 लामयोयहमीरवम । हैइकजीहकहैंकोलै
 हम ॥ होवतकुलपुहुकम्भहशमी । निक
 स्योलेरिसलकुलनामी ॥ १६ ॥ बुधइत
 गरमजानिवदबाला । ब्याहिजुरकिव
 वंजसबबाला ॥ ताकेउदरकुमरउद्गमकुव
 धरियनामजिहैंचंद्रसिंहयुव ॥ १७ ॥
 मधुगतप्रमासतबसु १७८७ संवत । मा
 ललयरहिबालयहमीवत ॥ इहैंप्रसु
 धारैयनासप्रठारहि । देधमनायसक्यो
 इकबारहि ॥ १८ ॥ लुंडाउतिगनियइ

तवेधम। गर्भधर्यो सुभयो पुनि उद्गम॥
 संबत मान अंक वसु सत्रह १७८६ । अ
 रुसित बहुल भाल चंद्र अह ॥ १६ ॥
 भूषा सरह महुव कुमार पव। दीप सिंह
 नाम क अरि बन दव ॥ इत जे पुर साह
 स अधिकार्ह। बलि जय सिंह जु सुता
 बुलार्ह ॥ २० ॥ कृष्ण कुमारि नाम अ
 ति अगह। अमय सिंह मंरु पति साली
 यह ॥ माधव बहिनि बडी लहि मेलहि
 । दर्द सबिधि परिनाय दलेलहि ॥ २१ ॥
 तब कूरम घर व्याह अनन्तर। बसि जा मा
 त सुता इक बन्धर ॥ अंक अह सत्रह
 १७८६ सक अगम। सिकर व पाय जय
 सिंह जनक सम ॥ २२ ॥ अह अह
 दिय कछवाही। बाहर रहिय हंटे कनिब

ही॥ स्वसुरस्वकीय पापमति सालम। ब
नमहलनरहतजु बत्राधम॥ २३॥ जोयह
राज्यहृत्थनिजजानै। काहूकोनकथितउ
रप्रानै॥ सुततियजानिरुमानिस्वसुरसु
ह। सोतिहिं बेरगोदु नहिसम्पुह॥ २४॥
कूबवाहीइहिंअनखरिसाई। कूरस्वसुरप्र
तियहैकहाई॥ मैबुधसिंहतनयकीनारी।
किंकरतुमममभारिवित्तकारी॥ २५॥ स्व
सुरमनि सम्पुहसदनायउ। करजोरिनपुनि
बिनयकहायउ॥ नृपमहलनरहिकैअति
उन्नति। भुगतराज्यअंधबनिभूपति॥
२६॥ बसहुछोरिमहलनपुरवाहिर। जोसु
खनहतहोहुकढिजाहिर॥ चविइमता
हिनिकारनचाही। बहुसिपाहपठगेकछ
नाही॥ २७॥ सुनिसालमनिकस्योअ

तिसोचन । निजन सहित कर जोरि अधि
 कनत ॥ जान्यो अबहि प्रति हाजे हैं । कब
 वाही इच्छित अब कै हैं ॥ २८ ॥ इम बिदा
 रिपुर बाहिर आयो । बलित त्यहि निज नि
 लय बनायो ॥ स्वबसि राज्य इम करि हठ सा
 हिय । अब महल न प्रबिसी कब वाहिया ॥
 २९ ॥ प्रथमहि फल सालम यह पायो । अब
 बनवन वपै हैं प्रकुलायो ॥ इतम रूपति
 गुजरात बिजय करि । धरमारव पुनि आ
 यगर बधरि ॥ ३० ॥ बुद्ध उदंत सुनिरुलि
 रिक्कगर । पुर देख्य पढ्ये चर सत्वर ॥ देख
 मरहे मरुप चरमासन । तउन जबा बलिरखी
 जड़तासन ॥ ३१ ॥ इम दस बेर मरुप दल
 आयउ । पै इक दलन बुद्ध सन पायउ ॥
 यह सुनि मोमरु भूप उदास ह । रहि इत बे

धमलूपहुनिरासह ॥ ३२ ॥ बुद्धिबिगारि
उदबेगबह्योऽप्रति । रहनलग्योएकांत
मंदप्रति ॥ स्वीयजनहुनहिनिकटसुहा
वहिं । कामपरहितबेदरिबुलावहिं ॥

३३ ॥ इति श्रीवंशभास्करे महान्वेषस्वरू
पेदक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रेऽप्रष्टुत्रिंशो ३८ मयूरवः ॥ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

पादाकुलकम् ॥ इतजयसिंहप्रतापबह्यो
ऽप्रति । प्रथितकहैसुकरैदिल्लियपति
॥ अद्बहुलिरवैदिसससाहअव । कथा
रमाहिलिरव्योहुजोनकव ॥ १ ॥ जैहैरा
जाधिराजउपपदजुत । लिरवनराजराजें
द्रलग्योहुत ॥ तिमतिमबह्योसबनसि

रकूरम। तहाँ प्रवरकोउनहुवतासम ॥ २
 ॥ कियरुप्यकोसनकोदिनधन। सहंसन
 गजहयचतुरमंदुरन ॥ जोनहिसाहवजी
 रकीरसेकै। सोजयसिंहकरैबलसंभरि ॥
 ३ ॥ स्मृतिनसुधायन्यायबिसतारै। विप्र
 नप्रगधबिसेसबढारै ॥ बाहिरइमधरमा
 तुगदीसै। पैसुरज्योनापिष्टकंहंषीसै ॥
 ४ ॥ जोनिजधरमरच्यो कूरमहिय। क्यों
 तब कर्मप्रधर्मइतेकिय ॥ हन्योप्रथम
 सिवसिंहस्वीयसुत। जोद्रुतासजननी
 निजतियजुत ॥ ५ ॥ पुनिजननीनिज
 स्वर्गपढाई। भटवरविजयसिंहबलिभाई
 ॥ पुनिसंग्रामरामपुरस्वामी। हन्योदगार
 चिहोयहरामी ॥ सत्तप्रदुसत्रह १७८७
 मितसंवत। तिरहलकरवसा। हरुप्ययतन

॥ ६ ॥ लैः अरु कितव मिल्यो मर हट्टन। सो
 मुखीन अबल गप्रधर्म सन ॥ साहता सवि
 स्वासा हि रकैवै। यहत उमं न दकि वनि न अ
 कैवै ॥ ७ ॥ अैसी लरिव प्रकि वयनिं दा
 हमा अरु अच्छी दु करी बहु कूरम ॥ अबन
 व बसु सत्रै हमित संबत। प्राये पुनि माल
 वधर उद्धत ॥ ८ ॥ ष० प० ॥ अब हावन
 नव अद्द ८६ बिसद बाहुल दर्पक दिन
 आय उ पुर उज्जैने अवनि दबत कूरम इ
 न। सत्तल करव साहसन व्याजरु पय मगा
 य बलि ॥ मर हट्टन किय मेल किय न हित
 साह मंडिकलि। दललि रिव यरान संश्रा
 म प्रति तुम दु सेन भेज दु अतुल। यह आ
 य भुलि दबन समय मिलि मर हट्टन बल बि
 पत्त ॥ ९ ॥ दो० ॥ सन नरान संश्रा मय

ह । दलपटयो सुदराज ॥ सबनसिरोमणि
 निजसन्निव । धा इम्मात नगराज ॥ १० ॥
 विदुसादिअरुवेदला । सर्वसुभददियसं
 ग ॥ तेदसउरआयेत्वरित । अवनिलो
 मउमंग ॥ ११ ॥ दसउरतै पुनिकुन्चकरि
 । आयउपुरउजैन ॥ कूरमसोहितमिल
 नकरि । संगरहिय सबसैन ॥ १२ ॥ ष०
 प० ॥ बुल्ल्यो तबनगराज देवसिंहहुबेध
 मपति । तबहि देवकरि कुन्चचल्यो सहस
 त्यवेगगति । तबहुमंदबुंदीसचल्यो निज
 सालकसंगहि ॥ सोधीयह कुम्मसनमि
 लिरुलैहें स्वकीयमहि । जयसिंहव्याहि
 तनयाजुमैपहदलेलहिं यपिदिय । पि
 कवहु तथापि जडबुद्धमति लैन जातनि
 जवसुमतिय ॥ १३ ॥ दो० ॥ देवासंह

निजजामिपहिं । आतदेखिअकुलाय ॥
 नगरसल्लभरिनाहप्रति । लिखिदलअण
 पढाय ॥ १४ ॥ जामिपआवतसंगममनि
 जहठमन्नलनोहिं ॥ कूरमकोआसयलि
 खहु । यतिहमथितओहिं ॥ १५ ॥ जुसु
 निकेसरीसिंहजब । नगरसल्लभरिनाह ॥
 पुच्छिययहजयसिंहप्रति । कहियकुपिक
 छवाह ॥ १६ ॥ तुमसुरानरानधरमुकव्य
 भट । अरुछन्नैनहियेहु ॥ चिंतिसुबत्तर
 हहुचुप । अवननमुंदनदेहु ॥ १७ ॥ सुसु
 निसल्लभरिपतिलिखियदेवसिंहप्रतिप
 त्त ॥ आवनदेहुनबुद्धयहं । रसनहिकुम्भ
 बिरत्त ॥ १८ ॥ ष० प० ॥ देवसिंहतबय
 हउदंतबुयहितुनिवेदिय । तबहुअंधबुं
 दीसनाहिपञ्चोप्रयानकिय । यहलिखि

देवद्वारकुंचविरचियबेधमप्रति ॥ ताहिबि
 गारनतवहिमुखोबुधसिंहहीनप्रति । यह
 सुनतरानसंग्रामधकिदेवहितुबेधमलई
 । सद्धतविमूढजामीससुखसालकविचय
 हगतिमई ॥ १९ ॥ दो० ॥ नगरफुरकावा
 दपति । नाममुहुम्मदमिच्छ ॥ कूरमपति
 वासों कियउ । अगगबइररनइच्छ ॥ २०
 अबबुंदियअमैरकैं । जवनवहैलखिजु
 द्द ॥ भलकगगरभेजतभयो । बेधमपुरप्रति
 बुद्ध ॥ २१ ॥ सहजरावरवत्रियसचिवाता
 कोलैदलतत्त ॥ बेधमअायरुबुद्धसों । मि
 ल्यो लख्यो सुप्रमत्त ॥ २२ ॥ वहतअपि
 बहुदिनरह्यो । मंय्योदलसुमिल्योन ॥ है
 उदासनिजगेहतब । गोरवत्रियकरिगोन ॥
 २३ ॥ सकनभनवसत्रह १७९ ॥ समद।श

दसिमाद्य बलच्छ ॥ तजियरानसंग्रामत
 नु । दानसमयनयदच्छ ॥ २४ ॥ तबहि
 उदैपुरपदलहि । कुवरानां जगते स ॥ बुद्ध
 सुइतदेवहिं विपति । अदयदईजडएस ॥
 २५ ॥ सकनवेनभे सत्रहसमय १७६० ॥ अ
 लफगुनप्रवदात ॥ मंगलबारवउत्थि
 मिलि । प्रकटतसमयप्रभात ॥ २६ ॥ चुंड
 उलिरानी जहर । रहिनवमासप्रमान ॥ दु
 हितकुवबुंदीसके । दीपकुमरिअमिधा
 न ॥ २७ ॥ ॥ इति श्रीवंशमास्करे

महाचंपूखरूपे दसि गायने नवमराशौ
 बुधसिंहचरित्रे राकोनचत्वारिंशो ३५

मयूरवः ॥ ३५ ॥ ३५

॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५

॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५

ष० प० ॥ इत्यहहहप्रतापसिंहसालम
 जिहोमुव । अजुजहिं गिनिप्रवनीसम्
 प्रसम्मालि कुसथलभुव । अयोतब नपया
 हि नोहिं प्रदरिमुहलायो ॥ अजतिहिं को
 टाप्रायरानिप्रतिमंत्रचायो । विसवासि
 ताहितिय बुद्धकी कख्वाहीयहमंत्रक्रिय
 । ह्मदेतरवरवलुम जाय हठि बल दक्खिन
 अज्ञानहुबलिय ॥ १ ॥ तबप्रतापहदति
 करवामिल्यो दक्खिनमरहृदय । लखित्री
 मंतअनीकअतुलअप्रारंभमुदितमन । ब
 वापंडितरामचंद्रसंध्याराणं जिय ॥ पु
 ल्कापतिके पास वान वलमै पति एदिय ।
 इनतैहुअधिकश्रीमंतकेदलमालिक
 उलरावदुव । अज्ञानंदरावपरमारअरु
 कलकरावमलारदव ॥ ३ ॥ दो ॥

इन-चारिनदलमुख्यलिरिवि। मिलि
 प्रतापप्रतिभोद॥ दम्मलकरवरवटदेन
 किय। बुंदियपरसबिनोद॥ ३॥ इतकू
 रमकछुकज्जबसि। मालवप्रवनिबिहा
 य॥ सालमसुवनदलेलसह। जैपुरपत्तो
 जाय॥ ४॥ मरहट्टनपरतापमिलि। दे
 रवटलकरवसुदम्म॥ दलदुरसहलायोल्
 रन। कनलबुंदियकम्म॥ ५॥ सकइक
 नवसनहसमय१७९१। अपमारुमाधवमा
 स॥ बुंदीविंदियप्रानिकै। गहतअरक
 तमग्रास॥ ६॥ भुजंगप्रयातम्॥ बढे
 दकिवलीत्यौलगेनैरबुंदी। खुरोपकरवो
 धुमिहेधुमिखुंदी॥ रुगीज्वालिकादी
 पकीमालिकासी। रुगीनालिकाकालि
 काबालिकासी॥ ७॥ हल्योपोनहडेन

मैं गो न हं क्यो । बढ्यो घोर अंधार संसार हं
 क्यो ॥ चलै लोल गोला जगै अगि जारै । दु
 बाजू छि कै कोट दे दे दारै ॥ ८ ॥ परै गो र
 अटाल तु है पताका । उडै छट के मद्द मै ज्यो
 बलाका ॥ छि कै ल्यो गिरै धूम प्रासाद ब
 नी । पताका उडै अब है है पतनी ॥ ९ ॥
 उडै गे न गिद्धौ लो पच्छ अगी । लरै चं
 ग के पुच्छ ज्यो राल लगी ॥ डिगै कोल ल्यो
 बाल पाताल डोलै । अकूपार की भार सौं
 पिट्टि बोलै ॥ १० ॥ चलै तोप प्राकार को
 लोप मंडै । रिबरै खोम के लोप के रबंड खंडै
 ॥ जरै हट बाजार यो है तिजगी । मनो रा
 ल की तूल मै अगि लगी ॥ ११ ॥ कहौ ह
 गध पाटी रकारी के वारी । बुझा बै कहौ डारि
 कै नीर नारी ॥ चिलंगी उडै चित्र सारी न चं

हैं। मनो बागरवद्योतप्रद्योतमंडे ॥ १२ ॥ ब
 डेपट्टप्रहालिकापातवज्जे। घनी बालिका
 पालिका छोरि भज्जे ॥ कहों मारसो धेनु हं मा
 र कड्डे। बरै द्वार प्रागार पै छार बड्डे ॥ फर कैं
 कहों गोरव प्रासाद फुहैं। तार कैं ध्वजा दंड के
 खंड तुहैं ॥ गिरैं दो हरे ते हरेगे हगोलैं। घने
 पीठ पल्लव कबी चीन डोलैं ॥ १४ ॥ धुनै ध
 गोपान सौरव प्यराली। उडैं मेद पै इड्ड ज्यो
 गिह प्राली ॥ दुते ज्यो रहैं त्यों सबै लोक हा
 रे। मिली प्रोट बुंदी परे कोट वारे ॥ १५ ॥
 इतैं दुग पै वीर दै दै निसैनी। बढे बंदरी
 सेन ज्यो लंक लैनी ॥ भज्यो साल मां जीग
 ह्योर वू वरे क्यो। जनानां लु ल्योरारि धानां
 नरे क्यो ॥ १६ ॥ किते वीर जे सिंह जे प्र
 त्थर करे। तके समुह राग पै जानित करे ॥

हरामीन हड्डेन कीहारि होतैं । जनी प्रप
नी विपु रेजंग जोतैं ॥ १७ ॥ मची मार बा
जार में बाढ बज्यो । लग्यो कंप भी लून को
नीर लज्यो ॥ मिले दक्खिनी कूर मी वीर
पत्ते । करी कैं बजे हाड की आड कत्ते ॥ १८
॥ बढ्यो घन आरत बीधी बजारैं । उडैं पुं
ड त्यो रुंड न चैं आरवारैं ॥ कढे नैन न चैं गि
रैं भौह काला । मनो कंज के जोर पै भौर मा
ला ॥ १९ ॥ बढैं हत्य के ते बनैं लुत्थि बत्थी
। बनैं प्रच्छरी तैं धनैं लुत्थि बत्थी ॥ बजी
चाप टंकार भंकार भेरी । घने दक्खिनी कूर
मी सेन घेरी ॥ २० ॥ जुकैं सत्य द्वै हत्य तैं
मत्य कारैं । कुलाली किछो चक्रु मंडा उतारैं
॥ कढैं पारलै लार प्रतैं कटारी । मनो गार
रुना गिनी हत्य मारी ॥ २१ ॥ बढैं नारि

अन्धी किन्प्रन्धी बरन्धी । मिलैं कोचकों
 फारिज्यों वारिप्रन्धी ॥ बजीरीठ बुंदी सुवै
 सारवन्द्हे । सजेद किवनी लाव के घाव सद्दे
 २२ ॥ घनौ चक्क कों देरव नौ अक्क चाह्यो
 । सुपै पर्व भैगा हकी राह साह्यो ॥ सक्यो दे
 रिव्यों नाहिं स्वर्मानुसारै । न तो तदिनां जा
 मन्नादों निहारै ॥ २३ ॥ कहों मोह अरारो
 हकु कैं कथासी । बकैं बारुनी मत्तज्यों ग्रा
 म बासी ॥ किते उल्लटैं फाटि छत्ती कैं वारे
 । मनौ द्वार भंडार ही कि उघारे ॥ २४ ॥ भरै कैं
 कहैं रुपरी फुहि भेजे । फरै कैं कहों फिफ
 रै के कलेजे ॥ भिरेद किवनी बुद्ध के काज भा
 री । मिली जीति प्रो कूरमी से न मारी ॥ २५
 ॥ ष० प० ॥ मिलि प्रताप भरहु जिति
 बुंदिय जस लिनौ । गहि साल मनिज

जनक बंदि हुल कर बसि किनो । सालम को
 सरब सरपज्ज निज करन सुहायो ॥ नगर नै
 न वा जाय दई निज नाम दुहाई । बुंदिय
 कुराय मर हट्ट इतर समु काम तत्थ हिर हि
 य । दिस दिस न बत्त फुहिय द्रुत हि कवि न
 दाह द कि वन कहिय ॥ २६ ॥ दो० ॥ सह
 र लुटिय सालम गहिय । फिरिय बुद्ध नृप
 न्नान ॥ अरु चउ सत दुहुं ओर के । परे सुभ
 ट गत प्रान ॥ २७ ॥ कछ वाही कोटा नगर
 । यहु सुनि बुंदिय आय ॥ दिय महि मानी
 द कि वनि न । दुव दिन से नर रवाय ॥ २८ ॥
 कछ वाही महार कर । रक्खी बंधिय गनि
 ॥ अरु ता की तिय की अतुल किय भाव ज
 सम कानि ॥ २९ ॥ तें ह हुल कर महार
 तब । सधा लिय हित पणि ॥ बुंदिय जो जी

रा. वं. भा. बु. च. बूंदीमें बुद्धसिंहजूको अपमल ३२२ मयखः ४०
५०

हैं बुद्धरि। लै हैं तो हठ लगि ॥ ३० ॥ अव
रहु नय दल के अधिप। तिन हूँ कौ हित धा
रि ॥ दिने हय सिरु पाव द्रुत। रानी सुनय वि
चारि ॥ ३१ ॥ कछु वाही प्रति सिकर करि
। तदनंतर जय तोर ॥ प्रबल वीर पच्छे प
लटि। उमडिय दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥
कटक सुड भिय ग्राम कटि। रहि बिंजो
लिय नरै ॥ बेधम कगार बुद्ध प्रति। लिखे
मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥ ष० प० ॥ मि
लन न प्रायउ तब बुद्ध बंचिक गार बुद्धिय
पति। तब उपरि मर हट्टु गये दक्खिन स
बेग गति। इत बेधम तजि महल बुद्ध आ
राम बास किय ॥ रान कटक तिन दिन न
आनित त्यहि मिलान दिय। हति जानि
रान सग्राम की नृपहु सो कअ कर वन गयउ

। मिलिधाइभ्रातनगराजनमिकरनजोरि
 हाजरभयउ ॥ ३४ ॥ हुवहुवहयसिरुपाव
 नृपहिंनगराजनिवेदिय। प्रायरागनमृत
 जानिनृपतियहप्रकिवनॉहिंलिय। तह
 लुसाहपुरईसनामउमेदजंगजय। ता
 सजनकतिनदिननमरिययातैंतत्यहु
 गय। केसरीसिंहडेनतदनुगिनिसलूमरिप
 ताहिगय। इमराजभटनसनमानिप्रबनृ
 पनिजउपवनप्राहिगय ॥ ३५ ॥ दो०॥
 धाइभ्रातजिमनजरिकिय। इनहुहुहुंन
 तिमकिन्न ॥ नॉहिसुलियबुंदियनृपति।
 हुवतिनहितहयदिन ॥ ३६ ॥ इतबुंदि
 यलिनीसुनतहुपिनृपतिकछराह ॥
 बीससहंसचतुरगबलि। पठयेसज्जिसि
 पाह ॥ ३७ ॥ सालमसुवनप्रतापतब।

चतुरंगहिसुनिचास ॥ नैननगरतजिभ
जिगो। पुनिमरहद्वनपास ॥ ३८ ॥ अरु
कछवाहीसुनतयह। आवतभ्रातअनी
क ॥ बुंदियतजिबेगमगई। रहीनटेकर
लीक ॥ ३९ ॥ सोरहा ॥ कछवाहीनि
जकिन्न। इकमासबुंदियअमल ॥ लरें
बिनुहिपुनिलिन्न। हुतहिआयजय-
सिंहदल ॥ ४० ॥ कूरमकोटकराय।
याहिबरसपुरटोकइत ॥ दोसादुग्गब
नाय। प्रथितनिवाईदुग्गपुनि ॥ ४१ ॥
हरिगीतम् ॥ इतकोउदेपुरराननृपज
गतेसकालहिजानिकै। ब्रजकुमारिनाम
कजामिनिजतिहिं ब्याहजोअप्रमानिकै
॥ कोटिसदुरजनसहकोबरिताहिव्याह
नबुल्लयो। इनलिरियकूरमउग्रहैअव

कासउद्धहकोगयो ॥ ४२ ॥ यहजानिरा
नपदायप्रतिबचकुम्भजोअबकुपिकैं। ह
योहव्याहनआततुमभुवलेहैंलज्जहि
लुपिकैं। इकलिंगआनहैंहुतोतुममा
हिहैरनरीरिहैं। जोपैमुवापतिजेपुरेसत
थापितेगनतोरिहैं ॥ ४३ ॥ कोटिसयहसु
निकुंचकरिपहुंच्ये। उदैपुरप्रीतिसों। जगते
सतिहैंनिजजामिदियपरिनायहितर
सरीतिसों ॥ यहव्याहचंद्रहअंकसत्तर
इक १७६१ सबलभैभयो। आसाहमेच
कपकरवनवभियलग्नउच्छवउन्नयो ॥ ४४
॥ कोटिसनृपइमव्याहिदुलहनिस्वीयप
त्तनसंचर्यो। इकजानिरानहिंयाहिइत
जयसिंहजालमहैजस्यो ॥ इतरानभट
जयसिंहसगलाउत्तवग्धहपुत्तहो। जि

हिं ग्राम पिप्पलिया जु स्वामिय कामस्य
 दन जु त हो ॥ ४५ ॥ दुव पुस्त हितु वकी
 ल उत्तम हो उदै पुर को व है । साहसितारा
 धी स पै जु अनी स प्रब्दन तै र है ॥ तिहिं
 त ल्य साहु व छत्र पति प्रादा व प्रतिकरि
 अ हरै । बह दारि गदिय को न पै का का क
 ह रु क ही करै ॥ ४६ ॥ संग्राम रान निपा
 त सुनि तिहिं सिक्ख साहु व सौं च ही । ज
 य सिंह सौं यह जानि बाजे राय मंत्रिय हू क
 ही ॥ मम मात पूर बजात जात जु न्हान ति
 त्य बिधान सौं । तिहिं ले उदै पुर जाहु ए ह
 उदंत अक्ख दुरान सौं ॥ ४७ ॥ तुम रान
 कूरम सौं कहाय यहै कहावहु साह सौं । मम
 माल का सिय जाल जो दै है न कर रहिराह सौं
 ॥ खब्द मग दुमै कहौ रुकि है न दल जुत

जायहे । पुनि फलुगयसिर पारि पिंडन
अव्वद्वित्त आयहे ॥ ४८ ॥ जयसिंह
वयह नंदयो सुनिता समातहि संगले ।
आयो उदै पुर ओ मिल्यो । वहरानहि तु उमं
गले ॥ कर जोरि अकिय पे सवा नृप साहु
मंत्रिय आहि जो । तस मात आवत रावरे
घर पुछतीर यचाहि जो ॥ ४९ ॥ सुनि ए
ह समुह जाय रान अतीव अहर अहरी ।
महिमा निमंडि दिवाय डेरन कानि मातहि
लोकरी ॥ अकरोध माहिं बुलाय प्रीति बहा
य विनति अकरवई । सुनिरान विनति वा
त मंत्रिय मात मोद मई मई ॥ ५० ॥ गज बा
जि वल्ल बिसे सरान निवेदिता हि धनोन
यो । पुनि जाय डेरन सिक्खदै संग सीयसे
नहु कौंदयो ॥ नगरी सल्ल मरि नाह केसरि

सिंहमुखसुसंगभोगजयसिंहपुनिवहव
 गद्यनंदनसंगउज्जुमंगभोग॥ ५१॥ खुरता
 रमारनमुष्मिदेतदरारदारिमपक्कज्यौ॥
 वलकरवदलपतिमंत्रिजननीचंडसंगहि
 चक्कज्यौ॥ बहरकदंतिबडिनपैफहर
 किफैलतसीफिरै॥ मिलिफेटमंडुमपेट
 मैपवमानचंचलहूचिरै॥ ५२॥ श्रियमं
 तमातसुरेनयोंसहसेनजैपुरसंचरी। क
 द्वाहारायहुआयसमुहकानिरानहिलौ
 करी॥ जयसिंहप्रीतिवदायतासदिवाय
 डेरनमोदसौ॥ बिलंडबाजिरुदंडदुवकिय
 भेटवदिबिनोदसौ॥ ५३॥ महिमानिदे
 अलिअग्यसौअवरोधमध्यबुलायकै॥
 महुदुंबसमुहजायमंदिरलायमत्यहिना
 ॥ बडहारिगहियलाहिअपुनअल्प

आसनपैरह्यो। नगबस्त्रनव्यनिवेदिकैंहम
दासकूरमयोंकह्यो॥ ५४॥ तनयासुकुशा
कुमारिअप्यनजोदलेलहिंअप्यई। गहि
लाहिहत्यनकुमयोंधिरतासअंकहियअ
ई॥ कहिमोरपुत्रियबुंदिभूषदलेलरानिय
हैयहै। तसलज्जपुमिसुहागकीतुमकोसु
अज्जअमैयहै॥ ५५॥ तिहिंलायहिय
नियमंतमातहुअलिदमीलिपरापगै। रूप
येपचीसहजारछोरियजेनबुंदियकौलंगै
॥ जबकुममालवपलतलसुसाहखवहि
मेलकैं। निवैहजारलिरवायलियठहराय
दमदलेलकैं॥ ५६॥ तबददिरवनिनवृ
पसाहसोंअरजीकरायनिदेसले। यहअं
कथपियबुंदिपैंकहि कोउनाहिंविसेस
लैं॥ तिनमाहिंलौअियमंतमातबछोरि

दम्प इते दये । पुनि अकिव पुत्तिय लाय
 पुत्तिय नेह बीज बये नये ॥ ५७ ॥ अिय
 मंतमातहिंर किवेयों जयसिंह जयपुरमा
 सलौ । पुनि साहहिं तुलिरवाय मगकरमा
 फतास प्रवासलौ ॥ बलितास डेरन जाय
 कूरमराय बंदन कै बली । सजिस्वीय सेन
 हुलंगदैव हंपंथा परब मुक्कली ॥ ५८ ॥ म
 दरा न केसरि सिंह न्यो जयसिंह तत्थ हिर
 हे । दल न्ये रसंगहि तास दै पुनि मास जैपुर
 जेरहे ॥ नगरी सल मरि नाह केसरि सिंह धु
 ल न्यधीर ल्यो । जयसिंह बगध हनंद होय ह
 नेद पाइ क धीर ल्यो ॥ ५९ ॥ सनमान दोउ
 न को कालो क बवाह डेरन जाय कै । हय ह
 न्यि हूर मसौ तिले पडुं चै उदै पुर आय कै ॥
 गल्लार न्यार परमार ये करि कैद सालम को

तुलें। तजिनैर बुंदिय कुंच के पडुंचेति मालव
 नैरि तैं ॥ ६० ॥ परमार दोलत सिंह सुसेन द
 विन संग हो। यहरान को उमराव हो अरुनी
 तिजंग अमंग हो ॥ तिहिं अकिसालाम
 सिंह को कैं लेहु जा मिन है अबैं। दुवल
 करु रूपय लेहु सोइ न्ह देहु जावहु मै त बै
 ॥ ६१ ॥ जित नैं उदै पुर मै र हों अरु रान को
 जस बित्थरैं। मम पत्र लेहु लिरवाय ओलि
 रि देहु तुम इन के करैं ॥ इन को अमात्य हु
 इ करु रूपय लेन संग हिली जिये। तिहिं ग्राम
 पंच हजार को हम दै हिं सत्य पती जिये ॥ ६२ ॥
 तुम को हु बुंदिय को पटा मिनि है हजार प
 चीस को। सुनिए ह दोलत सिंह पत्र लिरवाय
 सालाम हीस को। अरु अपराव मलार सों
 परमार सों परमार सों इम अकर वइ दुवल करु

रुययदैहिं पैगृहलेहिं तो लिखिसो दई ॥
 ॥ ६३ ॥ हमरानजामिन बीच जो नहिं दैहिं
 तो हम दैहिं गै । बलिरान भूप बलिष्ठ जे इन
 तौं निदरिहु लैहिं गै ॥ परमार्यों लिखि प
 च जो परमार हुल कर कों दयो । निज संग
 हुल कर दास मह महा दि देव सुपै लयो ॥
 ६४ ॥ पुनि जे उदै पुर आये दकिवन सेन
 तौं दस सिक्ख कैं । सुनि रान चाहि सिराहि
 दोलत सिंह कों लव लिक्ख कैं ॥ लिखि प
 च जो दि दले लको दस दस साल ममंगये ।
 बल जो दले लहु लको हिं तु कपर्द दोय दुना
 दये ॥ ६५ ॥ लख मह दोलत सिंह जु क
 रिसि कव साल मरान सौं । चलि नैन वानि
 ज नैर आये उभीरु उझरि भान सौं ॥ निज को
 सौं लहु लक्ख रुपय देस दकिवन मुकले

पुनिकुम्भप्रायसपायदोउनकोंहिदिनप
 टाभले ॥ ६६ ॥ ससिअंकसत्तरुइक १७५१
 संबतमासकृत्तियगोरमें । कछवाहकियसब
 भूपइकतजानिदकिविनजारमें ॥ मेद्वारमें
 गोंचनामकग्रामसर्वमिलेतहों । अरजीलि
 रवायपरायदिल्लियसेनभेजहुयेयहों ॥ ६७
 ॥ सुनिसाहसेनसमस्तसंजुतरवानदीरह
 मुकूल्यो । यहमासअग्रहनक्षत्रापंचमिचं
 टचक्रहिंलेचल्यो ॥ द्रुतप्रायमालवदेसमें
 बुलवायकूरमहूलयो । बिलुरानतबसब
 भूपसंजुतसोहुमालवमेंगयो ॥ ६८ ॥ तिहिं
 सालबिचइतनैरबेघमपोसमासअमा
 जहों । कछवाहरानियदेहहानियदानकें
 रुकरीतहों ॥ इतकौनबाबरुकुम्भमालव
 मेंमिलेअलिप्रीतिसों । सबहिंदुभूपनस

त्यलैरनमंत्रमंडियरीतिसौं ॥ ६८ ॥ अभ
मल्लनृपमरुईसवीकानैरभूपतिसत्यही।
कोटिसदुरजनसल्लसोपुरभूपगोरसमत्य
ही ॥ रतलामरुबुवकेरुईडरकेकबंधहुसं
जुरे। बुंदेलनृपदतियादिभूपभदोरभंडप
बिफुरे ॥ ७० ॥ रचिमेलबीरबघेलबंधु
वभूपसम्मलिसज्जयो। नगरीकरोलिय
भूपजह्वसेनसंजुलसोठयो ॥ पुनिरूपनै
रकबंधभूपजुपायलगियअनिक्कै। पुनि
आयनैरभनायभूपतिजोरमिच्छनजानि
क्कै ॥ ७१ ॥ बजरंगराघवदुगकोमहिपा
लखिअियहुमिल्यो। नगरीसिरोहियदेव
रानृपअनिआयसक्कैमिल्यो ॥ रचिचक्क
दहियआयमहियनैरजैसलमेरको। ब-
लिनैरपहनिमूयउमदआयआतहिबेर

को ॥ ७२ ॥ कछवाहनर उरनाह मिच्छन बा
बहू कितने कहूँ । मिलि खानदोरह सँ सबै प
रित त्यरुं धि दिसा चहौं ॥ सब कौं सिरा हिरु
खानदोरह से न दकिब न पै सज्यो । मरह दू से
नहु पि किरु कै चहिर दू समुह दू गज्यो ॥

७३ ॥ रचि मंत्र पंडित राम चंद्र मलार औ पर
मार त्यों । राण जि स ललि संधिया बहि जं मजी
त बिचार त्यों ॥ दल मों हिसों परवरै तन प्रदु
हजार कदिरु यों कही । तुम जाय जै पुर देस लु
दहु त्यों हि मिच्छन की मही ॥ ७४ ॥ असदार
प्रदु हजार वेत वसी मजै पुर जाय कै । दोडारु
टों कबि गारि लुहिय कुम मन्त्रान उठाय कै ॥
नगरी निवाइय लुहि कै पुनि लुहि माल पुराल
यो । लंबारु डगिय लुहि पडु लिदा वदु वर पै
दयो ॥ ७५ ॥ तिहिं गारि जारि नरान नीर रुक

यसा लिय लुटई । मोजाद पत्तन लुटि कै हल
 सरि यत्तन दे लई ॥ इम रारि खगन ऊरि मारि
 बिगारि जैपुर देस मैं । पुनि नैर संभर आदि लु
 टिय साह के प्रवसेस मैं ॥ ७६ ॥ जिम कुम्भ
 भीयें हंसाह को मर हट्ट नाहिं गिने मिले । तिम
 तेहु दाखे वन बीर मन्त्रि ग्राम जैपुर के गिले ॥
 असवार पान हजार अट्टन लूट यों इत मंडई
 । उतरा लचंद्र मलार ओपर मार बगन कौल
 है ॥ ७७ ॥ निस सुत्त साह अनीक पै पबिपा
 ल पक्षय ज्यों परे । बजि बंब आनक त्यों अछा
 न ककूटि बिबल लए करे ॥ तब ज्यों हुते ति
 मरा । हके उमराव भीरु कभ गये । लचिकुम्भ
 और हरवान दोर हल जिम गहि लग गये ॥
 ७८ ॥ तब सेन भजत साह को दरिनी नख
 रान खंडयो । उडिरे हत्तबर यों छई जिम मे

इसंबर मंडयो ॥ अचलाहु लकरवन फोज की
 धमचक्र थकन लैंधुकी । बढि ब्याधि दिग्ग
 ज दंत तुहिसमाधिसंकर की चुकी ॥ ७६ ॥
 फरर कि फीलन के तुत्यों थरर कि अंबर
 च्छरी । बरर कि दडु बराह भूदरर कि क
 च्छप मोहरी ॥ तरवारि दक्खिन सेन की
 दलमारि दिहिय को दयो । दृगमी चिज्ज
 त साह के दल राह बुंदिय को लयो ॥ ७७ ॥
 लगि पिह दक्खिन के अनी कन लागच
 मलिलों करी । इत अगग प्रायरु साह की
 पृतना धुनी वह उत्तरी ॥ तजि भानपुर को
 दान दी लग सेन भज्जत ही गयो । जवहु
 सरुप्पय इक्क को इक सेरत दिन बिकयो
 ॥ ७८ ॥ अति ही बुधातुर साह को दल प्रा
 पगाइ मउत्तस्यो । पुनि प्राय बुंदिय रखात

पानदलेल सालमकै कस्यो ॥ कछवाहना
हरखानदोरहसर्वभूपनसत्यही। रहित
त्यमंडियमंत्रदकिवनसेनमनिसमत्यही
॥ ८२ ॥ कछुदेसअज्जदयें बिनाउनकोन
हीमनधपिहे। तसमालअकवहुसाहसैं
सुनिसाहमालवअपिहे ॥ तबरखानदो
रहमंडियोंपठवायबिनालिसाहकैं। लि
खिदेहुमालवकैंनतोरवलआतदिल्लि
यचाहकैं ॥ ८३ ॥ यहमंडिअोइतसेन
दकिवनपैंहुकगगरमुकल्यो। लुमलेहु
मालवसाहसैंकरिसामसंचितजोफल्यो
॥ मरहुहुबीरनबंचिकगगरबत्तमालवसी
करी। जवनेसहुसुनिपत्रमालवदैनबत्त
हिअहरी ॥ ८४ ॥ लिखिपत्रमालवदै
नफौजवनेसबुंदियपेरयो। सुनिरखान

दोरहकुम्ममोरहसोहिदकिवनकोंदयो
 ॥ मरहदु तत्तह बंविपत्तहलैअवंतिरबुशी
 भये । नदिनाहिचम्मलिउत्तरेपुरेतिमाल
 वहीगये ॥ ८५ ॥ मधुमासचंद्ररुअंकस
 तरुइक्क १७९१ संबतयोंभई । तबरखान
 दोरहसिकवभूपनदेरुदिलियहीलई
 ॥ तबचाहकैंकछवाहभूपतिदुग्गबुंदिय
 देरवनें । चढिकैंदलेलसमेतहलियइक्क
 बीरदुलैयनें ॥ ८६ ॥ प्रबिस्योसुउत्तरद्वा
 रपत्तनपंतिपिकवतसंचर्यो । चढिदुग्गाह
 लियपोरिहैनवठानकोकहिउत्तर्यो ॥
 सठपापसालमआयसम्भुहजोरिहत्यन
 कोंनयो । इमराजमंदिरपिकिवैपुनिकु
 म्मपबयपैमयो ॥ ८७ ॥ बरसिंहभूपतिअ
 गाबंधियदुग्गजोबिगर्यो लरव्यो । कपिसी

समितिरुखातिका कहुँ खोमतोमपख्यो
 लख्यो ॥ कखवाहनाहदलेलसँनवदुगाबं
 धनकीकही। सुनिसच्चमनिदलेलहस्वसुरे
 सउक्तकियोसही ॥ ८८ ॥ रहिदोयरत्ति
 रूप्रफिरियोँजयसिंहजैपुरसंचख्यो। नव
 दुगाबंधिदलेलहइतसज्जबुंदियकोक
 ख्यो ॥ इहिंसालअगहनमासमैंजगतेस
 रानहुजानिकैं। दियनैरबेघमदेवसिंह
 हिंफेरिकगगरानिकैं ॥ ८९ ॥ दुवलफरव
 रूपयदंडकेलियरानराउतदेवसों। सहि
 दुःखदारिदविगख्योइमसालजामिपसेव
 सों ॥ पुनिरानकामसुराजकोनगराजसों
 सबछिनयो। लखिवृद्धकोविदजोबिहारि
 यदासकायथकौंदयो ॥ ९० ॥ जिहिंअ
 गदिहियजायकैंसबरानकामसुधारयो

जयसिंह कौं विचडारिकें लिखवाय रामपुराल
 यो ॥ पुनि भीत पंद्रह अब्द तैं श्रिय द्वारकाय थजो
 रह्यो ॥ अबरान बुल्लि बहोरि हूति हिं सुरव्यसंनि
 यकें चह्यो ॥ ६१ ॥ दुव अंक सत्रह १७६२ मानसं
 बत पकर उज्जल पोसमें ॥ निज बंधु सूप असा
 न नलि रान उफनि रोसमें ॥ वन पंति दुद्ध रब
 १ ॥ वन रोस साहि पुरानो ॥ ६२ ॥ तनरा
 सजाहुं वन घोर तोपन में रह्यो ॥ ६३ ॥ तनरा
 न सभ्य लिहोन कौं जयसिंह जयपुर सौं चढ्यो
 ॥ पुनिराह साहि पुरे सकों अति सो कदूर मको ब
 द्यो ॥ तब दंड रुण्य लखव साहि पुरे स अणिय
 रान कौं ॥ कौरे कुं वरान हुओ उदै पुर रनि देव धुव
 मान कौं ॥ ६४ ॥ इहि साल मेव क माघ मै दबिरो
 ग दुस्सह तें गह्यो ॥ निजनै नवापुर सौं हिं अंध सु
 मंद साल महुम स्यो ॥ गरुष दिखिय आरइत

युजरात जित्ति उबाह सों । अरजी करी कर
 जे रिबुद्ध हिं देन बुंदिय साह सों ॥ ६४ ॥ तेंहें
 खान दोरह जो न बाबु जबाब पेसन हो न दे । जय
 सिंह को मलि मित्र यों अरजी सु लगान जो न दे
 नव मास बुंदिय काज यों मरु भूप दिहिय मै
 रह्यो । बरव सीस किन बिसेस पै यह तो न साह
 कस्यो कह्यो ॥ ६५ ॥ तब कुषिके बिनु साह आय
 स सेन धन्व पसज्यो । सब देस लुटत साह को
 मरु देस गबित ह्ये गयो ॥ दुव अंक सत्रह १७६२ सा
 क्यो सित पकर फगुन मै भई । इत साह दकिव
 न मै मिल्यो यह जानि कूरम की लई ॥ ६६ ॥ तब ही
 न बाब उमीर खां बुगली सु दोउन की करी । प्रभु
 खान दोह कुम्भ मो रह्यो हरामिय अहरी ॥ मिलि
 सत्रु सेन न सों गये अरु लाभ दकिवन तै लयो । दु
 व कोटि रुपय देस मालव मंडि साहु वकों दयो ॥

॥६८॥ चुगली सुजानिरु कुम्ह । पुनि एनद
 किनेन सुकल्यो ॥ श्रियमत अन्वुदेग ह्योहम
 दोरदिल्लिय कोदल्यो ॥ श्रियमत ह्नुपसाह मनि
 यवचिपन जुदेगले । दलदर्य दुद्धर बंधि कैंगलि
 कालकीलिय तेगले ॥६९॥ दोहा ॥ नृपसा
 हुवन वल वरदल । नगरसिलारा नाह ॥ सजि
 तभोताको सचिद । बजेराय दुबाह ॥ १०० ॥
 षट्पदी ॥ बाबापंडित रामचंद्र कुलकर मस्त्रा
 रहाराणंजिय संध्यासुप्रथित आनदपमारह
 । अबहुमुख्य करिइनहिं चढिरु श्रियमत चला
 यउ ॥ सालम सुवन प्रताप सोडु संग हिमट
 यउ । कूरमहिं जानि आह्वान करइ मदी किनेन
 मनउपरिय । तदिन अपारदलभार तकि फल
 पतिफेन नफुं करिय ॥ १०१ ॥ गरदगै न बिथरि
 यजरदजमजन करंग किय । मरदमं निउ म्मदि

यदरदभूदारदुदिय। पंचप्रयुतपकरवरिय
 सहंसदंतावलसज्जिय। दलपदातिदकिस्व
 नियगरबिदुवलकरगरज्जिय। बहुविधिनि
 सानभेरिय बजियवलनकीबहुकतबुदिय।
 पेसवाप्रथितविप्रसुबलियचागरवरजीतर
 चदिय॥ १०२ ॥ इतिश्रीवंशभारकरेमहावं
 पूरुवरपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहव
 रितेचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ १०३ ॥

॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दोहा॥ कटकविप्रदरकुंचकरि। आयउलौना
 वाड॥ सुसबरानजगतेसमुनि। लगिबधा
 वनलाड॥ १॥ जबकाकानिजजनकको। बु
 दितरवतप्रमिधान॥ बहुरिसलूमरिनाहवि
 य। पढियेप्रेमप्रमान॥ २॥ मिलनगयेश्रीमंत

सौ । तव वहसामुह-आय ॥ मुरव्यरानभटमनि
कैं । विवलयि-अगबढाय ॥ ३ ॥ प्रथमलिखि
पथीमंतमति जिपुरनृपवरजोर ॥ सजिमि
सापहुमरानसन । आनुहुपुनिहम-ओर ॥ ४ ॥
यतैं उपरिपेसवा । प्रथमउदैपुरपत्त ॥ सम्मुह
आयउकोसदस । रानहुहितअरुत्त ॥ ५ ॥
तसिरवाहहिअगमगह । तिरवलोपुमरलसं
पेनमिहैंअरानप्रति । विवसलामश्रिय
मंत ॥ ६ ॥ सवगमम् ॥ रानहुचिरचिप्रनाम
मित्योअतिमोदसूं । बाजिरायहिं लायबधाय
बिनोदसूं ॥ आहुडग्रामसमीपसिदिरदल
कोकस्यो । होजहैंचंपकबागअप्यतहैंउत्तर
॥ ७ ॥ पुनिपडईमहिमानिरानबहुरीतिसौं ।
रुप्यपंचहजारबसनगजवीतिसौं ॥ दूजेदि
नाश्रियमंतसभारचिबुल्लयो । विप्रहुगोतब

बेगनिह विषखोनयो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबदुद
रप्रच्छन्नतक । आर्यउसम्पुहरान ॥ दूजीगदि
यचिप्रहित । बिछवाईसुविधान ॥ ९ ॥ तिहि
उठवायरुपेसवा । बिनुगदियगयबैरि । रच्यो
अदबयहरानको । प्रीतिप्रलुलहियपैरि ॥
१० ॥ गदियपरशानारह्यो । सिरदुवचमरठ
राय ॥ चमरइकदुवबिप्रसिर । बलिहितबत्त
बढाय ॥ ११ ॥ शनकहियनमनीयतुम । तबदि
जकहियसचाव ॥ मोहिगिनदुनृपरावरो । जि
मसोलहउमराव ॥ १२ ॥ शनतबहिजरजीम
जुतहयचउहलियएक ॥ नगजरायभूरवनन
वल । बिप्रहिंदियसबिवेक ॥ १३ ॥ सडुलकर
इकसालप्रति । स्वीकरिदकिवेनदम्म ॥ दियउ
परगगनबनहडा । तिनमैलिरिहितकम्म ॥
१४ ॥ तालमध्यइकरानकै । जगमंदिरप्रासाद

॥ ताहि दिखावन कीकही। वासर दूजे बाद ॥ १५ ॥
 रानपिसुनबनि कोउ तब। बाजेरावहिं न्यकिरे
 ॥ लैजावतमारत तुमहिं। रानकपटहियरकिरे
 ॥ १६ ॥ दकिरेन मंनिय एहद्विज। होतथापिसु
 निरह ॥ मूरखसञ्जी मनि कै। कियरोरनारुनदे
 ह ॥ १७ ॥ पढियै कहिरानप्रति। मै बलघात
 मरौन ॥ कलहि मंड सज्जहु कटक। करहिं साम
 अब कौन ॥ १८ ॥ पज्जुदिका ॥ यह सुनतरा
 नहुव सोकलीन। पढिये पुनि दुवमदवे प्रवीन ॥
 तरवते सरुके सरिसिंह तल्य। जाय रुद्विज बंदि
 यजोरिहत्य ॥ १९ ॥ कहिरान अधिक सनमान
 कीन। अप्पुन नहोहु अप्परख अप्पदीन ॥ किहि
 मूढ कहिय यह दोहकल्य। सेकहुहु अप्पसब वि
 धिसमत्य ॥ २० ॥ जो कहहु नाहिं तजि देहु रो
 स। नाह कन देहु अप्पमिसाप दोस ॥ प्रियमत लह

पिभो नहि प्रसन्न। तव सत्तल कवदिय दम छन्न।
 २१ ॥ संग्रामरान की मात अगग। चहुवानिम
 रे निज मुग्गि भग्ग। तव दुव विल कव मित क
 न कदान। सेरान दयो विप्रहिं सयान ॥ २२ ॥
 दल कुंच किय दुले विप्रदान। श्रिय द्वार आय कि
 य प्रभु मनाम ॥ सत पंचरम्भ किय मेद तत्त्व। व
 ल्लम कुल ॥ २३ ॥ तव ॥ २३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नाम गिद्ध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 विसेस ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 हृद च लिय दल कुंच न पि ॥ २४ ॥ पुनि होय
 जाज पुर नगर पास। बल किय उके कडिय द्रंग
 वास ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कहुइ च लाय ॥ २५ ॥ धमिनेर छण गढ नि
 कट थाम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तव कूरम राह अक्खि। हम मिलहि रान धररी

तिरक्खि ॥ २६ ॥ पठई कहि विप्रहु नहि प्रभा
 नहेरान सुपहु साहसमान । जेक बहु निच्छ
 अनुचर बनेन अनुचर सदा हितुमलोभ
 न ॥ २७ ॥ जिहि हेतु मोदु को अधिक जा
 निपेमिलहिं अज्ज समता प्रमानि । लुमजा
 नत गदिय दे उठाय पै बैढ हिंदु वड कपीर पाय
 ॥ २८ ॥ हमत तथ दुद किखन ओर होय देवा
 मतुमहिं इम मिलहिं दोय । जय सिंह दुय
 ह सुनि प्रबल जानि दुक आसन स्वीकारि मि
 लिय आनि ॥ २९ ॥ चढि उभय बक्क दुब
 सज्ज आयति नबीच दुक पट गृह तनाय ॥
 तामां हिं मिले दुव गजन कोरि बैढे दुक आस
 न जानु जोरि ॥ ३० ॥ द्विज कियतें हं दुक
 जंत्र पान लगि धुम कुम्भ मन बिचरि सान ।
 पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय बैढारि मि

सल-आयतवनाय ॥ ३१ ॥ दक्षिणमहत्वा
 जरिसबहिलत्यइकनमलार-आयउसमस्थ
 । संधाजिहिं बुंदियलेनलिनद्विजबाजेराय
 दुवचनदिन ॥ ३२ ॥ श्रियमंतयहोमिलि
 पलटिपोनकछवाहबुंदिछोरदुकह्योन ।
 सारमसुतसजुत-आसुउहिइहिंकारनदुल
 करचलियरुहि ॥ ३३ ॥ श्रियमतकुम्भ ॥
 इमसुभाय-अवनिजनिजडेरनरुमय-आय
 योहंसुनियविप्ररुदियमलारगवतवहिनि
 होरनप्रकटिप्यार ॥ ३४ ॥ अकिरियतल
 दुलकर-अत्य-आयतुमबुदिअरैलनकिय
 उपाय । करिसपयलेनपुनिदेदुलेनतुमसेग
 वतो-अवहमचलेन ॥ ३५ ॥ नृपसादुस
 पयलवविप्रबुलितैहो-अवबुदियलेगतु
 ह्ति । विषमैककुवारसरजानदेहुदोउनमना

दूरमरुविप्रपुनि मिलनकीनलहि कूर्महार्द
 रविमन्तलीन । उलतैदलनकरवनतुमबनाय
 आनहुइतजेपुरहेसहाय ॥ ३७ ॥ अबही
 ललरनअवकासअच्छदकिरेनअमात्यतु
 मनीतिदच्छ । मिलिबहुदिहैंहिंमिच्छनमि
 लायजबकरिहलनसज्जहुंगेहजाय ॥ ३८ ॥
 दूरमगलजेपुरअकिरेहअप्रियमंतमुखी
 दकिरेनसनेह । दुवअंकसत्तइक १७६२
 सकदुरतयहमयउमासफगुनउदंत ॥ ३९ ॥
 दूरहुंपतदनुकरिदिजप्रयानवेधमदिगआ
 यरुदियमिलान । बहैनदप्रतापहइसुअमं
 गप्रियमतचरहुलैइकासंग ॥ ४० ॥ बुंदी
 सनिकटगयनमिअवीरसजयइउदंतजपि
 मसधीर । कयविसवाहुयहतनकहायतुम
 तैनजुदेहमजुदिराय ॥ ४१ ॥ अबलौहम

प्राये लोभठानिलैहै पुनिबुंदिय लेहु मानि
 बुंदीसामिलन हित कहु कहाय दारी सुविप्रइ-
 मरुलिरवाय ॥ ४२ ॥ तदमंतरदक्खिनदि
 जमपत्तगोहडु प्रतापहु संगतत्त । इतदिस्त्रि
 मरुमकुजसउहि श्रिय भित मिलन सुनिसा
 हरुहि ॥ ४३ ॥ तबसाहनि जामन मुल कहु
 ह्मि प्राय उनवाब सुनिते गतुलि । होय हकली
 जरवा नाम वीरगा जुहीरवा सुतरन गभीर ॥ ४४ ॥
 वह भट्टुत दिस्त्रिय नेर प्राय वलिसाह हितु
 सिजदा विधाय । जवने सहि कूरम कुपित जा
 नि पुनिलिखिय पदक्खिन प्रमानि ॥ ४५ ॥
 अबसर अब प्राय उभुमिलेन श्रिय मंतवे
 गप्रावहु ससैम । यह सुनत बज्जि जित तित
 निसान उभडिय अनीक सागर उफान ॥ ४६ ॥
 फहरायहु इहियन फरकि भहराय भज्जि

भीरुकभरकि । सज्जतभटबाहुलकवचदो
 पञ्चलिकायचरकरनचढततोप ॥ ४७ ॥
 स्वरसानधारप्रायुधखनकिपावकप्रचंडगा
 रतमनाकि । दकिवनपनीकगज्जियदुरंत
 इहिंरीतिवीरसज्जियअनत ॥ ४८ ॥ संब
 लगिअकहयइक १७ ६३ मानइसमासवि
 जयदसमीउफान । सकमियसिताराधीससे
 नमियमतलुकरचलगिभुमिलेन ॥ ४९ ॥
 अतिकायबाजिकोंदलअकासमिटिजा
 तदुगापछरमबास । रबिलियउढंकिखुर
 तारदेहमडियकिधइआसारमेह ॥ ५० ॥
 किलकिलतरंगकलियकरालखिलरिल
 तमलमलरवेगशाल । जुगिनिजमातेजय
 जयतिजापेअपटतमुकंतवेतालनईधि ॥ ५१ ॥
 दकअकलसंगअवनअमत्तरकसकतगिद्ध

सिरहोतवृत्त । उमरूकडक्कडाहलडमंकि
 बहनायदूरनूपुरमकि ॥ ५२ ॥ सजिचलि
 यसंगभैरवनिस्तनफरकियसिचानहियअ
 सनफूल । आतापिप्रोद्यठंकतअकासफेरं
 उफलंगतगिरननग्रास्य ॥ ५३ ॥ इमचलिय
 संगफलचरअनेककटकटविरावप्रेतनकि
 लेक । लगिअतलबितलसुतलनलचक्का
 पुरकतबराहदंतुलिमचक्का ॥ ५४ ॥ ग्रावन
 तुरतालनगरतअग्निजिहिरवसमाधिप्र-
 मथेसजगि । अकबकतसेतुसागरउमंमि
 धुल्लतदिसाननरमदकिभगि ॥ ५५ ॥ लरर
 किभुम्भिछेकततुरवारदररकिदेतपब्वय
 द्दशर । रतनकिरावककटककरीनछननकिहो
 लजलनदनचीन ॥ ५६ ॥ उडिजातउपल
 चरनअनलगडिजाततिमिरदूरनदिगत ।

इमराजप्रंदुप्रैचतप्रभंगरज्जुकिरवेत्र
 फलमपनरंग ॥ ५७ ॥ बहिचलियधातुप्र-
 दिनप्रनेकसलसलियपंथगजदानसेक ।
 इमहलियसेनदक्खिनप्रनंतदिह्रीसमुलक
 दधतदुरंत ॥ ५८ ॥ सुनिसाहसेनसज्जिय
 सितावबलमुख्यउभयरक्खियनवाव ।
 इकरवानककरदीनिजदजीरबलिसंगनिजा
 मनमुलकबीर ॥ ६० ॥ बुवचलियसेनह
 रवल्लहंकिघनघोरघंटपक्खरधमंकि । कु
 लटाकनीनिविधितरलवाजिउडुतमलंगि
 आगामिआजि ॥ ६१ ॥ मनकेरुपवनकेजे
 मित्रचलतरसधावमंडतविचित्र । खंधनपि
 नम्रचहतखलीनमखत्तलवगगजरजित
 हजीन ॥ ६२ ॥ विरचतनिकम्मनभिजेर
 हजातमंपितउसदृशखंध । दत्तम-

अथ यत्नदपल्लवनिर्वाततिमिमच्छमन
 ह्वैः प्रदीपतिरात ॥ ६३ ॥ भुवकोतिप्रबलव-
 ल्लवभरंतकामितिगरत्वगगतजानिकंत। सा
 दिनसुरवसाधितसहजसध्यफिरिजातचत्र
 कीर्त्योहंमध्य ॥ ६४ ॥ असवारचहतजिहिं
 रूपद्रव्यनच्चिरुदिरवातसुहिरूपनव्य। रन
 अजिरत्नज्जिनकेरकावहरवातचढाकन
 मनहिसाव ॥ ६५ ॥ इमचलियप्रद्यथेइन
 थरकहंक्रियअनेकहत्यिनहलक। चंच
 ललखिपच्छिनकरतचोटजिनअगाअंबु
 इकरवतअगोट ॥ ६६ ॥ अतिवीतपायरो
 पलअडोललगिवहुरिडाकबढिजातलो
 ल। जंजीरलंबअचतसजीरसिररचतलो
 रणुजारसोर ॥ ६७ ॥ आथोरनरकरवतबहु
 विरासिहंकलतथापिउद्धतहुलासि। इम

हलियसाहपृतनाअभंगदकिवनदलसम्मु
 हरचनदंग ॥ ६८ ॥ सुनिइनहिंप्रातदकिवे-
 नदलेसडुतबढियबिगारतसाहदेस । खटमा
 सबहुंप्रावतबितायचक्कसुअबदिल्लियसि
 रचलाय ॥ ६९ ॥ ग्वालेरलुटिबहुअरिनगं
 जिअबचलियअगारसबीररंजि । मगचुकि
 अगगकहिगयउमिअइनअनिलईदिल्लि-
 यरवइअ ॥ ७० ॥ सकवेदअंकसत्रह१७६४
 सुभायअष्टमिबलअमधुमासअप्राय । दि
 ल्लीपुरबाहिरपृथुलदोरअतिरुचिरशिल्प
 विधिअोरअोर ॥ ७१ ॥ थितइक्ककालिका
 देअियानमेलातंहंतदिनहोमहान । बढिर-
 हियतत्यलकरवनबनिज्जजिन्हलरवतहोत
 धनदहिंप्रचिज्ज ॥ ७२ ॥ दकिवनदलअ
 यरुखगनखंडिमैलावहलुहियजुलममंडि

कढिकढि तब बिबलबनिजकारतजिद्र-
 चमजियकालिंदिपार ॥ ७३ ॥ कोदिनध-
 नदिल्लियकहरकुपिलुहियमरहदनका-
 निलुपि । बहुजलजहीरमानिकविथारि
 अतिमुह्यतालमरकतअपार ॥ ७४ ॥ इत
 मरुतनरुपयअनंतभूवनजरायकुंडल
 सुलंत । कोदीरतिलकअपीडकेकअरुता
 डपयतपुरअनेक ॥ ७५ ॥ सिरपेचहारके
 यूरसचअमिकिअवापकटिसूत्रअच ।
 बहुमारिहृदलुहियविजाजसनसूत्रमयरु
 रंकवसमाज ॥ ७६ ॥ कोसेयपग्घसाटिनक
 लापनीसारनव्यथुरमोअमाप । अत्तारबि
 पनिलुहियअनेककरदीरुबीतिपुनिभक्ष्य
 केक ॥ ७७ ॥ हारवद्वदिल्लियहंतहंतद
 लकदियतल्यपुरतैदुरंत । इतरचतवृद्ध

किवनअनीकश्रियमंतसज्जचाहतसमीक
 ॥ ७८ ॥ यहसुनियकमरदीरदांवजीरबलि
 कहियनिजामनमुलकबीर । अप्पनमगलु
 किरुअगगप्रायदिल्लीरवलपत्तेलैनदाय
 ७९ ॥ यहअकिदेमुरेलैदलअमंगपहुंचेअ
 थारहिंजिमपतंग । उतलैदलपत्तनसौदु-
 अप्रायइततैलबाबदुवहयउडाय ॥ ८० ॥
 मरहठलहेलुदतप्रमत्तप्रतिमहमिच्छदुहुं
 अप्रारपत्त । मचिसमरघोरसमसेरमारबजि
 निनदवंबत्रंबकविशार ॥ ८१ ॥ धरधुक
 तधुज्जेधावनधसकिकुंडलिकपालदरकि
 यकसकि । कटिपरतमौनरदअधरकंधमि
 लकिलतमुंडनद्धतकबंध ॥ ८२ ॥ डमरुस
 महुडाहलडमंकिधहरानडोलपकवरधम
 कि । ववकारिकरतवावनविलार । रश्मि

जहं जुगिनिकेलिरास ॥ ८३ ॥ जितति
 तहि पत्थ उडि परत जत्थ तुंवा कितरल न्प्र-
 कथूत हत्थ । न्हि गगनटो पचम कहिं न्प्रने
 क लुटि जगर जात तननं कितेक ॥ ८४ ॥ सय
 गिरत भिन्न बाहुल समेत न्प्रहि पंच फन किं
 चुक उषेत । जिरहन लिच कढि दृग फर कि जा
 हिं मानहुं गरव दारान जाति मां हि ॥ ८५ ॥
 कदि कदि गिरंत कहुं सुच्छ कंदरंगे मृगनामि
 कि दो जि चंद ॥ नारोद फटि कहुं कढ तगल
 ये चातरु तै जिम गर्भ पत्त ॥ ८६ ॥ कंकट वि
 दारि प्रविसत कटार धित बीच पन्नग कि मच्छ
 वार । रंजर कढि पंजर पार जात सो नित सन्धो
 सुप्रति ललिसुहात ॥ ८७ ॥ मानहुं गदादा
 रज दिन दिखान कर पदु क्रिया कि जाय क बु-
 चान । दिपि गुरज मत्थ पारल दरार कीर कित

रञ्जनमुहिमार ॥ ८८ ॥ चलन्प्रसिनहोत
 गजकुंभवीरजगदीसभन्तजुत्तकिकरीर। सो
 निततिरातधमनिनसमूहजलञ्जरुतजानि
 न्प्रलगर्दजूह ॥ ८९ ॥ सरघासमबुद्धतवि
 सिखव्रातमधुजालछत्तमत्यनवनात। र्वि
 चिजातसरासनकरनकानिजमराजतपन
 जमुहातजानि ॥ ९० ॥ मिलिजातकोदिल
 स्तकमचकिमुकुमारनारिलंककिलचकि
 । तुलीरतुद्धिउद्धतप्रभापकिनीनकेकिच
 द्रसकलाप ॥ ९१ ॥ संघतसंघनुविचयों
 मुहातदडुकिकालञ्जाननदिरवात। रवग
 करतफूलधारनखनकिलुटिपरतचापचिल
 नतनंकि ॥ ९२ ॥ हातनपरपयकटिद्वहर्ज
 तकच्छपपरमंदरसममुहात। हलिजातक
 हिरघायनचचकिहुटिजातमानकहुंला

हृष्टकि ॥ ६३ ॥ जिनबदनइकनारिन
 उद्धिहृष्टुं बत मृगालतिन उदितइह ॥ मनि
 कलकमंचनिंदकप्रमानतेस्तरधूरिसज्जा
 सयान्न ॥ ६४ ॥ बहुबीरवैरिप्रच्छरिबिमा
 नतांडकउपेतमुनिगानतान । चितमुदित
 डारिगलबाहचाहिस्वकबंधतरतपिकवत
 रिदाहि ॥ ६५ ॥ हियतिरतअंत्रजुतनिक
 सिहातमानहुंसनातलोहितमृनात । उर
 गिहृषपाहितधसलआयवेढेगृहीकिबल
 भीबनाय ॥ ६६ ॥ भटगिरतपायप्रटकत
 रकाबधुम्मतधनेकिउद्धतसराव । तुदिजा
 ततंगप्रजरतपलानकादिपरतबाजिगलप्रो
 लकान ॥ ६७ ॥ कदिजातकुंतपकरवि-
 दारिकदिजातरुहिरजिभजंत्रवारि । कदि
 कसिनकेतुउद्धतप्रकासमानहुंमयूरगन

भद्रमास ॥ ६८ ॥ इमपरतरवगबहुमत्नञ्च
गभ्रमतकिपटीरतरुपरभुजंग । इममचिय
घोरः प्राहवः प्रनूपबहुकटिदक्खिनभट्टुव
विरूप ॥ ६९ ॥ उडिचलियः प्रग्निजटिः प्रो
रः प्रोरजमुनाजलसुक्कियतापजोर । सकुलि
यमच्छरवलभलिसुमारपन्नगकिः प्राहितुं
डिकटिपार ॥ १०० ॥ यैहंभयउदैवदिह्नी
सः प्रोरघनकटियजंगमरहदघोर । लूट्टु
समस्तलिनीचुरायदक्खिनबिहाल । कय
बलदाय ॥ १०१ ॥ श्रियमंतभीतगतिमनि
विसारिभज्योसुक्योनवंभनभिरवारि । इहि
भजतभज्योदक्खिनः प्रनीकघनविकलक
हाकहियेघनीक ॥ १०२ ॥ मूरखनमिच्छुसो
ध्योनमत्थवनिकांदिसीकः रिजियनव-
त्य । उद्रावतावबिबलनः प्रनेकरुचिमरिय

भावुजागलनिकेक ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ मन
 तैमूर जुदेन हेजियन मरन रूत जानि । सघ
 न पक गडिमरिय सब अक सुता विच आनि
 ॥ १०४ ॥ मनोहरम् ॥ सुनो रे सयाने त्रिगु
 नन को तमा सो जाहिय रूत तै विचारे शान ज्व
 लन पजारै है सिद्ध की न साधन कहों मै कौन
 ही तिव है कारन न काज ओ दुहं मै धुर धारै है ।
 बाहि जेन जानै याहि सख करि मानै आते मू
 ठे सुरव दुःख मानि लेख को बिसारै है जानै अ
 न जानै की परिच्छा गरब की जानि डारिबे की
 दोर धीर बीर देह डारै है ॥ १०५ ॥ बट्पदी ॥
 इम ले नहिं मरवाय सर कि भजि गहिज का
 तर अदरी सन सजिरा स्य मुदिग प्रति मुरव भ
 यम च्छर । विविद सिंह को स्यार पद कि उच्चा
 र पतायुड किरिबे संगहन काज अनरिबे की

टापरन्त्रायु । चालीसदिवसतोसनतरकल
 रिरुप्यचक्षरनकर १०००००० लिखदुप
 तन्त्रतपसत्वनदुयति विजवहदक्षिवनसं
 चरिय ॥ १०६ ॥ इति श्रीवंशभास्करे दक्षि
 णाक्षने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे एकच-
 त्तारिंशो ४१ मयूखः । ७ ॥ ७
 ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
 पट्पदी ॥ इति दक्षिणैर्जीरजिनि संगरमर-
 हदन हरसिंघाय उहजूरसाह बहुदियउरी
 जिरन । इकइकप्रतिआदाबउचितसबलि
 यसरलामकरि । दूजेदिवसकलीजरवानहु-
 वल्योतहंहाजरि । माकोहुदत्तबौमअतु-
 ललियसबपुथकसलामनत हरिताहिरा
 नदोरांकहियलुझाबंदरवरनचत ॥ १ ॥
 दोहा ॥ सुनिआदरुपरिरवदसकनसुसमि

यन्प्रासवमत्त । अष्टादशकतिकनकरिय
 अपानरकिवयतत्त ॥ २ ॥ खानकलीजन-
 बाबयहयथायावनीजीम । जिहिंअगैंग
 जसिंहजुलभरवेदलावरभीम ॥ ३ ॥ जिहिं
 अकिवययह बुद्धिजोरहिहैसाहतिहारवि
 गहिंवेदरनजिहैपुरदिहियप्राकार ॥ ४ ॥
 यहसुनिसाहसिराहिकछुपच्छोपारियरोस
 पिंसापिनजिगरथोसमयसो नतरवैअपसोस
 ॥ ५ ॥ भोजदीनसोइकसेभयेपंचदिस्त्रीस
 । यत्तकापिसायनमुदितहियइच्छतरतही
 स ॥ ६ ॥ मनोहरम् ॥ गानमैगडेजेवाल
 कालमैबडेजेवालनीकलइकायेतैधुमंडन
 छनेलंगो । रियतकीरमनिरजीलीजेनिहारे
 लाहिजवनबुलावरव्यातद्वेष्टेचारवनेलंगो ।
 कथितकुरानकीबिसारिवैठेबालिसभने

जोरीतिकीतोचुपमूढभारवनेंलगेदिह्नीके
 घरानेंउतटीकरिइलाहसोंबबुलिकेठिकानें
 पंडपायुरारवनेंलगे॥ ७ ॥ दोहा॥ जुमोंम-
 हज्जतजातननसुरामत्तसठसाह। रहैंसुधि-
 नदिनरत्तिकीलहैंसुरतरसलाह॥ ८ ॥ इक
 दिनकाजिअदियअरजउचितमहज्जतप्रा-
 न। कोऊबिधिबैठीसुचितजत्थविचारियज-
 न॥ ९ ॥ षट्पदी॥ तद्दिनरचिआपानअ-
 धिकआसवबनिउद्धतसंगहिलैसंडगनमत्त
 सबपत्तमहज्जत। बिरचिबिरचिगत्वबोह
 साहजुतरबहिंनमैसब। यहकोरीतिअपुछ
 तरकिजंपियकाजीतब। सुनिहसिररहअ
 किवेयसबनरेनहिंनजानतरुचितसारक-
 जननआसिकमिलनआदिरीतिसुनियत
 उचित॥ १० ॥ दोहा॥ काजीतबहिबुरान

पटकिजोरक कु साहपर । सेनापति तुम सोयहम
 वजीर न्प्रबइ कहुव ॥ १८ ॥ षट्पदी ॥ हम तुम
 सम्मलिह नहिं खान दोरों कपदी खल । तब सेनाप-
 तितुमहिं साह करि हे गिनिस खल । सुसुनिसहा
 दतरवान सेन सजित पूर बसन ॥ लगि सेनाप-
 तिलोभ न्मायदिलिय चहि न्प्रपन । अठस
 त ८०० तोप जिहिं बसि न्प्रतुल दगत बेर को
 सन दहत । लहि एहे तुला कैं हें बल कहु हर
 भाड भुंजा कहत ॥ १९ ॥ दोहा ॥ न्मायस-
 हाद तरवान वह मिलि कलीज सह मोद । इह
 वजीर रु न्प्रप है बिर न्चोक पट विनीद ॥ २० ॥
 षट्पदी ॥ नादर साह सुनाम तपत ईरान जद
 नइत प्रबल सबाहि प्रत्यंत जाहि मज्जत जित
 हीतित । गाजु दीज कलीज भाड भुंजात जुत
 भाये ॥ बुलन नादर साह पत ईरान पहाये ॥

चहुनिमंकसुलतानइततियदिल्लियतुम
 कौंचहत । समुहचलाककोउनसुमटमचत
 दंददिनदिनमहत ॥ २१ ॥ पद्धतिका ॥
 यहसनियवत्तपुरइस्यहानप्रतिबठियसो
 रजनपदद्वान । प्रत्यंतमुख्यबुलवायपंचप
 दुरवियसाहनास्प्रपंच ॥ २२ ॥ तामाचकु-
 लीनामकवजीरबलिमिलियप्रतीनिसुरत
 प्रवीर । सम्मनपुनिकम्मनकुलबसूरगाजीहु
 सेनहाजीगर ॥ २३ ॥ रुस्तुमसलेमसेरनर-
 हीमकालनकमालरोसनकरीम । मारुफमलि
 कमहमूदमीरअलमतअलीसय्यदसधीर ॥
 ॥ २४ ॥ दाऊदसेरबइसहाकदीनमेंहंदीरुमुहु
 म्मदमोनदीन ॥ अहमदकियाजिससुऊदआ
 यसादीकुरेसमीरनसुभाय ॥ २५ ॥ गालिब
 हबीबलालनगुमानपीरोजफतेनसिथबपडा

न ॥ २६ ॥ प्रारास हसन यूसफ अली हुदरि-
यावरवान पुनिमोज दी हु ॥ २६ ॥ या कुब अ-
ली रु अमन इमा मनो सेर असद पुनि नूर ना-
म । इत्यादि साह भटवर अन्नस्त सहस चिवाकि
न इ कृत समस्त ॥ २७ ॥ सब भटन साहनाद-
र सुभाय दिय लव कलीज कमर दरवाय । कहि
अब न जोर मुगु लन निकेत दिन्निय कटाक्ष म-
म प्रेर देत ॥ २८ ॥ अवर्ग जेव मिरजा मरेत
धर हिंदु धवन धार कधरंत । सचिव न नबाब भ-
टमानु कूल मिटि गयर सूत मज हब समूल
॥ २९ ॥ गायक हन्यो हि अलम अजान पुति
मोज दीन प्रतिम सपान । मिलि बडोर हिंदु
सय्यद बिमंद फूरु क गहिमा लो पासि फंद ॥
३० ॥ मुगल सदीय पुनि गाल मझ जाहल न
हने जे इन अबद्ध । सय्यद अजीन पुनि तपन

॥ ३१ ॥ स-
 ॥ ३२ ॥ जिततितमिनीमदव
 ॥ ३३ ॥ रक्तैर्नयनवरिसद्वरतिदीहलु
 ॥ ३४ ॥ मिरजासुमुहुम्भदतिनसमेतजोकहत
 ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥

याजनीभाषा ॥ मस्तदिलो अजामैशरावेदि
 ली अकुन द्वसुवेरुवाब सुहवत बदाव
 दाता दिलोन ताजी मतह मुल् मुद्द बिलोन
 ॥ ३७ ॥ गह दरन गुजार दु शहर बाब शैता प्र
 नजी नदर हस बाब । अफ बाजिद वन अ
 मद्व जीन गुजरा य कलांगर दीद कोर ॥ ३८ ॥
 किश सुल् कलोर पास जे नमर दम्व ज मा
 नंदर अमान । इ नूपाफ अदतर कृतह व
 ज्योर अजर दासु अम अमद्व शैर ॥ ३९ ॥
 प्रायो देशी प्राकृता मिश्रित भाषा ॥ रेजा नि
 माज कलमान रत्न महरी न संग जा डरत तम
 त्त । रेवारु अदक बिच पृथुल राज रत्न नय
 बिहीन बिगरत समाज ॥ ४० ॥ मालवति
 यश किवन दलन आय दिल्ली लग लुट्टि वदु
 सहदाय । विनु चेत मुगल बातर बिश्राम

लसज्जुद्धानरौधक दिग्वात ॥ ४१ ॥ तामाच
 कुलीयहसुनिवजीर बुल्लिय सिराहि भुजठो
 विवीर । जलिकरनसिकंदर अगगजाय जि
 त्तिय जमीन हिंदुन हराय ॥ ४२ ॥ तैसूर ब-
 हुरे गोरी पठान हत्थन सब जित्तिय हिंदवान
 । नहु पुरस पठान न रहिय राज सोलिय बहोरि
 पुरातन ससाज ॥ ४३ ॥ अगौ गुमाय दिल्लि-
 य न्नीतीति कहुओ जु हमायौ मुगल भीति । आ-
 यो सुह्रहो पुरइ स्पहान सुरतान मदति दिनी स-
 मान ॥ ४४ ॥ ईरान कलकल बजाय संगलै दि-
 य उराज जुरि जीति जग । सुरतान हितु इम क-
 रन जोरि दिल्ली सुह्रह जौ लिय बहोरि ॥ ४५ ॥
 पुनिता सुत अज कलकल वाय सो निन तर होरि
 पुरस हाय । ताके सुत सुत कसुत बहोरि न्नीय
 रंय पद लिय जंग जोगि ॥ ४६ ॥ ताके हुत नय

अकलरसनाप्रायोसुसरनअत्यहिअधा
 म। पुनिगरिअअत्यकलुरोगपायदिल्लीहिन
 लोदिलेभिलाय ॥ ४७ ॥ योमुगलयाहिछरक
 सुतामदिनीसुरकिवेनहिसकतधाम। तोअ-
 वजगीनअव्यनसमहारिवंधहिप्रपचअप्रस
 बियारि ॥ ४८ ॥ गोगनसकैनजोग्वातरकिवे
 अवरहितवअयतस्वामिअकिवे। करिवग-
 नसेकादिकजोकरैनलोभुजियापदुनउचित
 देंन ॥ ४९ ॥ जोरकिवेसकहितुमहुकमजोरि
 अहैलोदिल्लियदेबहोरि। तामाचकुलीयह
 कहियतत्यसुनिसजियसाहनादरसमत्य
 ॥ ५० ॥ इतिश्रीवशभास्करेदक्षिणायनेन
 वसराशौबुधसिंहचरित्रेद्विचत्वारिंशी ४२

मसूरवः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

निःशारी ॥ नादरसाहइरानके अवरें नस-
जाया लया घाय निसान पै धन जानि घुराया
। उर अहों दिक्पाल के नद साल बुभाया हाक
नकी बौह हल को दर कुंच सुनाया ॥ १ ॥ जंगी
डैरुडमं किया अंब क नह काया इरानी भट उफ
ने बपुरा जज बनाया । दोप बकसर जालिकार-
न श्री परचाया देवे तुम सवधि के कटि स्वगा
कलाया ॥ २ ॥ बिबेचा पवहा दुरो फट कारिब
जाया लहि न देस इरान मै नर बाजिन माया । के
अफगान पठान के मुगलान मिलाया बल की क
जाल वास के दो है कक छाया ॥ ३ ॥ अरबी
रसी उजब की हर रजाय हकाया खब सीरुमी
खुव हीरन खज सुहाया । आलस वाली अफ-
सली काम वाह कहैया अरम नीसी धी हलै आ
देर उहाया ॥ ४ ॥ फारस इम लिहु उफ के सम

सेर सजाया खधारी जगि रवेर बहती मबुला-
 या । ओलं दे जी लज्जले कर मुच्छ मिलाया रन-
 ति बत तातार के दातार दिरवाया ॥ ५ ॥ बीर-
 बुरवारी का बिरीर सबीर रचाया का बेनी प्ररु
 का सिदी लरनें ति लुभाया ॥ सुनानी रुयह
 दिया सब संग सिवाया माली ली प्ररु गिंगिनी
 धर लैन लकाया ॥ ६ ॥ जइ के प्ररबी जिते
 मक्का मन लाया का जिद के प्ररु का बली सर
 सेन सजाया । लहान रुहीरात के भीरात मिला
 या निगरी के रुति दोर के लका जोर कलाया ॥
 ७ ॥ लते लुरुक निपोर ले के दत्ते कसि आया
 हले इम लक्यों जवन दिदी करि जाया । पंच
 निमाजी पूत जे बल मज्जहाय किन महु अद
 निजन बीर के नरवाया ॥ ८ ॥ कबुले इ-
 सहाक न्यो दाष्ट दिपाया दिपाया हित रोम

कौंझकरवैबलआया। अमीनादबकेअर-
ममतमैबलतायाकेयोखमआहसकहैसल-
मोवमुहाया ॥ ४ ॥ किमोयसअबिदकौचि
नैचिततायासुलैमानमतकेकितेहिंदवान
हकाया। इत्यादिकअलिगछकेचढि मिच्छ
अतायानादरशाहसनाहकेबिनुदेहदिपा-
या ॥ १० ॥ चीनाकालबनातकासुहिदोप
सुहाअकरदेऊनकुरानलैमननेलतगाया
जिसरकेरजदबबदेचढिबेगचलायाहाकन-
कीचीहल्लकैदलडाकडगाया ॥ ११ ॥ उग्र-
विडालीअरिबकेबहुमिच्छबढायाकेक-
अरखीफारसीबुल्लैविकसाया। पंचकलंकी
चापजेरकरवैभुजमायाचकरवैवक्करराकजे
मगररजमाया ॥ १२ ॥ ताजीमकवरसजा
केबाजीदलछायाईरानीअरबीकितेजर

जीनसजाया । बैँडेहस्थिनमुंडकेधुजदंड
 मुकाथानादरसाहउछाहकैसहसेनचला-
 या ॥ १३ ॥ सत्यलोकलगयोरुयौपाताल
 पचायाफहारीढकसेसकाफनमात्मफिरा-
 या । हल्लीजुगिनिसंगहीथेईश्वरकायाफाल
 फलंगीडाकिनीकरतालबजाया ॥ १४ ॥ का
 बलसीमाद्वैकटकअबअटकनिरायाहाक
 परीहिंदवानमैंसबसोकअया । लंघिअटक
 पंजाबकाथानांघनघायासूखानायकसाह
 कासबफोरिमिलाया ॥ १५ ॥ अानचला
 याअप्रपनांमुगलानमिटायासूरइरानीसंचरे
 मगरूरमचाया । यौनादरअतिबेगसोंदिल्ली
 सिरअयापानीपथकिरनालपैमंडालमुका
 या ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सोरमचिगदिल्लीसहर
 जोरइरानिनजानि । साहमुहम्मदअबसुनी

यद्यप्यसन्धीमानि ॥ १७ ॥ मोरना ॥ डंगन-
 प्रसुनिआतसरप्रसन्नसबहीमचिब । सीकन
 तदपिसमातइकरवान्दोराउदग ॥ १८ ॥
 पट्पदी ॥ कुरमप्रतिजयनैरखान्दोरापटये
 दलतुदुद्धरकक्वाहसाहतोहोसोसञ्जल आ
 कतदलदूरानरचहुदेखियसहायरन । हमतु
 मइकतहोयभुमिकारहेवासभुगान मम
 सीसमारअप्यउअमिन्नसोसोनअवउत्तर-
 हिंदिरथारि कुरानकरियतसपयजोउपकत
 यहबीसरहि ॥ १९ ॥ दोहा ॥ तेरीहीयहबे
 रहैआवहुसंदतउबाह । तोहिदुरगारनयम
 अजरीअसप्यहिसाह ॥ २० ॥ इहअनेक
 कमानखिरबेसाहचमपतिशूर । सईकारिकै
 सपयसोकलसगिलेबहिकर ॥ २१ ॥ तेआव
 ततुमसाहजतबाहरकरहुमुकाम । यौले

रिवलिग्विदलमङ्कलेश्वरमकलुरवदुक्काम ॥
 २२ ॥ षट्पदी ॥ इमजवननविश्वासदैरुकर
 मचलकिन्नीम्भनदपुरानजअरिदिलनदश
 पुरमुक्कलिदिन्नुसावधानसहसत्थरखेजेपर
 क्रमपति ॥ यहभावेजलिरिवअलहोलमर
 नवकिन्नीलसिअनरुदुनरेशाहदुवअरिदेल
 यहजयमिहउदतलनिकोऊनगयउदिउने
 यकललमकलकालमाविअपरारवे ॥ २३ ॥ दो
 हा ॥ दारिद्रमश्वरमदिलजहतदिक्कीलअनिक
 । सवलरवानदोरोसजियसमुहजहतसमीक
 ॥ २४ ॥ इहिअनरपरापवदजेतोसालमन
 द ॥ दिह्रीआयदालम ॥ इतोजवनप्रतका
 ॥ २५ ॥ पानीपडअयसलीहिसदिनलोजे
 अयसाद ॥ सनापतिकेकाप्रलसमगपयकु
 चरनवत ॥ २६ ॥ लठकन ॥ कडकेरपल

सबसज्जकरीप्रतिहारनकीबनहाकपरी। बल
 पायनिसाननचायबजेलखिजेघनभद्वनद
 लजे॥ २७ ॥ खुससाननफूलहूपानखिरेचमका
 तचिनंगिनबादखिरे। अननंकिहुतासनधार
 रीघननकिबजीगजघंटधरी॥ २८ ॥ परबरेत
 पटैतघनेउमहेकमनैतकटैतनजातकहे। ब-
 हुबाजियताजियसज्जबनेजबजानमनोपब
 मानजने॥ २९ ॥ ककचच्छदकनमनोकलि
 काकचयाललखेवैधुजगावलिका। सहनाइधु
 खेजितमोथसदापयलोतमनोगनिकाभमदा
 ॥ ३० ॥ कलिजितनकंधरबंककसैकुलदाकि
 कियापटुलंककसै। हरिजातउडातकरीदक-
 रीसकरीदिसिखानबनेचकरी॥ ३१ ॥ बिचुरे
 गजगाहनबीजितजेजबकेबलराहनबीजित
 जे। परबरेजरजीनसजेसरबरेनचिमंडतचेरिन

केमखरी ॥ ३२ ॥ धरि धोरित बलिात धावधपै
 मनकी गति जे छिन माँहि मपै । छलि गात चला
 नानात छिती किल कोट पदी बिच बत्त किती ॥
 ३३ ॥ भटके मन भाय फिरे तटके धटके निपजे कि
 नाना नटके । हुलसै करि बिजुलि की हसनारज्य मै
 ननु त कित्य की रसना ॥ ३४ ॥ खुर राज तराज
 तपत्त खरे जिन पक्ष महायसना लजरे । लगि-
 यो खुर सौं खुर ताल तसै गहि कै खर भानु किच
 दग्रसै ॥ ३५ ॥ चल बोधि तरु छद से चमकै
 पदात कनी निय ज्यो नमकै । असवार चहै सुकरै
 अनुभी मल पैं बनि फाल गुला लमुही ॥ ३६ ॥
 परिसंग कुरंगन जे पकरै छिति चोकर मै पलदा
 छकरै । बपु जोर उऊकत प्रोथ बजै सफरी पल
 दान उडान सजै ॥ ३७ ॥ रस ले हरवली न प्रथी
 न रहै गति मै भरि बल न भुमि गहै । करि मधव-

हैं नट की न कला चलि जात दिखत मनो चप-
 ला ॥ ३८ ॥ प्रतिमल बनै नम पच्छि न पे बह
 रैं उडि दीय बरच्छि न पै । कूल जाते बनायुज
 आदिकित जव मै पवमान उडान जित ॥ ३९
 ॥ कुल दै उलट उछटात करी पल दै मन पातरि
 की पतरी । इकल करव ४००००० तरंग मया
 जाते कै कर दीखत २०००० भलो भाते के ॥
 ४० ॥ करनो तल दान न दान न दाने लाये नारुन
 पान्छन चोट कर । अत नगर अचल अचल
 भौरे रिवाजर नमर रुक जात खर ॥ ४१
 डगदि त डगवत डाकन ते पल दरि विजिहाह
 प्रताप नै । नद दान पद दान त कतर कल मय
 नद नगर नल दान ॥ ४२ ॥ धन बाल दान दान
 मय दान नद नगर नल दान नल दान नल दान । फद कर
 तल दान नल दान नल दान नल दान नल दान नल दान

॥ ४३ ॥ बद्धरवाव नरावन भानवने जल अथै च
नकाज अगस्ति जने । मखलून कलाप ककू-
धक सेल गिगन्त वरत्तन नुद्वलम । ४४ ॥ भक्त
जगिय होदन सजु भय बल मचर येन हि पै पठ
ये । कट सुंडिक लाप कर गिर छे बद्ध चित्र चिते
रन के बिरचे ॥ ४५ ॥ बद्ध अति न निदत उच्च
पने मज जुल रूपै जम दूत मनो । बल के स्मिरत
जम हा बल जे रानि राहु मोग न सामल जे ॥

मद छाव न धुमंत पै डम ते बल बाह हि
मा चल सौ बदेते । तून मान बडे तरु तोरत जेम-
न तेर बिकेतु मरोरत जे ॥ ४६ ॥ कनका चल
ल डुव गोठ गिनै रंदि च दम लोदन गोठ गिनि
किले करत तारन पै करे चल सुडि चलात धले
चरे ॥ ४७ ॥ कट पै करु बिंद प्रकास करै सनि
भोम भिरज जुल गिगरे । हरिताल सु

बालकस्योगुरुजानिबिधुंतुदपासिपर्यो ॥
 ४६ ॥ चरवीनचिकैनचटाहटपैउडिजात
 अचानकआहटपै । कतिबीरनकुंतलगेक
 दसोंमलिनिरिबहोरतउबटसों ॥ ४७ ॥ ज-
 नकोनियरायरचैजबरीबहिअैचतबगधन
 कीबबरी ॥ जनलगरपायधरैजितनेजमकी
 इकरजुवबद्धबने ॥ ४८ ॥ सिरपैमनिहाटक
 जातसिरीभरमाचलसोंभततीकिमिरी । इमइ
 इहजारबडेइभजेनिकसेसजिवइलकेनि
 भजे ॥ ४९ ॥ तुरकानतयारभयोरनपैफरके
 भुवरबंडफनीफनपै । खगउद्धतसय्यदसेख
 रिलेभिरजामुगलानपदानमिते ॥ ५० ॥
 भुजदंडकमाननकेकधरैरालुलायपरवालन
 बंधकरै । बहुवीरबंदकनदावरचैलसिस्तजु
 रिअएनहिबचै ॥
 रिकेकभिभागन

तैरु रली बहि धावन दाव बचात बली । तर-
 बारिन बार करै कितने घम कावत सगिन ल-
 च्छ घने ॥ ५५ ॥ सब दिखिय भीर उमीर स
 जेर न मै भट भीम रही मर जे । प्रति बासर पचनि
 माज पढै कल मां बिच गुप्त बयान कहै ॥ ५६ ॥
 बिरचै बहने कत जै बहलौ मन चितिरु सूल मु-
 ह्मद को । रसिक कह कुरान सिरी फर है बल उच्च
 रुड डिय कुच्च बहै ॥ ५७ ॥ लखि मुच्छन लं
 बसिर वाजिन की बिधि छिन्नियरीति प्रतीपि
 न की । बिके बधु मुद्गर दं बदे प्रति मल्ल घु-
 मावत फौं कि पटे ॥ ५८ ॥ बदे के क किते कत
 जै क पटे र वपीर वलीन अलीन रहै । असि ठ
 लन मल्ल अपुछ अरै कति बान बिहंगन बंध
 को ॥ ५९ ॥ खट टंक कमान नरै चत जे अ-
 तलो पयलंग अचत जे । बदखान कली जस

हादतारे बलि मुह वजीर मुह बतसे ॥ ६० ॥
 मंदर सुख सुखान बसु पंभल सजिके दल दिखि
 यति निकले । बहि फील मुह म्दसाह चढ्यो
 वजिह कानि सानन ध्यान बढ्यो ॥ ६१ ॥ बल
 केहर वलन के बढतै कुरा पुर तोरन के कढतै
 । न जंठार प्रलं असुतु हि परो कनि मंडल मंडल
 हुक करी ॥ ६२ ॥ दिना मुह उरु लन हुक दई
 छे सि छे प्रमथान करे ह छे । अप सो नर
 पशु सि गिहि । डीर बस कर जी वति दिदि क
 ही ॥ ६३ ॥ उन मल क मल क माल तर ब्योरु
 दिग बर दल दिरवा त न च्यो ॥ चिर मे हिरवा
 य मिले स महे छे दिवा ल कराल बिडाल छे
 ॥ ६४ ॥ इम गाव कुसालि न्क दि बने मन उहुत
 बीरन जी नमने । जिम वद निरचन क मुख तै ग
 न ज्यो गिर जस जाय नरवतै ॥ ६५ ॥ जिम-

जान्हविअंडकटाहकतैंबरखाकिउदीचि
 बलाहकतैं।रचनाकिगुनत्रयतैंविकसीपुत
 नाइमदिल्लियतैंनिकसी॥ ६६ ॥इवहाक
 नकीलहजारनकीहलकारबढीप्रतिहारन
 की।मगडोहिनमपतफोजचलीउरमीजि-
 मसागरतैंउरली॥ ६७ ॥उमडातडगात
 बलीबलकोंधमकातधुजातरसातलकों।
 इकअकवहिंनादरकोंगहिहैंइकअकन-
 हिंदूरनमेंरहिहैं॥ ६८ ॥इकअकवहिंजि
 त्तिइरानलईइकअकवहिंमंनिनसाहमई
 ।इकअकवाहैंखानकलीजफद्योंरुवजोव
 सहादतपैपलद्यों॥ ६९ ॥इकअकवहिं
 अय्यनसेनपतीसबजित्तहिंतोरिइरानल-
 ती।इकअकवहिंजित्तहिंनादरहीप्रतिदि-
 ल्लियबुद्धिप्रमादरही॥ ७० ॥इसचंडनल्या

दलदिल्लियकोहठजानिहरामिनकेहियको
 । कमिभारगसत्तमुकामकरेपथपानियसौब-
 समीपपरे ॥ ७१ ॥ खठकोसइरानअनीकर
 ह्योक्रमलत्थचमूपमुकामकह्यो । असवार
 हजारअसी ८०००० उतरेअरुबीस२००००
 छबीननसजअरे ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ दिल्ली
 यपतिअबउत्तरियपरियअनीकप्रपात ।
 रहसिरवानदोराँरदियबदनइरानिनबात
 ॥ ७३ ॥ दलईसरवानदोराँलिरिपत्रपठा-
 याइरानईसअगौंयुनसीससुनाया । तुमतो-
 रकेतरारेचतुरगचलायालाहोरआदिसूबा
 बदेफैलफटाया ॥ ७४ ॥ पंजाबपेसअँनॉनि
 जअननमायाहिंदूसबैहरासीसीनेसुतगा
 या ॥ दिलदोरअोरअोरैकरजोरबजायागिनि
 इरयहानबुड्डीपरलोमलुभाया ॥ ७५ ॥ अोर-

तन्त्रनूप दिल्ली लिरिबदाव चलाया जानीय-
 हैनको ऊबरता सबनाया । सैतान के सिखायें
 मगरूम चाया दिल्ली सौन संके दिल मस्त दि-
 रवाया ॥ ७६ ॥ सुलतान की जमी पैस मसेरस
 जाया कसभीर की फतै कै मुलतान लुटाया ।
 दरियाव कौं दगा सौं लहि नावलें घाया पाया
 पुकार सौ पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥ चाही-
 सुलाह जो तो करि जाहु पयानों जो जग की ज-
 रूरी तो देर न जानों । दिल्ली स की गुलामी प्राते
 रोज प्रमानों सुलतान दर जमानें बरनाय बभा-
 नों ॥ ७८ ॥ इम पत्र खान दोरां पठयेति पहाये
 ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये । एकांत लै इ-
 जाँ के अहवाल सुनाये भेजेति खान दोरां दल
 खोलि दिरवाये ॥ ७९ ॥ ईरान साह अकरी
 माताच कुली सौं तै ही वजीर आनें अकरी जि

खुली सों । ए तो नैं हीं निहारे तत बीर दुली
 सों आलाब जोर आयि समसे तुली सों ॥ ८० ॥
 हिंदू न राक आया सब सोर डरानें तो दू बला-
 र १००००० ताजी परवरै तपलानें । हत्थी
 हजार मत्ते घन रूप घुमानें लकर बों सबार अ-
 च्छे बर दूर लुमानें ॥ ८१ ॥ तो पै हजार दो पै
 नीसान फिरानें दो हैं लगे छवी नों भद भीर मि-
 रानें । लकर बों पयाद जंगी समसे सजानें खुद
 मोजर बान दोरा बर फै जर बजानें ॥ ८२ ॥ ए तो
 कली जर बों काना हक फरे बहे गाफिल जर
 ताहि ह्मी जर जोर जेव है । सब ही सुता हमंडे
 कर लों कि जंग नों उन तो यहै कहार्इ हम को दि-
 रंग लों ॥ ८३ ॥ इरान साह अकबी सब को सुना
 यकै उमराव बीर बीले मन मंत्र लायकै । निरुर-
 त अली रु हाजी काजी करी ममे गाजी हुसैन

रुस्तुमरोसनरहीमसे ॥ ८४ ॥ बुल्लेकलीजरवां
 पैँ प्रहवालपठावै पाजी सुक्यों बुलाये बरजो
 र सुनावै । जाहिलदगाजनायो नाँ किस्र न
 नाक है हम हू हराम तो पैँ कातिलक जाक है
 ॥ ८५ ॥ ईरान साहरो सैँ लिखि पत्र पठाया
 आया कलीजरवां पैँ इन मंत्र उपाया । जुरि-
 मे लखाँ कमदी दिल्ली वजीर जो दू जो सुभाड
 भुंजा जाल मूसरीर जो ॥ ८६ ॥ मिलि तीन
 मंत्र की नों प्रपनी जमीन है अरु साह पैँ भुदु
 म्मद प्रपनेँ अधीन है । इन सों बखान दोरा
 दुसमन मराय केँ कछु दंड देरु पैँ ये देहें पैँ रा-
 य केँ ॥ ८७ ॥ इम मंत्र मंडि पच्छोतें हें पत्र पठा
 यो डरिये इजर नाँ ही हम काम नदनायो । सज
 रावरे रज्जु है तुम सों नरारि है इक नाँ जरवान दो-
 रा पदाहि मारि है ॥ ८८ ॥ तुम जग की कहा-

बोन कबूल मामलै तब सजुरवान दीराँ अ-
 है तमामलै । हमरा बरे भदों सैं मिलि
 रि है ईरान की दुहाई बजमाँ विथारि हैं ॥ ८६
 ॥ सुनि एह साहना दरबार जोर कहाई पर्दा हि-
 रवान दीराँ तुम सों बल राई । सुनि एह रवान दो-
 राँ सब से न सजाई दुहुँ अपोर होत अपै सैं बहर-
 ति बिताई ॥ ८७ ॥ अब प्रात काल आया क
 कबाकु कुकानेँ अर बिंदतैं उडे के अतिरति
 रुकानेँ । परदार को रिछाती नरजार पत्नाया
 गिरि राज की गुफा मैं तम तोम चलाया ॥ ८८ ॥
 दरघंट देह रों मै बरनाद बजाया चहि भोग च
 कचकी सुरव मेल सजाया । तारे नमंद ते जी-
 द बिब्यं बदुराया मंथान गवाल गेहों घन घोर घु-
 राया ॥ ८९ ॥ तजि पंथ चोर तके छिप नों दरी
 न मै गाहि मोन घूक बैठे तरु को दरी न मै । उदया

द्विपैँ अनूठी इकरो चिलरवाई चल चाटकेर
 चौंके चहकानिमचाई ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ सेन
 खानदोराँ सजिय स्वामि धरम धरि सीस । अ-
 नय सहादत मंडि इतर चिम साह पर सीस ॥
 ६४ ॥ पद पदी ॥ कहिय सहादत कजल बा-
 स बैमवमम लुह तदेहु साह आदे सनरन नाह-
 क सिर तुहत तजल य अकि वय साह पुथ कलर
 नौ न उचित अब ॥ इक होय अंकुर हिंस ज-
 हिं तुम हम कली ज सब कहित अपि भाड भुंज
 क कुटिल सब कातर दिही स दल पिकर्यो न
 जात हम तै प्रबल बिरचत लूट इरान बल ॥ ६५
 ॥ यह सुनि अकि वय साह पुथ कलरि मरहु
 सहादत अधम सुनत द्रुत उहि भाड भुंज क
 ति उद्धत चढि निज दल लै चलि य खानदोराँ
 प्रतियो कहि । दीजे हम हिंसा हाय चमू अधिरा

जयिजय चहि इम अकिवि जाय ईरान दलमि
 ल्यो मूह लवहुन लखो सब भेद साहना दरस-
 लुमि अधम सहादत उच्चखो ॥ ४६ ॥ दोहा ॥
 मूह सहादत जो मिल्यो चहि ईरान अधीस। प-
 च्छी यों कहि मुकली अतुल भार मम सीस ॥ ४७ ॥
 सुनि एहरवान दोरा चहि बिग चला यावा कौस-
 हाय दैवे कक कोह कलाया। दिल्ली सकी च
 एको अधिराज जीर जो हरवल है रुहं क्यो ध-
 म चहु थीर जी ॥ ४८ ॥ अच्चे सिपाह लै के
 अत अत उडाये मानों घटा उदीची आसार म
 चारि। धरनी धमं कि धूजी सिर फूटि सेस का दि
 न चंद सादिरवानों दिपनां दिने सका ॥ ४९ ॥
 दल भार मार दहावर की बराह की कभो सपिहि
 फही बल आह आह की। काली तथा कपाली
 आये उछाह सों बेताल प्रेत नच्चे चतुरंग चाह

सों ॥ १०० ॥ गन सेन लंक गिरी गोमायु गह के
 जंजीर तोप जाली गज घंट ह के । बिं डे ह जा
 रह ल्यी बढि लेन बिशारे ताजी तुरंग तत्ते नभ
 लेल तरारे ॥ १०१ ॥ चकि बीर खान दोरां इस से
 न चलाई ईरान की न्यनी पै प्रव नग उड़ाई ।
 उलतै हु से न न्यायो पुनियाहि न्यात ही पाता ल
 लो पुकारै महुं ची मलात ही ॥ १०२ ॥ सक वा-
 न नभ कस नह १०१५ नदि फगु नभ सारे-
 बिदेर नै रुकाने तरवारि तल से । दुहुं न्ये र
 तोप दगी धामि धूल धो नी काने बिमान कारे
 न्यति गाज उफनी ॥ १०३ ॥ डग मरि मे दिनी
 के गिरि कूट गिराने सारे तात डग छि जे पद प-
 छि पिराने । न्याकास न्य न्यरे के गल नान न-
 चायो डकें सुडा किनी कीर सरार न्यायो ॥ १०४ ॥
 गोले गमर गंजे हत्यी न हल के बरत द मार न्ये

संपादिसलकैँ । आवाज तो प उहुँ जिम संख-
 सातुरसौँ ज्वाला कराल जगैँ बढि चंद्रमानुसौँ
 ॥ १०५ ॥ आकास तूटि रुं डे उडि जात और से
 समरे मेहन जैन भमत्त मोर से । कट कूट का-
 दि डारै गोलै अरात की मानों पिछानि पारै ग-
 जमद्र जाति की ॥ १०६ ॥ हुसियार खान दो-
 राँ समरे चलत द्विपहुमी सुरंग पिछरी लगिर
 चलत लाई ॥ फूटै कपाल भेजे तरवार तरकैँ कै-
 कुंतल कटौँ मै गल साल गरकैँ ॥ १०७ ॥ केते तु
 रवार कहैँ असवार उलटैँ कहैँ कटार भूर वेहिय
 कालि कहैँ । नागोद्वान फुटैँ नर कातर नहुँ
 टंकार आपन जलैँ चिला सु चट्टैँ ॥ १०८ ॥ आ-
 यत अचेत धुमैँ लटके कराख सौँ मानों गलार म
 तो सर से सराख सौँ । कलि फिफरे कलेजे फिफाँ
 क फुटार विहारे सार सौँ हि केरु जिम जेब बन वि

॥ १०८ ॥ सुंडा करी न कहैं जिम पन्नग करि भं
 भं मया न बजै भटमिन्न नगारे । आकास अग्नि
 पत्ते सुर लोक उजारे महरादिलोक वारे जन लो
 क सिधारे ॥ ११० ॥ विनु चेत वीर बहै बहु दुं
 ल बज विधारे अनेक युग्मे मुरख मग हल वि
 धाराल बाढ बजै अति वीर बकारै सम सेर को सि
 रा है दुरवमार उचारै ॥ १११ ॥ पंचास दीय ५२
 भैरौ ललकार लगवै लै लै ललता मलो ही च उर
 दि ६४ चढवै । केसी सई सलै के गल भेद भिर
 वै के अचरी अनूठी बर माख गिरावै ॥ ११२ ॥
 षट्पदी ॥ तीन पहर तरवारि खान दोरां बर ब-
 जिय अनिय मोरि ईरान सब लदिलिय जय
 सजिय ॥ रवि अत्यंतर नरु किय धाय लमिय
 अडारह ॥ खेत सहाद तरबान लखन हेरिय ब
 हुबार हपायिय कहों न पायो तदपि देर व्योसक

ईरान दल यह जानि भाड भुंज क प्रथम दूत प
 काय उल्लु दल ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ खान सह
 दत दूल दल पठया च मुपति पास । मोहिदरा
 निमजि लि कै गहि दिय कारा बास ॥ ११४ ॥
 अल प्रदी स आगम अधिक अस तुम घाय
 ल अंग । कलिहुरा बहु मद लि करि जानहु
 दुग्गाम जंग ॥ ११५ ॥ बहलि सुह ईरान बि
 चरल सुहा दत खान । यह करे ब कहि दुक्क
 ल्यो अनिस ठले दी जान ॥ ११६ ॥ सेना पति
 अह सुनि गिरे खो जय जरा ककु क उधारि । सो
 खिर भर घायल भटन च ल्यो नृ जान न डारि
 ॥ ११७ ॥ पद पदी ॥ इत दि ली स पजीर खा
 न दोरहि सुनि आवत मारन ता कहें दूह दूह
 वहु ल्या ज उपदित कहिय साहसों जाय म
 जिग कातर सेना पति । कजल थास ल गि पि-

हिन्नात डारन इत आपति सैं अचहि देव वर
 पाते मदति तोपन बलरो कत तिन हिं च न अ
 त अचि दे गो जन गज बग जर विद्या सि की
 गिनहिं ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ यह वज्र अश्रुत
 घोर कियर वला कमर दीरवान सिनर हल
 सेने सको पिन्ने तोपन प्रान ॥ ११९ ॥ दुवहि
 खान दोर ह चरन गोलन उडि गगेन अति
 घायल कुवत दपि द्रुत आय उडे स नये न
 १२० ॥ अति घाय खान दोरा स म देख न
 याखूनी कली जरवाँ कौ सब जीर बुलाया
 मनमंत्र नीति मंडी सब कौ हि सुनाया होत
 सुतो दुवा ज्यो हम ज्यो न गुमाया
 प्रवती न मन अकसै हम सो तुम क
 सों लराई इक होन न दोजे । दिखी स हि वरु
 जौ न दर न मिलावो तीजे न नाहि दिखी तुम

जायदिरदो ॥ १२२ ॥ मंगो सुदैरुपैये प्रति
गोनकरावो कीनी तुम्हैं जु मोसों क्यों सोवक-
दावो । यों अकिवरवान दोरां वपुसच बिहा-
यो सुनिसाह पै मुहुम्मद प्रति सोक अधायो
॥ १२३ ॥ अब रवां कली जकों हीं सेनापति
की नो पै अत्य भाड भुजक के अत्य नदीनों
। इत कों दुसाह नादर अकुलाय बिचारी उ-
मराव इह किन्नी मम सेनदुरवारी ॥ १२४ ॥
तब ही कली जरवां पै लिखि पत्र पठाया लै दं
ड के रुपैये हम गोन उपाय । सुनि सो कली
जरवां हू प्रति मोद बहायार कांत साह अ-
गो अल पंच बनाया ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ क-
है कली जरु कमर दी साह अग कर जोरि ।
सेनापति माखो समुझि देहु तरन अब छो रि
॥ १२६ ॥ इह कोटि दमदम लै नादर पच्छो

जात॥ सोहिबलअवसीकरहुलरेनपुग्ग
 हितात॥ १२७॥ मनि साहयहुमंनतबनाद
 रप्रतिलिखवाय। दमकोहिलेजाहुझरअरु
 ननमितनउपाय॥ १२८॥ इहमागअज-
 हीलहुहुइहुजायलाहोर। इहामिनहुलंश-
 तअहइमलीजेदमतोर॥ १२९॥ यहसु
 निनादरसाहअजकरनबिचारियकुञ्ज। खान
 सहदतजानियहुअधमजरखीअधउज्ज॥
 १३०॥ पादाकुतकम्॥ खानसहदतरह
 बिचरीनोहिंअवरकोऊमदभारी। प्रानरवा
 नदोरोजबदेहेसेनापतितबमोहिननेहे॥
 १३१॥ यहैबिचारिवजीरमितायोमूढसुख
 आचक्षुमरायो। साहकलीजकिचउरीनाप
 तियतैजरखीसहदतअवअलि॥ १३२॥
 नादरप्रतिइमदेनरुनयेप्रथाकलीजेहुद-

हिंसे हकाये । दिल्ली राज दयो तुम कां र बक्यो ।
 नाहे ले तरु जान कहत अह ॥ १३३ ॥ रवान
 कलीज मिलन मिस बुझहु पुनि कारि के दरवी
 जो सिर बुझहु । तब तुम रे बसि साह बुझु मम-
 दहे है हुत हित जहिं साह सह ॥ १३४ ॥
 तब हुन रवान कलीज बुलाय उकरन मय वह
 सह बुत आयु । तब हिं पकारि कारि बिचड़ा
 रोजि अजना दर अलि गह स महारथी ॥ १३५ ॥
 अजि नमो सुनहु कलीज कहवहु दिल्ली स-
 हिंसे हं मिलन बुलावहु । सिर कुरान धरि सप-
 थ उचारत एकारन बैठहिं हित सम्वत ॥ १३६ ॥
 तब हिं कलीज पत्र लिखि प्रेरिय आषु हं मिलन
 हुनहु हित हेरिय । यह सुनि तखत रवान अशरी
 हिय । चलत साह बुझु बीर नरो हिय ॥ १३७ ॥
 कोऊ कहत जाहु नग हजरत कोऊ कहत अ-

लधेनुहयकुंजरएडकअजरुमहिरवद्वरवेसर
 ॥ १५६ ॥ कदेकहरकोगिनेअनंतनप्रत्यम
 न्योनयजामघोरपत्त। यहसुनिरवानकलीज
 अरजकियतदनादरयहरुक्मिअभयदिय
 ॥ १६० ॥ फरुनमासविसदद्वादसिदिनइमपु
 रकालतकियउईरानिन। नादरदत्त- अयअ-
 वजानियतवलसभटनकोसअसिठानिय॥
 १६१ ॥ रहिनादरदुवमासवितायउदिल्लोप
 तिसनलिरितलिरवायउ। हेमैसाहजुहिंदु
 वानपतिसोजित्येनादरइरानपति॥ १६२ ॥
 ज्यानमातनबरवसीसकियउसवसोमेलियउ
 अधीनभयउअव। इयलिरवायनादरदरालि
 नोँकछुनमुहुमदअदर किन्तो॥ १६३ ॥
 छिनिविभूलिलईसबवरवरसजहमन १७
 अनमोलजवाहर। हीराइकअयतनपुरउ

लज्जोबुंदीसमोजकियबाहुल ॥ १६४ ॥ सो
 हीराहुविनिलियनादरतरवतदम्भनवकोटि
 ६००००००० पुस्तकवर। आयुधप्रतुलवसन
 प्ररवनप्रियप्रच्छेसबद्रत्यादिदिनिलिय ॥
 १६५ ॥ रहिहुमासदिस्त्रियइमनादरकरिगय
 कुच्छरेनसहसादर। अबइतरवानसहादतजा
 नीमैहरामयहसाहपिचानी ॥ १६६ ॥ जिय
 तनोहिंहीरहिंहरतहृयहबिचारिबिसरवा
 यनस्वोसठ। साहसुहुम्मादलेजनसाथोलगि
 कुमयासबनिभवतुदायो ॥ १६७ ॥ दिस्त्रिय
 निवतसबनअबजानियपुनिमरहहनहस्त
 प्रमानिय। इतबुधसिंहदेहअबहीस्वोबुं
 दियराजउदधिचिचवीस्थो ॥ १६८ ॥ दोहा
 ॥ पुरबेधमसनकोसत्रय३ नामबाधपुरग्राम
 । तत्त्यदेहसंभरतजियनिजविधारिजदना-

म॥ १६६ ॥ संबतरवटनवसत्तइक १७६६
 अमा ३० रुमाधदमास। इमसुबुद्ध अनिरुद्ध
 सुवकिय परलोक निवास ॥ १७० ॥ प्रेतकरम
 सबविधिसाधियभोनभूमिगजदान। बसुधा-
 बिनुकिहिं धरबने बैदिकमृतकविधान ॥

१७१ ॥ रम्यमहल १ सर २ बाग ३ रचि करन
 नामवयकाल। सेवन आलमसाहको प्रपिलो
 बुद्धनृपाल ॥ १७२ ॥ कछवाहीरानी कियउ
 पुरविरचनप्रारंभ। जयनिवास अमिधानक-
 रिथप्यनभुक्जसधाम ॥ १७३ ॥ बिन्दप्रत्त
 तमंदिरविरचिपुरतकिचहुं पास। रानीरचन
 विचारिकियजेपुर उपमितिजास ॥ १७४ ॥
 हैगनेसधंटी बिहिततकिवाहिरतत्य। हिस
 उत्तरकेदारतैलग्योबसनअतिअत्य ॥ १७५ ॥
 बिचवत्वरतहैवनिसक्योपहुपहु आलतयप.

ढ । विनुबुंदियरुकिबोवद्धरितुंगनभोनभ-
 लीढ ॥ १७६ ॥ निलयजोधरहिनृपअनुज
 व्ययविरत्तरिवसुवार । पुरतैपच्छिमकोसपर
 कामनरच्योकासार ॥ १७७ ॥ नामजोधसा-
 गरसररुनिबसथरचितनवीन । बागमहत्तर
 रसेतुविचप्रभुमंदिरद्विगपीन ॥ १७८ ॥ भूप-
 तिधावरगंगभोजिहिंपुरपूरवजत्थ । विरचे
 उपवनवापिकाअपिहजारनअत्थ ॥ १७९
 ॥ कोदवालनृपकोकथितरामचंदअभिधान ।
 विरचेवापीबागजिहिंपुरविचपच्छिमद्यान
 ॥ १८० ॥ गजमुखभूपपुरोहितद्रुपच्छिमदि
 सपुरपास । वधिमतिदेवीकोसहनविरच्यो
 विभववितार ॥ १८१ ॥ तत्थहिवेतरुवा
 पिकाअनीकियजिहिंदीव । पुरकेदकिवन
 प्रातपुनिअंजेमहत्तअतीव ॥ १८२ ॥ नृपदा

बहुदलबलवत । हैहाजरिभटलकरवकटारे
 पैहोमिलिनभलोफलप्यारे ॥ १३८ ॥ काहू
 कीनसाहश्रुतिकीनीचल्योमिलनसेनहुन
 हिलीनी । संगसुलेयपंचसत ५०० सादीपानी
 पथइमगयउप्रमादी ॥ १३९ ॥ पावकोरलदग
 नादरपुलहगयसमुहबेसररथजुतह ॥
 इमईरानअनीकगयोयहुडोढीलगाआय
 उसमुहवह ॥ १४० ॥ जायसमाबैठेइकअ
 सनभाईकहिहुवदुवसंभासन । तबनादरदि
 लीसहिंप्रकरबहिंसचिवदुसचिवमिलेहि
 तरकरवहिं ॥ १४१ ॥ तुमवजीरबुल्लुइय-
 हंयातैहमवजीरकरवहिंहिततति । तब
 इलीसपनलिरिवनिजकरबुल्लुओरीयवजी
 रपापकर ॥ १४२ ॥ यहकठगरनादरकरअ-
 पियनादरताहिबुलावनअपिय । तबपन्नी

सञ्जसवारपठयेचंडतिकगरलेरुचलाये
 ॥ १४३ ॥ तेउद्धतत्रायेदिल्लियदलबदतव
 जीरवजीरकुजेबल। यहसुनिखानकमरदी
 कंषिगनिनसहचल्योनाहिंकचुजपिग।
 १४४ ॥ तबहिमंत्रअक्खियउमर वन्जंग
 वजीरचहु वहुनन। पापीजननसुनाह
 पिछनैविगरीतहिंअनकूलवरवानै ॥ १४५ ॥
 कहियनजीरतरहु निनकोऊकरिहैसामसा
 हहमदेऊ। इमकहितैदेसतअसवारनगी
 वजीरचितमंत्रविचारन ॥ १४६ ॥ सोहुनज
 रिबैदीकियनादरदिल्लियदलसुनिभजिगर
 हार ॥ अवप्रयानईरानसाहकीअयउ
 पुरदिल्लियउद्धतअरि ॥ १४७ ॥ सकसरअ
 कसरद्वक १७ ६५ हायनपरिफगुनरित
 दसमि १० फलायन। इमनाद दिल्लियपुरा

आयउ होय निरंकुस तोर चलायउ ॥ १४८ ॥
 साह भुङ्गु मम दरवान सहा दत बहु रि वजीर रुख
 कली जबत । ए च्यारि हि कै दी करि अनै ईश
 नी दिल्लिय अबिसानै ॥ १४९ ॥ अथ मुरख
 महल न निवास किय दल मिलान नगरी अतर
 देय । तत्थ हल निस दोय बिताई पैरेना अ-
 नसन अकुताई ॥ १५० ॥ को उन बनिक ह
 दूर बोले बैठे दरिगेहन न नबोले । दलना दर
 ति अरज दई तब अत्थ बनिक बेचै न अन्न अ-
 व ॥ १५१ ॥ अहं किय अरज मट्ट बंदी जन रा-
 ग जुगल किंनोर प्रीति पन । दल इरान दहसति
 गन डोलत तया मै बनिक बजार न खोलत ॥ १५२ ॥
 तबना दर पठे कहि जाहर बसहु जाय मम दर
 पुरवाहिर । त्वअदि सअधीन कठक चढि
 हिर पुर के जात गयो बढि ॥ १५३ ॥ तिहि

स्थितपुर उदयोस विथास्यो महलनमैनाद्य
 हनि डारुणी। वाकोकदकभजतप्रवयद्वैतपद्य
 रुक्कहुइनसवननिपातौ॥ १५०॥ यदसुनि
 जननजुरेदरवाजेबहुबंदूकरुपय्यरवाजे। प
 हरदीयतससेनपचाईप्रवनाक्षरप्रतिअरज
 रचाई॥ १५१॥ हुकमअधीनजमतबाहिरह
 मपुरजनजाननदेलकुटिलक्रम। बंदूकनआ
 यनयुनियारतहमपुराकरोकथितनिहारत॥
 १५२॥ निजदलअरजनमन्त्रीकादरअप
 हितरवनचल्योअनआदर। मंदे। मलदपिनाहि
 जनसारेयाहुपरपत्यरबहुमार॥ १५३॥ नाद
 रकोहुसत्यतवभासीकहुहुहिनितीकिरजिनिका
 सी। व्यजनताहिउच्चीकरिबुल्यो। ईरानिनचह
 सुनिरयगतुल्यो॥ १५४॥ भयो कतलदिलि
 यपुरभारीलकहनकदेबालनभारी। खानबिड।

